اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ۔ (القرآن)

“निस्सन्देह यह क़ुर्आन उस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है जो बिलकुल सीधा है।”

Dawatul Quran Part 30th
in Hindi Language

दअ्वतुल क़ुर्आन

तफ़्सीर पारा अम्म

सूरह अन्-नबा से सूरह अन्-नास

❑❑❑❑

भाष्यः

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिंदी अनुवाद :

मुहम्मद नस्रुल्लाह (एम.ए.)

❖❖❖❖

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई ४०० ००३

दूरध्वनीः २३४६५००५

3rd. Edition :1100 Price Rs. 120/-
February 2012

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ۔ (القرآن)

“निस्सन्देह यह क़ुर्आन उस रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है जो बिलकुल सीधा है।”

Dawatul Quran Part 30th
in Hindi Language

दअ्वतुल क़ुर्आन

तफ़्सीर पारा अम्म

सूरह अन्-नबा से सूरह अन्-नास

❑❑❑❑

भाष्यः

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिंदी अनुवाद :

मुहम्मद नस्रुल्लाह (एम.ए.)

❖❖❖❖

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९, मुहम्मद अली रोड, मुम्बई ४०० ००३

दूरध्वनीः २३४६५००५

3rd. Edition :1100 Price Rs. 120/-
February 2012

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रक्कथन

अल्हमदुलिल्लाह (अल्लाह का शुक्र है) दअवतुल क़ुर्आन का आख़िरी हिस्सा अर्थात पारा अम्म की तफ़सीर पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है । इस से पहले सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर हिन्दी में छप चुकी है। क्रम के हिसाब से पहले पारे (सूरह बक़र:) की तफ़सीर प्रस्तुत करना चाहिए थी लेकिन इदारा की गवर्निंग कौन्सिल के फैसले के अनुसार तीसवें पारा की तफ़सीर को प्राथमिकता दी गई। यह फ़ैसला इस बिना पर किया गया कि आख़िरी पारा छोटी छोटी और अधिकतर मक्का में नाज़िल होने वाली सूरतों पर आधारित है जिन में क़ुर्आन की बुनियादी दअवत और उस की मौलिक शिक्षाऐं, दलीलों के साथ अत्याधिक प्रभावित करने वाले अन्दाज़ में बयान हुई हैं। इस लिए दअवती दृष्टीकोण से यह हिस्सा बहुत ही महत्वपूर्ण है और मुस्लिम एवं ग़ैरमुस्लिम दोनों के लिए बड़ा लाभदायक है। इस में लाभ का एक पहलू यह भी है कि नमाज़ में यह सूरते ख़ूब पढ़ी जाती हैं। लिहाज़ा अगर इनका मतलब सही तौर से ज़ेहनों में बैठ जाए तो इस से नमाज़ो को जानदार बनाने में बड़ी मदद मिलेगी ।

तफ़सीर के सिलसिले में ज़रूरी बातें हम मुक़द्दमें (प्रस्तावना) में बयान कर चुकें हैं। यहाँ कुछ और बातों की तरफ़ इशारा किया जाता है।

क़ुर्आन कोई सपाट किताब नहीं है कि आदमी उस पर से सरसरी तौर से गुज़र जाये बल्कि वह इल्म-व-हिकमत का बहुत ही क़ीमती ख़ज़ाना है, जिस का एक एक शब्द ग़ौर करने और सोच विचार करने की दअवत देता है।

अगर अर्थों के समुद्र में ग़ोता लगाने का हौसला हो तो यहाँ मोतियों की कमी नहीं । क़ीमती जवाहिरात से अपना दामन भर लीजीये और अगर ज़्यादा गहराई में उतरने की हिम्मत हो तो बहुमूल्य जवाहर भी हाथ आ सकते हैं । इस किताब की एक मुख्य विशेषता यह भी है की ब्रहमाण्ड के भेदों और जीवन के भेदों से पर्दा उठाती है। मगर जो लोग अरबी से अनभिज्ञ हैं और विशेष रूप से ग़ैर मुस्लिम जो इस किताब से बिल्कुल अपरिचित हैं वह इस की महानता एवं बुलन्दी का अन्दाज़ा उसी सूरत में कर सकते हैं जब कि यह पहलू रौशन हो कर उन के सामने आ जाए कि गोया यह इल्म-व-हिकमत का उबलता हुआ चश्मा (स्रोत) है। एक छोटी तफ़सीर (व्याख्या) में इन पहलुओं को पेश करने के लिए मुश्किल ही से गुन्जाइश निकाली जा सकती है लेकिन पारा अम्म के महत्व को देखते हुए कुछ विस्तार से काम लेना पड़ा जिस के कारण इस की मोटाई बढ़ गई यह एक अपवादिक सूरत है वरना जैसा कि हम शुरू में स्पष्ट कर चुके हैं, संक्षेप से ही काम लेना चाहते हैं ताकि तीन जिल्दों में क़ुर्आन-ए-करीम की मुकम्मल तफ़सीर (संपूर्ण व्याख्या) अपनी तमाम ज़रूरी मालूमात के साथ सामने आ जाये ।

अहले नज़र (जानकारों) से यह बात छिपी नहीं कि पारा अम्म की सूरतें क़ुर्आन के भावपूर्ण बयान (Eloquent) संक्षिप्त और दिल मोह लेने वाले कलाम का बेहतरीन नमूना है। इस कारण इस का अनुवाद और व्याख्या सब से मुश्किल काम है। इसी लिए इस की व्याख्या के संकलन में हमें एक साल से अधिक समय लगा । और इस राह में जिन वादियों को पार करना पड़ा और जिन घाटियों से गुज़रना पड़ा इस का अन्दाज़ा वही लोग कर सकते हैं जो इस ज़ौक से परिचित हैं।

तफ़सीर के संकलन में हम ने अरबी, उर्दू और अंग्रेज़ी की लगभग तमाम अहम तफ़सीरों को सामने रखा है और जगह जगह उन के हवाले भी दिये हैं। रिवायत के सिलसिले में बड़ी सावधानी से काम

लिया है हमारी कोशिश यह है कि कोई सही हदीस जो किसी आयात से सम्बन्धित हो छुटने न पाये और कोई भी कमज़ोर रिवायत इस में जगह हासिल करने न पाये । रिवायत को अपनाने अथवा स्वीकार करने का मेयार (स्तर) जहाँ हम ने बुलन्द रखा है वहाँ इस बात का भी पूरा पूरा एहतिमाम करने की कोशिश की है कि तफ़सीर के मामले में व्यक्तिगत झुकाव और रुचि राह न पाये बल्कि जो बात भी कही जाये दलील की बुनियाद पर कही जाये और यह देखा जाये कि क़ुर्आन का क्रम किस बात का तक़ाज़ा करता है और सुन्नत से क्या रहनुमाई मिलती है। इस के बावजूद अगर कोई चूक हुई हो तो वह सुधार योग्य है।

पारा अम्म की सूरतें सिवाय सूरह नस्र के सब मक्की हैं और ज़्यादातर उस दौर की हैं जब कि दअ्वत (इस्लाम की ओर आवाहन) की शुरूआत हुई थी इस लिए इन सूरतों में दअवत को पेश करने की जो पद्धति एवं तरीका (Approach) अपनाया गया है उस में हक की दअवत देने वालों के लिए बड़ी रहनुमाई का सामान है क्योंकि यह सादा, स्वभाविक और प्रभावपूर्ण तरीक़ा है। क़ुर्आन ने अपनी दअवत के लिए न फलसफ़े का अन्दाज़ा अपनाया और न मन्तिक़ का इस की दअवत न सूफ़ीवाद के ढाँचे में ढली हुई है और न राजनीतिक व्यवस्था के साँचे में बल्कि हर तरह के दिखावे, संकोच और बनावट से पाक उस का अपना एक तरीक़ा है जो दिल एवं दिमाग़ में सीधे उतर जाने वाला उस को झंझोड़ने वाला और बेख़बरी की नींद से जगा कर इन्सान की काया पलट देने वाला है। एक ऐसी दअवत के लिए जो विश्वव्यापी सच्चाई (Universal Truth) की दअवत हो यही तरीक़ा मुनासिब भी है, इस लिए कि विश्वव्यापी सच्चाई एक अमिश्रित और विशाल वास्तविकता है जिस को किसी साँचे में बन्द नहीं किया जा सकता । जो व्यक्ति भी खुले जेहन से इन सूरतों का अध्यन करेगा उस पर यह हक़ीक़त अच्छी तरह स्पष्ट हो जाएगी कि क़ुर्आन की दअवत का रुख़ इन्सान के नफ़्स (अहं) की तरफ़ है कि सब से पहले वह अपनी उस ज़िम्मेदारी को महसूस करे जो उस के अपने नफ़्स की पवित्रता से संबन्धित है और जिस के बारे नें उसे सब से पहले अल्लाह के सामने जवाब देना है अर्थात अपने अक़ीदे (आस्था) और अपने अख़लाक़ (नैतिकता) एवं किरदार (चरित्र) की पवित्रता और बन्दगी का एहसास। अगर एक दाई (आहवान करने वाले) ने अपने बुलाने वाले के ध्यान को इस Point पर केन्द्रित (Concentrate) करने की कोशिश नहीं की और शुरू ही में दअवत की विस्तृत माँग (Wider demands) बताना शुरू किया तो वह असल दअवत को अपने ज़ेहन की पकड़ में नहीं ले सकेगा और बहस दूसरे रूख़ पर जा पड़ेगी। मुख़्तसर यह कि क़ुर्आन की असल दअवत क्या है और उस को पेश करने का सही ढंग कौन सा है? इन बातों को क़ुर्आन ही से समझने की कोशिश करना चाहिए, क्यों कि इस सिलसिले में कुछ ऐसे तरीक़े भी चल पड़े हैं जो क़ुर्आन से मेल नहीं खाते ।

पारा अम्म की तफ़सीर उर्दू ,मराठी, गुजराती, और अंग्रेज़ी में प्रकाशित हो चुकी है और अब अल्लाह के फ़ज़्ल से हिन्दी में प्रकाशित हो रही है। हिन्दी अनुवाद जनाब मुहम्मद नसरुल्लाह एम.ए. का है। उन्होंने बहुत आसान हिन्दी में अनुवाद किया है ताकि आम पढ़े लिखे लोग समझ सकें। अल्लाह तआला इस तफ़सीर को पुर्ण करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इसे क़ुर्आन की दअवत के विस्तार एवं ख़ैर और बरकत का साधन बनाये।

''रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउलअलीम''

शम्स पीरज़ादा
इदारा दअवतुल क़ुर्आन
मुम्बई. ४०० ००३
६ फरवरी १९९०

सूची

सूरह नम्बर	नाम सूरह	पृष्ट	सूरह नम्बर	नाम सूरह	पृष्ट
७८.	अन्-नबा	५	९६.	अल्-अलक़	१८६
७९.	अन्-नाज़िआत	१९	९७.	अल्-क़द्र	१९५
८०.	अबस	३३	९८.	अल्-बैय्यिनः	२०१
८१.	अत-तकवीर	४३	९९.	अज़्-ज़िलज़ाल	२०९
८२.	अल्-इन्फ़ितार	५४	१००.	अल्-आदियात	२१३
८३.	अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन	६३	१०१.	अल्-क़ारिअः	११७
८४.	अल्-इन्शिक़ाक़	७८	१०२.	अत्-तकासुर	२२१
८५.	अल्-बुरुज	९०	१०३.	अल्-अस्र	२२६
८६.	अत्-तारिक़	१००	१०४.	अल्-हुमज़ः	२३२
८७.	अल्-आला	१०८	१०५.	अल-फील	२३८
८८.	अल्-ग़ाशिया	११९	१०६.	क़ुरैश	२४६
८९.	अल्-फ़ज्र	१२७	१०७.	अल्-माऊन	२५२
९०.	अल्-बलद	१३९	१०८.	अल्-कौसर	२५९
९१.	अश्-शम्स	१४९	१०९.	अल्-काफ़िरुन	२६६
९२.	अल्-लैल	१५७	११०.	अन्-नस्र	२७२
९३.	अज़्-ज़ुहा	१६५	१११.	अल्-लहब	२७८
९४.	अलम नशरह	१७२	११२.	अल्-इख़्लास	२८४
९५.	अत्-तीन	१७८	११३.	अल्-फ़लक़	२९२
			११४.	अन्-नास	३०२

.....INDEX अनुक्रम

१.	क़ौमे हूद और क़ौमे समूद का ठिकाना	१२६
२.	गारे हिरा	२००
३.	हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहु के समय के क़ुर्आन का चित्र	२०८
४.	काबा पर अब्रहा द्वारा हमले की तैयारी	२१२
५.	बैतुल्लाह (अल्लाह का घर)	
६.	क़ुरैश और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब नामा	२१७

७८.अन्-नबा

परिचय

नाम : इस सूरह का नाम अन्-नबा है जिस का अर्थ है ''अहम ख़बर''। इस से मुराद क़ियामत और दोबारा उठाये जाने की ख़बर है। यह नाम इस सूरह की आयत नं.२ से लिया गया है।

नाज़िल होने का समय : यह सूरह मक्की है और प्रारम्भिक आयात ही से यह बात स्पष्ट होती है कि यह सूरह उस समय की नाज़िल शुदा है जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का वासियों को क़ियामत के आने और बदला चुकाने का दिन सम्पन्न होने की ख़बर दी थी । जिस के नतीजे में इस विषय पर एक बहस उठ खड़ी हुई थी और क़ियामत को नामुमकिन ठहराते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा था । जाहिर है ये हालात दअवत के पहले मरहले ही में पेश आये थे।

केन्द्रीय विषय : इस सूरह का केन्द्रीय विषय क़ियामत के दिन अल्लाह की अदालत का क़ायम होना और इन्सानों को उन के आमाल (कर्मों) का बदला देना है।

आयात की तर्तीब : आयत नं. १ से ५ में उन लोगों को तंबीह की गयी है जो क़ियामत के विशाल और हौलनाक वाक़िया की ख़बर सुन कर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं गोया क़ियामत की ख़बर उन के निकट कोई संजीदा ग़ौर और फ़िक्र के योग्य नहीं है लेकिन वह समय दूर नहीं जब कि क़ियामत वास्तविकता के रूप में उन के सामने आ धमकेगी और वह कायनात के फ़रमाँरवा (शासक) के सामने जवाब देने के लिए हाज़िर होंगे !

आयत ६ से १६ में अल्लाह की क़ुदरत, रुबूबिय्यत (स्वामित्व) और हिकमत की निशानियाँ बयान की गयी हैं जो मौत के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी के सम्भव होने पर न केवल दलालत करती है बल्कि इस बात की भी गवाही देती हैं कि बदले का दिन ज़रुरी है क्यों कि यह अल्लाह की रुबिय्यत और हिकमत का तकाज़ा है।

आयत १७ से २० में बताया गया है कि हिसाब का दिन अपने निश्चित समय पर प्रकट होगा। उस रोज़ आसमान और ज़मीन की व्यवस्था में एक ज़बरदस्त इन्क़लाब बरपा होगा और तमाम इन्सान ज़िन्दा हो कर अल्लाह की अदालत की ओर चल पड़ेंगे।

आयत २१ से ३० में सरकशों, बाग़ियों का अन्जाम बयान किया गया है और आयत ३१ से ३६ में अल्लाह से डरते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने वालों का।

आयत ३७ से ४० खातिमा-ए-कलाम (उपसंहार) है जिस में अल्लाह की अदालत में हाज़िरी का चित्र खींचा गया है और स्पष्ट किया गया है कि लोग झूठी सिफ़ारिश के बल पर जवाब देने से नहीं बच सकते।

७८. सूरह अन् -नबा

अनुवाद

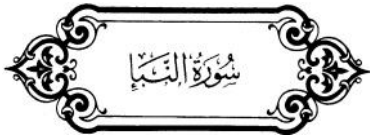

आयते : ४०

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. यह लोग किस चीज़ के बारे में पूछ ताछ कर रहे हैं ? عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ①

2. उस बड़ी ख़बर के बारे में,[1] عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيْمِ ②

3. जिस के सम्बन्ध में यह मुख्तलिफ़ बातें कर रहें हैं ।[2] الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ③

4. इन की बातें ग़लत हैं, इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा, كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ④

5. फिर सुन लो इन के ख़यालात बातिल हैं, वह जल्द ही जान लेंगे।[3] ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑤

6. क्या हम ने ज़मीन को फ़र्श (समतल) नहीं बनाया ?[4] اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ⑥

7. और पहाड़ो को मिखें,[5] وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ⑦

8. और क्या तुम को जोड़ों की शक्ल में पैदा नहीं किया ?[6] وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ⑧

9. और तुम्हारी नींद को सुकून का कारण बनाया,[7] وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑨

10. और रात को लिबास,[8] وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ⑩

1. बड़ी ख़बर से मुराद क़ियामत और हिसाब के दिन के प्रकट होने की ख़बर है। क़ुर्आन ने जब यह ख़बर सुनाई ताकि लोग ख़बरदार हो जायें और ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी ग़ुज़ारे, तो मक्का के मुश्रिक़ीन (बहुदेववादी) इस का मज़ाक़ उड़ाने और इस के ख़िलाफ़ आपस में चर्चा करने लगे । आयत का इशारा उन के इसी चर्चा की तरफ़ है।

2. मक्का के मुश्रिक़ीन के ख़यालात हिसाब के दिन और आख़िरत (परलोक) के बारे में भिन्न थे । वह इन्सान के दोबारा उठाये जाने को सिरे से संभव ही नहीं समझते थे । वह कहते थे कि गली सड़ी हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? कुछ लोगों के समीप आख़िरत का तसव्वुर कोई उचित बात नहीं थी । वह कहते थे ''ज़िन्दगी तो बस दुनिया की ज़िन्दगी है, मरने के बाद हमें उठाया नहीं जायेगा'' और कुछ लोग आख़िरत के बारे में संदेह और असमंजस में पड़े थे । उन के ये विचार किसी इल्मी दलील (ठोंस प्रमाण) पर आधारित नहीं थे बल्कि ये सिर्फ़ अटकल की बातें थी ।

ध्यान रहे कि क़ियामत और हिसाब के दिन को नकारने के मामले में अरब के मुश्रिक़ीन अकेले न थे बल्कि जहाँ तक दूसरे बहुदेववादी धर्मों (मुश्रिक़ीना मज़हबों) का सम्बन्ध है वह भी बहुत उलझी हुई बातें पेश करते हैं। जिस का अन्दाज़ा निम्न लिखित पंक्तियों से होगा ।

Extract From The Encyclopaedia Of Religion And Ethics, Volume V :

Hindu : Although in the Rigveda no clear statement of Judgement is found, and Yama appears mainly as king of the region of bliss, yet he is to some extent an object of terror, and a dark underground hell is spoken of as the fate of evil-doers (iv. 5.5, vii 104.3, ix-73.8)..... The later views differ widely from this, through the gradual introduction of the belief in transmigration, while Yama is now the judge of the dead.....In the Upanishads re- birth in varios conditions, in heaven,hell or on earth, appears as the result of ignorance of the true end of existence ..... Hinduism in all its forms endorses this view. All go to Yama over a dreadful road, on which the pious fare better than the wicked. Yama or Dharma judges and allots the fate. Through endless existences and re-births --- in human, animal, or plant forms --- alternated with lives in the heavens or hells, the soul must pass.

Buddhist : In Buddhism the idea of karma afforded an automatic principle of judgement, whereby the person after death entered upon an existence, higher or lower, according to his actions. At death, the force resulting from actions combined with clinging to existence causes creation of the five skandhas, or constituent elements of being. This is so swift that there is hardly any break in the continuity of personality, which is thus re-created in one of the six states ---gods, men, asuras, animals, plants, pretas, or inhabitants of one of the hells.(p.375)

लेकिन इन तमाम उलझी हुई बातों के बावजूद यह एक ऐसी हक़ीक़त है जिस का इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस दुनिया की एक दिन समाप्ति होनी है और मौजूदा साइंस इस की ताईद (अनुमोदन) करती है। अत: इन्साइक्लोपीडिया आफ़ रेलिजन एन्ड एथिक्स का लेखक आगे चल कर लिखता हैं :

Conclusion : The ideas regarding the end of the world which are found in most eschatologies may be regarded as mythical speculations prompted by knowledge of actual catastrophes in Nature and of its phenomena. The world, as science teaches, and as the speculations of men suggested, must have an end; but they pictured that end in lurid colours, while generally anticipating after it a new order. (p. 391)

क़ुर्आन कर्मों के फल के लिए एक नई कर्म व्यस्था के साथ नए संसार के बरपा किए जाने की ख़बर को मात्र अन्धे अक़िदे (Dogma) के तौर पर नहीं बल्कि कायनात की और मनुष्य के अन्दर की निशानियों (अक़ली दलीलों) के साथ इतने मनमोहक ढंग से पेश करता है कि किसी तरह शक, संदेह और मतभेद के लिए कोई गुन्जाइश बाक़ी नहीं रहती और अंत:करण पुकार उठता है कि हिसाब के दिन का बरपा किया जाना न केवल सम्भव बल्कि अनिवार्य है और क़ुर्आन आगे बढ़ कर पुरी दृढ़ता और विश्वास के साथ यह एलान करता है कि हिसाब का दिन ज़रूर बरपा होगा ।

3. अर्थात् वह समय दूर नहीं जब उन्हें मालूम हो जायेगा कि हिसाब के दिन के बारे में उन के सारे अन्दाज़े (अनुमान) ग़लत थे। यह हक़ीक़त मौत के आते ही आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में जो क़ियामत तक के लिए रूहों का ठिकाना है उन पर खुल जायेगी और फिर क़ियामत के दिन जब कि तमाम इन्सानों को शरीर सहित दोबारा उठा खड़ा किया जाएगा वह अपनी आँखों से इस हक़ीक़त को देखेंगे। ''कल्ला सयालमूना'' (इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा) की तकरार (Repetition) इन दो अवसर की तरफ़ इशारा करती है।

4. पृथ्वी यद्यपि हवा में ठहरी हुई है और सूरज के चारों ओर चक्कर भी लगाती है लेकिन इस के बावजूद इस में कोई उथल पुथल नहीं है एवं इस की सतह को इस तरह फैला दिया गया है कि इस पर आबादी संभव हुई। बल्कि ऐसा मालूम होता है कि विशेष रूप से इन्सानों को बसाने के लिए ज़मीन को फ़र्श बना कर उन तमाम चीज़ों का प्रबन्ध किया गया है जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए दरकार (वन्छित) है। गोया ज़मीन पर इन्सान को बसाने का काम एक मन्सूबे (Plan) के तहत अमल में आया या प्रकट हुआ । क्या इस में अल्लाह की रुबूबिय्यत (स्वामित्व) और हिकमत की खुली निशानी मौजूद नहीं है?

5. ज़मीन पर पहाड़ों की मेंख़ें (Pegs) गाड़ देने से उस की रफ़्तार और गर्दिश (चक्कर काटने) में संतुलन (Balance) पैदा हो गया है और उथल पुथल की हालत नहीं रही । इस के अलावा पहाड़ों से इन्सानों को तरह तरह के लाभ होते हैं जैसे दरयाओं की शकल में पानी का ज़खीरा इत्यादि।

6. ऐसा नहीं हुआ कि सिर्फ मर्द पैदा कर दिये गये हों या औरतें ही औरतें पैदा कर दी गई हों बल्कि इन्सानों को मर्द और औरत के जोड़े की शकल में पैदा किया गया है। इस जोड़े की हर इकाई अपने शारीरिक और आत्मिक विशेषताओं के लिहाज़ से अलग अलग हैं लेकिन यह फ़र्क़ उन में टकराव और विरोध नहीं बल्कि एकता और मुहब्बत पैदा कर देता हैं गोया वह एक दूसरे से मिल कर

पूर्ण हो जाते हैं। क्या इन्सान की पूर्णता का यह सामान अपने अन्दर अल्लाह की रुबूबियत और हिक़मत की कोई निशानी नहीं रखता?

7. नींद इन्सान की थकान दूर करती है और इस के बाद आदमी ताज़ा दम हो जाता है। अगर नींद की इच्छा अल्लाह तआला ने मनुष्य के स्वभाव में न रखी होती तो लगातार मेहनत करने से उस के अंग जवाब दे देते और वह सुकून भरी ज़िन्दगी गुज़रने के क़ाबिल न रहता । इन्सान को आराम और सुकून पहुँचाने का यह प्रबन्ध कितना आश्चर्यजनक है। क्या यह भी किसी अचानक घटित घटना का परिणाम है या मुदब्बिर (प्रबन्धक) की हिकमत भरी योजना ?

8. अगर ज़मीन पर दिन ही दिन होता तो इन्सान की हिफ़ाज़त और राहत का सामान नहीं हो सकता था । सूरज की लगातार तपिश इन्सान को सुकून और राहत से महरूम कर देती, लेकिन अल्लाह तआला ने ज़मीन को एक ऐसे क़ानून में जकड़ दिया है कि वह अपनी धुरी पर बराबर घुमती रहती है जिस से रात और दिन का सिलसिला क़ायम रहता है। इस तरह रात की चादर इन्सान को अपने अन्दर उसी तरह छिपा लेती है जिस तरह से लिबास। क्या ज़मीन की इस गर्दिश के पीछे जो इस महान उद्देश्य को लिए हुये है किसी मुदब्बिर (प्रबन्धक) का हाथ नहीं है?

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾

11. और दिन को जीविका (रोज़ी) का समय नहीं बनाया ?[9]

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

12. क्या तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान नहीं बनाये ?[10]

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾

13. और एक रौशन चिराग़ पैदा नहीं किया?[11]

وَّأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

14. और क्या हम ने बादलों से मुसलाधार पानी नहीं बरसाया?[12]

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾

15. ताकि उगाऐं उस के द्वारा ग़ल्ला और वनस्पति ।

وَّجَنّٰتٍ أَلْفَافًا ﴿١٦﴾

16. और घने बाग ।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾

17. बेशक फैसले का दिन एक मुक़र्रर वक्त (निश्चित समय) है,[13]

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَأْتُوْنَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

18. जिस दिन सूर फ़ूँका जायेगा तो तुम आओगे फ़ौज दर फ़ौज,[14]

وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾

19. और आसमान खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे ।[15]

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

20. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वह सराब (मरीचिका) बन कर रह जायेंगे,[16]

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

21. बेशक जहन्नम घात में है।

لِّلطّٰغِيْنَ مَآبًا ﴿٢٢﴾

22. सरकशों का ठिकाना,[17]

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

23. जिस में वह मुद्दतों पड़े रहेंगे,[18]

9. अगर ज़मीन पर रात ही रात होती तो रोज़ी हासिल करने की दौड़ धूप और गुज़र बसर के लिए वह उचित वातावरण इन्सान को हरगिज़ मयस्सर न आता, जिस की बिना पर वह एक बेहतरीन मख़लूक़ (सृष्टि) की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ार रहा है और आर्थिक प्रगति के लिए अनगिनत राहें उस पर खुल गयी हैं। क्या यह अल्लाह की रुबूबियत (पर्वरदिगार) का करिश्मा नहीं है ?

10. मतलब यह कि अल्लाह की पैदा की हुई कायनात की विशालता और फैलाव का अन्दाज़ा इस से कर सकते हो कि नज़र की सीमा तक दिखाई देने वाला आसमान सिर्फ पहला आसमान है। ऐसे सात आसमान अल्लाह तआला ने पैदा किये हैं और सूरज, चाँद, तारे इत्यादि को सुदृढ़ बनाया है कि एक लम्बा समय गुज़र जाने के बावजूद उन में टूट फूट के कोई आसार पैदा नहीं हुये और सौन्दर्य (Beauty) में रत्ती बराबर फर्क़ नहीं हुआ । एवं क़ुदरती क़ानून की पकड़ इतनी मज़बूत है कि कहीं से कोई अड़ंगा पैदा नहीं हो सकता । अगर आसमान की व्यवस्था मज़बूत न बनाई गई होती तो ज़मीन की व्यवस्था हरगिज़ क़ायम नहीं रह सकती थी । क्या इस में अल्लाह की क़ुदरत, रुबूबियत और हिकमत की बड़ी निशानियाँ मौजूद नहीं हैं?

11. सूरज को ऐसा रौशन बनाया गया है कि उस की रौशनी कभी मांद नहीं पड़ती । मौजूदा साइंस की रौशनी में सूरज को देखिये तो ख़ुदा के करिशमों के पहलू और भी रौशन हो कर सामने आयेंगे । सूरज का ताप (Temperature) एक करोड़ चालीस लाख (१,४०,०००,००) डीग्री सेन्टीग्रेट है।वह ज़मीन से एक सौ गुना से अधिक बड़ा है। उसे ज़मीन से नौ करोड़ो तीस लाख (९,३०,०००,००) मील की दूरी पर रखा गया है जिस की वजह से ज़मीन पर बेहद गर्मी होती है न बेहद सर्दी, बल्कि जानदारों के लिए जितना ताप होना चाहिए ठीक वही ताप यहाँ रहता है और सूरज के इसी ताप से यहाँ बारिश भी होती है और फसलें भी पकती हैं । फिर क्या तुम्हें इस रौशन चिराग़ से भी अल्लाह की क़ुदरत और रुबूबियत के बारे में कोई रौशनी नहीं मिलती ?

12. बादलों के द्वारा इन्सानी आबादियों को अधिकता के साथ पानी मुहैय्या करने का प्रबन्ध और इस के द्वारा ग़ल्ला और सब्ज़ी की पैदावार और घने बाग़ों का उग जाना जिस से इन्सान को रिज़्क़ (जिविका) पहुँचाने का काम निरंतर हो रहा है। क्या यह इन्सान की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी नहीं है? क्या इस के पीछे एक ऐसी हस्ती का हाथ दिखाई नहीं देता जो उस की परवरिश का पूरा पूरा प्रबन्ध कर रही है?

13. यह है वह बात जिस के बारे में ऊपर की आयत ६ से १६ में दलील (प्रमाण) पेश की गई है । जिस का खुलासा यह है कि फैसले का दिन (Day of Judgement) एक पक्की बात है और इस के आने का समय भी बिल्कुल निश्चित है। मक्का के मुश्रिकीन इस को मानने से इस कारण इन्कार कर रहे थे कि इस से इन्सान का दोबारा उठाया जाना अनिवार्य ठहरता है जो उन के निकट एक असम्भव बात थी । इसी लिए वह कहते थे कि इन्सान जब मर कर मिट्टी में मिल गया तो उसे दोबारा किस तरह ज़िन्दा किया जा सकता है। वह अपनी संकीर्ण बुद्धि से अल्लाह की क़ुदरत और हिकमत का सही अन्दाज़ा लगाने में असमर्थ थे इस लिए अक़्ल को अपील करने वाला अन्दाज़ अपनाया गया और फैसले के दिन पर अल्लाह की क़ुदरत और उस की रुबुबियत एवं हिकमत से इस्तेदलाल (Argue) किया गया । जिस का खुलासा यह है कि यह ज़मीन यह आसमान और यह तरह तरह की नेअमतें जिन से तुम्हारी ज़िन्दगी जुड़ी है, किस बात की गवाही दे रही है? क्या इस बात की कि इन का पैदा करने वाला बहुत ही महदूद (सीमित) क़ुदरत वाला है और उस के कामों में उद्देश्य का कहीं दूर दूर तक पता नहीं चलता और इस कायनात के अंश बिल्कुल बेतरतीब हैं और ये पूरा कारखाना (Unsystamatic) मालूम होता है?

या यह कि कायनात और ज़िन्दगी के यह आसार इस हक़ीक़त को स्पष्ट करते हैं कि तुम्हारा पैदा करने वाला ज़बरदस्त क़ुदरत का मालिक है और न सिर्फ ज़बरदस्त क़ुदरत का मालिक है बल्कि साथ ही वह रुबूबियत और हिकमत की सिफात (ख़ूबियों) को भी अपने अन्दर रखता है। अल्लाह को इन सिफ़ात का मालिक मान लेने के बाद फ़ैसले के दिन को मान लेने में कोई दुश्वारी बाक़ी नहीं रहती बल्कि इस सिफ़ात का लाज़मी तक़ाज़ा क़रार पाती है कि फ़ैसले का दिन बरपा हो। जब यह स्पष्ट हुआ कि अल्लाह ज़बरदस्त क़ुदरत का मालिक है, फिर उस के लिए मुर्दों को ज़िन्दा करना बेहद आसान बात है। इस के नामुमकिन या असम्भव होने का क्या सवाल? और फ़िर जो हस्ती इन्सान की रुबूबियत का सामान इतनी तैयारीयों के साथ कर रही है और जिस ने उसे अनगिनत नेमतें प्रदान की हों वह अपनी उन नेअमतों का हिसाब उस से क्यों न लेगी और अपने वफ़ादार बन्दों को इनाम का हक़दार और सरकशों को दंड का पात्र न ठहरायेगी? उस की हिकमत इस कायनात की एक एक चीज़ से ज़ाहिर हो रही है। उस का हर काम ज्ञान पर आधारित और योजना बद्ध (Well Planned) है। फिर क्या यह स्वीकार किया जा सकता है कि इन्सान ही की पैदाइश (उत्पत्ति) बेमक़सद हुई है? इसे मर कर मिट्टी में मिल जाना है और इस के बाद कुछ नहीं? अच्छे बुरे में कोई भेदभाव नहीं? अल्लाह तआला को मानने वाले और उस का इन्कार करने वाले, उस के आज्ञाकारी और उस के अवज्ञाकारी सब बराबर हैं? न किसी को इनाम मिलना है न किसी को सज़ा? अल्लाह की अदालत कोई अदालत ही नहीं जहाँ जवाबदेही के लिए हाजिरी का सवाल हो? क्या इस तरह की बातें तुम्हारी बुद्धि में समाती है और उस के हिकमत के गुण से मेल खाती है? वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला की जिस हिकमत का परीक्षण इन्सान अपने इर्द गिर्द फैली हुई दुनिया में करता है उस का यह तकाज़ा है कि फैसले का दिन बरपा हो। इस से क़ुर्आन की इस ख़बर की भी पूरी ताईद होती है कि बदले का एक दिन मुक़र्रर है। उस रोज़ तमाम इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा ।

14. अर्थात क़ियामत के दिन बिगुल बजाते ही सारे मुर्दा इन्सान ज़िन्दा हो कर अल्लाह की अदालत में हाज़िर होने के लिए निकल पड़ेंगे ।

15. आसमान की हक़ीक़तें आज इन्सान की नज़रों से छिपी हुई हैं लेकिन क़ियामत के दिन इन्सान आसमान के खुल जाने से उन को अपनी आँखों से देख लेगा ।

16. इशारा है इस बात की तरफ़ कि क़ियामत के दिन इस दुनिया की व्यस्था बदल जायेगी। यह ज़मीन एक चटियल मैदान का रूप धारण कर लेगी जहाँ तमाम लोगों को इकट्ठा कर के अदालत बरपा की जायेगी । बड़े बड़े पहाड़ हवा में उड़ रहे होंगे और उन की जगह रेत का मैदान होगा। हश्र के मैदान में उन का कोई अस्तित्व बाक़ी नहीं रहेगा । इस से क़ियामत के दिन की हौलनाकी (Horrors),ज़मीन की बनावट में बहुत बड़े परिवर्तन के उत्पन्न हो जाने और हश्र के मैदान की विशालता का अन्दाज़ा होता है।

17. ख़ुदा के सरकश (नाफ़रमान) बन्दे दुनिया में ख़ुदा से निडर हो कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और यह समझते हैं कि उनके लिए अज़ाब (यातना) और ख़तरे की कोई बात नहीं है। लेकिन क़ियामत के दिन जहन्नम इस तरह सामने आयेगी जैसे वह घात ही में थी और वह उस में ऐसे फँसेंगे कि फिर कभी उस से निकल न सकेंगे।

18. मतलब यह कि एक दौर के बाद दूसरा दौर, इस तरह वह लगातार अज़ाब (यातना) ही में रहेंगे। इतनी कठोर सज़ा इस लिए कि उन्होंने अल्लाह की बन्दगी के दर पर अल्लाह से बग़ावत का रास्ता अपनाया। अपने सच्चे उपकारी की नाशुक्री करते रहे और फैसले के दिन को मानने और उस के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए किसी तरह आमादा नहीं हुए। अत: जो बीज उन्होंने बोया था उसी के फल वह काटते रहेंगे।

वहाँ वह न किसी तरह की ठन्डक का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का, सिवाये गर्म पानी और पीप के। उन के करतूतों का ठीक ठीक बदला। वह हिसाब की उम्मीद न रखते थे, और हमारी आयतों को बिलकुल झुठला दिया था। (अल-क़ुर्आन)

24. वहाँ वह न किसी तरह की ठन्डक का मज़ा चखेंगे और न पीने की चीज़ का,

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

25. सिवाये गर्म पानी और पीप के।

إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

26. उन के करतूतों का ठीक ठीक बदला।

جَزَاءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾

27. वह हिसाब की उम्मीद न रखते थे,

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

28. और हमारी आयतों को बिलकुल झुठला दिया था।

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

29. जब कि हम ने हर चीज़ को लिख कर सुरक्षित कर रखा था।[19]

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٢٩﴾

30. तो चखो ! अब हम तुम्हारे अज़ाब ही में वृद्धि करेंगे।

فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

31. निश्चय ही (अल्लाह का) डर रखने वालों के लिए कामयाबी है।[20]

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

32. बाग़ और अंगूर,

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

33. और नवजवान हम उम्र (समान आयू वाली) लड़कीयाँ।

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

34. और छलकते जाम,[21]

وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

35. वहाँ वह न कोई फ़ुज़ूल बात सुनेंगे और न झूठी बात।[22]

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾

36. यह तुम्हारे रब की ओर से बदला होगा और काफ़ी इनाम,[23]

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

19. अर्थात उन के कर्मों का रेकार्ड हम तैयार कर रहे थे गोया हर व्यक्ति की पूरी बोलती फ़िल्म तैयार की जा रही थी । जिस में सिर्फ कहनी और करनी ही का नहीं, नियतों तक को रेकार्ड किया जा रहा था और यह इस भुलावे में पड़े रहे कि हम तो अपनी मनमानी करने के लिए आज़ाद हैं और उन के करनी का कोई रेकार्ड तैयार नहीं किया जा रहा है। क्यों कि उन्हें न कोई ऐसा कैमरा दिखाई देता था जो उन की अमली ज़िन्दगी (Practical Life) की तस्वीर खींच रहा हो और न कोई टेप रेकार्ड जो उन की बातों के कैसिट तैय्यार कर रहा हो ।

20. यहाँ मुत्तक़ीन (अल्लाह का डर रखने वाले) का शब्द ''ताग़ीन''(सरकश) के मुक़ाबले में इस्तेमाल किया गया है। अर्थात् वह लोग जो अल्लाह और बदले के दिन पर ईमान रखते हैं उस की आयात को मानते हैं और इस तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं कि उन्हें अपने कर्मों की जवाबदेही करनी है।

21. इस से मुराद शुद्ध शराब के जाम हैं।

22. अर्थात् जन्नत का माहौल बेहद पाकीज़ा होगा सोसाइटी भी पाक और खाने पीने की तमाम वस्तुऐं भी पाक। यहाँ तक कि वहाँ कि शराब भी दुनिया की शराब जैसी नहीं होगी कि आदमी पी कर बकवास करने लगे। बल्कि यह बेहद पाकीज़ा होगी और उस से ऐसी कैफ़ियत पैदा होगी जिस में बेहुदगी का कोई अंश न होगा । इसी तरह यहाँ फ़ुज़ूल (व्यर्थ) की बातें और तमाशे भी नहीं होंगे और न झूट एवं तोहमतों व आरोपों का वजूद होगा बल्कि वह एक गम्भीर एवं प्रसन्नता का माहौल होगा जहाँ हर तरफ़ इख़्लाक़ (नैतिकता) और शराफ़त ही के नमूने दिखाई देंगे ।

23. मुत्तक़ियों (अल्लाह का डर रखने वालों) को सिर्फ़ उन के नेक कामों का इनाम देने पर ही बस नहीं किया जायेगा बल्कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी तरफ़ से काफ़ी उपहार भी प्रदान करेगा।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

37. उस की तरफ़ से जो आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उन के बीच है उस का मालिक है। रहमान जिस से बात करने का किसी को यारा नहीं।[24]

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38. जिस दिन रूह [25] (अल-अमीन) और फ़रिश्ते सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़ें होंगे। कोई बात न कर सकेगा सिवाय [26] उस के जिसे रहमान इजाज़त दे और वह बिलकुल दुरुस्त बात कहेगा।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39. यह दिन बरहक़ (सत्य) है।[27] तो जो चाहे अपने रब के पास ठिकना बना ले।

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكَافِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

40. हम ने तुम्हें एक ऐसे अज़ाब (यातना) से आगाह कर दिया है जो क़रीब आ लगा है।[28] जिस दिन आदमी देख लेगा कि उस ने आगे के लिए क्या किया है [29]और काफ़िर (इन्कार करने वाला) कहेगा, काश मैं मिट्टी होता।[30]

24. मतलब क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला अपनी अदालत बरपा करेगा तो उस अदालत के रोब का हाल यह होगा कि कोई उस के सामने ज़ुबान खोलने की जुर्अत न कर सकेगा । इस से मुश्रिकीन के इस विचार का खंडन होता है कि उन के देवी देवता जो चाहेंगे ख़ुदा से मनवा सकेंगे।

25. रुह से मुराद रुहुलअमीन अर्थात जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं। फ़रिश्तों के सरदार होने की हैसियत से उन का वर्णन विशेष रुप से किया गया है और मक़सद बताने का यह है कि क़ियामत के रोज़ जब अल्लाह अदालत बरपा फ़रमायेगा तो फ़रिश्ते यहाँ तक कि जिब्रील अलैहिस्सलाम भी पंक्तिबद्ध (सफ़बस्ता) खड़े होंगे। सब पर हैबत छाई होगी और किसी की यह मजाल न होगी कि बिना इजाज़त बोल सके।

26. इस से अभिप्राय सिफ़ारिश के ग़लत विचारों का खंडन है जिस में धार्मिक लोग जकड़े हुऐ हैं। जहाँ तक मुश्रिकीन का सम्बन्ध है वह यह ख़याल करते हैं कि अगर क़यामत आ ही गई और कर्मों की जवाबदेही के लिए अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना ही पड़ा तो यह देवी देवता जिन की वह पूजा करते रहे हैं वह हमारे सिफ़ारिशी बन कर खड़े होंगे और हमें अज़ाब (यातना) से छुटकारा दिलवा के रहेंगे । लेकिन क़ुर्आन बताता है कि पहले तो किसी ''देवी देवता'' का आख़िरत में वुजूद ही नहीं होगा । सब के सब अल्लाह के बेबस बन्दे की हैसियत से पेश होंगे और सारे अधिकार अल्लाह ही के हाथ में होंगे और अल्लाह की अदालत के दबदबे का यह आलम होगा कि निकटस्थ (विशेष, समानित) फ़रिश्ते बात करने की जुर्अत न करेंगे अगर सिफ़ारिश के लिए कोई ज़ुबान खोल सकेगा तो वही जिस को अल्लाह इजाज़त दे और इस सूरत में वह ठीक और दुरुस्त बात ही कहेगा और मुश्रिकीन के लिए सिफ़ारिश कोई भी नहीं कर सकेगा। क्योंकि ऐसे लोगों के हक़ में सिफ़ारिश करना, अल्लाह के इस फैसले की बुनियाद पर कि जो ऐसे जुर्म में लिप्त रहे जो क्षमा योग्य नहीं, दुरुस्त बात न होगी । अल्लाह की इजाज़त के बाद किसी की सिफ़ारिश के लिए कोई ज़ुबान खोलेगा भी तो सिर्फ़ ऐसे गुनहगार बन्दों के लिए जो ईमान वाले हों और जिन के लिए अल्लाह सिफ़ारिश क़ुबूल करना पसन्द फ़रमाए। लिहाज़ा कोई व्यक्ति इस भुलावे में न रहे कि वह चाहे कुफ़्र और शिर्क (ख़ुदा का इन्कार करने या कई ख़ुदाओं को मानने) का कुसूरवार क्यों न हुआ हो और चाहे उस ने एक सरकश की हैसियत से ज़िन्दगी क्यों न गुज़ारी हो, किसी न किसी के वसीले से उस की मुक्ति हो जायेगी।

27. अर्थात् बदले का दिन अनुमान और अटकल की बातें नहीं है बल्कि एक वास्तविकता और सत्य है जिस की ख़बर पूरी सच्चाई के साथ तुम्हें दी जा रही है।

28. क़रीब इस हिसाब से कि दुनिया की अधिकतर उम्र ग़ुज़र चुकी है अब क़ियामत के आने में जो समय बाक़ी रह गया है वह बहुत ही थोड़ा है । वैसे भी समय एक सम्बन्धी (Relative) वस्तु है। क़ियामत के दिन जब कि ज़मान-व-मकान (Space & Time) के पैमाने बदल जायेंगे। इन्सान ने जो वक्त दुनिया में ग़ुज़ारा था उसे बहुत थोड़ा मालूम होगा ।

29. इन्सान दुनिया में अच्छे बुरे जो काम भी करता है अवश्य ही उस का एक परिणाम और एक प्रभाव है जो दूसरी ज़िन्दगी (आख़िरत) में जाहिर होगा । इस हक़ीक़त को ''मा क़द्मत् यदाहु'' مَاقَدَّمَتْ يَدَاهُ (जो उस के हाथों ने आगे भेजा) के शब्द से दर्शाया गया है। क्यों कि इन्सान का हर अमल उस के अपने हाथों से बीज बोने जैसा है जिस के फल वह आने वाली ज़िन्दगी में काटेगा।

30. अर्था जो लोग बदले के दिन को मानने और उस की बुनियाद पर ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारने से इन्कार कर रहे हैं वह अच्छी तरह समझ ले कि बदले का दिन (अथवा फैसले का दिन) बरपा होगा और इन्सान अपने करतूत अपने सामने देख लेगा तो ऐसे लोगों के हिस्से में सिवाय हसरत और पछतावे के कुछ नहीं आयेगा. उस समय आख़िरत का इन्कार करने वाले हर आदमी को एहसास होगा कि काश वह मर कर मिट्टी में मिल गया होता और हिसाब देने की नौबत ही न आती।

७९. अन् -नाज़िआत

नाम : सूरह की शुरुआत वन्-नाज़िआत से हुई है जिस के सम्बन्ध से इस सूरह का नाम अन्-नाज़िआत रखा गया है। यह लफ़्ज़ हवाओं की सिफ़त (गुण) के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।

नाज़िल होने का समयः- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह नबा के फ़ौरन बाद नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषयः- इस सूरह का विषय क़ियामत का वक़ूअ (घटीत) होना और कर्मों का हिसाब चुकाने के लिए इन्सान का दोबारा उठाया जाना है। पस मन्ज़र (पृष्ठ भूमि) में खास तौर से वह सरकश और फ़िरऔन सिफ़त लोग हैं जो अपनी दुनिया बनाने में मस्त रहते हैं।

कलाम की तरतीबः- आयत १ से ५ में बदले के दिन पर हवाओं को गवाही में पेश किया गया है।

आयत ६से १४ में क़ियामत की घटना का चित्र प्रस्तुत करते हुए इन्कार करने वालों के एतिराज़ का ज़िक्र किया गया है।

आयत १५ से २६ में हज़रत मूसा का संक्षिप्त वर्णन हुआ है कि किस तरह फिरऔन उन की दअवत को ठुकराने के नतीजे में भयानक अन्जाम से दोचार हुआ। यह गोया प्राकृतिक रूप से कर्मों का फल पाने पर इतिहास को गवाह ठहराना है।

आयत २७ से ३३ में इन्सानों की दोबारा पैदाइश सम्भव होने पर अल्लाह तआला की क़ुदरत के गुणों से प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

आयत ३४ से ४१ में बताया गया है कि जिस दिन क़ियामत की घटना पेश आयेगी, सरकशों और दुनिया परस्तों का अन्जाम कैसा बुरा होगा। और अल्लाह से डरने वालों का अन्जाम कितना आनन्ददायक होगा।

आयत ४२ से ४६ में क़ियामत का इन्कार करने वालो के इस सवाल का जवाब दिया गया है कि आख़िर क़ियामत आयेगी कब?

७९. सूरह अन्-नाज़िआत

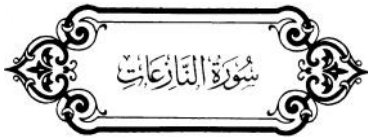

अनुवाद आयते : ४६

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है उन (हवाओं)की जो (बादलों को) शिद्दत के साथ घसीटती हैं ।[1]**

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۝١

2. **और उन की जो नरम नरम चलती हैं।**

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۝٢

3. **और उन की जो तेज़ रफ्तार हैं।[2]**

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۝٣

4. **फिर जो (हुक्म की तामील में) बाज़ी ले जाती हैं।**

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۝٤

5. **और एक काम (बारिश) का इन्तेज़ाम करती हैं।[3]**

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥

6. **जिस दिन ज़लज़ले का शदीद झटका लगेगा।**

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦

7. **उस के पीछे दूसरा झटका आयेगा।[4]**

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٧

8. **कितने दिल उस दिन धड़क रहे होंगे।[5]**

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨

९. **निगाहें उन की झुकी होंगी।**

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩

10. **कहते हैं, क्या हम फिर पहली हालत में लौटाए जायेंगे ?[6]**

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝١٠

11. **(क्या उस वक़्त) जब की हमारी हड्डियाँ गल चुकी होंगी [7]**

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١

1. शुरू की पाँच आयतों में जिन चीज़ों की क़सम खाई गई है उन की सिर्फ सिफ़ात बयान की गई हैं। उन चीज़ों का ज़िक्र सराहत के साथ (स्पष्ट रूप से) नहीं हुआ है। और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस बारे में कोई हदीस नकल हुई है। रहे तफ़्सीरी क़ौल (वचन) तो वह कई हैं। कुछ ने फ़रिश्ते मुराद लिये हैं और कुछ ने सितारे। किसी के नज़दीक घोड़े मुराद हैं और किसी के नज़दीक बादल । इन में ज़्यादा मश्हूर बात जिस को आम तौर से मुफ़स्सिरीन (तफ़्सीर करने वालों) ने इख़्तियार किया है यह है कि फ़रिश्ते मुराद हैं। हम ने निम्न लिखित कारणों के आधार पर हवाऐं मुराद ली हैं।

A) क़ुर्आन करीम में जहाँ इस तरह की क़समें खाई गई हैं वह इस्तेदलाल या इस्तिश्हाद (प्रमाण या साक्ष्य प्रस्तुति) के तौर पर हैं। यहाँ इन्सान के दोबारा जिन्दा किये जाने पर इस्तिदाल करना मक़सूद है जो जाहिर है महसूस चीज़ ही से हो सकता है और हवाऐं एक महसूस चीज़ है जब कि फ़रिश्ते महसूस चीज़ नहीं हैं।

B) बयान की गई सिफ़तें फ़रिश्तों और सितारों वग़ैरा के मुक़ाबले में हवाओं से ज़्यादा मेल खाती है।

C) अरबी में ''नज़ाए'अ''ख़ास तरह की हवाओं को कहते हैं (लिसानुल अरब लफ़्ज़ नज़ाअ) नाज़िआत इस से मिलताजुलता लफ़्ज़ है। क़ुर्आन में लफ़्ज़ ''तन्ज़िअु'' हवा के लिए इस्तेमाल हुआ है।

تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ (القمر آیت: ٢٠)

''वह हवा लोगों को इस तरह उखाड फेंकती थी जैसे जड़ से उखड़े हुये खजूर के तने'' (अलक़मर-२०)

D) क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर हवाओं की क़सम क़ियामत और बदले के दिन पर युक्तिवाद के तौर पर खाई गई है। (मुलाहज़ा हो सूरह ज़ारियात और सूरह मुर्सलात) इस लिए यहाँ भी जब कि अभिप्राय बदले का दिन है तो हवाऐं मुराद लेना क़ुर्आन के बयान से ज़्यादा समीप है।

E) यहाँ सिफ़ते स्त्रीलिंग प्रयोग हुई है और हवाओं के लिए स्त्रीलिंग का प्रयोग अरबी में परिचित एवं प्रचलित है।

2. '' अस्साबिहात'' اَلسَّابِحَات (तेज़ रफ़्तार) असल में घोड़ो की विशेषता है। यहाँ हवाओं को घोड़ों से उन के तेज़ रफ़्तार होने की बिना पर तश्बीह (उपमा) दी गई है। गोया बादल हवाओं के काँधो पर सवार हैं और वह सरपट अपनी मन्ज़िल की ओर चले जा रहे हैं।

3. इन आयात में हवाओं की अवस्था और उन के काम बयान किए गये हैं। जिस से बारिश की व्यवस्था कार्यान्वित होती है। ये हवाऐं ही हैं जो बादलों को हज़ारों मील से घसीट कर लाती है और जब किसी इलाके में बादल जमा हो जाते हैं तो हवाऐं नर्म नर्म चलने लगती है जिस से वातावरण ख़ुशगवार हो जाता है।

ये हवाऐं जो लाखो और करोड़ों लीटर पानी का वज़न उठाये चलती हैं तो ऐसा महसूस होता है जैसे तेज़ रफ़्तार घोड़े जो किसी मुहिम के लिए दौड़ाये गये हों और जिस तरह कुछ घोड़े कुछ को पछाड़ जाते हैं इसी तरह कुछ हवाऐं कुछ पर बाज़ी ले जाती हैं। वातावरण में हवाओं के इस हमले को साबिकात से ताबीर किया गया है। बारिश का यह इन्तेज़ाम हवाओं ही के द्वारा अमल में आता

है इस लिए मजाज़न (लाक्षणिक) इन को ''अलमुदब्बिराति अम्रा'' اَلْمُدَبِّرَاتِ اَمْرًا ''एक काम अर्थात बारिश को तक़सीम करने वाली'' की उपमा दी गई है। जिस तरह सूरह ज़ारियात में इन्हें ''अल-मुक़स्सीमात अमरा'' اَلْمُقَسِّمَاتِ اَمْرًا ''एक काम अर्थात वर्षा को विभाजित करने वाली'' से ताबीर (कल्पना) किया गया है।

इन हवाओं को गवाही में पेश कर के जिस बात पर बहस की गई है वह यह है कि बदले के दिन का पेश आना और इन्सानों को दोबारा उठाया जाना बिल्कुल सही है। बहस इस प्रकार है कि हवाओं की यह व्यवस्था अल्लाह तआला की क़ुदरत और हिकमत, उस की रूबूबियत, अज़मत और जलाल की ज़बरदस्त निशानियाँ पेश करतीं हैं और इन पर सोचने और विचार करने की दअवत देता है। बारिश की हवाऐं जब चलती हैं तो अपनी विभिन्न हालतों के द्वारा ग़फ़लत में पड़े हुए इन्सान को चौंका देने का सामान करती हैं। जैसे बादलों को घसीटने का काम जिस के साथ कड़क और बिजली भी होती है और जो वातावरण को सुहाना बनाये हुए नर्म नर्म चलती है और कभी तेज़ रफ़्तार हो जाती है। इसी तरह हवाओं के विभिन्न गुरूप जब आक्रमण करते हैं तो परवरदिगार की आज्ञा का पालन करने और उस को लागू करने में उन के बाज़ी ले जाने की विशेषता बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। रहा तदबीरे अम्र (इन्तिज़ाम) का मामला तो ये हवाऐं किसी क्षेत्र में दया के बादल बरसाती हैं और किसी क्षेत्र को बारिश से महरूम (वंचित) रख कर बादल आगे निकल जाते हैं। कहीं ये तूफ़ान लाती है और वृक्षों और मकानों को उखाड़ फेंकती हैं तो कहीं सुहावनी चलती है । कभी गर्म लू का रूप धारण कर जाती है कभी सुबह को शीतल हवाओं के रूप में प्रकट होती हैं। अत: ये हवाऐं यूँहि नहीं चलतीं बल्कि दिलों को स्पर्श करते हुए चलती हैं और हर उस व्यक्ति के अन्दर जो सोचता और विचार करता तथा हक़ीक़त को निष्पक्ष रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार रहता है, यह विश्वास पैदा करती है कि इस कायनात का पैदा करने वाला ज़बरदस्त क़ुदरत का मालिक है और वह बेहद हिकमत के साथ इस पर शासन कर रहा है। इस का लाज़मी तक़ाज़ा है कि इस दुनिया का भी कोई लक्ष्य और इस का कोई उद्देश हो और इन्सान को उस के कर्मो का पूरा बदला मिले। गोया हवाओं की यह व्यवस्था कर्मो का फल मिलने की गवाही पेश करती है। और इन्सान की दूसरी पैदाइश को न केवल सम्भव बल्कि उस की हिकमत को न्याय उचित माँग करार देती है। सारांश यह कि हवाओं के काम और उन की अवस्थाओं में प्रतिदान (अच्छा, बुरा बदला) की निशानियाँ स्पष्ट है और उन की गवाही का एक पहलू यह भी है कि जो हस्ती वर्षा काल की हवाओं द्वारा मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करती है वह निस्संदेह मुर्दों को ज़िन्दा कर देने वाली ''हवाऐं'' भी चला सकता है। और जिस तरह हवाऐं समुद्र से पानी की बूँदो को भाप की सूरत में आसमान पर फैला देती हैं और फिर उन बिखरी भापो को समेट कर पानी के रूप में परसा देती है। इसी तरह मुर्दा इन्सान के बिखरे अंशो को समेट कर उसे दोबारा ज़िन्दा करने का कारनामा भी सम्भव है। और जब इस की ख़बर ख़ुद अल्लाह तआला दे रहा है तो फिर इस में शक एवं संदेह का क्या सवाल? वास्तव में क़ियामत से इन्कार अल्लाह की क़ुदरत एवं हिकमत के गुणों से इन्कार के समान हैं।

4. पहला झटका वह है जब ज़मीन का मौजूदा निज़ाम दरहम बरहम (उलट पलट) होगा और तमाम इन्सान मर जायेंगे और दूसरा झटका वह है जब तमाम मुर्दे ज़िन्दा हो कर ज़मीन से निकल आयेंगे। उस समय पृथ्वी की आकृति बदल चुकी होगी और उसे एक नये निज़ाम के साथ क़ायम कर दिया गया होगा।

5. दिल, क़ियामत की हौलनाकी और बाज़पुर्स (पूछ ताछ) के डर से धड़क रहे होंगे। यह हाल

काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और फ़ासिक़ों (गुनाहगारों) का होगा । रहे मोमिनीन (ईमान लाने वाले) स्वालिहीन (नेक लोग) तो उन्हें कोई परेशानी का धड़का नहीं होगा ।

6. अर्थात क्या मरने के बाद फिर हमें ज़िन्दा किया जायेगा?

7. यह थी क़ियामत का इन्कार करने वालों की शंका कि जब इन्सान का भौतिक अस्तित्व (माद्दी वुजूद) नहीं रहेगा तो फिर वह किस तरह अस्तित्व में आ सकेगा । और जब उस का आस्तित्व ही मुहाल है तो हश्र और जज़ा एवं सज़ा का सवाल ही पैदा नहीं होता । उन की इस शंका का समाधान हो सकता था अगर वह साफ़ ज़ेहन (Unprejudiced Mind) से इस कायनात की व्यवस्था का अध्ययन करते जिसकी दअवत क़ुर्आन दे रहा है। यह अध्ययन कायनात बनाने वाले के बारे में उन्हें पहचान प्रदान करता और उन्हें महसूस होता कि ज़मीन से ले कर आसमान तक और हवाओं से ले कर बारिश तक कायनात की हर चीज़ क़ुर्आन के बयान की तस्दीक़ (पुष्टि) कर रही है।

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

12. कहते हैं, यह लौटना तो बड़े घाटे का होगा ।[8]

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

13. वह तो एक डाँट होगी,[9]

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾

14. कि वह यकायक मैदान में आ मौजूद होंगे [10]

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿١٥﴾

15. क्या तुम्हें मूसा की घटना की ख़बर पहुँची?[11]

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16. जब कि उस के रब ने उसे तुवा की पवित्र वादी में पुकारा ।[12]

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٧﴾

17. फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है।[13]

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ﴿١٨﴾

18. और उस से कहो क्या तू चाहता है कि पाकीज़गी अपनाये, [14]

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿١٩﴾

19. और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊँ कि तू उस से डरने लगे।[15]

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾

20. फिर (मूसा ने) उस को बड़ी निशानी दिखाई।[16]

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾

21. मगर उस ने झुठलाया और न माना।

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾

22. फिर पलटा और मुख़ालिफ़त में सरगर्म हो गया ।[17]

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾

23. और लोगों को जमा कर के एलान किया।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾

24. और कहा कि मैं हूँ तुम्हारा सब से बड़ा रब ।[18]

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

25. आख़िरकार अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ लिया।

8. इस तरह आख़िरत (परलोक) का वह मज़ाक़ उड़ाते थे कि अगर वास्तव में हमें दूसरी ज़िन्दगी मिली जिस की सूचना यह नबी हमें दे रहा है तो वह जिन्दगी बड़े घाटे की होगी क्यों कि हम इस का इन्कार करते रहे और इस के लिए हम ने कोई तैयारी नहीं की ।

9. अर्थात इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा करने के लिए अल्लाह तआला को कोई ख़ास तैयारी नहीं करनी पड़ेगी बल्कि उसका सिर्फ़ एक हुक्म इस के लिए काफ़ी होगा और यह हुक्म डाँट की सूरत में होगा जिसे पूरी ज़मीन पर एक ही समय में प्रसारित (नश्र) किया जायेगा ।

10. अर्थात् इसी गोश्त पोस्त के साथ इन्सान ज़मीन की सतह पर आ मौजूद होगा । दूसरे शब्दों में इन्सान मरने के बाद न जानवर का रूप धारेगा और न किसी दूसरी मख़्लूक़ का । बल्कि क़ियामत के दिन वह अपनी पहली हालत में ही ज़मीन से निकल खड़ा होगा ।

11. यह इतिहास से गवाही प्रस्तुत की गई है कि रसूलों को झुठलाने और सरकशी एवं बग़ावत का मार्ग अपनाने वालों पर अल्लाह तआला इस दुनिया में अज़ाब का कोड़ा बरसाता रहा है जिस की खुली मिसाल फ़िरऔन और उस का लश्कर है जो तबाही से दो चार हुआ । इस में करमों के न्यायोंचित फल के क़ानून की एक झलक देखी जा सकती है जो क़ियामत के दिन हरकत में आयेगा।

12.''तुवा'' उस वादी का नाम है जो सीना के पहाड़ में है उसे पवित्र इस लिए फ़रमाया कि अल्लाह ने यहाँ तजल्ली फ़रमाई थी और हज़रत मूसा को नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया था।

13. फ़िरऔन (Pharoah) मिस्र के पुराने बादशाहों का लक़ब (उपनाम) है और जिस फिरऔन से हज़रत मूसा को मामला पेश आया था वह लगभग १४०० पू.ई. मिस्र में शासक था। फ़िरऔन की सरकशी यह थी की वह अपने को ख़ुदा का बन्दा समझने के बजाय आज़ाद और ख़ुदमुख़्तार मसझता था। स्वयं रब्बे-आला (सर्वोच्च स्वामी) होने का दावेदार था और हुकूमत एवं शासन के सारे काम अल्लाह से कुफ़्र और बग़ावत की बुनियाद पर अन्जाम देता था। उस ने ख़ुदसरी (उद्दण्डता) की बिना पर अल्लाह के बन्दों के साथ ज़ुल्म एवं जब्र का रवैय्या अपना रखा था। अत: वह उस समय की मुस्लिम (फ़रमाबरदार) क़ौम ''बनी इस्राईल'' पर बेहद ज़ुल्म ढा रहा था।

14. पाकीज़गी अपनाने का मतलब इस्लाम क़ुबूल करना है जो इन्सान को कुफ़्र और शिर्क की गन्दगियों से पाक करता है और ईमान और अच्छे कामों द्वारा उसे संवारता है।

15. अक़ीदों और कर्मों की पाकीज़गी का आधार अल्लाह का ख़ौफ़ (भय) है और अल्लाह का ख़ौफ़ उसी सूरत में पैदा हो सकता है जब कि इन्सान को ख़ुदा की सही माअरिफ़त (पहचान) हासिल हो जाये।''रब की राह दिखाऊँ'' से इशारा इसी माअरिफ़त इलाही (ख़ुदा की पहचान) की तरफ़ है।

16. बड़ी निशानी से मुराद लाठी के साँप बन जाने का चमत्कार है जो मूसा अलैहिस्सलाम को दिया गया था और जो इस बात की खुली निशानी थी कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की तरफ़ से रसूल बना कर भेजे गये हैं।

17. ताकि लोग हज़रत मूसा पर ईमान न लायें और उन की दअवत क़ुबूल न करें।

18. पुराने ज़माने के बादशाह सिर्फ हुकूमत (सत्ता) ही के दावेदार नहीं होते थे बल्कि प्रजा से अपनी पूजा भी कराते थे ताकि लोगों को उन के साथ लगाव हो । उन की हुकूमत मज़बूत हो और वह पूरी ख़ुदाई शान (ऐश्वर्य) के साथ हुकूमत कर सकें। अपनी इसी महानता (पवित्रता) को मनवाने के लिए वह अपना रिश्ता सितारों और देवी देवताओं से भी जोड़ते थे। और उन के अवतार होने का दावा करते थे। फ़िरऔन भी अपनी परस्तिश लोगों से कराता था और इस अर्थ में अपने सर्वोच्च स्वामी (रब्बे-आला) होने का दावेदार था। उस वक़्त मिस्र में बुत परस्ती प्रचलित थी और फ़िरऔन ने अपने अलावा किसी बुत की परस्तिश को क़ानूनी तौर पर मना नहीं किया था। इस से

ज़ाहिर है कि उस का अपने ईश्वरत्व और अपने सर्वोच्च स्वामी होने का दावा मूसा अलैहिस्सलाम के तौहीद (एकेश्वरवाद) की दअवत के मुक़ाबले में था । वह दुसरे ख़ुदाओं को जो नकारता था वह मात्र मूसा अलैहिस्सलाम को ज़िच करने के लिए था ।

फिरऔन के इस दावे का यह मतलब लेना सही न होगा कि वह कायनात का सृष्टा होने का दअवेदार था । क्यों कि यह दा'वा तो कोई मूर्ख ही कर सकता है । इसी तरह इस का यह मतलब लेना भी सही न होगा कि वह राजनीतिक अर्थों में अपने को इलाह और रब्बे-आला कहता था। अगर फ़िरऔन का यह दा'वा मात्र राजनितिक अर्थ में होता, तो वह लोगों से यह न कहता कि

"اِنِّیۡۤ اَخَافُ اَنۡ یُّبَدِّلَ دِیۡنَکُمۡ" (المؤمن:۲۶)

"मुझे अन्देशा है कि मूसा तुम्हारा दीन बदल न डाले," (सूरह मोमिन:२६) क्यों कि मात्र राजनीतिक शासन (Political Lordship) का दा'वा करने वाले व्यक्ति को इस से क्या मतलब कि लोगों का मज़हब बाक़ी रहता है या बदल जाता है? इसी तरह फ़िरऔन हज़रत मूसा से यह भी न कहता कि

اَجِئۡتَنَا لِتَلۡفِتَنَا عَمَّا وَجَدۡنَا عَلَیۡهِ اٰبَآءَنَا ۔ (یونس: ۷۸)

(क्या तू इस लिए आया है कि हमें अपने आबाई मज़हब (पैतृक धर्म) से हटा दे, (सूरह यूनुस :८७)

बेशक इस में बड़ा सबक़ है हर उस आदमी के लिए जो डरे। क्या तुम लोगों को पैदा करना ज़्यादा दुश्वार है या आसमान को? उस ने इस को बनाया। इस की छत बुलन्द की, और इस को दुरुस्त और हमवार किया,इस की रात ढाँप दी और इस का दिन निकाला। इस के बाद ज़मीन को बिछाया। इस में से इस का पानी और चारा निकाला। *(अल-क़ुर्आन)*

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾

26. बेशक इस में बड़ा सबक़ है हर उस आदमी के लिए जो डरे।[19]

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

27. क्या तुम लोगों को पैदा करना ज़्यादा दुश्वार है या आसमान को? उस ने इस को बनाया।[20]

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾

28. इस की छत बुलन्द की,[21] और इस को दुरुस्त और हमवार किया,[22]

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

29. इस की रात ढाँप दी और इस का दिन निकाला।[23]

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

30. इस के बाद ज़मीन को बिछाया।[24]

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

31. इस में से इस का पानी और चारा निकाला।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

32. और पहाड़ इस में गाड़ दिये।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

33. ताकि तुम्हारी और तुम्हारे मवेशियों के जीवन का सामान हो।[25]

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

34. फिर जब वह बड़ा हंगामा बरपा होगा।[26]

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

35. जिस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा।[27]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

36. और दोज़ख़ हर देखने वाले के लिए बेनिक़ाब कर दी जायेगी।

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

37. तो जिस ने सरकशी की होगी,[28]

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

38. और दुनिया की ज़िन्दगी को वरीयता दी होगी,[29]

19. अर्थात जिन लोगों के अन्दर अल्लाह का कुछ डर है उन के लिए इस घटना में बड़ा सबक़ इस बात का कि यह दुनिया अंधेर नगरी नहीं है बल्कि अल्लाह अपने न्याय विधान के साथ इस पर शासन कर रहा है। फ़िरऔन जैसे अत्याचारी और वैभवी बादशाह पर भी सबक सिखाने वाला कोड़ा बरसा है। इस लिए नाफ़रमानों को इस दुनिया में जो ढील मिलती है उस से ये नतीजा निकालना सही नहीं है कि इन्सान को अल्लाह के सामने अपने कर्मों के सिलसिले में कोई जवाबदेही नहीं करनी है और न ही करमों का फल मिलने के क़ानून की कोई हक़ीक़त है।

20. अर्थात आसमान की सृष्टि जो अन गिनत सितारों, अक़्ल को हैरत में डाल देने वाली कहकशाओं (आकाशगंगा) विशाल एवं भव्य ग्रहों, और ज़बरदस्त निज़ामे शम्सी (Solar System सौर परिवार) पर आधारित है और जिन के बीच कमाल दर्जे का प्रबन्ध पाया जाता है, कोई आसान काम नहीं है। लेकिन जब अल्लाह तआला के लिए विशाल एवं भव्य जगत को पैदा करना (उत्पति) आसान हुआ तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा करना उस के लिए क्यों मुश्किल हो? क्या इतनी साफ़ और खुली बात भी तुम्हारी बुद्धि में नहीं समाती?

21. आसमान की बुलन्दी का अन्दाज़ा इस से किया जा सकता है कि कुछ सितारे इतनी दूरी पर हैं कि उन की रौशनी को ज़मीन तक पहुँचने में कई नूरी साल (Light year) लग जाते हैं।

22. अर्थात् आसमान का सिर्फ माद्दा (Matter) पैदा कर के नहीं छोड़ दिया बल्कि उस का माद्दा पैदा करने के बाद उस से विशाल एवं भव्य कायनात को साकार किया । उस के हर हर विभाग को आपस में सम्बद्ध व सहायक किया और ऐसा सुव्यवस्थित किया कि मालूम होता है ऊपरी जगत एक सजी सजायी और रौनक़ भरी महफ़िल है जो हर देखने वालों को मोहित करती और सोचने एवं विचार करने पर उकसाती है।

23. दिन और रात को आसमान से सम्बन्धित करना इस लिहाज़ से है कि इन्सान को रात और दिन के आसार आसमान पर ज़ाहिर होते दिखाई देते हैं।

24. इस का मतलब यह नहीं है कि पहले आसमान को पैदा किया और इस के बाद ज़मीन को बल्कि मतलब यह है कि आसमान के अलावा ज़मीन को भी पैदा किया और उसे बिछाया । आसमान के कमालात (कौशल) और ज़मीन की नेमतें दोनों ग़ौर करने के लायक़ हैं।

25. ज़मीन की यह दया एवं हिकमत से भरी व्यवस्था एक महान योजना का पता देती है और क़ुर्आन इस योजना की पुष्टि करता है कि वह मृत्यु के पश्चात मिलने वाला जीवन और कर्मों का बदला है।

26. अर्थात क़ियामत जो इस कायनात का सब से बड़ा हंगामा है।

27. इन्सान जो कुछ इस दुनिया में करता है वह सब उस के ज़ेहन के पर्दों पर अंकित (नक़्श) हो जाता है। इसी बिना पर वह अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे हुए वर्षों के वाक़िआत अपनी याद्दाश्त की मदद से याद करता है। यह स्वयं इस बात की दलील है कि इन्सान के कर्मों का रेकार्ड ख़ुद इन्सान का ज़ेहन तैयार कर रहा है। क़ियामत के दिन उस की याद्दाश्त इतनी तेज़ होगी कि उस के कर्मों के सारे चिन्ह उस के ज़ेहन पर उभर आऐंगे ।

28. अर्थात अल्लाह का वफ़ादार बन्दा बन कर रहने के बजाय कुफ़्र एवं बग़ावत का रवैया अपनाया होगा । ऊपर फ़िरऔन की सरकशी की मिसाल ग़ुज़र चुकी ।

29. अर्थात् आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया को लक्ष्य बनाया और उस के फ़ायदे को प्राथमिकता दी।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

39. दोज़ख़ ही उस का ठिकाना होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

40. अलबत्ता जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरा होगा [30] और अपने नफ़्स को बुरी ख़ुवाहिशों से रोका होगा।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

41. जन्नत उस का ठिकाना होगी।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

42. (ऐ नबी !) यह लोग तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह घड़ी कब आ ठहरेगी।

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

43. उस का वक़्त बताने से तुम्हें क्या वास्ता।[31]

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

44. उस का इल्म तो तुम्हारे रब ही को है।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

45. तुम्हारा काम सिर्फ उन लोगों को ख़बरदार करना है जो उस से डरें।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

46. जिस रोज़ वह उसे देख लेंगे तो उन्हें ऐसा महसूस होगा कि वह (दुनिया में) एक शाम या एक सुबह से अधिक नहीं ठहरे थे।[32]

30. अर्थात जो दुनिया में इस ख़याल से काँपते रहे कि अल्लाह की अदालत में हाज़िर हो कर अपने आमाल की जवाबदेही करना है। ज़ाहिर है जिस के अन्दर जवाबदेही का यह तसव्वुर होगा वह अल्लाह के वफ़ादार बन्दे ही की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ारेगा ।

31. मतलब यह कि रसूल को क़ियामत का समय बताने के लिए नहीं भेजा गया है बल्कि उसे ख़बरदार करने के लिए भेजा गया है। क़ियामत तो अपने समय पर आ कर रहेगी जिस तरह कि मौत अपने समय पर आ कर रहती है हालाँकि इन्सान को उस का समय पहले से मालूम नहीं होता ।

32. मतलब यह कि इस समय क़ियमत के लिए वह जल्दी मचा रहे हैं लेकिन जब वह आयेगी तो उन्हें महसूस होगा कि बहुत जल्द आ गई। और उन्हें दुनिया में जो मोहलत मिलि थी वह बहुत थोड़ी थी। वक्त एक इज़ाफ़ी (Relative सम्बन्ध सूचक) चीज़ है। घन्टो के मुक़ाबले में मिनट समय का एक बहुत ही छोटा हिस्सा मालूम होता है इसी तरह दिनों के मुक़ाबले में घन्टे, और महीनों एवं सालों के मुक़ाबले में दिन । क़ियामत के दिन जब ज़मान-व-मकान (Time And Space) बदल जायेंगे और क़ियामत का एक दिन हज़ार साल का होगा तो जो समय इन्सान ने दुनिया में गुज़ारा था वह उसे वहाँ के ज़मान (Time) के मुक़ाबले बहुत थोड़ा मालूम होगा और उस समय यह एहसास उभरेगा कि काश अपने ये क़ीमती लम्हे अपनी आख़िरत बनाने में लगाये होते ।

८०. सूरह अबस

परिचय

नाम : सूरह की शुरूआत लफ़्ज़ अबस (त्योवरी चढ़ाई) से हुई है जो एक विशेष घटना की ओर इशारा करता है । इसी सम्बन्ध से इस सूरह का नाम अबस रखा गया है।

नाज़िल होने का समय : यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस ज़माने में नाज़िल हुई होगी जब कि मक्का वालों के सामने दअवत पेश हो चुकी थी और क़ुरैश के सरदारो ने उसे रद्द कर दिया था।

केन्द्रीय विषय: ''इन्ज़ार'' अर्थात हिसाब के दिन से इन्सान को ख़बरदार करना ताकि वह अक़ीदा और अमल में (आस्था और कर्म में) सही रवैय्या अपनाये । पिछली सूरह के साथ इस का सम्बन्ध बिलकुल स्पष्ट है। उस के आखिर में यह फ़रमाया गया था कि तुम उन्हीं लोगें को ख़बरदार कर सकते हो जो उस से डरने के लिए आमादा हों । इस सूरह में साफ़ बताया गया है कि जो लोग क़ियामत को नकारने की ज़िद पकड़े हों उन्हें अपने अन्जाम की कोई परवाह न हो उन के पीछे इस्लाम की तब्लीग़ (प्रचार व प्रसार) के जोश में वक़्त बर्बाद न किया जाये ।

कलाम की तरतीब : आयत १ से १० में एक विशेष घटना की ओर इशारा करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम को तवज्जोह दिलाई गई है कि जो लोग घमंड, बड़ाई और हटधर्मी में डूबे हुए हैं उन के पीछे पड़ने के बजाय उन लोगों की ओर ध्यान लगाऐं जो हक़ के चाहने वाले (इच्छुक) है और अपनी इस्लाह (सुधार) करना चाहते हैं।

आयत ११ से १६ में क़ुर्आन की महिमा और वर्चस्वता बयान की गयी है ताकि स्पष्ट हो जाये कि जिस चीज़ को क़ुबूल करने की द्अवत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दे रहे हैं वह कितने ऊँचे दर्जे की चीज़ है। अत: जो इस की नाक़दरी करेंगे वह अपने ही आप को बहुत बड़ी भलाई से महरूम रखेंगे। इस महान कलाम को पेश करने के लिए प्रतिष्ठित (पुरवक़ार) तरीक़ा ही अपनाया जाना चाहिए।

आयत १७ से ३२ में क़ियामत का इन्कार करने वालों को तंबीह और इन्सान के दोबारा उठाये जाने पर अल्लाह की रुबुबियत (स्वामित्व) से दलील दे कर बहस की गई है।

आयत ३३ से ४२ में क़ियामत की हौलनाकी की तस्वीर पेश करते हुए नेक किरदार और बदकिरदार लोगों का अलग अलग अन्जाम बयान किया गया है।

८०. सूरह अबस

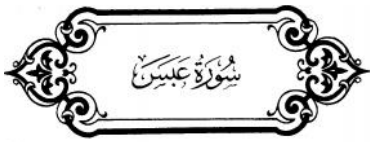

سُورَةُ عَبَسَ

अनुवाद आयते :४२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. त्योवरी चढ़ाई [1] और मुँह फेर लिया,

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۙ ﴿١﴾

2. इस बात पर कि उस के पास नेत्रहीन आया।[2]

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۗ ﴿٢﴾

3. (ऐ पैग़म्बर !)तुम्हें क्या मालूम शायद वह पाकीज़गी हासिल करता।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۙ ﴿٣﴾

4. या नसीहत पर ध्यान देता और नसीहत उस के हक़ में लाभकारी होती।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۗ ﴿٤﴾

5. जो मनुष्य बेपरवाही बरतता है।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۙ ﴿٥﴾

6. उस की तरफ तो तुम तवज्जो करते हो।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۗ ﴿٦﴾

7. हालाँकि उस के इस्लाह क़ुबूल न करने की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۗ ﴿٧﴾

8. और जो तुम्हारे पास दौड़ा आता है।

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۙ ﴿٨﴾

9. और वह अल्लाह से डरता भी है।

وَهُوَ يَخْشٰى ۙ ﴿٩﴾

10. उस से तुम बेपरवाही बरतते हो।[3]

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۚ ﴿١٠﴾

11. हरगिज़ नहीं [4]यह तो एक याददेहानी है।[5]

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۚ ﴿١١﴾

12. तो जो चाहे इसे स्वीकार करे।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ ﴿١٢﴾

1. त्योवरी चढ़ाने की क्रिया जैसा कि आगे के मज़मून से स्पष्ट है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हुई थी । लेकिन यहाँ मुख़ातब (मध्यम पुरूष) के बजाय ग़ायब का सीग़ा (प्रथम पुरूष) इस्तेमाल किया गया है। ख़बरदार करने का यह हक़ीमाना (विवेकपुर्ण) अन्दाज़ है।

2. मुराद अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रजिअल्लाहु अन्हा हैं जो नेत्रहीन (अन्धे) थे । यह हज़रत ख़दीजा रजि. के फ़ूफीज़ाद भाई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निस्बती भाई (Brother in law) थे । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें तुच्छ समझ कर त्योवरी नहीं चढ़ाई थी क्यों कि आप ग़रीबों, नादारों और मजबूरों का सब से अधिक सम्मान करने वाले थे । बल्कि उन का आना इस कारण आप को नाग़वार हुआ था कि आप की मजलिस में उस वक़्त क़ुरैश के बड़े बड़े सरदार मौजूद थे जिन के सामने आप बड़े लगन एवं तन्मेयता के साथ इस्लाम की दअवत पेश कर रहे थे । इस अवसर पर अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रजि. की ओर ध्यान मोड़ देने से क़ुरैश के सरदारों की तरफ़ तवज्जोह में कमी होती इस लिए आप ने क़ुरैश के सरदारों से बात चीत का सिलसिला जारी रखा और अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम की तरफ़ तवज्जोह नहीं फ़रमाई । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह चूक किसी ग़लत भावना के तहत नहीं हुई थी बल्कि दअवत के जोश में हुई थी । लेकिन यह एक नापसंदीदा बात थी इस लिए अल्लाह तआला ने इस पर पकड़ फ़रमाई ।

3. इन आयत में जिस घटना की ओर इशारा किया गया है वह संक्षेप में यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में अबू जहल, उमय्या बिन ख़ल्फ़, उत्बा वग़ैरा क़ुरैश के सरदार मौजूद थे जिन्हें आप इस्लाम क़ुबूल करने की दअवत दे रहे थे कि इस बीच इब्ने उम्मे मक्तूम रजि. जो नेत्रहीन थे तशरीफ़ लाए । वह अपनी इस्लाह के उद्देश्य से और नसीहत सुनने की इच्छा लिये हुए तशरीफ़ लाए थे । उन की ओर ध्यान देने के बजाय आप क़ुरैश के सरदारों की तरफ़ ही आकर्षित रहे जो नसीहत पर कान धरने के लिए आमादा नहीं थे । यह बात नुबुव्वत की शान और दअवत की प्रतिष्ठा के ख़िलाफ़ थी । इस लिये इस पर तंबीह नाज़िल हुई। इस तंबीह का रुख यूँ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर प्रतीत होता है लेकिन असल में इस की चोट दअवत का इन्कार करने वालों पर पड़ रही है। और यह वाज़ेह करना मक़सद है कि जिन लोगों पर यह हक़ की दअवत खुल चुकी है और वह जानते बूझते इन्कार पर अड़े हैं उन को उन के हाल पर छोड़ दो और अपनी तवज्जोह ख़ुदा के उन बन्दों की तरफ़ फेर दो जो हिदायत के इच्छुक और क़ुर्आन के क़दरदान हैं और चाहते हैं कि उन की ज़िन्दगीयों में पाकीज़गी आ जाये। दूसरी तरफ़ इन्कार करने वालों को डराया गया है कि तुम्हारी इस्लाह के सिलसिले में पैग़म्बर की इस बेचैनी और अनथक कोशिश के बावजूद अगर तुम इस पर कान धरने के लिए आमादा नहीं हो तो जिस किताब की तरफ़ तुम्हें दअवत दी जा रही है उस की प्रतिष्ठा और उस का महत्व इस से कम होने वाली नहीं बल्कि तुम खुद ही अप्रतिष्ठित और महत्वहीन हो जाओगे । यह किताब तो बेहद बुलंद और उच्च कोटि की है। इस की नाक़दरी करने वालों के हिस्से में सिवाय महरूमी के कुछ नहीं आ सकता।

4. अर्थात् ऐसे नाक़दरों के पीछे पड़ने की हरगिज़ ज़रूरत नहीं ।

5. मुराद क़ुर्आन है

13. यह ऐसे सहीफ़ों (पन्नों) में है जो अत्यन्त प्रतिष्ठित हैं।[6]

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾

14. उच्चकोटी के और पाकिज़ा हैं,[7]

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾

15. ऐसे कातिबों (लिपिकों) के हाथों में है,[8]

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾

16. जो सम्मानित और वफ़ादार हैं।[9]

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

17. ग़ारत हो[10] इन्सान कैसा नाशुकरा है !

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾

18. उसे अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया ?[11]

مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾

19. एक बूँद से पैदा किया और उस की मन्सूबा बन्दी की।[12]

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾

20. फिर उस के लिए राह आसान कर दी।[13]

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

21. फिर उस को मौत दी[14] और क़ब्र में दफ़न कराया।[15]

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾

22. फिर जब वह चाहेगा उसे उठा खड़ा करेगा।[16]

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾

23. हरगिज़ नहीं। उस ने उस आज्ञा का पालन नहीं किया[17] जो अल्लाह ने उसे दिया था।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾

24. इन्सान ज़रा अपने भोजन को देखे।[18]

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿٢٤﴾

25. कि हम ने ख़ूब पानी बरसाया,[19]

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾

26. फिर ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा,[20]

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾

6. यहाँ क़ुर्आन की महानता बयान की गई है और यह स्पष्ट करना मक़सूद है कि जो लोग इस कलाम की नाक़दरी करते हैं वह अपना ही सम्मान घटाते हैं वर्ना इस का जो आदर सम्मान आसमानों में है उस का अगर इन्हें अन्दाज़ा होता तो वह हरगिज़ नाक़दरी न करते ।

7. क़ुर्आन शैतान की घुसपैठ से बिलकुल पाक है। इस में असत्य की मिलावट संभव ही नहीं क्यों कि शैतान की पहुँच इस किताब तक हो ही नहीं सकती । उन्हें इस से बहुत दूर रखा गया है। लिहाज़ा क़ुर्आन शुरू से ले कर आख़िर तक शुद्ध रूप से अल्लाह के ही कलाम पर आधारित और हर प्रकार की मिलावटों से पाक है।

8. मुराद फ़रिश्ते हैं जो क़ुर्आन को लिख रहे थे ।

9. यह उन फ़रिश्तों के विषेश गुण हैं जो क़ुर्आन को आसमान पर लिख रहे थे और उसे पूरी हिफ़ाज़त के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे थे । इस का उद्देश्य इस बात को साफ़ करना है कि यह क़ुर्आन जिन फ़रिश्तों द्वारा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाया जा रहा है वह ऐसी शान वाले, उच्चकोटि के और अमानतदार हैं कि उन से किसी तरह की ख़ियानत (ग़बन, बेईमानी) का होना मुमकिन ही नहीं और न वह शैतान को किसी तरह की घुसपैठ का मौक़ा दे सकते हैं इस लिए इस में शक की जर्रा बराबर गुन्जाइश नहीं कि वह अल्लाह की इस अमानत को जूँ का तूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे हैं।

10. यहाँ से कलाम का रुख़ कुफ़्फ़ार की तरफ़ मुड़ता है।

11. अर्थात् इन्सान अपनी वास्तविकता पर विचार करें कि उस की ज़िन्दगी की शुरूआत पानी की एक तुच्छ बूँद से हुई। फिर उस में यह घमंड कहाँ से पैदा हो जाता है कि वह ख़ुदा के सामने अपने को कुछ समझने लगे और उस के इस एहसान को कि उसे एक बेहतरीन मख़्लूक़ की हैसियत दी भुला दें।

यहाँ क़ियामत के दिन इन्सान के उठाये जाने पर भी तर्कवितर्क है। अर्थात् जिस हस्ती के करिश्मों का यह हाल हो कि वह पानी की एक तुच्छ बूँद में इन्सान जैसी महान सृष्टि को उठा खड़ा कर सकती है उस के लिए आख़िर यह क्यों असंभव समझा जाये कि वह क़ियामत के दिन उसे दोबारा उठा खड़ा करेगी?

12. या'नी हर इन्सान की रचना एक मन्सूबे के साथ हुई है। जैसे उस के रंग रूप, आकार, ज़ेहनी सलाहियत, काम करने की क्षमता, शक्ति, जन्म स्थल, और मौत का वक़्त इत्यादि. अल्लाह के इस मन्सूबे के तहत ही इन्सान ज़िन्दगी गुज़ारता है और इस से मुक्त होना उस के लिए असंभव है। यह इस बात की दलील है कि इन्सान की रचना का एक उद्देश्य है।

13. मुराद ज़िन्दगी की राह है जिस के उतार चढ़ाव को इन्सान सरलता के साथ तय करता है। उस के अस्तित्व को बाक़ी रखने और उस को परवान चढ़ाने के लिए जिन जिन साधनों की ज़रूरत थी सब मुहैय्या कर दिये गये हैं। मिसाल के तौर पर बच्चा अपनी प्रकृति के अनुरूप माँ की छातियों को चूसता है और उस के लिए भोजन की प्राप्ति आसान हो जाती है। इसी तरह श्वसन क्रिया (Respiration System) एक मुश्किल कार्य है। लेकिन इन्सान मरते दम तक इस तरह लगातार साँस लेता और बाहर करता रहता है कि उसे ज़रा भी थकावट नहीं होती।

14. या'नी मौत हर व्यक्ति के लिए निश्चित है। इस से कोई भाग नहीं सकता और जब इन्सान की बेबसी का यह हाल है कि वह अपनी मौत को एक पल के लिए भी टाल नहीं सकता तो फिर वह किस बल बूते पर अपने पैदा करने वाले से कुफ़्र करता है।

15. मालूम हुआ कि मुर्दों को क़ब्र में दफ़न करना प्राकृतिक विधि (Natural) है इस के विरुद्ध

जलाने का तरीक़ा न इल्हामी (अल्लाह की ओर से मन में डाला हुआ) है और न शरिअत के मुताबिक़। इस्लाम चूँकि महद (झूला) से ले कर क़ब्र तक का दीन है इस लिए उस ने जहाँ जीने का सही तरीक़ा बताया है वहाँ मरने के बाद की भी सही रहनुमाई की है।

16. या'नी इन्सान को दोबारा उठा खड़ा करना अल्लाह की मर्ज़ी पर आश्रित है। यह काम उस के लिए न मुश्किल है और न उस के इरादे में कोई चीज़ रुकावट बन सकती है।

17. आज्ञा से मुराद वह तमाम आदेश हैं जो इन्सान की फ़ितरत (प्रकृति) में अल्लाह तआला ने समर्पित कर दिये। जैसे एक ख़ुदा की परस्तिश करना, सच बोलना, इन्साफ़ करना, ज़ुल्म न करना वग़ैरा और वह आदेश भी जो उस ने अपने पैग़म्बरों और किताबों द्वारा नाज़िल फ़रमाए।

18. या'नी मौत के बाद मिलने वाली ज़िन्दगी की बहुत सारी दलीलें हैं। इन्सान जिस भोजन से रोज़ाना फ़ायदा उठाता है और उसे मामूली ख़्याल करता है ज़रा उसी पर ग़ौर कर के देखे कि वह पैदा कैसे होता है? अगर अल्लाह उसे पैदा न करता तो इन्सान को आहार कहाँ से मयस्सर होता? उस की परवरिश का यह सामान और स्वामित्व (रुबूबियत) का यह प्रबन्ध इस बात का तक़ाज़ा करता है कि इन्सान से इन नेमतों के बारे में पूछ ताछ हो कि उस ने अपने स्वामी (रब) की इन नेमतों को पा कर उस की शुक्रगुज़ारी (कृतज्ञता) का रास्ता अपनाया या नाशुक्री का।

19. बारिश का कोई अलग देवता नहीं है बल्कि अल्लाह ही है जो आसमान से पानी बरसाता है जिस से इन्सान को पीने के लिए भी पानी मयस्सर आता है और ज़मीन के फलने फूलने का भी सामान होता है। अगर वह बारिश का इन्तेज़ाम न करता तो क्या इन्सान के लिए ज़िन्दा रहना संभव होता?

20. यह अल्लाह ही की क़ुदरत का करिशमा है कि वह पानी बरसाता है और ज़मीन को फ़ाड़ कर उस के अन्दर से कोंपलें निकालता है और वनस्पति उगाता है। यह सब देखते हुए यह कहने की ज़ुरअत किस तरह करते हो कि वह इस बात पर क़ादिर (सक्षम) नहीं है कि क़ियामत के दिन ज़मीन फाड़ कर मुर्दों को जिला उठाये ।

फिर उस में उगाए गल्ले। और अंगूर और तरकारियाँ, और ज़ैतून और खजूर, और घने बाग, और मेवे और चारा, तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लाभ के लिए। फिर जब वह कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ गरजेगी, उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, अपनी माँ और अपने बाप से, अपनी बीवी और अपनी औलाद से, उस रोज़ हर किसी को अपनी अपनी पड़ी होगी। *(अल-क़ुर्आन)*

27. फिर उस में उगाए गल्ले। فَأَنۢبَتۡنَا فِيهَا حَبّٗا ٢٧

28. और अंगूर और तरकारियाँ, وَعِنَبٗا وَقَضۡبٗا ٢٨

29. और ज़ैतून और खजूर, وَزَيۡتُونٗا وَنَخۡلٗا ٢٩

30. और घने बाग, وَحَدَآئِقَ غُلۡبٗا ٣٠

31. और मेवे और चारा, وَفَٰكِهَةٗ وَأَبّٗا ٣١

32. तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लाभ के लिए।[21] مَّتَٰعٗا لَّكُمۡ وَلِأَنۡعَٰمِكُمۡ ٣٢

33. फिर जब वह कानों को बहरा कर देने वाली आवाज़ गरजेगी,[22] فَإِذَا جَآءَتِ ٱلصَّآخَّةُ ٣٣

34. उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, يَوۡمَ يَفِرُّ ٱلۡمَرۡءُ مِنۡ أَخِيهِ ٣٤

35. अपनी माँ और अपने बाप से, وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ٣٥

36. अपनी बीवी और अपनी औलाद से, وَصَٰحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ٣٦

37. उस रोज़ हर किसी को अपनी अपनी पड़ी होगी।[23] لِكُلِّ ٱمۡرِئٖ مِّنۡهُمۡ يَوۡمَئِذٖ شَأۡنٞ يُغۡنِيهِ ٣٧

38. कितने ही चेहरे उस रोज़ रौशन होंगे,[24] وُجُوهٞ يَوۡمَئِذٖ مُّسۡفِرَةٞ ٣٨

39. हँसते हुए और आनन्दित, [25] ضَاحِكَةٞ مُّسۡتَبۡشِرَةٞ ٣٩

40. और कितने ही चेहरे उस रोज़ धूल से पटे होंगे, وَوُجُوهٞ يَوۡمَئِذٍ عَلَيۡهَا غَبَرَةٞ ٤٠

41. उन पर स्याही छायी होगी।[26] تَرۡهَقُهَا قَتَرَةٌ ٤١

42. ये होंगे वही काफ़िर और दुराचारी लोग। أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡكَفَرَةُ ٱلۡفَجَرَةُ ٤٢

21. अर्थात् क्या ये नेमतें जिन से तुम रात दिन फ़ायदा उठाते हो, अपने साथ ज़िम्मेदारी का कोई तसव्वुर नहीं लातीं? जिस ख़ुदा ने तुम पर ये एहसानात किये हैं क्या वह तुम से पूछ ताछ नहीं करेगा कि तुम उस के शुक्रगुज़ार बन्दे बन कर रहे या इन्कार करने वाले बन कर।

22. मुराद क़ियामत की हौलनाक आवाज़ है। जब आख़िरी सूर फूँका जायेगा तो उस की हौलनाक आवाज़ तमाम मरे हुए इन्सानों को उठा खड़ा करेगी ।

23. इशारा है इस बात की तरफ़ कि दुनिया में इन्सान अपने क़रीबी सम्बन्धियों की ख़ातिर सत्य स्वीकार करने से भागता है लेकिन क़ियामत के दिन की मुसीबत ऐसी होगी कि न यह उन के काम आ सकेगा और न वह इस के काम आ सकेंगे। हर व्यक्ति को अपनी नजात की चिन्ता लगी होगी और किसी को होश न होगा ।

24. यह मुख़लिस (निश्छल) मोमिनों के चेहरे होंगे जो ईमान की रौशनी से दमक रहे होंगे ।

25. ख़ुशी इस बात की कि वह दुनिया के इम्तिहान में कामयाब हुए और उन की मेहनत ठिकाने लगी । चेहरों की शगुफ़्तगी (प्रफुल्लता) उन के नेकी अपनाने का नतीजा होगी और जन्नत का परवाना (अनुमति पत्र) पा कर वह आनन्दित और प्रसन्नचित होंगे ।

26. ये काफ़िरों (न मानने वालों) के चेहरे होंगे जिन पर कुफ़्र (इन्कार) की सियाही छायी हुई होगी और उन के बुरे कर्म उन के चेहरों को ख़ाक में लिप्त कर रहे होंगे ।

सूरह अत्-तकवीर

८१. अत्-तकवीर

नाम : इस सूरह की पहली आयत में ख़बरदार किया गया है कि क़ियामत के दिन सूरज की बिसात लपेट दी जायेगी। लपेटने के लिए लफ़्ज़ ''कुव्विरत''------इस्तेमाल हुआ है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तकवीर है। यानी वह सूरह जिस में सूरज लपेटने का ज़िक्र (वर्णन) है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आरम्भिक काल में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्री विषय :- ग़फ़लत (लापरवाही) में पड़े हुए इन्सानों को हिसाब के दिन से ख़बरदार करना है और यह स्पष्ट करना है कि पैग़म्बर और क़ुर्आन इस की जो ख़बर दे रहे हैं वह हर तरह के संदेहों से ऊपर है। पिछली सूरह में क़ियामत की हौलनाकी का ज़िक्र था। इस सूरह में उस की हौलनाकी की तस्वीर खींची गई है कि आदमी क़ियामत को अपने सामने देखने लगता है। गोया यह सूरह क़ियामत की जीती जागती तस्वीर है। चुनान्चे हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति क़ियामत के दिन को अपनी आँखो से देखना चाहता हो वह सूरह तकवीर, सूरह इन्फ़ितार और सूरह इन्शिक़ाक़ को पढ़ ले।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द ४ पृष्ट ४७४ अहमद व तिर्मिज़ी के हवाले से)

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ६ में क़ियामत के पहले हादसे (पहली फ़ूँक) की तस्वीर खींची गई है और आयत ७ से १४ में दूसरे हादसे (दूसरी फूँक) की।

आयत १५ से २५ क़ुर्आन और पैग़म्बर के बारे में स्पष्ट किया गया है कि वह जो द्अवत पेश कर रहे हैं और ख़बर दे रहे हैं वह हक़ और सच्चाई पर आधारित है।

आयत २६ से २९ में इन्कार करने वालों को तंबीह है कि क़ुर्आन की राह को छोड़ना हक़ और सच्चाई की राह को छोड़ना है। इस लिए वह सोचें कि इस से इन्कार कर के किस खड्ड में गिरना चाहते हैं?

८१.सूरह अत्-तकवीर

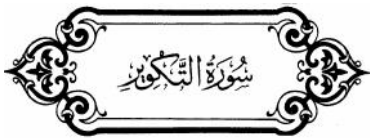

अनुवाद आयतें : २९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **जब सूरज लपेट दिया जायेगा।[1]**

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١

2. **और जब सितारे बेनूर हो जायेंगे।[2]**

وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝٢

3. **और जब पहाड़ चलाये जयेंगे।[3]**

وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣

4. **और जब दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जायेंगी,[4]**

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤

5. **और जब जंगली जानवर इकट्ठे किये जायेंगे,[5]**

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝٥

6. **और जब समुद्र भड़का दिये जायेंगे,[6]**

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

7. **और जब लोगों को (विभिन्न गिरोहों में) बाँट दिया जायेगा,[7]**

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝٧

8. **और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जायेगा,**

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝٨

9. **कि वह किस गुनाह में मारी गई?[8]**

بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝٩

10. **और जब आमाल नामे (कर्म पत्र) खोल दिये जायेंगे,[9]**

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

11. **और जब आसमान की खाल खींच ली जायेगी।[10]**

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١١

1. सूरज को लपेट दिये जाने से मतलब यह है कि यह आसमानी चिराग़ जिस की रौशनी करोड़ों मील तक फैली हुई है और जिस से पूरा जगत जगमगा रहा है, क़ियामत का धमाका होते ही गुल हो जायेगा । और जब सूरज ही बुझ जायेगा तो यह दुनिया जिस बड़े हादसे से दोचार होगी उस की कल्पना मात्र से इन्सान काँप उठता है।

सूरज इस कायनात की सब से बड़ी ताक़त है और नई वैज्ञानिक खोजों के अनुसार ज़मीन का तल सूरज से जो उर्जा प्राप्त करता है, चार मिलियन हार्स पावर प्रति वर्ग मील है। गोया सूरज ज़मीन के लिए पावर हाउस की हैसियत रखता है। क़ुर्आन यह ख़बर देता है कि एक रोज़ आयेगा जब कि सूरज अपनी इस महान शक्ति को खो चुका होगा और वह क़ियामत का दिन होगा । यह ख़बर खुद अल्लाह तआला दे रहा है जो सूरज सहित पूरी कायनात का ख़ालिक़ और मालिक है तो यकीन करने के लिए यह बात बिलकुल काफ़ी है। फिर भी जहाँ तक साइंस का सम्बन्ध है वह भी इस वास्तविकता को स्वीकार करती है कि सूरज को आख़िरकार बुझ जाना है।

"And eventually the sun will become a black, dwarf, a very dense, non-luminous object of degenerate matter." (The New Encyclopedia Britannica Vol. 17. P.808).

एक समय में इन्सान सूरज को देवता समझ कर उस की पूजा करता रहा है और आज भी नई वैज्ञानिक खोजों के बावजूद सूरज के पूजने वालों की कमी नहीं है लेकिन क़ुर्आन का यह बयान कि सूरज ख़ुदा नहीं बल्कि ख़ुदा की पैदा की हुई कायनात का एक अंश और ख़ुदा का महकूम (आधीन) है और उसी समय तक रौशनी देता रहेगा जब तक अल्लाह का वह हुक्म नहीं आ जाता जो कायनात की बिसात को उलट कर रख देगा । जिस दिन वह हुक्म आ जायेगा सूरज अपनी तमाम शक्ति खो देगा और उस की रौशनी बिलकुल समाप्त हो जायेगी ।

2. दुनिया को रौशन करने वाले सूरज और जगमगाते हुए तारों को देख कर इन्सान यह ख़याल करने लगता है कि यह दुनिया सदा बहार है और इस की रौनक कभी ख़त्म होने वाली नहीं लेकिन क़ुर्आन दो टोक (Emphatic) अन्दाज़ में इन्सान को आगाह करता है कि यह ख़याल का फ़रेब है । हक़ीक़त में एक ऐसा समय आने वाला है और वह बहुत क़रीब है जब कि सारे चिराग़ बुझा दिये जायेंगे और यह दुनिया अन्धेरे के हवाले हो जायेगी ताकि तोड़ फोड़ की इस क्रिया से एक नया जगत अस्तित्व (वजूद) में लाया जा सके जिस में कर्मों के फल प्रकट हों ।

3. मालूम होता है कि क़ियामत का झटका लगते ही ज़मीन अपना आकर्षण (Attraction) खो देगी इस से जो भयावह स्थिति पैदा होगी उस की हल्की सी कल्पना ही इन्सान को चौंका देने के लिए काफ़ी है । इसी लिए पहाड़ों को उड़ा देने का वर्णन क़ुर्आन में कई स्थानों पर है।

4. क़ुर्आन जिस दौर में नाज़िल हुआ उस दौर में दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ जो जनने के क़रीब होती थी सब से ज़्यादा क़ीमती चीज़ मानी जाती थी और अरब वालों की नज़र में यह प्रिय माल था । इस प्रिय माल का ज़िक्र मिसाल देने के लिए किया गया है ताकि इस से यह स्पष्ट हो जाये कि क़ियामत का धमाका होते ही इन्सान अपने प्रिय माल को भूल जायेगा । दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ जो आज उस के मालिक के नज़दीक मूल्यवान पूँजी की हैसियत रखती है इस तरह बे क़ीमत हो कर आवारा फिरने लगेगी कि उन को कोई पूछने वाला न होगा क्यों कि क़ियमात के शुरू होते ही इन्सान को किसी भी चीज़ का होश नहीं रहेगा ।

ध्यान रहे कि ऊँटनी का यह ज़िक्र उस समय की अरबों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए गोया उन की क़ीमती पूँजी पर उंगली रख कर उस के बे क़ीमत हो जाने को प्रकट करने जैसा था । जिस

ने कलाम में ज़बरदस्त तासीर (प्रभाव) पैदा कर दिया । इस मिसाल का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि क़ियामत का बिगुल बजते ही माल और दौलत के यह ढेर जिस की प्राप्ति (हुसूल) को इन्सान अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बनाये हुए है और इसी कारण ज़िन्दगी के सही मक़सद को क़ुबूल करने के लिए तैयार नहीं होता सब बेकार और मिट जायेंगे । चाहे वह प्रिय ऊँटनी की सूरत में हो या क़ीमती कारों, बड़े बड़े कारखानों और शानदार इमारतों की सूरत में ।

5. यानी क़ियामत के जाहिर होते ही ऐसी ख़ौफ़नाक हालत पैदा होगी कि इन्सान तो इन्सान जंगली जानवरों पर भी हैबत (आतंक) छाई होगी और वह जंगलों से भाग कर दूसरे जानवरों और इन्सानों के साथ इकट्ठा होने लगेंगे ।

6. यूँ तो यह बात अजीब मालूम होती है कि समुद्र में आग लग जायेगी लेकिन क़ियामत का हादसा स्वयं बहुत ही अजीब है। इस का पहला झटका ही तमाम अजीब बातों को ख़त्म कर के रख देगा क्यों कि क़ियामत का मतलब ही यह है कि कायनात की साख्त (बनावट) में ज़बरदस्त तब्दीली होगी और महान क्रान्ति नमूदार होगी । वैसे भी पानी, आक्सीजन और हाइड्रोजन गैसों का मिश्रण है, और अल्लाह का एक इशारा उस के इस रसायनिक मिश्रण को अलग अलग करने के लिए काफ़ी है जिस के नतीजे में यह गैसें भड़कने और भड़काने का काम कर सकती हैं।

क़ुर्आन के बयान के मुताबिक़ हश्र के लिए ज़मीन को चटियल मैदान का रूप दिया गया होगा और इस से पहले उस के पानी को भड़का कर ख़त्म कर दिया गया होगा ।

7. यहाँ से क़ियामत के दूसरे मरहले (चरण) का ज़िक्र शुरू होता है जब कि तमाम इन्सानों को शरीर सहित दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा ।

गिरोहों में बाँट देने से मुराद अक़ीदे और आमाल (आस्था और कर्म) की बुनियाद पर लोगों की गीरोहबन्दी और श्रेणी बद्ध करना है। दुनिया में तो मोमिन और काफ़िर, मुस्लिम और मुजरिम, नेक और बद तथा ज़ालिम और मज़लूम सब खलत मलत रहते हैं लेकिन क़ियामत का झटका लगते ही इन्सानी सोसायटी का मौजूदा ढाँचा चकनाचूर हो जायेगा और हश्र के मैदान में ईमान और अख़्लाक़ की बुनियाद पर लोगों के अलग अलग गिरोह बनाए जायेंगे (तफ़सील के लिए देखें सूरह वाक़िआ: आयत ७ से ४४)

8. ज़िन्दा गाड़ने का चलन अरबों के कुछ क़बीलों में प्रचलित था । इस का एक कारण तो निर्धनता का संदेह होता और आर्थिक स्थिति के खराब होने का ख़याल करते हुए वह पसन्द नहीं करते थे कि खाने वालों कि तादाद में वृद्धि हो । इस लिए सीमित वंश और फैमिली प्लानिंग का जो मूर्खतापूर्ण और अन्यायपूर्ण तरीक़ा उन्होंने अपना रखा था वह बच्चीयों के पैदा होते ही उन को दफ़न कर देने का था । इस का दूसरा कारण यह था कि वह लड़कियों की पैदाइश को अपने लिए लज्जाजनक समझते थे और झूठी ग़ैरत उन्हें इस आपत्तिजनक एवं क्रूर हरकत पर आमादा करती थी । क़ुर्आन ने उन की इस हरकत पर सख़्ती से पकड़ की और बताया कि क़ियामत के दिन अल्लाह की अदालत में ऐसे मुजरिमों के ख़िलाफ़ मुक़दमा चलाया जायेगा ।

ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से यह सवाल कि वह किस जुर्म में मारी गई, उस के बेगुनाह मारे जाने और मारने वाले के जुर्म की संगीनी का पता देती हैं।

स्पष्ट रहे कि क़ुर्आन का यह बयान इस्लाह के मामले में इतना प्रभावपूर्ण साबित हुआ कि इस ज़ालिमाना रिवाज का हमेशा के लिए खात्मा हो गया ।

9. दुनिया में इन्सान जो कुछ करता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा चाहे उस का सम्बन्ध अक़ीदे से हो या अमल से विचारों से हो या सिद्धान्तों से या आन्दोलन और संघर्ष से, करनी हो या कथनी,

लेख हो या व्याख्यान,यहाँ तक कि उठना बैठना और चाल ढाल का भी रेकार्ड तैयार किया जा रहा है। यह रेकार्ड दुनिया में ख़ुफ़िया तरीक़े पर अल्लाह के फ़रिश्ते तैयार कर रहे होते हैं जो हर व्यक्ति के साथ अलग अलग होते हैं। इस रेकार्ड को क़ुर्आन की ज़ुबान में ''सहीफ़ा'' या ''किताब''और उर्दू में आमाल नामा (कर्म पत्र) कहा जाता है। और क़ियामत के दिन अल्लाह की अदालत में पेशी के मौक़े पर इस को खोल कर हर व्यक्ति के सामने रखा जायेगा ताकि वह अपना रेकार्ड अपनी आँखों से देख सके।

आदमी के ज़िन्दगी भर का रेकार्ड एक पन्ने (Sheet) के रूप में पेश किया जाना क़ुर्आन के नाज़िल होने के समय में आम इन्सानों के लिए आश्चर्यजनक बात थी लेकिन साइन्सी तरक़्क़ी के मौजूदा दौर में जब कि माइक्रोफिल्म (Microfilms) तैयार की जाने लगी है, कुछ भी हैरत की बात नहीं रही ।

10. मुराद आसमान से ऊपर की दुनिया का बेनिक़ाब किया जाना है। आज तो हमारी निगाहें नीले आसमान तक जाकर रुक जाती है लेकिन क़ियामत के दिन हम उस जगत का भी प्रत्यक्ष दर्शन कर सकेंगे जो आसमान से ऊपर है। और उन ग़ैब की हक़ीक़तो को भी देख सकेंगे जो आज हमारी नज़रों से औझल हैं लेकिन उन की ख़बर क़ुर्आन दे रहा है। उस रोज़ इन्सान को ख़ुदा की ख़ुदाई और कायनात की विशालता और उस के विस्तार का सही अन्दाज़ा हो सकेगा। आज इन्सान दुनिया के जिस खोल में बन्द है उस खोल को पूरी कायनात समझ बैठा है और इस से आगे उसे जिन हक़ीक़तों की ख़बर दी जा रही है उस को वह क़ुबूल करने के लिए तैयार नहीं होता जिस तरह मुर्गी का बच्चा जब तक अण्डे के खोल के अन्दर बन्द रहता है, यह मसझता है कि यही कुछ दुनिया है।

12. और जब जहन्नम भड़काई जायेगी,

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

13. और जब जन्नत क़रीब लायी जायेगी।[11]

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

14. उस समय हर व्यक्ति को मालूम हो जायेगा कि वह क्या लेकर हाज़िर हुआ है।[12]

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

15. अत: नहीं,[13] मैं क़सम खाता हूँ [14] डूब जाने वाले,[15]

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾

16. चलने वाले,[16] और छिप जाने वाले [17] सितारों की ।[18]

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

17. और रात की जब कि वह विदा हो,

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

18. और सुबह की जब कि वह साँस ले,[19]

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

19. कि वास्तव में यह एक प्रतिष्ठित संदेशवाहक (फ़रिश्ते) का (लाया हुआ) कलाम है,[20]

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

20. जो क़ुव्वत वाला है,[21] और अर्श के मालिक के यहाँ ऊँचे पद वाला है,[22]

ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

21. वहाँ उस का हुक्म माना [23] जाता है और वह आमानतदार है,[24]

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

22. और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[25]

وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾

11. क़ियामत के दिन ज़मान-व-मकान (Time & Space) के पैमाने बिलकुल बदल चुके होंगे । उस रोज इन्सान जान लेगा कि जन्नत हश्र के मैदान से बहुत क़रीब है और जो लोग उस के योग्य क़रार पायेंगे उन को जन्नत तक पहुँचने के लिए न इन्तेज़ार करना पड़ेगा और न लम्बी दूरी तय करने का परिश्रम करना होगा । बल्कि वह खुद आगे बढ़ कर उन का अभिनन्दन (स्वागत) करेगी। इस की विस्तृत स्थिति (तफ़्सीली नौइयत) का पता क़ियमात के दिन चल सकेगा आज हम सीमित ज्ञान (महदूद इल्म) की बिना पर इसे समझ नहीं सकते।

12. यह है इन आयात का केन्द्रीय विषय । मतलब यह है कि जब क़ियमत उन तमाम हौलनाकियों के साथ प्रकट होगी जो ऊपर बयान हुए हैं तो वह दिन अल्लाह की अदालत में पेशी का होगा । उस रोज़ इन्सान अपनी ज़िन्दगी का कच्चा चिट्ठा लेकर हाज़िर होगा ताकि अपने परवरदिगार के सामने जवाबदेही कर सके । वह दिन बड़ा हौलनाक होगा और वह घड़ी बड़ी सख़्त होगी ।

यह घड़ी महशर की है तू अर्स-ए- महशर में है
पेश कर ग़ाफ़िल अमल कोई,अगर दफ़्तर में है

13. यह इन्कार करने वालों के इस विचार का खंडन है कि यह क़ुर्आन जो क़ियमात की ख़बर दे रहा है किसी दीवाने की बड़ या शैतान से प्रेरित बातें हैं।

14. इस तरह की जो कसमें खाई जाती हैं इन का मतलब उन चीज़ों की पवित्रता और महानता को बयान करना नहीं होता बल्कि उन को शहादत (Witness) और दलील (Aurgument) के तौर पर पेश करना होता है। यह अरबी कलाम की शैली (उस्लूब) है जो प्रभावपूर्ण भी है और सुन्दर भी । अरबी से अनभिज्ञ लोग इस शैली से अपरिचित होने की बिना पर इन क़समों को जो क़ुर्आन में विभिन्न जगहों पर खाई गई है, सही अवसर और उन के इशारे एवं छिपे भेदों को समझने में असमर्थ रहते हैं।

15. Taxt में लफ़्ज़ ''अल्ख़ुन्नस'' اَلْخُنَّسِ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद डूब जाने वाले सितारे हैं । मतलब यह है कि सितारों की जगमगाहट से धोखा नहीं खाना चाहिए बल्कि उन के डूब जाने के पहलू को भी सामने रखना चाहिए जिस से जाहिर होता है कि यह ख़ुदा के क़ानून के आगे बिलकुल बेबस हैं। इस पहलू की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से सितारों के चलते रहने की सिफ़त से उन के डूब जाने की सिफ़त का ज़िक्र किया गया है।

16. Taxt में ''अल्-जवार'' اَلْجَوَارِ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद चलते रहने वाले सितारे हैं सितारों का चलना इन अर्थों में भी हो सकता है की इन्सान का आम मुशाहदा यही है। इस से अलग हट कर कि इन में से कौन से सितारे गतिमान (चल रहे) हैं और क़ौन से ठहरे हुए, और अपनी इस हक़ीक़त के एतिबार से भी हो सकता है जिस का नई साइन्स ने खोज किया है कि सितारे अंतरिक्ष में मुतहर्रिक (गतिशील) हैं।

"The stars themselves are moving through space-some at tremendous speeds —but so vast is our distance from them that their positions do not appear to the naked eye to alter, even in a century.'
(-The Marvels and Mysteries of science P.82)

17. Taxt में लफ़्ज़ ''अलकुन्नस'' اَلْكُنَّسِ इस्तेमाल हुआ है जिस से मुराद छिपने वाले और ग़ायब हो जाने वाले सितारे हैं। दिन में सितारे ग़ायब रहते हैं एवं चलते चलते नजरों से ओझल हो जाते हैं इसी मुनासिबत से इन की यह सिफ़त बयान हुई है।

18. यहाँ सितारों की रफ़्तार और इन के उदय होने और डूब जाने को इस की शहादत में पेश किया गया है कि क़ुर्आन अल्लाह की वह्य है न कि शैतान की ओर से उतरने वाली बातें । इन का उदय एवं अस्त का निश्चित समय और इन की नियमपूर्वक रफ़्तार इस बात की निशानदेही करती है कि वह अल्लाह के क़ानून में जकड़े हुए हैं। और इस से बिन्दु भर भी फिर नहीं सकते। करोड़ों मील पर फैले विशाल अंतरिक्ष में सितारों का एक ना मालूम ज़माने से लटके रहना और एक आश्चर्यजनक व्यवस्था का पाबन्द हो कर रहना इस बात का खुला सुबूत है कि इस कायनात का प्रबन्ध हिकमत से भरा है जिस के पीछे एक अलीम (सब कुछ जानने वाले विद्वान) और ख़बीर (हर चीज़ की खबर रखने वाली) हस्ती का मुदब्बिराना (विद्वतापूर्ण) मंसूबा काम कर रहा है। क़ुर्आन इस मन्सूबे की व्याख्या करता है और कायनात पैदा करने वाले की जिन सिफ़तों की तरफ़ सितारों की यह व्यवस्था इशारा करती है उन को क़ुर्आन खोल कर पेश करता है। गोया क़ुर्आन का प्रतिबिम्ब (अक्स) इस कायनात के आइने में देखा जा सकता है और इस की सच्चाई को कायनात के आसार की कसौटी पर परखा जा सकता है।

सितारे और ग्रह अपनी भौतिक स्थितियों की बिना पर सोचने और विचार करने पर आमादा करते हैं। लेकिन इन्सान के सोचने और विचार करने का अन्दाज़ा यह रहा है कि इन को वह स्वयं सत्ताधिकारी (Self created & self sufficient) मान कर इन की पूजा करता और इन से शगुन लेता रहा है। जिस के आधार पर ज्योतिष विद्या (Astrology) का विकास हुआ और शगुन शास्त्र और भविष्यवाणी (Sooth Saying) का बाज़ार गर्म हुआ। इस तरह इन्सान इन की साख्त (बनावट) और इन के फ़ासले वग़ैरा के बारे में मालूमात के ढेर लगाता जिस की बिना पर खगोल विज्ञान (Astronomy) का फैलाव हुआ और साइंस ने ख़ूब तरक़्क़ी की । यह सूरत इन्सान के लिए लाभदायक हुई तो बस उस की मालूमात में वृद्धि की हद तक। इस से इन्सान अपना और कायनात का सही उद्देश्य मालूम करने सम्बन्धित कोई रहनुमाई हासिल न कर सका । क़ुर्आन सोचने और विचार करने का जो अन्दाज़ अपनाने की दअवत देता है कि वह यह है कि इन्सान इस के मुशाहदे (प्रत्यक्ष दर्शन) से इस के पैदा करने वाले की पहचान (माअरिफ़त) हासिल करें, क्यों कि यह सितारे अपने पैदा करने वाले (ख़ालिक़) की महानतम गुणों का द्योतक (मज़हर) है। जिस तरह एक बेहद हसीन तस्वीर को देखकर उस के आर्टिस्ट कि महारत का अन्दाज़ा होता है उसी तरह इस चमकते सितारों की कारीगरी और इन के आश्चर्यजनक प्रबन्ध को देख कर कायनात के ख़ालिक़ (सृष्टा) की क़ुदरत, रुबूबियत, इल्म, इन्साफ़, शासन, हिकमत की सिफ़तों और इस तरह की दूसरी सिफ़तों की इब्तेदाई माअरिफ़त (प्रारम्भिक पहचान) इन्सान को हासिल हो जाती है। दूसरे लफ़्ज़ों में सितारे अपने ख़ालिक़ का जो तआरुफ़ (परिचय) अपनी ख़ामोश ज़ुबान से कराते हैं वह क़ुर्आन के बयान से जो कि कायनात के ख़ालिक़ का मुकम्मल और विस्तारपूर्वक परिचय कराता है, पूरी तरह मेल खाता है। और यह क़ुर्आन की हक़्क़ानियत (सत्यता) का खुला सबूत है। फिर उच्च कोटि के इस हकीमाना कलाम के बारे में यह कहना कि वह इन्सान की रचना है या शैतानी वसवसों का नतीजा है या इस बिना पर कि वह क़ियामत के आने की ख़बर दे रहा है इसे भविष्यवाणी (Sooth Saying) समझना, हक़ीक़त पर पर्दा डालने की कैसी निन्दनीय चेष्टा और कितनी बड़ी नाइन्साफ़ी है।

19. रात के विदा होने और सुबह के नमूदार (प्रकट) होने का वक़्त भी क़ुदरत के अजायबात में से है। उस वक़्त ऐसा महसूस होता है कि गोया रात के अंधेरे को चीर कर सुबह ने जन्म लिया है और जब सुबह की ठंडी हवाऐं चलती हैं तो वह एहसास करवटें लेने लगता है कि गोया सुबह साँस

ले रही है। यहाँ इन कैफ़ियतों को शहादत में पेश करने का मतलब यह है कि जिस हस्ती ने रात और दिन के आने जाने की यह अजीबो-गरीब व्यवस्था क़ायम की है वह इस व्यवस्था के गर्भ से एक बहुत ही अजीब नये निज़ाम को भी पैदा कर सकता है और उस की हिकमत इस बात का तक़ाज़ा करती है कि ऐसा किया जाये। इस लिए क़ुर्आन क़ियामत की आमद और एक नये निज़ाम की तश्कील-जिस में कर्मों के हिसाब का मामला पेश आयेगा--की जो ख़बर दे रहा है वह अक़्ल के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि कायनात का मौजूदा निज़ाम (वर्तमान व्यवस्था) का एक उभरता हुआ तक़ाज़ा है।

20. यह वह बात है जिस पर ऊपर की आयात में क़ुर्आन के कलामे इलाही होने पर गवाही पेश की गई है। प्रतिष्ठित संदेशवाहक से मुराद जिब्रील हैं जो ख़ुदा के प्रतिष्ठित फ़रिश्ते हैं। वह ख़ुदा का कलाम ले कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होते थे और ठीक ठीक इन ही अल्फ़ाज़ में आप को पहुँचाते थे।

चूँकि यह कलाम फ़रिश्तों द्वारा नाज़िल होता था न कि शैतानों द्वारा इस लिए आयत में कलाम को ख़ुदा के भेजे हुए फ़रिश्ते की तरफ़ मन्सूब किया गया है।

21. यह वह्य लाने वाले फ़रिश्ते जिब्रील अलैहिस्सलाम की सिफ़त (गुण) है उन को अल्लाह तआला ने असाधारण शक्ति प्रदान की है इस लिए शैतान इन के काम का रोड़ा नहीं हो सकते। उन की उड़ान (परवाज़) आसमान से परे है और वह अल्लाह का पैग़ाम उस के रसूल तक सुरक्षित पहुँचाने में पूरी तरह क़ादिर (सक्षम) है।

22. यह हज़रत जिब्रील की दूसरी सिफ़त बयान हुई है यानी उन की पहुँच सीधे कायनात के शासक तक है और वह अल्लाह के दरबार में निकटस्थ (मुक़र्रब) और उच्च पद पर हैं।

23. या'नी जिब्रील फ़रिश्तों के सरदार हैं वह उस के हुक्म की इताअत करते हैं। लिहाज़ा जिस के मातहत फ़रिश्तों की फौज़ हो और जिस के इशारों पर वह हरकत में आते हों उस के काम में शैतानी ताक़तों के दखल अन्दाज़ होने का क्या सवाल पैदा होता है?

24. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की अमानतदारी की सिफ़त इस बात की ज़मानत है कि वह कलामे-इलाही को जूँ का तूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचा रहे हैं। उन की तरफ़ से किसी कमी बेशी की हरगिज़ संभावना नहीं है।

क़ुर्आन के लाने वाले फ़रिश्ते का जो परिचय यहाँ कराया गया है इस से अभिप्राय यह स्पष्ट करना है कि यह कलाम शब्द शब्द इर्शादे इलाही (Word of God) है जिस को बहुत ही एहतिमाम के साथ और बेहद पाकीज़ा माध्यम से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुँचाया जा रहा है। इस में किसी भी तरह की मिलावट की कोई संभावना नहीं है।

25. साथी से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और ख़िताब (सम्बोधन) मक्का वालों से है जिन के दरम्यान आपने सारी ज़िन्दगी बसर की और एक समझदार इन्सान ही की हैसियत से आप पहचाने जाते रहे। ऐसे व्यक्तित्व को दीवाना करार देना एक बेतुकी बात थी लेकिन क़ुर्आन का इन्कार करने वाले आप की मुख़ालिफ़त में ऐसे अन्धे हो गये थे कि इस तरह की बे तुकी बातें कहते हुए उन को ज़रा संकोच नहीं होता था । आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो आप के रिसालत के दावे को दीवानगी से ताबीर करते हैं लेकिन अक्लमन्दों की समझ में इतनी बात नहीं आती कि आप की पेश की हुई किताब ऐसी हकीमाना बातों से भरी हुई और ऐसी पाकीज़ा तालीमात पर आधारित है कि इस की मिसाल पेश करने में दुनिया असमर्थ है। फिर क्या कोई दीवाना आज तक हकीमाना बातें पेश कर सका है या किसी मजनून ने लोगों के अख़लाक़ संवारे हैं? सच है

''ख़िरद का नाम जुनूँ रख दिया जुनूँ का खिरद''

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

23. उस ने इस फ़रिश्ते को आसमान के खुले किनारे पर देखा है।[26]

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾

24. और वह ग़ैब (परोक्ष) की बातें बताने के मामले में कंजूस नहीं है।[27]

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25. और वह किसी शैतान मरदूद का क़ौल (कथन) नहीं है,[28]

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. फिर तुम लोग किधर चले जा रहे हो?

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. यह तो दुनिया वालों के लिए एक याददेहानी (नसीहत) है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾

28. तुम में से हर उस व्यक्ति के लिए जो सीधी राह अपनाना चाहे।[29]

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. और तुम नहीं चाह सकते जब तक कि अल्लाह रब्बुल आलमीन (सारे जगत का स्वामी) न चाहे।[30]

26. अर्थात् वह्य लाने वाले फ़रिश्ता को अपनी असल रूप में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आसमान के खुले किनारे पर देखा था इस लिए इस में संदेह की कोई गुन्जाइश नहीं है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील को उन के असल रूप में देखा तो उन के ६ सौ पर थे और उन के विशाल अस्तित्व से आसमान और ज़मीन का वातावरण भर गया था (मुस्लिम, किताबुलईमान) इस से उन की ज़बरदस्त ताक़त का अन्दाज़ा होता है।

27. अर्थात जो वह्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर की जा रही है उस में फ़रिश्तों की मजलिसों का भी रहस्योदघाटन है और क़ियामत के आने की ख़बर भी । इन बातों की लोगों को ख़बर करने में आप किसी तरह की तंगी और कंजूसी से काम नहीं ले रहे हैं बल्कि अपना कर्तव्य समझ कर उसे बग़ैर किसी काट छाँट के लोगों तक पहुँचाने में सरगर्म हैं ताकि लोग होश में आऐं और अपने रब की हिदायत को क़ुबूल करें। गोया अल्लाह की वह्य का यह पूरा सिलसिला आसमान से ले कर ज़मीन तक सिलसिलतुज़्ज़हब (सोने की ज़न्जीर) है जिन की कोई कड़ी भी नाक़िस (अधूरी एवं दोषयुक्त) नहीं है कि आदमी के लिए संदेह करने की कोई गुन्जाइश हो ।

28. क़ुर्आन के नाज़िल होने के समय में भविष्यवाणियों का रिवाज था । ज्योतिषी (Sooth Sayer) ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरे जानने के दावेदार होते और शैतान जिन के बारे में यह खयाल था कि वह आसमान में उड़ कर के ग़ैब की खबरें लाते हैं, झूठी खबरें उन पर उतारते और वह उन में कुछ और झूठ मिला कर बयान करते । वह चूँकि भविष्य (Future) का हाल बयान करने के दावेदार होते थे इस लिए उन्हें लोगों से नज़राने वसूल करने और अपनी दूकान चमकाने का ख़ूब मौका मिलता । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़ुबान से अल्लाह की वह्य और क़ियामत की आमद की ख़बर सुन लेने के बाद क़ुर्आन का इन्कार करने वालों ने आप पर ज्योतिषी होने का इल्जाम लगाया और अल्लाह की वह्य के बारे में यह तअस्सुर (मनोभाव) देने की कोशिश की कि यह शैतान द्वारा अवतरित है । यहाँ उन के इसी इल्ज़ाम का खंडन किया गया है। और ज़ाहिर है शैतान का इस पवित्र कलाम से क्या सम्बन्ध हो सकता है।

''चेह निस्बत खाक रा बा आलमे पाक''

क्या किसी शैतानी कलाम की यह ख़ूबी होती है कि वह इन्सान को ख़ुदा से जोड़े, उस के मन की आँखों में रौशनी (अन्तदृष्टि) पैदा करे, उस के अख़लाक़ को संवारे, उस के विचारों में पवित्रता पैदा करे, उस के चरित्र को ऊँचा करे और समाज़ में भलाइयों के लिए उसे आमादा करे। अगर शैतानी कलाम की यह ख़ूबियाँ हो सकती हैं तो मानना पड़ेगा कि सब से बड़ा नेक गुणों वाला और इस्लाह करने वाला शैतान ही है जब कि कोई व्यक्ति भी उस का नाम उस पर लानत भेजे बग़ैर नहीं लेता । वर्ना यह मानना पड़ेगा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शैतानी कलाम के अवतरण का इल्जाम लगाने वाले स्वयं शैतानी वाणी का शिकार हैं । इस लिए इतनी मोटी बात भी उन की समझ में नहीं आती ।

29. अर्थात् क़ुर्आन याददेहानी और नसीहत तो है सारे इन्सानों के लिए लेकिन इस से फ़ायदा वही लोग उठा सकते हैं जो सीधी सच्ची राह अपनाना चाहें । जो हक़ का इच्छुक न हो वह हिदायत के इस चश्मे (स्रोत) से फ़ैज़याब (लाभान्वित) नहीं हो सकता ।

30. अर्थात यह सही है कि नसीहत हासिल करने और हिदायत पाने के लिए इन्सान का चाहना पहली शर्त है लेकिन यह काम अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर अन्जाम नहीं पा सकता । अल्लाह की मर्ज़ी इन्सान की मर्ज़ी पर ग़ालिब (हावी) है इस लिये इन्सान इस घमंड में न रहे कि वह जो चाहे कर सकता है।

सूरह अल्-इन्फ़ितार

८२. अल्-इन्फ़ितार

नाम :- पहली ही आयत में आसमान के इन्फ़ितार (फट जाने) की ख़बर दी गयी है। इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल-इन्फ़ितार है।

नाज़िल होने का समय :- इस बारे में सहमति है कि यह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि इस का और सूरह तकवीर के नाज़िल होने का समय क़रीब क़रीब एक ही रहा होगा अर्थात मक्के का इब्तेदाई दौर।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह का भी केन्द्रीय विषय कर्म फल ही है लेकिन दलील एक दूसरे पहलू से दी गयी है। और इस एहतिमाम से आगाह भी कर दिया गया है जो हर व्यक्ति की अमली ज़िन्दगी को रेकार्ड करने के लिए अल्लाह तआला ने कर रखा है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में क़ियामत का नक्शा खींचा गया है और बताया गया है कि जब यह बड़ा हादसा ज़ाहिर होगा तो इन्सान का किया धरा सब उस के सामने आ जायेगा। आयत ६ से ८ में इन्सान को एहसास दिलाया गया है कि जिस ख़ुदा ने इन्सान को बेहतरीन शरीर में ढाला और उच्च श्रेणी की क्षमता प्रदान की, उसे क्या मनमानी करने के लिए यूँ ही छोड़ दिया जायेगा? उस का अपने ख़ुदा के साथ वफ़ादारी और बेवफ़ाई का इम्तिहान नहीं होगा? और क्या वह अल्लाह के दरबार में अपने तर्जे (कार्यशैली) के लिए जवाबदेह नहीं करार पायेगा?

आयत ९ से १२ में उस एहतिमाम (तैयारियों) का ज़िक्र है जो अल्लाह ने हर व्यक्ति के आमाल (कर्मो) को नोट कर लेने के लिए कर रखा है।

आयत १३ से १९ में संक्षिप्त रूप में नेकी करने वालों और बदकारों का अन्जाम सामने लाया गया है और ख़बरदार किया गया है कि पेशी के दिन किसी के बस में कुछ न होगा और सारे इख़्तियारात अल्लाह के हाथ में होंगे।

८२.सूरह अल्-इन्फ़ितार

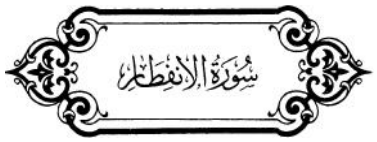

अनुवाद आयतें :१९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **जब आसमान फट जायेगा।[1]**

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۝١

2. **और जब तारे बिखर जायेंगे,[2]**

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝٢

3. **और जब समुद्र बहा दिये जायेंगे।[3]**

وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣

4. **और जब क़बरें उखेड़ दी जायेंगी।[4]**

وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۝٤

5. **उस वक्त हर व्यक्ति को मालूम हो जायेगा कि उसने आगे क्या भेजा है? और पीछे क्या छोड़ा है?[5]**

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ۝٥

6. **ऐ इन्सान ! तुझे किस चीज़ ने अपने करीम रब के बारे में धोखे में डाल रखा है?[6]**

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦

7. **जिस ने तुझे बनाया, और ठीक ठीक (इन्सान) बनाया और तेरी बनावट में संतुलन रखा।**

الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧

8. **और जिस सूरत में चाहा तुझे तरकीब दिया।[7]**

فِىْۤ اَىِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨

9. **नहीं [8] मगर तुम जज़ा (इनाम) और सज़ा को झुठलाते हो।[9]**

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۝٩

10. **हालांकि तुम पर निगरानी करने वाले मुक़र्रर हैं।[10]**

وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۝١٠

1. इस माद्दी दुनिया (Physical world) को देख कर इन्सान माज़ी (भूतकाल) में यह ख़याल करता रहा है कि उस के रात और दिन हमेशा यही रहेंगे और वह कभी किसी हादसे से दोचार होने वाला नहीं । और जहाँ तक मौजूदा साइन्स की बात है उस की तरक़्क़ी ने इन्सान को यह मान लेने पर मजबूर कर दिया है कि सूरज की ताक़त भी नष्ट हो सकती है और यह कायनात बहुत बड़े हादसे से दोचार हो सकती है। अलबत्ता वैज्ञानिकों के अन्दाजे के मुताबिक यह स्थिति अरबों साल बाद आयेगी ।

लेकिन क़ुर्आन जो अल्लाह का कलाम (वाणी) है सिर्फ संभावनाओं की बात नहीं करता बल्कि ठोस तरीक़े से और बिलकुल खुले और स्पष्ट शब्दों में यह ख़बर देता है कि बहुत जल्द यह कायनात बहुत बड़े हादसे से दोचार होगी और ज़मीन तो ज़मीन आसमान की व्यवस्था भी तितर बितर हो जायेगी ताकि एक नई दुनिया एक नई व्यवस्था के साथ वजूद में लाई जाये । ज़ाहिर है नये निर्माण के लिए विनाश ज़रूरी होता है इस लिए नये जहान के निर्माण के लिए इस दुनिया का विनाश कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं ।

क़ियामत के दिन आसमान और ज़मीन के टूट फूट जाने के ज़िक्र से बाइबल भी खाली नहीं।

''तब आकाश गरजता हुआ विलीन हो जायेगा, तत्व प्रचंड ताप के कारण पिघल जायेंगे, और पृथ्वी तथा उस पर किये गये मनुष्यों के कर्म प्रकट हो जायेंगे।''(२ पतरस ३:१०)

यह इस बात की दलील है की क़ुर्आन जिस बड़े हादसे की ख़बर दे रहा है वह कोई नई ख़बर नहीं है जो क़ुर्आन ने पहली दफ़ा दी हो बल्कि इन्सानी बिरादरी को अल्लाह की वह्य द्वारा बराबर आगाह किया जाता रहा है अलबत्ता क़ुर्आन जितने प्रभावपूर्ण शैली में जिस तफ़सील (विवरण) के साथ क़ियामत का वर्णन कर रहा है उस की मिसाल इन परिवर्तित (तहरीफ़शुदा) आसमानी किताबों में से किसी किताब में भी मिलना मुश्किल है। और वास्तविकता यही है कि क़ुर्आन के इस बयान से क़ियामत के बारे में ज़बरदस्त यक़ीन पैदा हो जाता है और दिल एवं दिमाग़ को ऐसा झटका लगता है कि दुनिया के बारे में इन्सान के विचारों में बहुत बड़ी तब्दीली शरू हो जाती है।

2. सितारे संसार की रौनक़ हैं लेकिन जब यह संसार ही ख़त्म कर दिया जायेगा तो इन क़ुमक़ुमों के बाक़ी रहने का क्या सवाल? जिस क़ानूने कशिश गुरुत्वाकर्षण विधान अथवा (Law of Gravitation) ने इन को अन्तरिक्ष में अनुशासित (मुनज़्ज़म) कर रखा है उस में ज़रा सा भी खलल उन को तितर बितर कर देने के लिए काफ़ी है। सितारों के गिरने का ज़िक्र इन्जील में भी मौजूद है।

''सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा, चन्द्रमा प्रकाश न देगा आकाश से तारामण गिरेंगे,------ एवं अन्तरिक्ष, की शक्तिया हिल जाऐंगी।''

3. समुद्र जोश में आकर अपनी सीमाओं को तोड़ कर बह पड़ेंगे और साथ ही जैसा कि सूरह तकवीर में बयान हुआ है ''भड़क उठेंगे।''

4. क़बरों के उखेड़ दिये जाने का मतलब यह है कि जूँही क़ियामत का दूसरा सूर फ़ूँक दिया जायेगा ज़मीन के अन्दर से मुर्दे इस तरह से बाहर निकल पड़ेंगे जैसे क़बरें उखेड़ कर मुर्दों को बाहर निकाला गया है। क़ियामत तक जितने इन्सान भी पैदा हुए और मर गये उन को ज़मीन उगल देगी चाहे किसी की लाश जला दी गई हो या हवा में उस के अंश बिखर गये हों।

5. आगे भेजने (माक़द्दमत् مَاقَدَّمَتْ) से मुराद आदमी का अच्छा या बुरा अमल है जो आख़िरत की ज़िन्दगी के लिए किया । गोया इन्सान रोज़ाना अपने कर्मों का पार्सल नई दुनिया को भेजता है जहाँ क़ियामत के दिन वह पहुँचने वाला है। यह और बात है कि कोई व्यक्ति सदा बहार फूलों

का पार्सल भेजता है ताकि उस के लिए जन्नत की बहार बन जाये और कोई व्यक्ति विस्फोटक (आतशगीर) सामान का पार्सल भेजता है ताकि उस को जलाने के लिए ईंधन का काम दे।

पीछे छोड़ने (मा-अख़्ख़रत مَاأَخَّرَتْ) से मुराद तक़वा (ईशभय) और नेकी के वे काम हैं जो इन्सान के करने के थे लेकिन उस ने नहीं किये। इस तरह क़ियामत के दिन हर शख़्स को उस की कारकर्दगी और उस की कोताहियाँ (Commission & Ommission) अच्छी तरह मालूम हो जायेंगी।

6. यहाँ ख़ुदा के करीम होने की सिफ़्त का हवाला देने का मक़सद उस के उपकारी (मोहसिन) होने का एहसास दिलाना है ताकि आदमी के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास उभरे। ख़ुदा के मोहसिन और मेहरबान होने का तक़ाज़ा यह था कि आदमी उस की तरफ़ लपकता और उस का शुक्रगुज़ार बन्दा बन कर रहता है लेकिन वह उस से मुँह फेरता है और उस के सामने अपने आप को जवाबदेह मानने के लिए तैयार नहीं होता। यह सरासर धोका है जिस में इन्सान मुब्तिला रहता है। लेकिन इस धोखे में पड़ने की कोई माक़ूल वजह नहीं बल्कि यह सिर्फ़ इच्छा परस्ती है जो उसे अपने मेहरबान रब से बग़ावत पर आमादा करती है।

7. इन्सान दुनिया की मुमताज़ तरीन (प्रमुखतम) मख़्लूक़ है और उस की तख़्लीक़ (रचना) में ख़ालिक़ (सृष्टा) की कारीगरी पूरी तरह स्पष्ट है। इन्सान का पहले लोथड़ा तैयार होता है उस के बाद उसे इस तरह दुरुस्त किया जाता है कि वह अनुकूल अंगों को लेकर नमूदार हो जाता है। फिर उस के अंगों में ऐसा संतुलन रखा जाता है कि उस का वजूद दुनिया की सब से संतुलित मख़्लूक़ होने की गवाही देता है। एवं यह भी कि इन्सानी बिरादरी का हर व्यक्ति रूप रंग में दूसरे से भिन्न होता है। दुनिया में अरबों इन्सान पैदा होते हैं और उन सब का मॉडल एक नहीं होता बल्कि हर एक का मॉडल अलग अलग होता है ताकि उस की विशेषता और उस की पहचान बरक़रार रहे। सारांश यह कि इन्सान की बनावट और उस के रंग के मुशाहदे से उस के ख़ालिक़ की क़ुदरत के कमालात और हैरत अंगेज़ कारीगरी का अन्दाज़ा हो जाता है। और यह एहसास भी पैदा हो जाता है कि इन्सान के हक़ में वह कितना बड़ा परोपकारी है जिस ने उस को इस दुनिया की बेहतरीन मख़्लूक़ बना कर उठाया।

8. यानी तुम्हारा यह अन्दाज़ा सही नहीं कि दुनिया यूँ ही चलती रहेगी, न क़ियामत आयेगी और न ख़ुदा के हुज़ूर तुम्हारी पेशी होगी ।

9. या'नी क़ियामत के आने की जो ख़बर क़ुर्आन दे रहा है उस को झुठलाने की असल वजह यह है कि तुम इनाम और सज़ा की हक़ीक़त को स्वीकार करना नहीं चाहते क्यों कि इस को स्वीकार करने के बाद इन्सान को नफ़्सानी ख़्वाहिशात (स्वार्थिक इच्छाओं) के बिलमुक़ाबिल एक ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है। आज भी इन्सान ने ईनाम एवं सज़ा के मज़हबी तसव्वुर से बचने के लिए कायनात की ऐसी ''साइन्टिफ़िक़'' तौजीह (वैज्ञानिक स्पष्टीकरण) की है कि ज़ेहन न ख़ुदा की तरफ़ जाता है और न क़ियामत की तरफ़।

10. या'नी तुम इनाम और सज़ा को झुठलाना चाहो तो झुठलाओ, इस से हक़ीक़त नहीं बदलती, हक़ीक़त यह है कि जज़ा और सज़ा का मामला ज़रूर पेश आना है और इस के लिए अल्लाह ने यह ऐहतिमाम किया है कि तुम्हारे आमाल को रेकार्ड किया जाये ।

निगराँ से मुराद वह फ़रिश्ते हैं जो इन्सान की करनी और कथनी को रेकार्ड करने के लिए अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर हैं। हर इन्सान के साथ दो फ़रिश्ते लगे होते हैं एक दाईं तरफ़ और दुसरा बाईं ओर।

प्रतिष्ठित कातिब (लिपिक)। जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं। निश्चय ही नेक लोग ऐश और आनन्द में होंगे। और बदकार जहन्नम में। वह उस में बदला पाने के दिन दाख़िल होंगे। और उस से ग़ायब नहीं हो सकेंगे।और तुम्हे क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है? फिर (सुन लो !) तुम्हें क्या ख़बर कि बदले का दिन क्या है ? वह दिन जब कोई व्यक्ति किसी के लिये कुछ न कर सकेगा और मामलात सिर्फ़ अल्लाह ही के इख़्तियार में होंगे। *(अल-क़ुर्आन)*

11. प्रतिष्ठित कातिब (लिपिक)।[11]

كِرَامًا كَاتِبِينَ ﴿١١﴾

12. जो तुम्हारे हर काम को जानते हैं।[12]

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾

13. निश्चय ही नेक लोग [13] ऐश और आनन्द में होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾

14. और बदकार [14] जहन्नम में।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

15. वह उस में बदला पाने के दिन दाख़िल होंगे।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

16. और उस से ग़ायब नहीं हो सकेंगे।[15]

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

17. और तुम्हे क्या मालूम कि बदले का दिन क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾

18. फिर (सुन लो !) तुम्हें क्या ख़बर कि बदले का दिन क्या है ?[16]

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٨﴾

19. वह दिन जब कोई व्यक्ति किसी के लिये कुछ न कर सकेगा और मामलात सिर्फ़ अल्लाह ही के इख़्तियार में होंगे।[17]

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿١٩﴾

11. मुराद क़ौल-व-अमल (करनी और कथनी) को रेकार्ड करने वाले फ़रिश्ते हैं। उन की सिफ़त ''किरामन'' (प्रतिष्ठित, सम्मानित, मुअज़्ज़िज़) बयान की गई हैं। जिस से यह स्पष्ट करना अभिप्राय है कि यह बेहद ज़िम्मेदारी के साथ अपनी ड्यूटी अन्जाम देते हैं। इन के बारे में न यह संदेह हो सकता है कि कोई व्यक्ति नेकी करे और यह लिखे नहीं और न यह संदेह हो सकता है कि एक की नेकी दूसरे के खाते में जमा कर दें। यह छिपे तौर पर मगर बावक़ार अन्दाज़ में पूरी ईमानदारी के साथ अपना फ़र्ज़ अन्जाम देते रहते हैं। लिहाज़ा इन को दुनियावी हुकूमतों की सी. आई. डी. जैसा समझना सही न होगा जिस के इल्म का दायरा भी महदूद होता है और जो अपने फ़र्ज़ में कोताह होने का सबूत देते हुए उल्टी सीधी रिपोर्ट पेश करती रहती हैं। अलबत्ता यह हक़ीक़त है कि इस ख़ुफ़िया पुलिस पर भी अल्लाह की ख़ुफ़िया पुलिस मुक़र्रर है जो इन की सारी हरकतों को रेकार्ड कर रही हैं।

फ़रिश्तों की किताबत (writing) की स्थिति तो अल्लाह ही को मालूम है। अलबत्ता मौजूदा साइन्स और टेकनालाजी के दौर में यह समझना हमारे लिए कुछ मुश्किल नहीं रहा कि इन्सान की तमाम सरगर्मियों (Activities) को और उस की ज़ुबान से निकले हुए एक एक लफ़्ज़ को सुरक्षित किया जा सकता है। फिल्म, रेडियो, फोटो, टेलिवीज़न और टेप रेकार्डिंग इस की खुली मिसालें हैं। और अब तो यह भी संभव हुआ है कि ज़मीन पर बैठ कर हम लाखों और करोड़ो मील दूर, चाँद, मंगल (Mars) और शनि (Saturn) जैसे ग्रहों की तस्वीर मँगाए। वास्तव में मौजूदा साइन्स ने दो बहुत ही अहम क़ुदरती विधान का रहस्योद्घाटन किया है जिस में समझने वालों के लिए बहुत कुछ रहनुमाई का सामान मौजूद है। एक यह कि हमारी तस्वीर हर हर पल वातावरण में बनती रहती है, इसी तस्वीर को महफ़ूज़ करने की टेक्निक (Technic) साइन्स ने अपनाई है।

इसी तरह हमारी आवाज़ हवा में लहरें पैदा करती हैं इन लहरों को कैसेट में महफ़ूज़ (Save) कर के उसी आवाज़ को फिर सुना जा सकता है। यह सब कुछ जब इनसान के लिए संभव हुआ है और संभव भी ऐसा कि इसी पर वर्तमान संस्कृति (Modern Civilization) की इमारत खड़ी हुई है। तो फिर इन्सान के लिए यह स्वीकार करना क्या मुश्किल है कि जिस ख़ुदा ने यह क़ानूने-क़ुदरत (Law of Nature) बनाया है उस ने इस बात का भी एहतिमाम किया है कि हर व्यक्ति की पूरी ज़िन्दगी को फ़िल्माया जाय और क़ियामत के दिन हमारी बोलती फ़िल्म हमारे सामने पेश कर दी जाये। उस वक़्त अपनी बोलती फ़िल्म को देख कर इन्सान के होश ठिकाने नहीं रहेंगे। अगर इन्सान आज ही यह यक़ीन कर ले कि उस की पूरी ज़िन्दगी को फ़िल्माया जा रहा है और उस की बोलती फ़िल्म उसे दिखाई जाने वाली है तो इन्सान अपने रवैये में बड़ा सावधान और ज़िम्मेदार होगा। और कभी ऐसा काम करने या ऐसी बात ज़ुबान से निकालने के लिए तैयार नहीं होगा जो कल आख़िरत के टेलिवीज़न पर वह देखना और सुनना पसन्द नहीं करेगा।

12. यहाँ कर्मों का वर्णन है और सूरह ''काफ़'' में सराहत (स्पष्टीकरण) है कि जो लफ़्ज़ भी इन्सान अपनी ज़ुबान से निकालता है उस को नोट करने के लिए एक फ़रिश्ता मौजूद होता है और यह भी कि ये फ़रिश्ते दो होते हैं जो दाऐं और बाऐं तरफ़ बैठे निगरानी कर रहे होते हैं।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ـ

مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ـ (ق ١٧-١٨)

''जब दो रिकार्ड करने वाले दाऐं और बाऐं बैठे रिकार्ड कर रहे होते हैं। वह कोई शब्द भी ज़बान से नहीं निकालता,मगर उस के पास एक मुस्तइद निगराँ (सतर्क निरीक्षक) मौजूद होता

है।'' (सूरह क़ाफ़ १७-१८)

13. सूरह का मज़मून इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि नेक कर्मों वाले वह लोग हैं जिन की बुनियादी विशेषता रब्बे करीम के सामने जवाबदेही का एहसास है।

14. जो लोग रब्बे करीम के सामने जवाबदेही के काइल न हों और जज़ा-व-सज़ा को झुठलाऐं वह क़ुर्आनी परिभाषा (Qur'aanic Term) में ''फ़ाजिर'' (बदकार) हैं क्यों कि जहाँ ख़ुदा के सामने पेशी की कल्पना न हो वहाँ पूरी ज़िन्दगी गलत हो कर रह जाती है।

15. अर्थात् वह जहन्नम में ज़रूर दाखिल होंगे और दाखिल होने के बाद उस से निकल भागने की कोई सूरत संभव न होगी । वह हमेशा के लिए उसी में पड़े रहेंगे ।

16. सवाल को इस लिए दोहराया गया है ताकि बदले के दिन की अहमियत खुल जाये और ख़ुदा की अदालत में हाजिरी की कल्पना से इन्सान लरज़ उठे।

17. अर्थात दुनिया में इन्सान जो इख्तियार का मालिक नज़र आता है क़ियामत के दिन बिलकुल बेइख्तियार और बेबस होगा चाहे दुनिया में यह राजा रह चुका हो या रंक । उस रोज इन्सान की बेबसी का यह हाल होगा कि वह अपने ही लिए कुछ न कर सकेगा कहाँ यह कि दूसरे के लिए करे। इख़्तियार और इक़्तिदार सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में होगा और मामलात के फैसले वह खुद फ़रमाएगा । यह है अल्लाह की अदालत में पेशी का वह तसव्वुर जो क़ुर्आन पेश करता है। और अक़ीदा-ए-आख़िरत का अनिवार्य अंश है। इस के विरुद्ध आवागमन का अक़ीदा एक चक्र है जिस में ख़ुदा की अदालत में पेशी का कोई मरहला (चरण) पेश आने वाला ही नहीं है। इस से इस्लाम में आख़िरत के अक़ीदे और मुशरिकीन के आवागमन के अक़ीदे के बुनियादी फ़र्क़ को अच्छी तरह मसझा जा सकता है।

८३. अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन

नाम :- सूरह के शरू ही में मुतफ़्फ़िफ़ीन (नाप तौल में कमी करने वालों) को सज़ा की धमकी सुनाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन है ।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस वक़्त की नाज़िल शुदा है जब कि क़ुर्आन की दअवत मक्का वालों के सामने पेश हो चुकी थी । वह बदले के दिन का इन्कार कर रहे थे और ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ा रहे थे ।

केनद्रीय विषय :- रब्बुल आलमीन (सारे जगत के रब) के सामने पेशी और कर्मों का बदला है। इस का एहसास दिलाने के लिए मामलात की उस ख़राबी पर पकड़ की गई है जिस में आख़िरत का एहसास न रखने वाले लोग आम तौर से फँसे होते हैं।

कलाम की तरतीब:- सूरह इन्फ़ितार से इस का सम्बन्ध बिलकुल स्पष्ट है। उस में आगाह किया गया था कि आमाल (कर्मों) को नोट करने के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। इस सूरह में इस हक़ीक़त से सूचित किया गया है कि इन्सान की अमली ज़िन्दगी (Practical Life) का रेकार्ड उस के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में महफ़ूज़ रखने का इन्तिज़ाम अल्लाह तआला ने कर रखा है।

आयत १ से ६ में कारोबारी मामलों में बेईमानी और फ़रेबकारी पर पकड़ करते हुए ख़ुदा के सामने जवाब देही का एहसास दिलाया गया है।

आयत ७ से १७ में इस हक़ीक़त से सूचित किया गया है कि बदकारों (कुकर्मियों) का आमाल नामा (कर्मपत्र) उन के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में एक ख़ास दफ़्तर में जो मुजरिमों ही के लिए निश्चित है। और क़ियामत के दिन उस रेकार्ड की बुनियाद पर फैसला किया जायेगा । और उस रोज़ उन का अन्जाम बड़ा ही हसरतनाक होगा ।

आयत १८ से २८ में नेक किरदार लोगों (सुकर्मियों) को ख़ुशख़बरी दी गई है कि उन का आमाल नामा (कर्मपत्र) उन के मरने के बाद आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में उच्चकोटि के दफ़्तर में जो नेक लोगों के लिए निश्चित है, सुरक्षित किया जाता है और क़ियामत के दिन उस रेकार्ड की बुनियाद पर फैसला किया जायेगा । उस रोज़ वह कामयाब और बामुराद होंगे ।

आयत २९ से ३६ में ईमान वालों को तसल्ली दी गई है कि वह इन्कार करने वालों के बुरा कहने पर दुखी न हों । आज वह तुम पर हँस रहे हैं मगर कल तुम उन पर हँसोगे ।

८३.सूरह अल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन

अनुवाद आयतें : ३६

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ①

1. तबाही है नाप तौल में कमी करने वालों के लिए।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ②

2. जो लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा पूरा लेते हैं।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ③

3. और जब उन को नाप कर या तौल कर देते हैं तो घटा कर देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ④

4. क्या ये लोग नहीं समझते कि इन्हें उठाया जायेगा ?[1]

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑤

5. एक बड़े दिन,[2]

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ⑥

6. जिस दिन सब लोग सारे जहान के रब के सामने खड़े होंगे।[3]

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ⑦

7. (इन का गुमान सही) नहीं।[4] यक़ीन जानों बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में होगा।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ⑧

8. और तुम्हें क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है ?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ⑨

9. वह एक रेकार्ड आफ़िस है।[5]

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑩

10. तबाही है उस दिन इन्कार करने वालों के लिए !

1. शुरू की इन आयतों में नाप तौल में कमी करने वालों पर कड़ी पकड़ की गई है। यह पकड़ यद्यपि डन्डी मारने और नाप घटा कर देने पर की गई है फिर भी इस के भावार्थ में लेने देने के मामले में की जाने वाली हर तरह की बेईमानी विश्वासघात और फरेब देना शामिल है। मिसाल के तौर पर खाने पीने वाली वस्तुओं में मिलावट करने (Adulteration) पर भी इस का इत्लाक़ (Implement) होता है क्यों कि मिलावट की सूरत में असल वस्तु को मात्रा से कम दिया जाता है। लिहाज़ा दूध में पानी मिलाने का मतलब शुद्ध दूध की मात्रा को घटा देना है और चूँकि घटा देने का यह कार्य ख़रीदार से छिपा कर किया जाता है इस लिए यह फ़रेब देना भी है और कमीनापन भी।

इस ख़राबी का असली कारण क़ुर्आन ने यह बताया है कि ऐसे लोग ख़ुदा के सामने पेशी का कोई तसव्वुर नहीं रखते हालाँकि उन का ज़मीर खुद इस बात की गवाही दे रहा होता है कि वह अपने रब के सामने जवाबदेह (उत्तरदायी) हैं क्योंकि इस मुजरिमाना कार्यशैली को अपनाने वाले लोग जब दूसरों से लेते हैं तो नाप भर कर लेते हैं और कोई व्यक्ति भी इस बात को पसन्द नहीं करता कि उस की आँखों में धूल झोंक दी जाये । और उस को मात्रा से कम दिया जाये । दूसरे शब्दों में मनुष्य की प्रकृति इन्साफ़ ही को पसन्द करती है और चाहती है कि हर एक के साथ इन्साफ़ का मामला किया जाये । यह इस बात की दलील है कि इन्सान का ख़ालिक़ (पैदाकरने वाला) इन्साफ़ ही को पसन्द करता है लिहाज़ा जो लोग दूसरों से लेन देन करते समय इन्साफ़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हैं वह दर असल अपने रब की मर्ज़ी और उस के इस हुक्म के खिलाफ़ काम करते हैं जो उन की प्रकृति (फ़ितरत) में समर्पित हुआ है। फिर उन का रब उन की इन मुजरिमाना हरकतों पर क्यों नहीं पकड़ेगा? क्या डन्डी मारने वाले और इन्साफ़ का तराज़ू क़ायम करने वाले दोनों एक जैसे हो सकते हैं? और क्या दोनो का अन्जाम एक जैसा होगा? इन्सान की फ़ितरत और उसका विजदान (अन्तःप्रेरणा) इस को एक जैसा नहीं मानता । यहीं से क़ुर्आन के बयान की सच्चाई रौशन हो जाती है कि इन्सान को एक दिन जी उठना है और अपने रब के सामने कार्यशैली के सिलसिले में जवाबदेही करनी है और उस के अनुसार इनाम या सज़ा पाना है।

इस से स्पष्ट हुआ कि इन्सान जब ख़ुदा के सामने जवाब देही का तसव्वुर नहीं रखता तो उस के लेने के पैमान और होते हैं और देने के और। वह न केवल अपना हक़ पूरा पूरा वसूल करना चाहता है बल्कि यह भी चाहता है कि दूसरो के अधिकारों पर भी डाका डाले । इस विचार धारा के सुधार का सही और असरदार माध्यम ख़ुदा के सामने जवाबदेही का तसव्वुर ही है। इस लिए आर्थिक बुराइयों को दूर करने का मसला हो या समाजी बिगाड़ के सुधार का मसला, आदमियों में यह चेतना जगाये बग़ैर वास्तविक सुधार संभव नहीं ।

2. मुराद क़ियामत का दिन है जो बेहद सख़्त होगा।

3. ख़ुदा की अदालत में हाज़री कोई मामूली बात नहीं है कि आदमी उस पर से सरसरी तौर से गुज़र जाये बल्कि यह बेहद सख़्त और कठिन मरहला होगा जो हर एक को ज़रूर पेश आना है लिहाज़ा अगर वह चाहता है कि सलामती के साथ इस मरहले से गुजर जाये तो उसे अपने दिल और दिमाग़ में इस तसव्वुर को बसाना होगा और इसी बुनियाद पर ज़िन्दगी गुज़ारना होगी।

ज़रा कल्पना कीजिए अल्लाह की अदालत का जब कि सारे इन्सान ज़िन्दा हो कर हश्र के मैदान में जमा हो चुके होंगे, कायनात का फ़रमाँरवा (शासक) अदालत बरपा फ़रमाएगा हर व्यक्ति की उस के दरबार में पेशी होगी और उसे पूरी ज़िन्दगी का हिसाब पेश करना होगा। फ़रिश्ते इस बात का इन्तेज़ार कर रहे होंगे कि किस के पक्ष में क्या फ़ैसला होता है ताकि उसे लागू करने के लिए हरकत

में आऐं। उस वक्त इन्सान बिलकुल बेबस होगा । अगर इन्सान आज उस बेबसी की कल्पना कर ले तो अल्लाह के ख़ौफ़ से काँप उठे और उस के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा हो । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में क़ियामत की स्थिति का नक़शा इस तरह खींचा गया है:-

يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ حَتّٰى يَغِيْبَ اَحَدُهُمْ فِيْ رَشْحِهٖ اِلٰى اَنْصَافِ اُذُنَيْهِ۔ (مسلم کتاب الجنۃ)

''जिस रोज़ लोग रब्बुल आलमीन के सामने पेशी के लिए खड़े होंगे तो वह पसीने में इस तरह शराबोर होंगे कि कुछ लोगों के कान के आधे हिस्से तक का शरीर पसीने में डूब रहा होगा''। (मुस्लिम किताबुल जन्नह)

अल्लाहु अकबर ! कैसा सख़्त मरहला होगा जिस से अल्लाह के रसूल ने इन्सान को पहले से ही सुचित कर दिया है। काश कि लोग क़ियामत की स्थिति की कल्पना से अपने विचारों पर सुधार के लिए दोबारा दृष्टि डालने (Revise) के वास्ते तैयार होते ।

4. अर्थात उन का यह अन्दाज़ा (अनुमान) ग़लत है कि न दोबारा जी उठना है और न ख़ुदा के सामने जबाबदेही करना है

5. ''सिज्जीन'' सिज्न से बना है जिस के अर्थ क़ैद ख़ाना के हैं। यह लफ़्ज़ क़ुर्आन ने अपनी परिभाषा (Term) के तौर पर इस्तेमाल किया है और इस की ख़ुद ही यह व्याख्या की है कि वह ''किताबुम्मरक़ूम'' है अर्थात् ''रेकार्ड आफ़िस''। यह आलमे बरज़ख़ (यमलोक) की एक बड़ी हक़ीक़त है जिस से इन्सान को बाख़बर (सूचित) किया गया है। इस का सिलसिला उस की मौत तक जारी रहता है। मौत के बाद उस का आमाल नामा (कर्मपत्र) आलमे बर्ज़ख़ (यमलोक) में स्थानान्तरित (Transfer) हो जाता है। अगर वह बदकार (कुकर्मी) था तो उस के आमाल नामे को ''सिज्जीन'' नामी रेकार्ड आफिस में लिखा जाता है। इस से वास्तव में यह स्पष्ट करना अभिप्राय है कि हर हर व्यक्ति के आमाल नामे को उस के मरने के बाद सुरक्षित रखने का अल्लाह तआला ने एहतिमाम कर रखा है और क़ियामत के दिन उस को खोल दिया जायेगा और इसी की बुनियाद पर अल्लाह की अदालत में फैसला होगा ।

जो बदले के दिन का इन्कार करते हैं। और इस का इन्कार वही लोग करते हैं जो हद से गुज़रने वाले गुनाहगार होते हैं। ऐसे व्यक्ति को जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं। नहीं, बल्कि हक़ीक़त यह है कि उन के दिलों पर उन के (बुरे) कर्मों का ज़ंग (मुर्चा) चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं । उस दिन वह अपने रब से दूर रखे जायेंगे। फिर वह जहन्नम में दाखिल होंगे। उस वक्त उन से कहा जायेगा कि यह वही चीज़ है जिस का तुम इन्कार करते रहे हो। *(अल-क़ुर्आन)*

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾

11. जो बदले के दिन का इन्कार करते हैं।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾

12. और इस का इन्कार वही लोग करते हैं जो हद से ग़ुज़रने वाले [6] गुनाहगार होते हैं।[7]

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا
قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

13. ऐसे व्यक्ति को जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह तो अगले लोगों की कहानियाँ हैं।[8]

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. नहीं,[9] बल्कि हक़ीक़त यह है कि उन के दिलों पर उन के (बुरे) कर्मों का ज़ंग (मुर्चा) चढ़ गया है।[10]

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

15. हरगिज़ नहीं ।[11] उस दिन वह अपने रब से दूर रखे जायेंगे।[12]

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾

16. फिर वह जहन्नम में दाखिल होंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17. उस वक्त उन से कहा जायेगा कि यह वही चीज़ है जिस का तुम इन्कार करते रहे हो।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾

18. (इन का दावा सही) नहीं ।[13] नि:संदेह ही नेक किरदार लोगों का आमाल नामा (कर्मपत्र) इल्लीयीन में होगा।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19. और तुम्हें क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾

20. वह एक रेकार्ड आफ़िस है।[14]

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾

21. जहाँ (अल्लाह के दरबार के) मुकर्रिबीन (समीपवर्तियों या Nearest) की हाजिरी होती है।[15]

6. हद से गुज़र जाने वाले से मुराद बन्दगी की हदों को लांघ जाने वाले लोग हैं। यानी जो अपने को अल्लाह का बन्दा नहीं समझते बल्कि खुद मुख़्तार (स्वाधीन) समझ कर मनमानी करते रहते हैं।

7. गुनाहगार से मुराद गुनाहों में लिप्त होने वाले लोग हैं। जब इन्सान ख़ुदा का बन्दा बन कर रहने के लिए तैयार नहीं होता तो फिर उस की पूरी ज़िन्दगी गुनाह, बुराई, जुर्म की ज़िन्दगी बन कर रह जाती है। ऐसा व्यक्ति बदले के दिन को क्यों मानने लगे ।

8. या'नी क़ुर्आन में काफ़िर क़ौमों पर अल्लाह के प्रकोप की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया गया है उन से सबक़ लेने के बजाए ये लोग उन को अफ़साने और कहानियाँ क़रार देते हैं। मौजूदा ज़माने के इन्कार करने वाले भी इसी तरह के इल्ज़ाम लगाया करते हैं। उन के नज़दीक ये सब कुछ ''दकियानूसियत''है।

9. यह तरदीद (खंडन) है इन्कार करने वालों के उस इल्ज़ाम की जो ऊपर बयान हुआ ।

10. या'नी वह क़ुर्आन के बारे में इतनी ग़लत बात कहने की जुर्रत इस वजह से कर रहे हैं कि उन के बुरे कर्मों ने उन को ढीट बना दिया है वर्ना अच्छे स्वभाव के इन्सान क़ुर्आन के बारे में ऐसी नामाक़ूल बात हरगिज़ नहीं कह सकते ।

दिल पर जंग (मुर्चा) चढ़ जाने की व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह फ़रमाई है।

اِنَّ الْعَبْدَ اِذَا اَخْطَأَ خَطِيْئَةً نُكِتَتْ فِيْ قَلْبِهٖ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فَاِذَا هُوَ نَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ وَتَابَ صُقِلَ قَلْبُهٗ وَاِنْ عَادَ زِيْدَ فِيْهَا حَتّٰى تَعْلُوَ قَلْبَهٗ وَهُوَ الرَّانُ الَّذِيْ ذَكَرَ اللّٰهُ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۔ (ترمذी अबवाबुत्तफ़सीर)

'' बन्दा जब किसी गुनाह को कर गुज़रता है तो उस के दिल पर एक काला धब्बा लग जाता है। अगर वह उस (गुनाह) से बाज़ आ जाता है और क्षमा याचना और तौबा करता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है लेकिन अगर यह फिर गुनाह करता है, तो यह धब्बा बढ़ जाता है यहाँ तक कि वह पूरे दिल पर छा जाता है। यही वह जंग है जिस का ज़िक्र अल्लाह तआला ने आयत كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَا كَانُوْا يَكْسِبُوْن में किया (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़सीर)

11. या'नी उन की यह आरज़ू भी ग़लत है कि अगर आख़िरत बरपा हो ही गई तो हमें जिस तरह ''इज़्ज़त का मक़ाम'' हासिल हुआ है ख़ुदा के यहाँ भी यह प्रमुख रूप से ख़ुदा के निकट होंगे।

12. अर्थात् यह लोग अल्लाह के यहाँ कोई प्रमुखता क्या प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें उस रोज़ अपने रब से दूर रखा जायेगा । वह उस की कृपा से भी महरूम होंगे और उस की शान के जलवे देखने से भी ।

13. या'नी उन का यह दावा सही नहीं कि अल्लाह के यहाँ नेक और बद में कोई फ़र्क़ नहीं बल्कि अल्लाह तआला ने बदकारों का आमालनामा अलग महफ़ुज़ रखने के लिए अलग अलग रेकार्ड आफ़िस क़ायम कर रखे हैं।

14.''इल्लीयीन'' का शाब्दिक अर्थ ''उच्च स्थान'' है। यहाँ इस शब्द को क़ुर्आन ने अपनी विशेष परिभाषा (Term) के तौर पर इस्तेमाल किया है और इस की व्याख्या भी खुद ही कर दी है कि वह ''किताबुम्मुकर्रम'' है यानी वह एक रेकार्ड आफिस है जहाँ नेक लोगों के कर्म पत्र (आमाल नामे) लिखे जाते हैं। यह सिलसिला उन के मरने के बाद शुरू होता है और यह आलमे बरज़ख़

(यमलोक) का रेकार्ड आफ़िस है।

15. मुराद समीपवर्ती अथवा (Nearest) फ़रिश्ते की हुज़ूरी है। नेकोकारों (सुकर्मियों) के रेकार्ड आफ़िस पर मुक़र्रब फ़रिश्तों की हुज़ूरी गोया मुक़र्रब फ़रिश्तों की तरफ़ से नेक लोगों के हक़ में अभिनन्दन है और यह बहुत बड़ा सम्मान और बहुत बड़ी प्रतिष्ठा है जो यमलोक में नेक बन्दों को हासिल होती है।

बेशक नेकोकार (सुकर्मी) ऐश में होंगे। शानदार तख़्तों पर बैठे नज़ारा कर रहे होंगे, उन के चेहरों पर तुम देखोगे कि ख़ुशहाली एवं आनन्द की लहर झलक रही है। उन को ऐसी शराब पिलाई जायेगी जो ख़ालिस और मुहरबन्द होगी। यह मुहर मुश्क की होगी । और रग़बत करने (रूचि रखने) वालों को चाहिए कि बढ़ चढ़ कर इस की रग़बत करें। *(अल-क़ुर्आन)*

22. बेशक नेकोकार (सुकर्मी) ऐश में होंगे।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

23. शानदार तख़्तों पर बैठे नज़ारा कर रहे होंगे,[16]

عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾

24. उन के चेहरों पर तुम देखोगे कि ख़ुशहाली एवं आनन्द की लहर झलक रही है।[17]

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

25. उन को ऐसी शराब पिलाई जायेगी जो ख़ालिस और मुहरबन्द होगी।

يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾

26. यह मुहर मुश्क की होगी।[18]और रग़बत करने (रूचि रखने) वालों को चाहिए कि बढ़ चढ़ कर इस की रग़बत करें।[19]

خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

27. उस शराब में तसनीम का मिश्रण होगा,[20]

وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

28. यह एक चश्मा (स्रोत) होगा जिस में से मुक़र्रब (Nearests) बन्दे पियेंगे।[21]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾

29. जो लोग मुजरिम बने हुए थे वह ईमान वालों पर हँसा करते थे।[22]

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾

30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखों से इशारा करते।[23]

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

31. और जब अपने घर वालों में लौटते तो ख़ुश ख़ुश लौटते।[24]

وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾

32. और जब उन्हें देखते तो कहते कि वे बहके हुए लोग हैं,[25]

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾

16. या'नी बादशाहों की तरह शानदार तख़्त पर बैठे जन्नत की विशाल और बहार भरे वातावरण में अपने रब की नेमतों और उस की शान के जलवे देख रहे होंगे ।

17. नेक लोगों को जन्नत में जो ज़िन्दगी मयस्सर आयेगी वह ऐसी आनन्दमय होगी कि उन के चेहरे हमेशा तर और ताज़ा एवं खिले रहेंगे ।

18. इस में तन्ज़ (व्यंग्य) है दुनिया की शराब पर जो गन्दी होती है और ढक्कन खुलते ही उस की सड़ान्ध से दिमाग़ फिरने लगता है। इस के विरूद्ध जन्नत के शराब की विशेषता यह होगी कि वह हर तरह की खराब मिलावट से पाक ख़ालिस शराब होगी और वह जिन बोतलों या बरतनों में बन्द होगी उन पर मुश्क की (कस्तुरी) मुहर लगी होगी । इस लिए उस की ख़ुश्बू से दिमाग़ ख़ुश्बुदार होगा और पीने में लज़्ज़त महसूस होगी ।

19. ''उस की रग़बत करे'' से मुराद जन्नत की नेमतों की रग़बत करना (रूचि रखना) है जिन का वर्णन ऊपर हुआ मतलब यह है कि आदमी को तुच्छ के बजाय उच्च वस्तु का और समाप्त हो जाने वाले वस्तु के मुक़ाबले में सदैव बाक़ी रहने वाली वस्तुओं का चुनाव करना चाहिए। और इस लिहाज़ से आदमी ग़ौर करे तो दुनिया का ऐश और उस की लज़्ज़ते, आख़िरत के ऐश और उस की लज़्ज़तों के मुक़ाबले में बिलकुल बेक़ीमत और बे हक़ीक़त क़रार पायेंगी और अकलमन्दी का तक़ाज़ा यही होगा कि आदमी इन का लोभी बनने और माद्दा परस्ती में डूबने के बजाय आख़िरत की नेमतों का तलबग़ार बने और इस मैदान में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश करे।

क़ुर्आन ने यहाँ जन्नत की नेमतों का अभिलाषी बनने का जो प्रोत्साहन दिया है इस से उन लोगों के विचार का खंडन होता है जो ''अदब बराए अदब'' के पैटर्न (Pattern) पर ''नेकी बराए नेकी''(Virtue for the Sake of Virtue) का सिद्धान्त पेश करते हैं। उन के नज़दीक जन्नत और उस की नेमतों की आरज़ू रखे हुए नेकी करना एक गिरी हुई बात है। यूँ तो बात ऊँची सतह की मालूम होती है लेकिन वास्तव में यह सिर्फ़ ख़याली उड़ान है। इस का न इन्सान की साइक्लॉजी से कोई नाता है और न ही यह कोई सम्भव बात है। एवं यह क़ुर्आन और सुन्नत के स्पष्ट आदेशों के भी विरूद्ध है। इस्लाम की शिक्षा न तो सिर्फ फ़लसफ़े से प्रेरित है और न कल्पनाओं की दुनिया में उड़ान भरने वाली बल्कि उस की शिक्षा वास्तविकताओं से परिपूर्ण इन्सानी साइकलॉजी के ठीक ठीक अनुकूल और उस को अमल पर आमादा करने वाली हैं। वह शायरी करने नहीं आया है, बल्कि मिट्टी से बने हुए इन्सान को जन्नत का बाशिन्दा बनाने के लिए आया है।

20. ''तस्नीम'' का अर्थ बुलन्द करने के हैं। यह जन्नत के एक चश्मे (स्रोत) का नाम है और शायद यह नाम उस की इस विशेषता के आधार पर रखा गया है कि उस में से पीने वालों की बुलन्दी में और वृद्धि होगी ।

21. तस्नीम जन्नत वालों का सब से उम्दा मशरुब (पेय पदार्थ) होगा । नेक लोगों को जो शराब पिलाई जायेगी उस में इस उम्दा मशरूब की मिलावट होगी । ताकि उस की मस्ती में वृद्धि हो जाये। लेकिन लोग मुक़र्रबीन (Nearest) के दर्जे के होंगे वह सीधे इस चश्मे से पी सकेंगे। गोया आनन्द उठाने एवं सुरूर में उन का हिस्सा उतना ही अधिक होगा जितना अधिक हिस्सा उन का, ईमान व अच्छे कर्म और अल्लाह के लिए क़ुर्बानियाँ देने में रहा है।

22. अर्थात् वह ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते और उन पर फ़ब्तियाँ कसते।

ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाने का सिलसिला तो मौजूदा ज़माने में भी जारी है। अलबत्ता कुछ नये जुमलों के साथ।--- चुनान्चे आज के ''मार्डन'' लोग इस्लाम की सही पैरवी करने वालों पर मुल्लाइयत (Orthodox) और रूढ़िवादी (Conservatism) के जुमले कसते हैं।

23. या'नी इन्होंने ईमान वालों को ज़लील करने और गिराने और नीचा दिखाने में कोई कसर न उठा रखी थी । यहाँ तक कि जब उन का ग़ुज़र ईमान वालों के पास से होता है तो वह आपस में उन के ख़िलाफ़ कनखियों से इशारे करते ।

24. इन आयात में विरोधियों के उस रवैये की तस्वीर खींची गई है जो ईमान वालों के विरुद्ध वह अपनाये हुए थे । जब वह अपने दिल की भड़ास निकालने के बाद घर वापस लौटते तो बजाय इस के कि वह अपनी हरकतों पर शर्मिन्दा हों उल्टे ख़ुश होते और पूरे फ़ख़र के साथ इस का ज़िक्र अपने घर वालों से करते ।

इस से अन्दाज़ा होता है कि जो लोग हक़ को ठुकरा देते हैं उन का मिज़ाज उन की मनोदशा सत्यवादियों (अहले-हक़) के बारे में क्या होती है।

25. मौजूदा ज़माने में जो लोग इस्लाम को दूसरे धर्मों जैसा समझ कर उसे भी अफ़ीम कह देते हैं वह क़ुर्आन की दअवत को ले कर उठने वालों के बारे में यह बावर कराने की कोशिश करते हैं कि यह बुद्धि से खाली है।

हालाँकि वह उन पर निगराँ (निरीक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे। तो आज ईमान वाले, इन्कार करने वाले (कुफ़्फ़ार) पर हँसेंगे। *(अल-क़ुर्आन)*

33. हालाँकि वह उन पर निगराँ (निरीक्षक) बना कर नहीं भेजे गये थे।[26]

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

34. तो आज ईमान वाले, इन्कार करने वाले (कुफ़्फ़ार) पर हँसेंगे।[27]

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

35. तख़्तों पर बैठे (उन का हाल) देख रहे होंगे।[28]

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

36. मिल गया ना (इन्कार करने वाले) काफ़िरों को उन का बदला।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

26. या'नी अल्लाह तआला ने उन्हें अपने आमाल का ज़िम्मेदार ठहराया था न कि दूसरों के आमाल का लेकिन यह अपने आप को भुलाकर ईमान वालों के पीछे पड़ गये ताकि उन्हें तकलीफ़ दे दे कर अपनी बात ज़बरदस्ती उन से मनवायें । गोया ख़ुदा ने उन्हें दुनिया में इस लिए नहीं भेजा था कि वह अपने आप को नेक बना कर प्रस्तुत करें बल्कि इस लिए भेजा था कि दरोग़ा बन कर ईमान वालों की खूब ख़बर लें ।

27. दुनिया में इन्कार करने वाले कुफ़्फ़ार ईमान लाने वालो पर हँसते रहे हैं लेकिन आख़िरत में ईमान वाले इन कुफ़्फ़ार पर हँसेंगे । इस तरह उन को अपनी इस हरकत का ठीक ठीक बदला मिलेगा । और चूँकि कुफ़्फ़ार पर दुनिया में अल्लाह की दलील क़ायम हो चुकी थी इस के बावजूद इन्हों ने हक़ को क़ुबूल करने की राह नहीं अपनायी बल्कि सरकश बन कर हक़ का विरोध करते रहे और ईमान वालों के दुश्मन बन कर रहे। इस लिए आख़िरत में वह किसी हमदर्दी के अधिकारी या उम्मीदवार नहीं होंगे। अगर वह किसी हमदर्दी के अधिकारी होते तो अल्लाह तआला ख़ुद उन पर रहम फ़रमाता । इस बिना पर ईमान वालों का उन के हाल पर हँसना बिलकुल सही और उन के अनुकूल होगा ।

28. अर्थात् जहन्नम में जो हाल इन्कार करने वाले कुफ़्फ़ार का हो रहा होगा उसे ईमान वाले जन्नत में अपने तख़्ता पर बैठे बैठे ही देख रहे होंगे। क़ुर्आन की इस बात को भी आज के साइन्सी दौर में समझना कुछ मुश्किल नहीं रहा । जब कि हम अपने घरों ही में बैठे मीलों दूर की चीज़े टेलिवीज़न पर देख लेते हैं।

८४. अल्-इन्शिक़ाक़

नाम :- इस सूरह की शुरूआत में क़ियामत के दिन आसमान के फटने की ख़बर दी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल-इन्शिक़ाक़'' है या'नी वह सूरह जिस में (आसमान) के फटने का ज़िक्र हुआ है।

नाज़िल होने का समयः- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि शुरू के दौर में नाज़िल हुई होगी। जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दअवत देना शुरू कर दिया था और क़ियामत से लोगों को ख़बरदार कर रहे थे ।

केन्द्रिय विषय :- हिसाब का दिन और अच्छा एवं बुरा अन्जाम है। पिछली सूरह में बयान किया गया था कि इन्सान का आमाल नामा (कर्मपत्र) उस के मरने के बाद आलमे-बर्ज़ख़ (यमलोक) में एक रेकार्ड आफ़िस (सिज्जीन या इल्लिय्यीन) में सुरक्षित रखा जाता है। इस सूरह में इस बात की सूचना दी गई है कि क़ियामत के दिन पेशी से पहले हर व्यक्ति को उस का कर्म पत्र उस के हाथ में दे दिया जायेगा।

कलाम की तरतीबः- आयत १ से ५ में उस इन्क़िलाब का संक्षिप्त वर्णन है जो क़ियामत के प्रकट होते ही आसमान और ज़मीन में बरपा होगा।

आयत ६ से १५ में इन्सान के अल्लाह की अदालत की तरफ़ बढ़ने, कर्म पत्र हाथ में दिये जाने और अपने अन्जाम को पहुँचने का ज़िक्र है।

आयत १६ से १९ में आसारे कायनात से इस बात पर तर्क वितर्क किया गया है कि इन्सान को मौत के बाद कई मरहलों से गुज़ारना होगा।

आयत २० से २५ में उन लोगों को चेतावनी दी गई है जो क़ुर्आन को सुनकर ख़ुदा के आगे झुकते नहीं हैं बल्कि उस को झुठलाते हैं, और उन लोगों को कभी न ख़त्म होने वाले इनाम की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है जो ईमान ला कर नेक अमल करते हैं।

८४.सूरह अल्-इन्शिक़ाक़

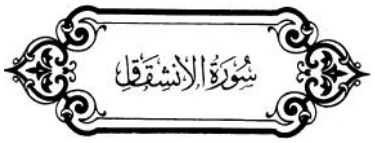

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ

अनुवाद आयतें : २५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **जब आसमान फट जायेगा,[1]**

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ ﴿١﴾

2. **और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगा, और उस को अवश्य ही पालन करना चाहिए,[2]**

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ ﴿٢﴾

3. **और जब जमीन फ़ैला दी जायेगी।[3]**

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ ﴿٣﴾

4. **और जो कुछ उस के अन्दर है उसे उगल कर खाली हो जायेगी,[4]**

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۙ ﴿٤﴾

5. **और अपने रब की आज्ञा का पालन करेगी, और उस को अवश्य ही पालन करना चाहिए।[5]**

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ؕ ﴿٥﴾

6. **ऐ इन्सान,तू खिंचते खिंचते अपने रब ही की तरफ़ जा रहा है और आख़िरकार उस से मिलने वाला है।[6]**

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ ﴿٦﴾

7. **तो जिस का कर्मपत्र (आमाल नामा) उस के दाहिने हाथ में दिया गया,[7]**

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ ﴿٧﴾

8. **उस से आसान हिसाब लिया जायेगा,[8]**

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ ﴿٨﴾

9. **और वह अपने सम्बन्धियों [9] के पास ख़ुश ख़ुश लौटेगा।**

وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ ﴿٩﴾

1. यह सोचना सही नहीं कि आसमान तो बस नज़र की सीमा का नाम है और इस का कोई भौतिक अस्तित्व (माद्दी वजूद) नहीं । और जब इस की कोई भौतिक वास्तविकता नहीं तो इस के फटने का सवाल पैदा ही कहाँ होता है? वास्तविकता यह है कि साइन्स के नाम पर यह बात ज़ेहन को मात्र प्रभावित करने के लिए कही जाती है वर्ना यह न कोई साइन्सी खोज है और न इस विचार के लिए कोई ठोस बुनियाद ही है। जहाँ तक मौजूदा साइन्स का सवाल है सच यह है कि उन की पहुँच अभी आसमान तक हो ही नहीं सकी है। वह तो अभी सितारों की दुनिया ही में चक्कर लगा रही है। वह कायनात के क्षेत्रफल को नापने में बिलकुल असमर्थ है। अंतरिक्ष विज्ञान के अध्यन से स्पष्ट होता है कि साइन्टिस्ट अभी कायनात की विशालता का सही अन्दाज़ा नहीं कर सके हैं। अत: अंतरिक्ष विशेषज्ञ (W. Bartky) अपनी किताब में कायनात की आश्चर्यजनक विशालता को बयान करने के बाद साफ़ साफ़ स्वीकार करता है कि :-

"What lies beyond no man knows. Whether the stars continue without end or whether the universe has a definite boundary remains, and perhaps will always remain, a topic for speculative argument." -(Highlights of Astronomy p. 260).

और जब साइन्स यह बताने में अपने को असमर्थ पाती है कि इस कायनात की कोई सीमा है या नहीं तो यह इस बात का सबूत है कि वह कायनात का क्षेत्रफल अभी मालूम नहीं कर सकी है। ऐसी सूरत में यह दावा किस तरह किया जा सकता है कि आसमान का कोई भौतिक अस्तित्व है ही नहीं। असल बात यह है कि ग्रहों एवं नक्षत्रों (Astronomy) की किताबों में सिर्फ उन बातों के बयान करने पर बस नहीं किया जाता जो वैज्ञानिक प्रयोग एवं परिक्षण द्वारा जानकारी में आई है बल्कि उन के साथ अटकलों को भी जोड़ दिया जाता है और लोग उस पूरे सम्मिश्रण (Amalgam) को साइन्स के नाम से प्रस्तुत करके ग़लत बातों को भी सही बावर कराने की कोशिश करते हैं।

आसमान के बारे में क़ुर्आन का बयान बहुत ही स्पष्ट है जैसे यह कि

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِاَيْدٍ ـ (الذاريات ـ ٤٧)

''उस ने आसमान को अपने हाथ से बनाया''

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا ـ (الرحمٰن:٧)

''उसे बुलन्द किया''(अर्रहमान-७)

سَقْفًا مَحْفُوظًا ـ (انبياء ـ ٣٢)

''उसे सुरक्षित छत बनाया'' (अम्बिया-३२)

وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ـ (حٰم سجده ـ ١٢)

''उसे सितारों से सजाया'' (हा मीम सज्दा-१२)

साथ ही क़ुर्आन ख़बर देता है कि

اِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ـ (انشقاق ـ ١)

''क़ियामत के दिन आसमान फट जायेगा''।(इन्शिक़ाक़ १) और فَكَانَتْ اَبْوَابًا ـ (النباء ـ ١٩)

'' उस में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे''। (अन्-नबा १९)

क़ुर्आन के इस बयान से आसमान के एक भौतिक वस्तु होने ही की कल्पना उभरती है इस लिए इस को ऐसा कोई अर्थ पहनाना सही न होगा उस के शब्दों से सरलतापूर्वक समझ में आ जाने वाले भावार्थ के बिलकुल ख़िलाफ़ हो । (अधिक व्याख्या के लिए देखे सूरह इन्फ़ितार फुटनोट नं.१)

2. या'नी यह ख़याल न करो कि आसमान ख़ुदा के आदेश की अवहेलना कर सकता है। नहीं बल्कि उस को ख़ुदा के आदेश का पालन निश्चित रूप से करना है क्यों कि वह आसमान का ख़ालिक़ और मालिक है और ख़ुदा की सत्ता उस पर पूरी तरह क़ायम है लिहाज़ा जब क़ियामत के दिन वह उसे फटने का हुक्म देगा तो वह यह हुक्म सुनते ही टुकड़े टुकड़े हो जायेगा ।

3. अर्थात् ज़मीन अपने मौजूदा रूप में बाक़ी नहीं रहेगी बल्कि उसे तान कर फैला दिया जायेगा ताकि वह बहुत बड़े समतल मैदान का रूप धारण कर ले जिस पर ख़ुदा के सामने पेशी के लिए पूरी इन्सानी बिरादरी के लोगों को जगह मिल जाये जो पहले दिन से क़ियामत तक पैदा होते रहे हैं।

4. इशारा है इस बात की तरफ़ कि ज़मीन मुर्दों को उगल कर उन के बोझ से इस तरह ख़ाली हो जायेगी जैसे गर्भवती महिला बच्चा जनने के बाद बोझ से छुटकारा पाती है। गोया ज़मीन मुर्दों से बोझल हो रही है और उन को उगलने ही को है।

5. अर्थात् ज़मीन भी अपने रब के आदेश का पालन इशारा पाते ही करेगी । क़ियामत के घटित होने में कोई चीज़ भी रुकावट पैदा नहीं कर सकती ।

6. अर्थात् इन्सान को अपने जीवन के सफ़र का ज्ञान हो या न हो वह जा रहा है अपने रब की तरफ़ ताकि अल्लाह की अदालत में हाज़िर हो । जिस तरह ज़मीन के साथ हम भी गर्दिश करते रहते हैं चाहे हम गर्दिश करना चाहें या न चाहें और चाहे हमें इस गर्दिश का ज्ञान हो या न हो । उसी तरह जीवन की यह नैया हमें लिये हुए रब्बुल आलमीन (सारे जगत के रब) की अदालत की ओर चलती जा रही है और हमारी आख़री मन्ज़िल आख़िरत है लेकिन नादान लोग दुनिया ही को अपनी मन्ज़िल मसझते हैं। इस लिए इन्हें आख़िरत के भय का आभास नहीं होता ।

अरबो इन्सान दुनिया में पैदा होते हैं और मरते हैं मगर कितने हैं जिन्होंने इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया हो कि हमारे जीवन के सफ़र की शुरूआत कहाँ से हुई है और सफ़र की आख़री मन्ज़िल क्या है? अगर हमें रास्ते में कोई व्यक्ति मिले और हम से पूछे कि तुम कहाँ से आ रहे हो और वह जवाब दे कि मुझे नहीं मालूम और इस के बाद हमारे यह सवाल करने पर कि ''तुम कहाँ जा रहे हो?'' वह यह जवाब दे कि ''मुझे नहीं मालूम तो क्या उस के इस जवाब पर हमें अश्चर्य नहीं होगा और क्या हम उसे नादान नहीं कहेंगे? मगर दुनिया में अनगिनत लोग ऐसे हैं जिन से उन के जीवन के सफ़र के बारे में यही सवाल कीजिये तो यही जवाब मिलेगा कि हमें न इस सफ़र की शुरूआत का पता है न ख़ात्मे का । न आरम्भ का ज्ञान है न परिणाम का । अपनी मन्ज़िल सुनिश्चित किये बिना हम अपनी ज़िन्दगी का सफ़र जारी रखे हुए हैं। कैसे नादान हैं ये लोग जो अन्जाम से बेपरवाह हो कर अंधेरे में टामक टोइया मार रहे हैं। काश इन्हें ज्ञान होता कि वह इसी तरह अपने रब की अदालत की तरफ़ खिंचे चले जा रहे हैं जिस तरह कि सुई चुम्बक की तरफ़ खिंची जाती है।

7. अल्लाह तआला ने दाहिने हाथ को यह विशेषता प्रदान की है कि वह अच्छाई की निशानी ठहराया गया । अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो आदाब सिखाए हैं उन में यह बात भी शामिल है कि तमाम अच्छे काम जैसे खाना, पीना, वुज़ू करना, दान करना इत्यादि अपने दाहिने हाथ से अन्जाम दिये जायें । अल्लाह तआला के प्रदान किये हुए इसी सम्मान की बिना पर

नेक लोगों का दाहिना हाथ क़ियामत के दिन इस के योग्य होगा कि उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) उन के इस हाथ में दिया जाये ।

8. नेक लोगों से आसान हिसाब लिया जायेगा । आसान हिसाब से मुराद जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने व्यख्या की है, ख़ुदा के सामने जवाब देने के लिए सिर्फ़ पेशी है। इस पेशी के मौक़े पर कड़ी पूछ ताछ नहीं होगी बल्कि अल्लाह तआला दरगुज़र फ़रमाएगा । हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

''क़ियामत के दिन जिस से हिसाब लिया गया वह अज़ाब में पड़ गया । हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अनहा ने अर्ज़ किया । ''अल्लाह तआला तो फ़रमाता है فَسَوْفَ حَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا (उस से आसान हिसाब लिया जायेगा)'' फ़रमाया इस का मतलब कड़ी पूछताछ करना नहीं है बल्कि सिर्फ़ पेशी है। कड़ी पूछ ताछ जिस से भी क़ियामत के दिन की गई वह अज़ाब में डाला गया ।''(मुस्लिम किताबुलजन्नह)

9. अपने सम्बन्धियों से मुराद उस के बीवी बच्चे हैं जो ईमान वाले होंगे और जिन के साथ भी अल्लाह तआला ने दरगुज़र का मामला किया होगा । वह जन्नत में एक साथ जमा होंगे और उन्हें एक दूसरे की संगत प्राप्त होगी एवं इस मक़सद के लिए उन में से किसी का दर्जा घटाया नहीं जायेगा बल्कि बुलन्द कर दिया जायेगा ।

(देखिये सूरह तूर आयत २१)

10. और जिस का कर्मपत्र (आमाल नामा) उस की पीठ के पीछे दिया गया,[10]

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝١٠

11. वह मौत को पुकारेगा।

فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۝١١

12. वह भड़कती आग में दाख़िल होगा।

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝١٢

13. वह अपने घर वालों में मस्त था।[11]

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝١٣

14. उस ने समझ रखा था कि उस को कभी लौटना नहीं है?[12]

إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ۝١٤

15. क्यों नहीं ! उस का रब तो उस को ख़ूब देख रहा था।

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝١٥

16. नहीं,[13] मैं क़सम खाता हूँ[14] शफ़क़ की,[15]

فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦

17. और रात की,और जो कुछ वह अपने अन्दर समेट लेती है उस की,[16]

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٧

18. और चाँद की जब कि वह पूर्ण हो जाता है,

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝١٨

19. कि तुम को निश्चय ही एक मरहले से दूसरे मरहले में पहुँचना है।[17]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝١٩

20. फिर इन लोगों को क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते,[18]

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝٢٠

21. और जब इन के सामने क़ुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते,[19]

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝٢١

10. यह उन लोगों का अन्जाम बयान हो रहा है जो ख़ुदा के सामने उस के दरबार में पेशी पर यक़ीन नहीं रखते और उस से बग़ावत की बुनियाद पर जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे लोग अल्लाह की अदालत में मुजरिम की हैसियत से पेश होंगे । इस लिए उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) पीछे की तरफ़ से उन के बाऐं हाथ में पकड़ा दिया जायेगा । इन्हों ने अल्लाह की किताब को बेपरवाही के साथ एक किनारे डाल दिया था । इस लिए उचित रूप से वह इस योग्य होंगे कि उन का कर्मपत्र (आमाल नामा) उन्हें पीठ के पीछे से दिया जाये ।

11. अर्थात् अपनी और अपने बच्चों के आख़री अन्जाम से बेपरवाह होकर अपनी और उन की दुनिया बनाने ही में मस्त था ।

12. या'नी जब ख़ुदा उसे देख रहा था तो वह अपने दरबार में पेशी के लिए बुलाता कैसे नहीं? उस के ''बसीर'' (देखने वाला) होने की सिफ़त इस बात का तक़ाज़ा करती है कि वह अपने बन्दों को अपने यहाँ जवाबदेही के लिए बुलाये और इस के लिए ज़रूरी है कि उन को मरने के बाद उठाए।

13. यह खंडन है इन्कार करने वालों के इस ख़याल का कि मरने के बाद न फिर ज़िन्दा होना है और न ख़ुदा कि तरफ़ लौटना है।

14. क़सम खाने का मतलब उन चीज़ों को जिन की क़सम खाई गई है, दलील के तौर पर या शहादत के रूप में पेश करना है। अधिक व्याख्या के लिए देखें सूरह तकवीर फुट नोट१४ ।

15. शफ़क़ उस लाली को कहते हैं जो सूरज के डूब जाने के बाद आसमान पर झलकती है। अर्थात् सान्धयालालिमा ।

16. समेटने से अभिप्राय रात का अपने दामन में सितारों को समेट लेना है।

17. यह है वह बात जिस की ताईद (समर्थन) में आसारे कायनात के कुछ हालात को पेश किया गया है। दूसरे शब्दों में इन्सान को इन हालात और इन परिस्थितियों पर इस पहलू से सोचने और विचार करने की दअ्वत दी गई है कि उन के अनुभव से क़ुर्आन के इस बयान की ताईद होती है या नहीं कि इन्सान को निश्चय ही एक मरहले से दोचार होना है जहाँ पहुँच कर उसे अपने रब के सामने अपने कर्मों के बारे में जवाबदेही करना होगी ।

सूरज के डूबते ही शफ़क़ की सुर्ख़ी (सान्धयलालिमा) का झलकना, दिन के विदा होते ही रात का अपनी महफ़िल को सितारों से सजाना और चाँद का हिलाल (पहली रात के स्वरूप) से क्रमानुसार चौदहवीं का चाँद अर्थात पूर्ण चाँद बन जाना इस बात का पूरा सबूत है कि इस कायनात में एक क्रम पाया जाता है और उस के ख़ालिक़ ने मरहले (Steps चरण) मुक़र्रर किये हैं। चुनान्चे चाँद मरहला दर मरहला (Step by Step) गुज़र कर ही पूर्ण हो जाता है। फिर उस ने इन्सान के लिए जिस की ख़ातिर इस महफ़िल को सजाया गया है, आगे के मरहले कैसे नहीं रखे होंगे और दुनियावी ज़िन्दगी के इस एक मरहले ही में इस का अन्त किस तरह हो जायेगा? अत: क़ुर्आन यह जो ख़बर पैग़म्बर की ज़ुबानी सुना रहा है कि इन्सान को मौत के बाद फिर ज़िन्दगी के मरहले में दाखिल होना है और फिर अपने रब के यहाँ पेशी के मरहले से ज़रूर दोचार होना है। और इन मरहलों से गुज़र कर अपनी आख़री मन्ज़िल जन्नत या दोज़ख़ में पहुँच कर रहना है, तो इस की पूरी पूरी ताईद (समर्थन) आसारे कायनात की उन परिस्थितियों से होती है जिन का ऊपर बयान हुआ । अगर इन्सान इस पहलू से इन परिस्थितियों का अनुभव करे तो उस के विचार और सिद्धान्तों के दृष्टिकोण बदल जाए ।

18. अर्थात् लोगों का हाल अजीब है कि स्पष्ट प्रमाणों के बाद भी वह यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि इन्सान को जवाबदेही के मरहले से दोचार होना है, बल्कि अपने इस ख़्याल पर अड़े हैं कि ज़िन्दगी इसी दुनिया तक है और मरने के बाद कोई मरहला पेश नहीं आना है।

19. या'नी होना तो यह चाहिए था कि क़ुर्आन का यह वास्तविकता से परिपूर्ण बयान सुनकर वह इस की सत्यता को स्वीकार करते और इस की महानता से प्रभावित हो कर ख़ुदा के सामने अपना सर झुकाते लेकिन उन्हों ने इस के विरूद्ध इन्कार करने और अकड़ने का रवैया अपना रखा है।

इस स्थान पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सजदा करना साबित है। अत: ''हज़रत अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी और आप ने इस स्थान पर सज्दा किया, इस लिए मैं मरते दम तक यह सज्दा करता रहूँगा।'' (मुस्लिम)

अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये उन के लिए ऐसा अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा। *(अल-क़ुर्आन)*

22. बल्कि ये काफ़िर (इन्कार करने वाले) उल्टा झुठला रहे हैं।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾

23. और ये लोग जो कुछ छिपा रहे हैं उसे अल्लाह ख़ूब जानता है।[20]

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

24. तो तुम इन को एक दर्दनाक अज़ाब (यात्ना) की ख़ुशख़बरी सुना दो,[21]

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾

25. अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये उन के लिए ऐसा अच्छा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।[22]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾

20. अर्थात् हक़ से दुशमनी और इस्लाम शत्रुता के जज़्बात और बेलगाम स्वार्थी जीवन गुज़ारने की इच्छा जिस को वह अपने सीने में छिपाये हुए हैं, अल्लाह को इस का पूर्ण ज्ञान है।

21. अज़ाब अर्थात् यात्ना की ख़बर को ख़ुशख़बरी कहने में एक सूक्ष्म एवं कोमल व्यंग्य है कि जब तुम जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनने और अपने आप को उस का योग्य बनाने को तैयार नहीं हो तो फिर जहन्नम ही की ख़ुशख़बरी सुन लो ।

22. अर्थात् नेक लोगों को जो अच्छा बदला आख़िरत में मिलेगा वह सामयिक और स्थाई न होगा बल्कि स्थाई और हमेशा हमेशा के लिए होगा जिस का सिलसिला कभी ख़त्म होने वाला नहीं। गोया यह एक बहता हुआ दरया है जो हमेशा चलता ही रहेगा ।

सूरह अल्-बुरूज

८५. अल्-बुरूज

नाम :- पहली आयत में बुर्जों वाले आसमान का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम पहचान के तौर पर ''अल्-बुरूज'' रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि कुफ़्फ़ार, ईमान लाने वालों को ज़ुल्म और सितम का निशाना बना रहे थे ताकि वह अपने ईमान से फिर जायें।

केन्द्री विषय :- क़ियामत और जज़ा और सज़ा ही है अलबत्ता उस के इस पहलू को खास तौर पर स्पष्ट किया गया है कि वह दिन मज़लूम ईमान वालों की फ़रियाद सुने जाने का दिन होगा। जो लोग ईमान वालों को सिर्फ़ उन के ईमान लाने की बिना पर ज़ुल्म और सितम का निशाना बनाते हैं क़ियामत के दिन उन की कड़ी पकड़ होगी और जो लोग ईमान लाकर नेक अमल करते हैं वह कामयाब होंगे और अपनी मुराद को पहुँचेंगे।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में हिसाब के दिन (The day of Judgement) के निश्चित रूप से होने का दावा एक ऐसी वास्तविकता के तौर पर पेश किया गया है जिस का इन्कार किसी तरह भी सम्भव नहीं।

आयत ४ से ११ में उन लोगों को सख़्त अज़ाब (कड़ी यात्ना) की चेतावनी सुनाई गई है जो मुसलामानों पर सिर्फ़ इस लिए ज़ुल्म ढाते हैं कि वह एक ख़ुदा पर ईमान लाए हैं और उन मुसलमानों को जो इस अत्याचारों के बावजूद अपने ईमान पर दृढ़ता से जमे रहेंगे, जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाई गयी है।

आयत १२ से १६ में ज़ालिमों को ख़बरदार किया गया है कि अल्लाह की पकड़ बहुत सख़्त है साथ ही उस के वह गुण बयान किये गये हैं जिन से उस का ख़ौफ़ भी पैदा होता है और तौबा और पश्चाताप की ओर झुकाव भी होता है।

आयत १७ से २० में कुछ सरकश और ज़ालिम क़ौमो के भयानक अन्जाम की तरफ़ इशारा करते हुए इन्कार करने वालों को ख़बरदार किया गया है कि ख़ुदा तुम्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है।

आयत २१ और २२ अन्तिम शब्द है जिस में कहा गया है कि यह क़ुर्आन जो हिसाब के दिन के आने की ख़बर दे रहा है, कैसी उच्चकोटि की किताब है और इस का सरचश्मा (उद्गम) कितना पाकीज़ा और सुरक्षित है, इस की कोई बात ग़लत नहीं हो सकती। अवश्य ही इस की हर बात अटल है।

८५.सूरह अल्-बुरूज

अनुवाद आयतें : २२

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है[1] बुर्जों वाले आसमान की,[2]**

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١

2. **और उस दिन की जिसका वादा किया गया है,[3]**

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢

3. **और हाज़िर होने वाले की[4] और उस चीज़ की जो हाज़िर की जायेगी।[5]**

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣

४. **हलाक़ हुए ख़न्दक़ वाले,[6]**

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤

5. **जो ख़ूब ईंधन वाली आग से भरी थी,**

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥

6. **जब कि वह उस (आग) के पास बैठे,**

اِذْهُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝٦

7. **जो कुछ ईमान वालों के साथ कर रहे थे उस का तमाशा देख रहे थे।[7]**

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝٧

8. **और उन के साथ यह ज़्यादती सिर्फ़ इस वजह से की गई कि वह अल्लाह पर ईमान लाये थे,[8] जो ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली) है और प्रशंसा योग्य भी।**

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨

9. **जिस की बादशाहत है आसमानों और ज़मीन में।[9] और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है।[10]**

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट नं. १४

2. बुरुज से मुराद सितारों की वह बारह फ़र्ज़ी (काल्पनिक) शक्लें (Signs of Zodiac) यह सूरज की बारह मन्ज़िलें नहीं हैं जो प्राचीन खगोल शास्त्र अथवा नक्षत्र विज्ञान (Old Astrological Science) की विशेष परिभाषा (Terms) है बल्कि इस से मुराद रौशन सितारों के झुरमुट (Constellations) है जो आसमान की शोभा बने हुए हैं और जिन की सुन्दर छवि इन्सान को नज़ारा करने का न्योता देती है।

बुर्ज का शाब्दिक अर्थ, प्रकट, नुमाइश और क़िला एवं महल के हैं। आसमान में सितारों के झुरमुट इस तरह जगमगाते नज़र आते हैं कि गोया ऊँचे महल हैं जो सजाए गए हैं। उन की इस तरह क़िला बन्दी की गयी है कि जब शैतानी ताक़तें आसमान की तरफ़ उड़ान मारने लगती हैं तो इन क़िलों से शिहाबे-साक़िब (उल्का या Meteor) के गोले दाग़े जाते हैं। इस लिए सितारों के इन झुरमुट को (Constellations) ''बुरुज'' कहा गया है । यहाँ बुर्जों वाले आसमान की क़सम खाने का मतलब यह है कि आसमान में चमकते हुए नज़र आने वाले सितारों के ये झुरमुट इस बात की खुली गवाही देते हैं कि जिस हस्ती ने इस कायनात की महफ़िल को सजाया है वहाँ अन्धेर नगरी नहीं है बल्कि वह अपनी पूरी सौन्दर्यता और शानो-शौकत के साथ इस कायनात पर हुकूमत कर रहा है। लिहाज़ा यह हो नहीं सकता कि जो लोग उस के वफ़ादार मज़लूम बन्दों को जो उस की ख़ातिर सताए गए, इनाम और उपहार न प्रदान किया जाये ।

शैतानी ताक़तों की आसमान में उड़ान को रोकने के लिए शिहाबे-साक़िब (Meteor उल्का) के गोले बरसाये जाते हैं जिस से ज़ाहिर होता है कि हद से आगे बढ़ने वालों के लिए ख़ुदा के यहाँ सज़ा का क़ानून है फिर वह सरकशों को सज़ा कैसे नहीं देगा? गोया बुर्जों वाले आसमान पर ग़ौर करने से जज़ा और सज़ा का तक़ाज़ा उभरता है और इस से हिसाब के दिन की पुष्टि होती है जिस की ख़बर क़ुर्आन दे रहा है।

3. मुराद क़ियामत का दिन है और इस का वादा अल्लाह तआला ने इस लिए फ़रमाया है ताकि वह अदालत बरपा करे तथा मोमिन और काफ़िर नेक और बद, एवं ज़ालिम और मज़लूम के बीच इन्साफ़ हो।

4. मुराद हर वह व्यक्ति है जो क़ियामत के दिन हाज़िर होगा ।

5. मुराद वह चीज़ है जो क़ियामत के दिन हाज़िर की जाएगी और वह हौलनाक दृश्य है जिन को हर व्यक्ति देख लेगा ।

यहाँ यौमे मौऊद (जिस दिन का कि वा'दा है) शाहिद (हाज़िर होने वाला) और मशहूद (जो चीज़ें कि हाज़िर की जाऐंगी या जो दृश्य सामने लाए जाऐंगे) की क़समें कलाम को दृढ़ करने और इन बातों का यक़ीन पैदा करने के लिए खाई गई है।

6. ''अस्हाबुलउख़्दूद'' (ख़न्दक़ वाले) से इशारा एक विशेष घटना की ओर है जिस का सारंश यह है कि ईमान वालों को सिर्फ़ उन के ईमान लाने की बिना पर आग से भरी हुई ख़न्दक़ (गढ़े) में झोंक दिया गया था और ज़ालिम उस ख़न्दक़ के पास बैठ कर उन के जलने का तमाशा देख रहे थे। यह घटना कब और कहाँ घटी इस की तफ़सील क़ुर्आन ने नहीं बताई क्यों कि सबक़ आमोज़ी के लिए इतनी ही बात काफ़ी है। रहा ऐतिहासिक प्रमाण तो इतिहास ईमान वालों के आग की भेट चढ़ाए जाने की घटनाओं से भरा पड़ा है जिस का आरम्भ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नमरूद की आग में झोंक दिये जाने से होता है। और अत्यचार का यह सिलसिला आज भी जारी है। अत: सिर्फ़ इस बिना पर कि फ़ुलाँ गिरोह का दीन (Way of Life) इस्लाम है। उस गिरोह के लोगों को अग्नि की भेंट

चढ़ा दिया जाता है या फ़िर उन्हें घरों में बन्द कर के आग लगा दी जाती है। हाँ यह फ़र्क़ ज़रूर है कि इस मक़सद के लिए अब ख़न्दक़ें (गढ़े) खोदने की आवश्यकता नहीं होती और न लकड़ियों का ईंधन जमा करना पड़ता है बल्कि पेट्रोल और इस तरह की दूसरी चीज़े ही काफ़ी हो जाती हैं।

जहाँ तक रिवायत (पुरातन कथाओं) का सम्बन्ध है इतनी बात तो सही मालूम होती है कि यमन के यहूदी बादशाह ''ज़ूनुवास'' ने लगभग ५२३ ई. में नज़रान पर हमला कर के वहाँ के लोगों को जो हज़रत ईसा अलैहिसस्लाम पर ईमान लाए थे और सच्चे मोमिन थे यहूदी धर्म क़ुबूल करने का हुक्म दिया और उन के इन्कार करने पर उन्हें ख़न्दक़ें खोद कर आग में झोंक दिया गया । (सीरत इब्ने हिशाम भाग १ पृष्ट ३५)

Standard Jewish Encyclopaedia के पृष्ट नम्बर ५५४ पर भी संक्षेप में इस का ज़िक्र मौजूद है । नज्रान के मक्का से क़रीब होने की वजह से यह क़िस्सा अरबों में मशहूर रहा होगा । और आश्चर्य नहीं कि क़ुर्आन ने अस्हाबुल उख़्दूद कह कर विशेषकर इस घटना की ओर इशारा किया हो। लेकिन रिवायत में ग़ुलाम और राहिब (सन्यासियों) वग़ैरा का जो क़िस्सा बयान किया गय है उस में बड़ी नकारत है। इस क़िस्से में ग़ुलाम के बारे में ऐसी अजीब अजीब बातें बयान की गई हैं जो एक नबी के मोजज़े (चमत्कार) से भी बढ़ कर है। इस रिवायत को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जोड़ना सही नहीं अत: इब्ने कसीर फ़रमाते हैं।

قال شيخنا الحافظ ابو الحجاج المزّى فيحتمل ان يكون من كلام صهيب الرومى فانه كان عنده من اخبار النصارىٰ۔

''हमारे शैख़ हाफ़िज़ अबुल हज्जाज मज़्ज़ी फ़रमाते हैं कि इस रिवायत में यह संदेह है कि यह क़िस्सा सुहैब रूमी के कलाम का अंश हो इस लिए कि उन्हें नसारा (इसाईयों) के क़िस्से मालूम थे।''

(तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ट ४९४)

और क़फ़्फ़ाल कहते हैं :-

''अस्हाबुलउख़्दूद (ख़न्दक़ वालों) के सिलसिले में (मुफ़स्सिरों ने) भिन्न रिवायतें बयान की हैं लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है सिवाय इस के कि ये सब इस बात पर सहमत हैं कि मोमिनों के एक गिरोह ने अपनी क़ौम या काफ़िर बादशाह की जो उन पर शासन कर रहा था, मुख़ालफ़त की थी जिस की वजह से उस ने उन को ख़न्दक़ में डाल दिया था ।

(अत्-तफ़्सीरुल कबीर लिर्राज़ी, प्रकाशन तेहरान भाग३१ पृष्ट ११७)

अफ़सोस कि ऐसी बेसिर पैर की रिवायतें बड़ी बड़ी तफ़्सीरों में जगह पा गईं।

7. या'नी ढिटाई और क्रूरता की हद है कि ईमान वालों पर ऐसा अमानुषी अत्याचार तोड़ते हुए उन्हें ज़रा संकोच नहीं हुआ बल्कि उन की अख़लाक़ी हिस (नैतिक भावना) इतनी मुर्दा हो गई थी कि वह बड़ी बेशर्मी के साथ उन के जलने का तमाशा देखते रहे।

8. अर्थात् ईमान वालों का अगर कोई क़ुसूर था तो वह यह कि वह अल्लाह पर सही अर्थों में ईमान लाये थे। गोया जो सब से बड़ी नेकी थी वही इन ज़ालिमों की नज़र में जुर्म क़रार पाई।

9. इन आयात में अल्लाह तआला की जो सिफ़ात बयान की गई है इस का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि वही हस्ती इस योग्य है कि उस पर ईमान लाया जाये और उस से सम्बन्ध बनाया जाये।

10. इस में ज़ालिमों के लिए तम्बीह (चेतावनी) है कि जब अल्लाह तआला सब कुछ देख रहा है तो तुम्हारा अत्याचार कब तक चलेगा? एक दिन तुम्हारी पकड़ होना है और तुम्हे अल्लाह की अदालत के कटघरे में ख़ड़ा होना है।

जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर ज़ुल्म ढाया और फिर तौबा नहीं की उन के लिए निश्चय ही जहन्नम की सज़ा है और उन के लिए जलने का अज़ाब (यातना) है । जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये निश्चय ही उन के लिए बाग़ हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी । यह है बड़ी कामयाबी। *(अल-क़ुर्आन)*

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ﴿١٠﴾

10. जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर जुल्म ढाया और फिर तौबा नहीं की उन के लिए निश्चय ही जहन्नम की सज़ा है और उन के लिए जलने का अज़ाब (यात्ना) है।[11]

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ﴿١١﴾

11. जो लोग ईमान लाये [12]और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये निश्चय ही उन के लिए बाग़ हैं जिन के तले नहरें बह रही होंगी। यह है बड़ी कामयाबी।[13]

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾

12. निस्सन्देह तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है।[14]

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾

13. वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा।[15]

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾

14. और वह माफ़ करने वाला,[16] मुहब्बत करने वाला है,[17]

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾

15. अर्श (सिंहासन) का मालिक,[18] गौरव वाला महान,[19]

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾

16. और जो चाहे कर डालने वाला,[20]

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

17. क्या तुम्हें लश्करों की ख़बर पहुँची है?

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

18. फिरऔन [21] और समूद [22] के लश्करों की ?

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

19. लेकिन ये काफ़िर झुठलाने ही में लगे हुए हैं।

11. सज़ा की ये कड़ी चेतावनी उन लोगों को सुनाई गई है जो मोमिन मर्दों और औरतों पर सिर्फ इस लिए ज़ुल्म ढायें ताकि उन को इस्लाम से फेरा जा सके । जलने की यातना का ज़िक्र विशेष रूप से किया गया है क्यों कि उन ज़ालिमों ने मोमिनों को आग में ज़िन्दा जलाया था । ऐसे लोगों को जहन्नम में दूसरी यात्नाओं के साथ ख़ासतौर से बहुत ही तेज़ आग में जलने के अज़ाब का मज़ा भी चखना पड़ेगा ।

इस आयत से यह भी स्पष्ट हुआ कि इतने बड़े जुर्म का भागीदार भी अगर तौबा कर के अपनी इस्लाह कर लेता है तो उस के लिए माफ़ किये जाने के दरवाज़े खुले हैं।

12. मतलब यह कि इस ज़ुल्म और सितम के बावजूद लोग अपने ईमान पर कड़ाई से जमे रहे।

13. यानी बड़ी कामयाबी दुनिया हासिल करना नहीं बल्कि जन्नत हासिल करना है।

14. अर्थात् ज़ालिम इस भुलावे में न रहें कि वह अल्लाह की पकड़ से बच सकेंगे।

15. मतलब यह कि जज़ा और सज़ा (इनाम और दंड) के लिए इन्सान को दोबारा पैदा किया जायेगा और यह दोबारा पैदा करना उस हस्ती के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं जिस ने पहली बार पैदा किया है।

16. वह माफ़ करने वाला है लिहाज़ा अगर तुम तौबा करो और अपनी कार्यशैली को सुधार लो तो इस योग्य हो सकते हो कि माफ़ कर दिये जाओ ।

17. मतलब यह कि वह अपने बन्दों से नफ़रत नहीं बल्कि मुहब्बत रखता है इस शर्त के साथ कि वह उस के वफ़ादार बन्दे बन कर रहे।

18. अर्श का अर्थ तख़्त (सिंहासन) के हैं इस से मुराद अल्लाह तआला का तख़्ते-सलतनत (राज सिंहासन) है जिस की स्थिति हमें नहीं मालूम ।

यहाँ अर्श (सिंहासन) का मालिक कह कर यह बताना मक़सूद है कि पूरी कायनात पर उसी की सत्ता स्थापित है और अकेले वही शासन कर रहा है लिहाज़ा उस से सरकशी करने वाले और उस के वफ़ादार बन्दों पर ज़ुल्म ढाने वाले उस की पकड़ से हरगिज़ नहीं बच सकते।

19. अर्थात् गौरवशाली, महानता और श्रेष्ठता (Majesty) उस की सिफ़त है और इन सिफ़तों में कोई उस का साझीदार नहीं । लिहाजा बन्दों को चाहिए कि उस की श्रेष्ठता और उस की शानो-शोकत एवं दबदबे की कल्पना मात्र से काँप जायें।

20. अर्थात् दुनिया की कोई ताक़त ऐसी नहीं जो उस के काम और मन्सूबे (Planning) में रोड़ा हो सके।

21. देखिए सूरह नाज़िआत फुट नोट नं. १३

22. समूद एक क़ौम का नाम है जो ''हजर'')मदीना और तबूक के बीच का क्षेत्र) में आबाद थी। इस का ज़माना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है और उस की तरफ़ अल्लाह तआला ने हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बना कर भेजा था मगर इस ने सरकशी की जिस के नतीजे में इस पर सख़्त अज़ाब नाज़िल हुआ इस के तबाह शुदा खंडहर आज भी ''हजर'' के इलाक़े में मौजूद हैं और आवाज़ दे रहे हैं कि **''देखो मुझे जो दीद-ए-इब्रत निगाह हो''**

फ़िरऔन और समूद को दुनयावी शान और शौकत और सत्ता हासिल थी मगर वह शासन के नशे में सरकशी और जुल्म पर उतर आये थे लेकिन जब अल्लाह तआला ने उन को पकड़ा तो वह बहुत बुरे अन्जाम से दोचार हुए । इन ऐतिहासिक घटनाओं की तरफ़ इशारा करते हुए क़ुर्आन अपने मुख़ातिबों (सम्बोधितों) से कह रहा है कि क्या तुम भी उन का सा रवैया अपना कर इसी अन्जाम से दोचार होना चाहते हो ?

20. और अल्लाह इन को आगे पीछे से घेरे हुए है।[23]

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾

21. (यह कलाम मन घड़न्त नहीं) बल्कि यह ग़ौरव शाली क़ुर्आन है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾

22. जो लौहे-महफ़ूज़ में (अंकित) है।[24]

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

23. मतलब यह कि यह झुठलाना चाहते हैं तो झुठलाऐं, इस से हक़ीक़त नहीं बदलती वह पूरी तरह अल्लाह की पकड़ में हैं। उस से भाग कर कहीं नहीं जा सकते ।

24.''लौहे-महफ़ूज़'' का अर्थ सुरक्षित पट्टिका (महफ़ूज़ तख़्ती) के हैं और इस से मुराद फ़रिश्तों की वह पवित्र पट्टिका है जिस पर अल्लाह तआला ने अपने कलिमात को लिख दिया है । उस का लिखा बिल्कुल अटल है और उस तक किसी इन्सान और जिन्नात की पहुँच नहीं है। क़ुर्आन कोई ख़याली और सैद्धान्तिक चीज़ नहीं और न किसी ज्योतिषी का कलाम है बल्कि इस का उद्‌गम वह स्वच्छ स्रोत है जिसे लौहे महफ़ूज़ कहते हैं इस लिए उस की हर बात हक़ है और पूरी हो कर रहने वाली है।

सूरह अत्-तारिक़

८६. अत्-तारिक़

नाम :- आयत १ में अत्-तारिक़ (रात में निकलने वाले सितारे) का ज़िक्र हुआ है इस मुनासिबत में इस सूरह का नाम अत्-तारिक़ रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और उस समय नाज़िल हुई है जब कि मक्का वालों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दअवत पहुँच चुकी थी मगर वह उस को मज़ाक़ ठहरा कर उस के ख़िलाफ़ चालें चलने लगे थे।

केन्द्रिय विषय :- हिसाब किताब और पूछ ताछ के लिए इन्सान का दोबारा पैदा किया जाना है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में आसमान और सितारों की शहादत (गवाही) इस बात पर कि हर व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक रोज़ आना है जब कि उसे हिसाब के लिए बुलाया जाएगा।

आयत ५ से ८ में इन्सान की जन्म से उस के दोबारा पैदा किये जाने पर तर्क वितर्क।

आयत ९ और १० में इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति कि उस दिन सारे राज़ परखे जाऐंगे और इन्सान बिलकुल बेबस होगा। उसे कहीं से कोई मदद न मिल सकेगी।

आयत ११ से १४ में आसमान और ज़मीन की शहादत इस बात पर पेश की गई है कि क़ुर्आन हिसाब के दिन की जो ख़बर दे रहा है वह बिलकुल अन्तिम और निश्चित बात है।

आयत १५ से १७ में कलाम का ख़ात्मा (अन्तिम शब्द) है। जिस में कुफ़्फ़ार को सावधान करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि उन की चालें उल्टी पड़ेंगी अलबत्ता इन्हें थोड़ी मोहलत दे दो। इन का अन्जाम बस सामने आने ही को है।

८६.सूरह अत्-तारिक़

अनुवाद आयतें : १७

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है [1] आसमान की,[2] और रात में प्रकट होने वाले की,**

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١

2. **और तुम्हें क्या मालूम कि रात में प्रकट होने वाला क्या है ?[3]**

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢

3. **दमकता सितारा,[4]**

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝٣

4. **कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जिस पर एक निगेहबान न हो।[5]**

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤

5. **इन्सान ज़रा ग़ौर करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।[6]**

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥

6. **उछलते पानी से,[7]**

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦

7. **जो रीढ़ और पसलियों के बीच से निकलता है।[8]**

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧

8. **निश्चय ही वह (अल्लाह) उस के लौटाने की क़ुदरत रखता है।[9]**

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝٨

9. **जिस दिन छिपी बातें परखी जाऐंगी,[10]**

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝٩

10. **उस समय उस के पास न कोई शक्ति होगी और न कोई उस का मददगार होगा।[11]**

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝١٠

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट नं. १४

2. आसमान की व्याख्या के लिए देखिए सूरह इन्शिक़ाक़, फुट नोट नं. १

3. यह सवाल ''रात में प्रकट होने वाले'' के महत्व को स्पष्ट करने के लिए है। या'नी रात में प्रकट होने वाली चीज़ ऐसी नहीं है कि उस पर से यूँहि गुज़र जाओ । बल्कि वह तुम्हे विचार करने पर उकसाती है । अत: उस पर गम्भीरता से विचार करो और इस सोचने और विचार करने का मक़सद कायनात पैदा करने वाले की पहचान हासिल करना हो न कि सिर्फ मालूमात में वृद्धि करना।

4. اَلنَّجْمُ الثَّاقِبُ **अन्-नज्मुस्साक़िब** ---- (दमकता सितारा) से मुराद कोई विशेष सितारा नहीं है बल्कि यह सितारों की जाति के अर्थ में है। या'नी वह तमाम सितारे जो ख़ूब रौशन और चमकते नज़र आते हैं और जिन को हर व्यक्ति खुली आँख से देख लेता है।

आसमान में बिखरे हुए तारे इतने असंख्य हैं कि उन की सही तादाद मालूम करने से मौजूदा अन्तरिक्ष विज्ञान (Astronomy) भी अपनी सारी की सारी वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद असमर्थ है। आधुनिक अन्तरिक्ष विशेषज्ञों (Modern Experts of Astromy) के अनुमान के अनुसार जिस कहकशाँ (सौर जगत या Solar System) में हमारी पृथ्वी स्थित है उस में कोई एक बिलियन (One Billion) सितारे होंगे (The Cambridge Encyclopaedia of Astronomy P.313) इस से आसमान की विशालता और फैलाव का अनुमान लगाया जा सकता है। जिस को इस सूरह में दलील के तौर पर पेश किया गया है।

अनगिनत सितारों में से दमकते सितारों को यहाँ शहादत के तौर पर इस लिए पेश किया गया है कि यह अपनी चमक दमक की वजह से हर देखने वाले को अपनी ओर अकर्षित करते हैं और आँखों ही आँखों में ''मन्ज़िल'' का पता बता देते है।

5. यह वह बात है जिस पर आसमान और दमकते सितारे की शहादत पेश की गई है। यह शहादत इस अर्थ में है कि आसमान पर सितारों की जगमगाहट इन्सान को नज़ारा कर लेने पर ही नहीं उकसाती बल्कि विचार करने का न्योता भी देती है। रात के आते ही आसमान को क़ुमक़ुमों से सजाया जाता है और क़ुमक़ुमे भी ऐसे रौशन कि उन की चमक दमक बुद्धि को अचम्भे में डाल देती है, वर्तमान अंतरिक्ष मालूमात ने जिस के अनुसार कुछ सितारे तो इतनी दूरी पर स्थित हैं कि उन की रौशनी ज़मीन तक पहुँचने के लिए कई नूरी साल (Light year) लग जाते हैं, इन्सान को अधिक अचम्भे में डाल दिया है। क्या यह अनुभव अपने ख़ालिक़ की क़ुदरत के कमाल का और कायनात के विशालतम एवं महानतम साम्राज्य के शासक होने का पता नहीं देता और इन्सान में यह एहसास पैदा नहीं करता कि इस विराट शासक के साम्राज्य में इन्सान की यह हैसियत हो ही नहीं सकती कि वह अपनी मनमानी करने के लिए आज़ाद हो और कायनात के शासक के सामने जवाबदेह न ठहराया जाए? यह परीक्षण यदि वह निष्पक्ष और विनयपूर्ण हो,तो इन्सान के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास ज़रूर पैदा करता है और यहीं से ख़ुदा के दरबार में जवाबदेही तथा जज़ा और सज़ा का तसव्वुर उभरता है और यही वह हक़ीक़त है जिस से पैग़म्बर इन्सान को ख़बरदार करना चाहता है और यही वह दअवत है जिस को क़ुर्आन मानवता के सन्सार के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा है।

और जब इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन्सान एक ज़िम्मेदार मख़्लूक़ (सृष्टि) है तो इस की अनिवार्य और उचित मांग यह है कि उस के व्यवहारिक जीवन (Practical Life) का रेकार्ड तैयार किया जाये ताकि ख़ुदा के दरबार में पेशी के दिन इस के आधार पर ईमान या सज़ा का फैसला हो । क़ुर्आन कहता है कि अल्लाह तआला ने इस का पूरा पूरा प्रबन्ध किया है। अत: हर व्यक्ति के साथ देख रेख करने वाले फ़रिश्ते लगा दिये गये हैं जो उस की हर कथनी

और करनी को नोट कर लेते हैं और उस के व्यवहारिक जीवन का पूरा रेकार्ड तैयार करते रहते हैं।

6. आख़िरत के इन्कार करने वालों का सब से बड़ा एतिराज़ यह था कि इन्सान को दोबारा पैदा करना संभव नहीं । उन के इस एतिराज़ (आपत्ति) का जवाब क़ुर्आन ने यह दिया कि इन्कार करने वाले ख़ुदा को सर्वशक्तिमान नहीं समझते इसी लिए उन के नज़दीक इन्सान को उस के मरने के बाद उठा खड़ा करना संभव नहीं ।

लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत (शक्ति) का यह तसव्वुर सरासर ग़लत है क्यों कि यह किसी भी दलील पर आधारित नहीं है और इस का खंडन (तरदीद) कायनात की हर चीज़ करती है। इसी सिलसिले में इन्सान को ध्यान दिलाया गया है कि ज़रा वह अपनी पैदाइश और स्वयं अपने आप में ग़ौर करे तो उस की समझ में यह बात आसानी से आएगी कि जिस हस्ती ने इन्सान को पहली बार पैदा किया वह उसे दूसरी बार भी पैदा कर सकता है।

7. मुराद वीर्य है।

8. रीढ़ और पसलियों के बीच से निकलने का मतलब यह नहीं है कि रीढ़ और पसलियों के अन्दर से वीर्य निकलता है बल्कि मतलब यह है कि मानव शरीर के उस रिक्ति (खाली जगह) में जिस के एक तरफ़ रीढ़ की हड्डी और दूसरी तरफ़ पसलियाँ है, एक तरल पदार्थ (रक़ीक़ माद्दा) तैयार होता है और वहाँ से इस तरह बाहर निकलता है जैसे पिचकारी का अमल ।

مِنۡۢ بَيۡنِ ''मिनबैनि'' (बीच से) के शब्द इसी अर्थ में क़ुर्आन में दूसरी जगह भी प्रयोग हुए हैं। सूरह नह्ल आयत ६६ में है।

نُسۡقِيۡكُمۡ مِمَّا فِىۡ بُطُوۡنِهٖ مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيۡنَ ۔

''हम उन के पेट से गोबर और ख़ून के बीच से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए बेहद अच्छे स्वाद की चीज़ है ।''

ज़ाहिर है इस आयत में भी مِنۡۢ بَيۡنِ فَرۡثٍ وَّدَمٍ ''मिन बैनी फ़रोसीन व दमिन''(गोबर और ख़ून के बीच से) का मतलब यह नहीं है कि ख़ालिस दूध, गोबर और ख़ून के अन्दर से निकलता है बल्कि मतलब यह है कि जिस शरीर के अन्दर गोबर और ख़ून जैसी घिनावनी चीज़ पैदा होती हैं उसी शरीर में दूध जैसी मज़ेदार चीज़ भी तैयार होती है जो अल्लाह तआला की क़ुदरत के कमाल और उस की हिकमत की महानता को साबित करती है। इसी तरह इस आयत में भी जो कि बहस में है, कहने का मन्शा यह है कि इन्सानी ढाँचे के अन्दर से बड़े अजीब तरीक़े से वह पदार्थ (माद्दा) बाहर निकलता है जो होता तो है बेक़िमत लेकिन उस से इन्सान जैसी महान सृष्टि (मख़्लूक़) उत्पन्न होती है। क्या यह अल्लाह तआला की क़ुदरत का कमाल और उस की ज़बरदस्त कारीगरी की दलील नहीं? फिर उस के बारे में यह ख़याल करने के लिए क्या गुन्जाइश बाक़ी रह जाती है कि इन्सान को दोबार पैदा करना संभव नहीं?

ध्यान रहे कि रीढ़ और पसलियों के बीच से वीर्य के निकलने का जो ज़िक्र किया गया है उस से इस बात का खंडन नहीं होता कि वीर्य, वीर्य की थैली (Seminal vesicles) से निकलता है क्यों कि वीर्य की थैली उदर (Abdominal) में होती है जो आख़री पसली का निचला हिस्सा है और जिस के दूसरी तरफ़ पुश्त यानी रीढ़ की हड्डियाँ हैं इस लिए व्यापक भावार्थ में यह उस ढाँचे के बीच ही से किलता है जिस का अगला हिस्सा पसलियाँ हैं तो पिछला हिस्सा रीढ़। और क़ुर्आन जब याददेहानी के लिए कोई बात कहता है तो वह आम और व्यापक अर्थों में होती है न कि कलात्मक

भाषा में । इस लिए क़ुर्आन ने वीर्य के निकलने के सिलसिले में यहाँ जो कुछ बयान किया है उसे शरीर रचना विज्ञान (Anatomy) की परिभाषा में सोचना सही न होगा ।

इन्सान की रचना जिस वीर्य द्वारा होती है कुर्आन ने उस पर ग़ौर करने का न्योता दिया है और जब हम नये अनुसंधानों (New Research) का अध्ययन करते हैं तो अपने ख़ालिक़ (सृष्टा) की क़ुदरत के करिश्मे को देख कर स्तब्ध रह जाते हैं। नये अनुसंधान के अनुसार एक समय में जो वीर्य (Semen) निकलता है उस की मात्रा २ से ५ मिली लीटर (2 to 5 ml) होती है और हर मिलिलीटर (ml) में प्रजनन कीटाणु (Spermetozoa) ४० से १०० मिलियन (40 to 100 millions) होते हैं।

(Text book of Physiology by George Bell-Edinburgh P. 643)

गोया पुरुष के एक ही समय में निकलने वाले शुक्राणुओं में इतनी शक्ति होती है कि वह पचास करोड़ इन्सान पैदा कर सकता है। यह और बात है कि उस के ख़ालिक़ (सृष्टा) ने कीटाणुओं के गर्भधारण (Fertilize) होने की ऐसी व्यवस्था बनाई है कि एक ही समय में एक या दो से अधिक कीटाणु फल नहीं सकते । इस तरह इन्सानों की पैदाइश का औसत हद से बढ़ने नहीं पाता । ख़ुदा की क़ुदरत के करिशमे का यह तजरिबा क्या इन्सान के अन्दर उस की बेपनाह क़ुदरत का यक़ीन पैदा नहीं करता?और क्या इसे इस बात का क़ायल नहीं करता कि उस के लिए मरे हुए इन्सान को दोबारा उठाना कुछ भी मुश्किल नहीं ।

9. लौटाने से मुराद मनुष्य को शरीर सहित दूसरी बार पैदा करना है और यह क़ियामत के दिन होगा ।

10. अर्थात् उस रोज़ कोई राज़, राज़ नहीं रहेगा । इन्सान की अन्दरुन का हाल खुल कर सामने आ जायेगा । उस की नीयत, उस के इरादे, कामों के प्रेरक, और वह लक्ष्य एवं उद्देश्य जो उस के कर्मों के पीछे रहे हैं, सब बेनक़ाब हो कर सामने आ जाऐंगे । गोया उस के अन्दरुन की पूरी तरह स्कीनिंग की जाएगी और नीयत का जहाँ कहीं खोट होगा बिलकुल खुल कर सामने आ जायेगा उस रोज़ इन्सान को अन्दाज़ा हो जायेगा कि वह सत्य को असत्य ठहराने के लिए जो एड़ी चोटी का ज़ोर लगाता रहा उस के पीछे उस का क्या स्वार्थ और क्या उद्देश्य था जिन को उस ने अपने दिल में छिपाये रखा था ।

11. क़सम है आसमान की जो बारिश बरसाता है,[12]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجۡعِ ﴿۱۱﴾

12. और ज़मीन की जो फट जाती है,[13]

وَالۡاَرۡضِ ذَاتِ الصَّدۡعِ ﴿۱۲﴾

13. कि यह एक तय शुदा बात है,[14]

اِنَّهٗ لَقَوۡلٌ فَصۡلٌ ﴿۱۳﴾

14. हँसी मज़ाक़ नहीं।[15]

وَّمَا هُوَ بِالۡهَزۡلِ ﴿۱۴﴾

15. यह लोग एक तदबीर कर रहे हैं,[16]

اِنَّهُمۡ يَكِيۡدُوۡنَ كَيۡدًا ﴿۱۵﴾

16. और मैं भी एक तदबीर कर रहा हूँ।[17]

وَّاَكِيۡدُ كَيۡدًا ﴿۱۶﴾

17. तो इन काफ़िरों को मोहलत दो। बस थोड़ी मोहलत।[18]

فَمَهِّلِ الۡكٰفِرِيۡنَ اَمۡهِلۡهُمۡ رُوَيۡدًا ﴿۱۷﴾

11. मतलब यह है कि न वह खुद अपना बचाव कर सकेगा और न दूसरा कोई उस का हिमायती बन कर खड़ा होगा कि उस की मदद कर सके ।

12. ''आसमान से बारिश का बरसना'' ऊपर से बारिश बरसने के अर्थ में एक आम मुहावरा है।

13. अर्थात् बारिश के बरसते ही ज़मीन के छिद्र (Pores) खुल जाते हैं और वह फट कर वनस्पति उगाती है। गोया जो ज़मीन मुर्दा पड़ी थी बारिश के होते ही ज़िन्दा हो कर लहलहाने लगी यह तजरिबा जो इन्सान रात दिन करता है उसी को यहाँ मृत्यु के बाद मिलने वाले जीवन के समर्थन में प्रस्तुत किया जा रहा है। या'नी जो ख़ुदा मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर सकता है वह मुर्दों को क्यों नहीं जिला उठा सकता ? क्या इस तजरिबे से यह यक़ीन पैदा नहीं होता कि जो ज़मीन बारिश की सूरत में ख़ुदा के हुक्म से वनस्पति को उगल देती है वह उस के हुक्म से मुर्दों को क्यों नहीं उगल सकती?

इसी के अन्तरगत यहाँ तौहीद (एकेश्वरवाद) का पहलू भी उभर कर सामने आ गया है क्यों की आसमान का बारिश बरसाना और ज़मीन का पानी अपने अन्दर सोख कर वनस्पति उगाना इस के बग़ैर नहीं हो सकता कि दोनों का प्रबन्ध एक ख़ुदा के हाथ में हो । इस से साबित हुआ कि जो ख़ुदा ज़मीन का है यही आसमान का भी है वर्ना आसमान और ज़मीन में इस दर्जा मेल मिलाप और साज़गारी एवं अनुकूलता नहीं हो सकती थी । इस से इस मुश्रिकाना तसव्वुर की जड़ कट जाती है कि आसमान का देवता अलग है और ज़मीन का देवता अलग ।

14. या'नी क़ुर्आन जिस आने वाले दिन की ख़बर दे रहा है वह एक अन्तिम, निश्चित और अटल बात है।

15. अर्थात् इतनी अहम ख़बर और इतनी गम्भीर बात को हँसी मज़ाक़ क़रार देना उन ही लोगों का काम हो सकता है जो हक़ीक़त पसन्द बनना नहीं चाहते ।

16. अर्थात् ये इन्कार करने वाले विरोधी पैग़म्बर की आवाज़ को दबाने और सत्य को मात देने के लिए एक न एक चाल चल रहे हैं।

17. अर्थात विरोधियों की चाल का तोड़ मैं भी कर रहा हूँ। मतलब यह कि अल्लाह तआला विरोधियों (मुन्किरीन) की चालों को नाकाम बनाने और उन को उन के जाल में फँसाने की तदबीर ऐसे तरीक़े से कर रहा है कि उन्हें इस का कोई अन्दाज़ा नहीं ।

और वास्तविकता यह है कि जिन काफ़िरों ने क़ुर्आन और पैग़म्बर के विरूद्ध चालें चली थी वह उन्ही के ख़िलाफ़ पड़ी और वह बुरी तरह नाकामी और ज़िल्लत से दोचार हुए। यह तो हुआ दुनिया में हक़ (सत्य) के ख़िलाफ़ चाल चलने का अन्जाम, और आख़िरत में तो वह अपनी आँखों से देख लेंगे कि उन्होंने जो कुल्हाड़ी चलाई थी वह अपने ही पाँव पर चलाई थी और जो क़ब्र खोदी थी उस में उन ही को दफ़न होना है और दफ़न भी आग के कफ़न के साथ होना है।

18. अर्थात् इन को अपना पैमाना भर लेने दो । इन के अन्जाम के सिलसिले में जल्दी न करो बल्कि सब्र और धैर्य के साथ अपना फ़र्ज़ अन्जाम दिये चले जाओ । जो मोहलत इन काफ़िरों को दी जा रही है वह जल्द ही समाप्त हो जाएगी और बहुत जल्द इन की पकड़ होगी ।

सूरह अल्-अअ्ला

८७. अल्-अअ्ला

नाम :- पहली आयत में ख़ुदा की सिफ़त ''अल्-अअ्ला'' बयान हुई है इसी मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-अअ्ला रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय की नाज़िल हो चुकि सूरह है जब कि वह्य के नाज़िल होने की शुरूआत हुए ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे और आप क़ुर्आन को ग्रहण करने में यह अन्देशा महसूस कर रहे थे कि कहीं कोई आयत भूल न जाऐं। इसी तरह आहवान करने दअवत और नसीहत करने (तज़कीर) का काम भी बिलकुल आरम्भिक दौर में था।

केन्द्रीय विषय :- आख़िरत की कामयाबी है और यह निर्भर है अल्लाह की हिदायत को क़ुबूल करने पर जो क़ुर्आन की सूरत में पैग़म्बर पर नाज़िल हो रही है।

इस सूरह में सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और उन के माध्यम से क़ुर्आन के हर पढ़ने वाले से, अलबत्ता आगे चल कर सम्बोधन दुनिया परस्तों की तरफ़ हो गया है ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में ख़ुदा की पाकीज़गी बयान करने का आदेश देते हुए उस की सिफ़तें बयान की गई हैं ताकि इन्सान सही अर्थ में ख़ुदा को पहचानने वाला बन जाये।

आयत ६ से ८ में अल्लाह की वह्य को पैग़म्बर की याद्दाश्त में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए तसल्ली और हर सत्य प्रिय के लिए इत्मीनान का सामान है।

आयत ९ से १५ में तज़कीर अर्थात् याद्देहानी करने अथवा चर्चा करने की हिदायत करते हुए बताया गया है कि इस से किस प्रकार के लोग फ़ायदा उठाऐंगे और किस प्रकार के लोग दूर रहेंगे और फिर इन में से हर एक के रवैये का परिणाम आख़िरत में क्या निकलेगा ।

आयत १६ से १९ कलाम का ख़ात्मा (अन्तिम शब्द) है जिस में बताया गया है कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया को वरीयता देना वह बुनियादी ग़लती है जिस की बिना पर इन्सान वह्य की रहनुमाई से महरूम रहता है और बुरे अन्जाम से दोचार होता है । क़ुर्आन ही में नहीं अगले सहीफ़ों (ग्रन्थों) में भी यही बात बतलाई गई थी ।

फ़ज़ीलत (विशेषता) :- यह सूरह छोटी होने के बावजूद तौहीद, रिसालत और आख़िरत तीनों विषयों पर आधारित है और तज़्कीर (याद्देहानी) का पहलू भी प्रभावपूर्ण अन्दाज़ में आ गया है। इस लिए जुमा और दोनों ईद की नमाज़ों में क़िरअत के लिए ज़्यादा उचित क़रार पाई है। अत: हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दोनों ईद और जुमा में ''सब्बिहिसमा रब्बिकल-अअ्ला'' और ''हल अताका हदीसुल ग़ाशिय:'' (यानी सूरह अअ्ला और सूरह ग़ाशिय:) पढ़ा करते थे । (मुस्लिम किताबुल जुमुअ:)

८७.सूरह अल-अअ्ला

अनुवाद आयतें : १९

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **अपने सर्वोच्च रब [1] के नाम की तस्बीह करो,[2]**

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿۱﴾

2. **जिस ने पैदा किया और सन्तुलित बनाया,[3]**

الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۖ﴿۲﴾

3. **जिस ने योजना बनाई [4] और रहनुमाई की,[5]**

وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۖ﴿۳﴾

4. **जिस ने चारा उगाया**

وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۖ﴿۴﴾

5. **फिर उस को काला कूड़ा करकट बनाया,[6]**

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ۥ﴿۵﴾

6. **(ऐ नबी !) हम तुम्हें पढ़ाऐंगे फिर तुम नहीं भूलोगे,[7]**

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ۙ﴿۶﴾

7. **मगर जो अल्लाह चाहे।[8] वह खुली बात को भी जानता है और छिपी बात को भी।[9]**

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۗ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۥ﴿۷﴾

8. **और हम तुम्हारे लिए आसानी की राह हमवार (प्रशस्त) कर देंगे।[10]**

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۚ﴿۸﴾

9. **लिहाज़ा तुम नसीहत करो, अगर नसीहत करना लाभदायक हो।[11]**

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ۥ﴿۹﴾

10. **नसीहत स्वीकार करेगा वह जो डरता होगा।[12]**

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ﴿۱۰﴾

1. रब की व्याख्या सूरह फ़ातिहा फुट नोट नं. ४ में गुज़र चुकी । यहाँ रब की सिफ़त ''अअला'' (सर्वोच्च) बयान हुई है जिस का मतलब यह है कि वह ख़ुदा जो तमाम इन्सानों और सारी सृष्टियों का परवरदिगार, मालिक और आक़ा है, एक उच्चतम और सर्वोच्च हस्ती है। उस की शान और उस की मान बहुत ही बुलन्द है। इन्सान स्वभावत: उस को जानता है और अक़्ल उस को पहचानती है। यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि इस उच्चतम एवं सर्वोच्च हस्ती के भेद मालूम करने और उस को अपनी बुद्धि की पकड़ में लेने की कोशिश बिलकुल व्यर्थ है।

''जो समझ में आ गया फिर वह ख़ुदा क्योंकर हुआ
अक़्ल से जो घिर गया, लाइन्तिहा क्यों कर हुआ''

जो लोग उस की मारिफ़त (पहचान) हासिल करने के बजाये उस की असल हक़ीक़त मालूम करने के पीछे पड़ गये वह फ़लसफ़ियाना बातों में उलझ कर बिलकुल भटक गये । मिसाल के तौर पर जिन्होंने उसे ''आत्मा'' क़रार दिया वह सारी चीज़ों के अन्दर उस के मिल जाने के काइल हो गये।

"The sage sees all beings in the Atman and the Atman in all beings." (The Essence of Principal Upanishads. P. 5)

ख़ुदा का यह अत्यन्त घटिया तसव्वुर है जो शिर्क की बुनियाद है। क़ुर्आन इन बुनियाद ही को ढा देता है और ख़ुदा की हस्ती के बारे में अटकलें लगाने और फ़लसफ़ियाना बहसें खड़ी करने से बिलकुल रोक लगाता है। वह उस की ऐसी मारिफ़त (पहचान) प्रदान करता है जो अक़्ल को जीवन देने वाली, दिल को संतुष्ट करने वाली और इन्सान को सही मानों में ख़ुदा को पहचानने वाला बताने वाली है। यह माअरिफत (पहचान) ख़ुदा की सिफ़तों, उस की विशेषताओं पर ग़ौर करने से हासिल होती है, इस लिए क़ुर्आन ख़ुदा की सिफ़तों, उस की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक और जगह जगह वर्णन करता है।

रब के सर्वोच्च होने की सिफ़त उस मुश्रिकाना तसव्वुर को ग़लत ठहराती है कि ख़ुदाओं में कोई छोटा है तो कोई बड़ा और कोई देव है तो कोई महादेव । साथ ही यह इस वास्तविकता की पुष्टि करती है कि ख़ुदा सिर्फ़ एक है और वही सर्वोच्च हो कर रहने वाला है। उस के सिवा कोई ख़ुदा है ही नहीं। फिर किसी के उच्चतर होने का क्या सवाल? और सिरे से कोई देव है ही नहीं फिर किसी के महादेव होने का क्या मतलब?

2. इस हुक्म में तीन महत्वपूर्ण हिदायतें पोशीदा हैं। एक यह कि अल्लाह तआला को उन नामों से याद किया जाये जो अपने अर्थ और भावार्थ के लिहाज़ से पवित्र और उस की शान और उस की मान के लिहाज़ से बिलकुल ठीक और मुनासिब हों। ज़रूरी नहीं कि यह अरबी भाषा ही के शब्द हों, बल्कि वह किसी भी भाषा के शब्द हो सकते हैं बस यह शर्त है कि उस शब्द में शिर्क का तसव्वुर छिपा ना हो एवं दोष अनादर का भी कोई पहलू न निकलता हो । इसी बिना पर हम उर्दू में अल्लाह को ख़ुदा और परवरदिगार के नाम से याद करते हैं। मराठी भाषा पर मुश्रिकाना धर्म का काफ़ी प्रभाव है इस लिए इस भाषा में अल्लाह के लिए कोई नाम प्रस्तवित करते समय बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। मिसाल के तौर पर राम एक धार्मिक व्यक्तित्व का नाम है जिन को विष्णु का अवतार समझा जाता है। (देखिए Moles worth's Marathi English Dictionary P.693) इस लिए इस शब्द को रहीम के समानार्थ समझ कर अल्लाह के लिए हरगिज़ इस्तेमाल नहीं किया जा सकता इसी तरह शिव मुश्रिकाना धर्म में तीन ख़ुदाओं (त्रिमूर्ति) में से एक ख़ुदा का नाम है साथ ही इस के अर्थ पुरुष के जननेन्द्रिय के भी हैं। (देखिए Students' Sanskrit English Dictionary by Apte p-556).

शिव लिंग की पूजा भी की जाती है। इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुश्रिकों

(अनेकेश्वरवादियों) नें अपने ख़ुदाओं का नाम रखने में किस मानसिकता का सबूत दिया है। ''नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक'' نَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ ذٰلِک

दूसरी हिदायत यह है कि उस की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करो । अर्थात् उस को हर प्रकार के दोष, ऐब, और शिर्क (साझे) से मुक्त करार दो और तीसरी हिदायत यह है कि उस की दोषरहित पवित्रता के तसव्वुर के साथ उस का नाम जपते रहो, क्यों कि उसी का नाम जपने के लायक़ है।

हदीस में आता है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आयत की बिना पर सजदे में سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی ''सुबहान रब्बियल-अअला''(पाक है मेरा सर्वोच्च रब) पढ़ने का हुक्म दिया था (अबू दाऊद किताबुस्सलात)। गोया सजदे की यह तस्बीह उस हुक्म की तामील में है जो इस आयत में दिया गया है।

3. अगर इन्सान आकस्मिक घटना के तौर पर अस्तित्व में आ गया होता तो उस के अन्दर सन्तुलन, अनुकूलता और सौन्दर्य नहीं पैदा हो सकता था । यह ख़ुली निशानी है इस बात की कि उसे सर्वोच्च ख़ुदा ने पैदा किया है।

4. अर्थात् इन्सान की पैदाइश बग़ैर किसी योजना के नहीं हुई है। बल्कि उस के ख़ालिक़ ने एक योजना (Plan) बनाई है। जिस के अनुसार उसे दुनिया में एक निश्चित समय तक काम करना है। इस योजना का सार यह है दुनिया की यह ज़िन्दगी आज़माइश (परिक्षा की) होगी और हर व्यक्ति को आज़माइश (परीक्षा) के जिन मरहलों (चरणों) से गुज़रना होगा और उस को जो शक्ति और क्षमता दी जाएगी और जो साधन और अवसर मुहैया कर दिये जाऐंगे वह सब एक पूर्व निश्चित फैसले की हैसियत रखते हैं और इसी का नाम क़ुर्आन की परिभाषा (Terms) में ''तक़दीर'' है, यानी अल्लाह की पूर्वनियोजित योजना ।

5. या'नी अल्लाह तआला ने अपनी इस योजना से इन्सान को बेख़बर नहीं रखा है बल्कि मुख्यत: इस की परख उस के स्वभाव में ही रख दिया है जिस की बिना पर उस का ज़मीर उसे बुराई पर टोकता है और अच्छाई पर संतुष्ट होता है। वह अपनी ज़िन्दगी का अच्छा अन्जाम देखना चाहता है और नहीं चाहता कि बुरा अन्जाम उस के सामने आये । इस लिहाज़ से दिखिए तो मनुष्य स्वभावत: अपने को इम्तिहानगाह (परीक्षा स्थल) ही में महसूस करता है। इस एहसास को जो चीज़ ताज़ा करती है और अल्लाह की योजना से उसे अच्छी तरह सचेत (बाख़बर) करती है वह अल्लाह की वह्य है जिस का ज़िक्र आगे की आयतों में आ रहा है गोया इन्सान के ख़ालिक़ ने उस के लिए प्रकट और अप्रकट दोनों तरह की रहनुमाई का सामान कर दिया है। अगर प्रकृति एवं स्वभाव की आवाज़ अप्रकट एवं गुप्त हिदायत है तो अल्लाह की वह्य प्रकट एवं स्पष्ट हिदायत है। इस के बाद मानव अपने किये का आप ज़िम्मेदार है और उस के लिए यह कहने का मौक़ा नहीं कि मेरे रब ने मेरी हिदायत और रहनुमाई का सामान नहीं किया ।

6. यानी जब चारा उगता है तो हरा भरा होता है लेकिन एक समय आता है कि काला कूड़ा करकट बन के रह जाता है । यह एक मिसाल है अल्लाह के मन्सूबे (योजना) की जो इस दुनिया में प्रचलित है और जिस से यह रहनुमाई मिलती है कि पूरी दुनिया के लिए भी ख़ुदा का एक मनसूबा एक योजना है और वह योजना यह है कि इस पर भी उजाड़ ज़रूर आना है ताकि इस के बाद आख़िरत प्रकट हो, लिहाज़ा इन्सान इस दुनिया को हरा भरा देख कर इस भुलावे में न रहे कि इस पर हमेशा बहार छायी रहेगी और इस पर कभी पतझड़ आने वाली नहीं

7. इस आयत में सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और फ़रमाया यह जा रहा है कि क़ुर्आन की सूरत में जो वह्य हम नाज़िल कर (उतार) रहे हैं उस को आप के ज़ेहन में सुरक्षित

कर देने की ज़िम्मेदारी हम ने ली है लिहाज़ा इस बात का कोई अन्देशा नहीं है कि इस का कोई हिस्सा तुम भूल जाओ । ध्यान रहे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुरू शुरू में इस अन्देशे से कि कहीं कोई आयत या लफ़्ज़ भूल न जाऐं । जब क़ुर्आन का कोई हिस्सा नाज़िल होता तो उस को ग्रहण करने में जल्दी फ़रमाते । अल्लाह तआला का यह वादा क़ुर्आन और पैग़म्बर की सत्यता का प्रमाण है क्यों कि पूरा क़ुर्आन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस तरह याद हो गया कि आप उस का एक शब्द भी नहीं भूले। और आप ने शुद्ध रूप से संपूर्ण क़ुर्आन को उम्मत की तरफ़ मुन्तक़िल (Transfer) किया और आज हमारे सामने इस के लाखों और करोड़ो नुस्खे अपने शुद्ध रुप में इस तरह मौजूद है कि क़ियामत तक के लिए इस के सुरक्षित होने का सामान हो गया है। गोया क़ुर्आन एक सुदृढ़ स्थायी और कभी न बदलने वाला मोअजज़ा (चमत्कार) है जिस का अनुभव और ताज़्रिबा हर दौर के लोग कर सकते हैं।

8. अर्थात् अगर अल्लाह ही भुलाना चाहे तो और बात है।

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि ऐ नबी क़ुर्आन को याद करने के सिलसिले में जिस अन्देशे को तुम अपने दिल में महसूस करते हो अल्लाह तआला को इस का पता है मगर तुम्हे परेशान होने की ज़रूरत नहीं, इस लिए कि क़ुर्आन का सबक़ तुम्हें वह हस्ती दे रही है जिस का इल्म (ज्ञान) तमाम बातों से भिज्ञ (परिचित) है और उस ने इसे तुम्हारे हाफ़ज़े (याद्दाश्त) में ठीक ठीक महफ़ूज़ कर देने का फैसला फ़रमाया है।

10. इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए कुछ और इत्मीनान का सामान किया गया है कि क़ुर्आन का ज्यों का त्यों लोगों तक पहुँचाना यद्यापि बहुत मुश्किल काम है। लेकिन अल्लाह तआला इन तमाम मुश्किलों के बीच से तुम्हारे लिए आसान राह निकालेगा ।

क़ुर्आन की यह पेशीनगोई (भविष्य वाणी) हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यद्यपि उम्मी (अनपढ़) थे लेकिन न सिर्फ़ पूरे क़ुर्आन को याद करना आप के लिए आसान हो गया बल्कि इस के साथ उस को लोगों तक पहुँचाना, उसका दर्स (सबक़) देना, उस के द्वारा याददेहानी करना, उस की व्याख्या और पुष्टि करना, मुश्किल से समझ में आने वाले भेदों और उस की हिकमत से भरी बातों को बयान करना, उस से नतीजा निकालना और उस के आदेशों को लागू करना भी आसान हो गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने थोड़े ही समय में ऐसे साथी प्रदान किये जो क़ुर्आन की किताबत (लिपि) का काम बहुत अच्छी तरह अन्जाम देते ताकि आने वाली नस्लों के लिए क़ुर्आन की हिफ़ाज़त का सामान हो । इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कितने ही ऐसे साथी मिल गये जिन्होंने क़ुर्आन को अपने सीनों में महफ़ूज़ कर लिया यह हुफ़्फ़ाज़ (क़ुर्आन को याद कर लेने वाले) और क़ुर्रा (पढ़ने वाले) कहलाए और उन्होंने क़ुर्आन को फ़ैलाने में बहुत बड़ी सेवा की ।

11. अर्थात् दअवत और तबलीग़ एवं तज़कीर और नसीहत का काम न लठ चलाने का काम है और न अन्धे के रेवड़ी बाटने जैसा काम, बल्कि यह हिकमत और तदबीर से भरा काम है जिस के लिए मौक़ा और समय को देखने की ज़रूरत है। बे मौक़ा नसीहत करने से कोई फ़ायदा नहीं और न अन्धों और बहरों को नसीहत करने से कोई फ़ायदा है इस लिए जहाँ दाई दअवत देने वाला) यह महसूस करे कि लोग नसीहत सुनने के मूड में नहीं है वहाँ जबरदस्ती उन्हें सुनाने की कोशिश न करे।

इस का यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि आम बिगाड़ को देख कर आदमी पहले ही से यह फैसला कर के बैठ जाये कि दअवत और तबलीग़ या तज़्कीर और नसीहत कुछ लाभदायक होने वाली नहीं, लिहाज़ा यह काम सिरे से किया ही न जाये । यह ऐसी ही बात है जैसे कि कोई डाक्टर लोगों की बद

परहेज़ियों को देख कर अपनी क्लिनिक बन्द कर दे और घर में बैठ जाये या स्वास्थ विभाग (Health Department) यह देख कर कि सेहत के मामले में आम तौर से लोग बेपरवाही दिखा रहे हैं और स्वास्थ के लिए हानिकारक वस्तुओं का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है, सिरे से अपने कर्तव्य ही को छोड़ बैठे। जिन लोगों की नज़र नबियों के तरीक़ा-ए- दअवत (आह्वान विधि) पर हो वह इस तरह का फैसला हरगिज़ नहीं कर सकते, इस लिए कि नबियों के दअवत के तरीक़ों में मौक़ा और समय के लिहाज़ की निशानदेही तो ज़रूर की जा सकती है। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं पेश किया जा सकता कि आम बिगाड़ को देख कर उन्हों ने दअवत और सुधार का काम रोक दिया हो, बल्कि वह हमेशा ही मुख़ालफ़तो के तूफ़ान से गुज़रते रहे हैं और सुधार का जो काम भी अन्जाम पा सका है मौज़ो के थपेड़े खाकर ही अन्जाम दिया जा सका है।

यहाँ कलाम के अन्दाज़ से भी स्पष्ट है कि तज़्कीर (याददेहानी) आम तो होनी चाहिए इसी सूरत में उसे स्वीकार करने वाले भी निकल आऐंगे और उस से मुँह मोड़ने वाले भी ।

12. या'नी जिस व्यक्ति के दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ होगा वह पैग़म्बर की बात ज़रूर पूरे ध्यान से सुनेगा और उस नसीहत को स्वीकार करेगा जो पैग़म्बर पर ख़ुदा की तरफ़ से क़ुर्आन के रूप में अवतारित (नाज़िल) हुई है

कामयाब हुआ वह जिस ने पाकीज़गी (पवित्रता) इख़्तियार की, और अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ी। मगर तुम लोग संसार के जीवन को वरीयता देते हो, हालाँकि आख़िरत कई गुना बेहतर और पायेदार है। यह (शिक्षा) अगले सहीफ़ों में भी दी गई थी, इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में। *(अल-क़ुर्आन)*

11. और इस से मुँह मोड़ेगा वह जो बड़े दुर्भाग्य वाला होगा,

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾

12. वह बड़ी आग में दाख़िल होगा।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾

13. फिर न उस में मरेगा और न जियेगा।[13]

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾

14. कामयाब हुआ वह जिस ने पाकीज़गी (पवित्रता) इख़्तियार की,[14]

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾

15. और अपने रब का नाम लिया [15] और नमाज़ पढ़ी।[16]

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

16. मगर तुम लोग संसार के जीवन को वरीयता देते हो,[17]

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

17. हालाँकि आख़िरत कई गुना बेहतर और पायेदार है।[18]

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾

18. यह (शिक्षा) अगले सहीफ़ों में भी दी गई थी,

إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٨﴾

19. इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में।[19]

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

13. या'नी जहन्नम में न वह जीने का मज़ा ले सकेगा और न मौत ही आयेगी कि सारे दुखों का ख़ात्मा कर दे बल्कि वह ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में फ़ँसा रहेगा जिस की मनुष्य कल्पना ही करे तो उस के रौंगटे खड़े हो जाऐं और वह उस से अल्लाह की पनाह माँगने लगे । ख़याल रहे कि यहाँ उन लोगों की सज़ा का हाल बयान हुआ है जो पैग़म्बर की नसीहत से मुँह मोड़ें और अन्तिम समय तक उस तज़्कीर (याददेहानी अथवा नसीहत) को स्वीकार न करे जो पैग़म्बर पर नाज़िल हुई है।

14. पाकिज़गी इख़्तियार करने से मुराद, दिल और दिमाग़ की पाक़ीज़गी भी है और अख़लाक़ और आमाल (नैतिकता और व्यवहार) की पाकीज़गी भी । दिल और दिमाग़ की पाकीज़गी हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि आदमी शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और कुफ़्र (अनीश्वरवाद) और इल्हाद (नास्तिकता) में लिप्त होने से अपने को पाक रखे और ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान ले आए और अख़लाक़ एवं अमल की पाकीज़गी हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि आदमी बुराइयों को छोड़ दे और नेक काम करे।

15. अपने रब का नाम लेने से मुराद सिर्फ रस्मी तौर पर नाम लेना नहीं है क्यों कि इस तरह का नाम तो मुश्रिक भी लेते हैं और काफ़िर भी, बल्कि नाम लेने से मुराद ख़ुदा को दिल से और हक़ीक़ी तौर से याद करना एवं ज़ुबान से सही नाम के साथ उस का ज़िक्र (याद अथवा चर्चा) करना है।

16. ''अपने रब का नाम लिया और नमाज़ पढ़ी'' से इस बात पर रौशनी पड़ती है कि नमाज़ का वास्तविक प्रेरक (मुहर्रिक) अल्लाह की याद है । यह याद ही बन्दे को उस की इबादत के लिए आमादा करती है । यहीं से हक़ीक़ी नमाज़ और रस्मी नमाज़ का फ़र्क़ खुल जाता है। हक़ीक़ी नमाज़ अल्लाह की याद का परिणाम होती है और उस के अन्दर रूह (आत्मा) की तरह समाई हुई होती है। गोया अपने रब की याद उसे इबादत के लिए बेचैन करती है और वह नमाज़ ही में सुकून पाता है। इस के विरुद्ध रस्मी नमाज़ एक बोझ उतारने का काम है इसी लिए उस में दिल नहीं लगता ।

नमाज़ का वर्णन यहाँ जिस अन्दाज़ से हुआ है उस से अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में नमाज़ का क्या स्थान है । यह सूरह मक्का के आरम्भिक दौर की नाज़िल शुदा है और इस में आख़िरत की कामयाबी के लिए जो गुण ज़रूरी ठहराये गये हैं उन में नमाज़ भी शामिल है। और शरई एहकाम में उसे प्राथमिकता प्राप्त है।

ध्यान रहे कि नमाज़ (सलात) को योगा (YOGA) से कोई मुनासिबत नहीं है क्यों कि नमाज़ शुद्ध रुप से अल्लाह की इबादत है जब कि योगा (YOGA) मुश्रिकाना स्टाइल की रियाज़त ।

17. अर्थात् आख़िरत की कामयाबी की यह राह जिस पर चल कर आदमी अपने ज़ाहिर और बतिन (बाह्य और अन्दरुन) को संवारता है, मात्र इस लिए तुम लोग अपनाने के लिए तैयार नहीं हो कि असल अहमियत तुम्हारी निगाह में दुनिया की है न कि आख़िरत की । तुम को चिन्ता है तो दुनिया की और सुख चाहते हो तो दुनिया ही में । दुनिया का कोई लाभ क़ुर्बान करने के लिए तैयार नहीं हो और समझते हो कि यहाँ के ''नक़द'' फ़ायदे हासिल करना ही अक़्लमन्दी है।

18. अर्थात् दुनिया के मुक़ाबले में आख़िरत इस लिए वरीयता के योग्य है कि वहाँ की ज़िन्दगी हर लिहाज़ से बेहतर और वहाँ की नेमतें दुनिया की नेमतों से कहीं बढ़ कर है। इस के अलावा आख़िरत हमेशा बाक़ी रहने वाली है जब कि दुनिया मिट जाने वाली है।

19. अर्थात् तौहीद (एकेश्वरवाद) और आख़िरत की यह शिक्षा जो क़ुर्आन दे रहा है कोई नई बात नहीं जो पहली बार दी गई हो । बल्कि अल्लाह की तरफ़ से हमेशा यही हिदायत नाज़िल (अवतरित) होती रही है, प्राचीन से प्राचीन आसमानी ग्रन्थों (सहीफ़ों) में ठीक ठीक यही शिक्षा

मौजूद रही है। यह और बात है कि उन के मानने वाले उस शिक्षा को या तो भुला चुके या उस में उन्होंने ख़ूब काट छाँट किया, इस लिए क़ुर्आन के माध्यम से फिर उस शिक्षा का नवीनकरण (तज्दीद) किया जा रहा है।

आसमानी ग्रन्थों में सब से प्राचीन सहीफ़ा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का है लेकिन वह सुरक्षित नहीं रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़े, तो उन से मुराद तौरात है जो अपने शुद्ध रुप में तो मौजूद नहीं है अलबत्ता उस के कुछ अंश ''पुराने नियम'' (Old Testament) की पाँच पुस्तकों में जो ''उत्पत्ति, निर्गमन, लेवी, गणना और व्यवस्थाविवरण'' के नाम से पाये जाते हैं देखे जा सकते हैं। विशेष कर तौहीद की शिक्षा अब भी इन में साफ़ तौर पर मौजूद है। जैसे

''तू मेरे अतिरिक्त किसी और को परमेश्वर न मानना । तू अपने लिए किसी प्राणी की मूर्ति या आकृति न बनाना''(निर्गमन २०:३,४)

''प्रभू मूसा से बोला तू समस्त इस्राईली समाज से बोलना, तू उन से कहना पवित्र बनो । क्यों कि मैं प्रभू तुम्हारा परमेश्वर पवित्र हूँ।------तुम मूर्तियों की ओर उनमुख मत होना और न उन की पूजा करने के लिए देवताओं की प्रतिमा ''बनाना'' (लेवी १९:१-४)

''तू प्रभू परमेश्वर की भक्ति करना । तू उस की आराधना करना, और उस से ही मस्वन्द रहना तू केवल उस के नामकी शपथ खाना । वह तेरा आराध्य है । वह तेरा परमेशवर है। (व्यवस्थाविवरण १०:२०,२१)

और मूसा अलैहिस्सलाम ने दुनिया से विदा होते समय बनी इस्राईल को इकट्ठा कर के जो गीत सुनाया उस का एक भाग यह है :-

''ओ आकाश, मेरी ओर ध्यान दे, मैं बोलूँगा, ओ पृथ्वी मेरे मुँह के शब्द को सुन । मेरी शिक्षाऐं वर्षा के सदृश बरसे, मेरे शब्द ओस के सदृश टपके जैसी हरी घास पर रिमझिम वर्षा, जैसे वनस्पति पर बौछार। मैं प्रभू के नाम को घोषित करुँगा, हमारे परमेश्वर की महानता को स्वीकार करो----- प्रभू चट्टान हैं। उस का शासन-कार्य सिद्ध है क्यों कि उस के समस्त मार्ग न्यायपूर्ण हैं । वह सच्चा परमेश्वर है, उस में पक्षपात नहीं वह निष्पक्ष न्यायी और निष्कपट है। (व्यवस्थाविवरण ३२:१-१४)

८८. अल्-ग़ाशियः

नाम :- इस सूरह की पहली आयत में क़ियामत की आम और हम:गीर (सर्वजनिक और सर्वव्यापी) मुसीबत के लिए ग़ाशियः का लफ़्ज़ (शब्द) इस्तेमाल हुआ है जिस की मुनासिबत से इस का नाम ''अल्-ग़ाशियः'' है।

नाज़िल होने का समय :- यह सूरह मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि दअ्वत और तबलीग़ (समझाने और बुलाने) का काम आरम्भिक चरणों (इब्तिदाई मरहले) में था ।

केन्द्रीय विषय :- जज़ा और सज़ा ही है। लेकिन छोटे छोटे वाक्यों में जन्नत और दोज़ख़ का चित्रण ऐसी प्रभावपूर्ण शैली में किया गया है कि पढ़ने वाला अगर आँखें रखता है तो इसी दुनिया में इन का अनुभव करने लगता है।

यह सूरह पिछली सूरह की पूरक है। उस में जन्नत और दोज़ख़ का ज़िक्र संक्षिप्त था लेकिन इस सूरह में दोनों का नक़्शा प्रस्तुत कर दिया गया है। इसी लिए नमाज़ में सूरह ''अल्-अअला'' के साथ सूरह ''अल्-ग़ाशियः'' भी पढ़ी जाती है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा और दोनों ईद की पहली रकअत में सूरह अल्-अअला पढ़ते तो दूसरी रकअत में सूरह अल्-गाशियः। (मुस्लिम किताबुल जुमुअः)

कलाम की तरतीबः- आयत १ में क़ियामत की सर्वव्यापी (हम:गीर) आफ़त की ख़बर दी गई है ताकि बेख़बरी में पड़े हुए इन्सान चौंक जायें।

आयत २ से ७ में उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया है जो क़ियामत का इन्कार करने वाले हैं और ख़ुदा के यहाँ जवाबदेही का कोई तसव्वुर नहीं रखते।

आयत ८ से १६ में उन लोगों का अन्जाम बयान किया गया है जो क़ियामत पर यक़ीन रखते हैं और ख़ुदा के यहाँ जवाबदेही के तसव्वुर के मातहत ज़िन्दगी गुजारते हैं।

आयत १७ से २० में संसार (Universe) की कुछ निशानियों की तरफ़ ध्यान अकर्षित किया गया है जो ख़ुदा की क़ुदरत और हिकमत को प्रमाणित करती है और इन पर ग़ौर करने से क़ुर्आन के इस बयान की पुष्टि होती है कि वह ख़ुदा क़ियामत के बरपा करने तथा जन्नत और दोज़ख़ वाली दुनिया पैदा करने पर क़ादिर (सक्षम) है और ज़रूरी है कि जज़ा और सज़ा का मामला पेश आये।

आयत २१ से २६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के फ़रमाया गया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लनम) का काम सिर्फ़ याददेहानी और नसीहत करना है। हक़ (सत्य) को ज़बरदस्ती मनवाने की ज़िम्मेदारी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नहीं डाली गई है। लिहाज़ा जो लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नसीहत सुनने के लिए तैयार नहीं हैं उन का मामला अल्लाह के हवाले करो । अख़िरकार इन को अल्लाह ही की तरफ़ लौटाना है। उस वक़्त वह इन से हिसाब लेगा।

८८.सूरह अल्-ग़ाशियः

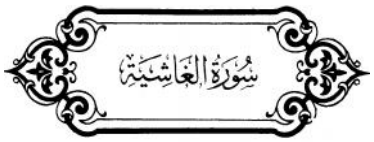

अनुवाद आयतें : २६

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क्या तुम्हें [1] छा जानेवाली आफ़त की ख़बर पहुँची है?[2]**

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١

2. **कितने चेहरे [3] उस रोज़ रुसवा होंगे,[4]**

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢

3. **परिश्रम करने वाले थके माँदे होंगे,[5]**

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣

४. **दहकती आग में दाख़िल होंगे,[6]**

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤

5. **खौलते चश्मे (स्रोत) का पानी उन्हें पिलाया जायेगा ।[7]**

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥

6. **उन के लिए झाड़ काँटे के सिवा कोई खाना नहीं होगा।[8]**

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦

7. **जो न मोटा करेगा और न भूख ही को दूर करेगा।[9]**

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝٧

8. **कितने चेहरे उस रोज़ चमक रहे होंगे,[10]**

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨

9. **अपनी कोशिशों पर प्रसन्न,[11]**

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩

10. **उच्च जन्नत में,[12]**

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠

11. **जहाँ कोई बेहूदा बात न सुनेंगे,[13]**

لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝١١

12. **उस में चश्मे (स्रोत) बह रहे होंगे।[14]**

فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢

1. सम्बोधन यद्यपि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है लेकिन मक़सद आम इन्सानों को आगाह करना है।

2. छा जाने वाली आफ़त (अलग़ाशियः) से मुराद क़ियामत है। मतलब यह है कि क़ियामत एक सर्वव्यापी (हमःगीर) आफ़त के रुप में प्रकट होगी जो सब को अपनी चपेट में ले लेगी । यहाँ इस बात को सवालिया अन्दाज़ (प्रश्नवाचक रूप) में पेश किया गया है ताकि सुनने वाले चौंक जाऐं और आगे जो क़ियामत की स्थिति बयान की जा रही है उन को ग़ौर से सुनें ।

3. चेहरे (वुजूह وُجُوْهٌ) से मुराद व्यक्ति है। चूँकि इन्सान की आन्तरिक परिस्थितियों का प्रदर्शन चेहरे से होता है और उस का व्यक्तित्व भी उसी से पहचाना जाता है इस लिए यहाँ व्यक्तियों के चेहरे (वुजूह وُجُوْهٌ) का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है।

4. यह उन लोगों के हाल का बयान है जो जज़ा और सज़ा का इन्कार करते रहे हैं और इस विचार को लिए अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते रहे कि न उन्हें ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है और न अपने किये का हिसाब पेश करना है।

5. या'नी क़ियामत के दिन इन्कार करने वालों को कठोर परिश्रम के काम करने पड़ेंगे जिन से थककर वह निढाल हो जाऐंगे । मिसाल के तौर पर क़ब्रों से उठते ही अपने विश्राम स्थान तक दौड़ने, पेशी के इन्तिज़ार में वर्षों तक कड़ी गर्मी में भूखे प्यासे खड़े होने, तौक़ (पट्टा) पहनने और जंजीरें घसीटने जैसे काम । जिन लोगों ने दुनिया में शरई (इस्लामी धर्मशास्त्र की) पाबन्दियों से अपने को आज़ाद कर रखा था और नमाज़ जैसी इबादत को वह बोझल समझते रहे उन की इस सहूलत पसन्दी और विलासता का ठीक ठीक बदला यही होगा कि वह क़ियामत के दिन थका देने वाले काम करें और ''क़ैद बामशक़्क़त'' की सज़ा भुगतें ।

6. अर्थात् क़ियामत की जगह से जब यह न मानने वाले लोग लौटेंगे तो सीधे जहन्नम में ढकेले जाऐंगे जिस की आग भड़क रही होगी ।

7. खौलता हुआ पानी इस लिए कि जब उन्होंने ख़ुदा और आख़िरत से बेपरवाह हो कर ज़िन्दगी गुज़ारी और उस के इनाम का अपने को उम्मीदवार नहीं बनाया तो वह सही तौर पर इस बात के योग्य ठहरे कि उन की ख़ातिर आख़िरत में खौलते हुए पानी से की जाए।

8. आर्थात् खाने के लिए उन्हें ग़िज़ाइयत (आहार) रखने वाली और लज़्ज़तदार कोई चीज़ नहीं मिलेगी । अलबत्ता झाड़ काँटे और इसी तरह ज़क़्क़ूम और पीप वग़ैरा इन्हें ज़रुर खाना पड़ेंगे जो जाहिर है ग़िज़ा (आहार) का काम नहीं दे सकते ।

यह बदला भी ठीक उन के कर्म के अनुकूल होगा । क्यों कि उन्होंने ख़ुदा से मिलने का इन्कार कर के दुनिया में काँटे ही बोये थे । इस लिए इन्होंने जो बोया था वही इन्हें खाने के लिए मिलेगा।

9. अर्थात् इन झाड़ काटों में सिरे से आहार ही नहीं होगा, इस लिए शरीर को न शक्ति प्राप्त हो सकेगी और न भूख ही मिट सकेगी ।

अल्लाह तआला ने शरीर को शक्ति पहुँचाने और भूख को मिटाने के लिए तरह तरह की लज़्ज़तदार ग़िज़ाऐं (आहार) बख़्शी थी लेकिन जब इन्हों ने इन नेमतों को पाने के बाद भी अपने रब की नाशुक्री की तो वह इसी योग्य ठहरे कि झाड़ काँटे खाऐं ।

ध्यान रहे कि मतन (Text) में लफ़्ज़ ''ज़रीअ'' ضَرِيع इस्तेमाल हुआ है जो एक काँटेदार और ज़हरीली झाड़ी का नाम है।

10.अब उन लोगों का हाल बयान किया जा रहा है जो आख़िरत पर ईमान लाए और ख़ुदा के सामने जवाबदेही के भय से ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारते रहे ।

11. अर्थात् अपनी कोशिशों के बेहतरीन परिणाम देखकर वह ख़ुश होंगे कि अच्छा हुआ उन्होंने आख़िरत को लक्ष्य बना कर ज़िन्दगी बसर की और दुनिया परस्ती में लिप्त नहीं हुए।

12. अर्थात् वह ऐसे बाग़ में होंगे जो बुलन्दी पर भी होगा और उच्च कोटि का भी ।

13. अर्थात् जन्नत की सोसाइटी इस क़दर पाकीज़ा और वहाँ की मज्लिसें (सभाऐं) इतनी सभ्य होंगी कि न तो कोई व्यक्ति असभ्य बात अपनी ज़ुबान से निकालेगा और न किसी को बेहूदा बात सुन्ने के लिए सम्अख़राशी (बकबक से कानों को कष्ट देना) करना होगी । दुनिया के मौजूदा माहौल से जहाँ बेहयाई की बातों और बेहूदा गानों से अपने कानों को सुरक्षित रखना सम्भव नहीं रहा है, जन्नत का माहौल बिलकुल अलग और उच्च नैतिक मूल्यों पर आधारित होगा और यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत होगी जो पाकीज़गी अपनाने वालों को नसीब होगी ।

14. जन्नत में चश्मों (स्रोतों) का बहते रहना एक तो इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि उस की ताज़गी और हरयाली कभी ख़त्म होने वाली नहीं और दूसरे इस बात की तरफ़ कि पानी और दूसरे उच्च क्वालिटी के मशरूबात (पेय पदार्थ या Drinks) वहाँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध होंगे।

उस के अन्दर ऊँचे तख़्त होंगे, और प्याले होंगे क़रीने (सभ्य तरीक़े) से रखे हुए , और गाव तकिये पंक्तिबद्ध लगे हुए, और कालीन बिछे हुए। क्या यह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं ? और आसमान को, कि कैसा बुलन्द किया गया है? और पहाड़ों को, कि किस तरह खड़े कर दिए गये हैं ? *(अल-क़ुर्आन)*

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾

13. उस के अन्दर ऊँचे तख़्त होंगे,[15]

وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾

14. और प्याले होंगे क़रीने (सभ्य तरीक़े) से रखे हुए ,[16]

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾

15. और गाव तकिये पंक्तिबद्ध लगे हुए,

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾

16. और कालीन बिछे हुए। [17]

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

17. क्या यह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं ?

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾

18. और आसमान को, कि कैसा बुलन्द किया गया है?

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾

19. और पहाड़ों को, कि किस तरह खड़े कर दिए गये हैं ?

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

20. और ज़मीन को, कि किस तरह बिछाई गई है?[18]

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

21. तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम नसीहत करो, कि तुम्हारा काम बस नसीहत करना है।

لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

22. इन को बाध्य करना नहीं है, [19]

إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

23. मगर जो मुँह मोड़ेगा [20] और कुफ़्र करेगा,[21]

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

24. तो अल्लाह उस को बड़ा अज़ाब (यात्ना) देगा।[22]

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

25. निस्सन्देह हमारी की तरफ़ है इन की वापसी,[23]

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

26. फिर हमारे ही ज़िम्मे है इन से हिसाब लेना,[24]

15. ऊँचे और शानदार तख़्त शाही जीवन की निशानियाँ हैं और जन्नत में जाने वालों को ऐसी ही ज़िन्दगी नसीब होंगी ।

16. अर्थात् प्याले या गलास सामने रखे हुए होंगे । उन्हें जन्नत के मशरूबात (Drinks) पीने के लिए कोई कष्ट करना नहीं होगा ।

17. इस से अन्दाज़ा होता है कि जन्नत वालों का जीवन कैसा सुख समृद्धि का जीवन होगा और उन के लिए कैसा अधिक और उत्तम आराइश (श्रंगार) का सामान वहाँ मौजूद होगा ।

ऊपर की आयतों में जन्नत का जो चित्रण प्रस्तुत किया गया है उस से जन्नत का सही और साफ़ सुथरा तसव्वुर क़ायम होता है और इतनी बातें, इस की उमंग पैदा करने के लिए काफ़ी है। रही इस की असल हक़ीक़त तो आख़िरत के जगत (परलोक) की चीज़ों को हम माद्दी (भौतिक) पैमानों से नाप नहीं सकते इस लिए इस पर बहसें खड़ी करना बिलकुल बेफ़ायदा है।

18. ऊपर क़ियामत एवं जन्नत और दोज़ख का जो ज़िक्र हुआ उस का इन्कार करने वालों को यहाँ सोचने और विचार करने पर उकसाया गया है और इस सिलसिले में इर्द गिर्द की चीज़ों की तरफ़ इन का ध्यान खींचा गया है। अरब के रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उन की निगाह सब से पहले ऊँट पर पड़ती थी इस लिए उन्हें सब से पहले इस पर विचार करने का न्योता दिया गया है कि क्या ये देखते नहीं कि यह जानवर किन विशेषताओं के साथ पैदा किया गया है?जिन विशेषताओं की रेगिस्तानी ज़िन्दगी के लिए ज़रूरत थी ठीक उन विशेषताओं के साथ ऊँटो का पैदा किया जाना क्या अल्लाह की क़ुदरत (शक्ति) रूबूबियत (स्वामित्व) और हिकमत (तदबीर) के गुणों पर तर्क नहीं करता?

रेगिस्तान में ऊँट पर सफ़र करने वालों को आसमान पहाड़ और ज़मीन नज़र आते हैं। इस लिए उन से कहा गया कि इन्ही चीज़ों पर ग़ौर करो कि क्या यह ऊँचा आसमान अल्लाह की महान शक्ति की गवाही नहीं देता और क्या यह पहाड़ जो ज़मीन पर खड़े कर दिये गये हैं उस की सुदृढ़ कारीगरी और कला का निशान नहीं हैं। और क्या यह ज़मीन जिसे इस तरह बिछा दिया गया है कि वह अरबों इन्सानों के बसने योग्य हो गयी, उस की रुबूबियत और हिकमत पर दलालत नहीं करती? अगर यह सब कुछ सही है और अक़्ल कहती है कि यही बात सही है, तो फिर उस ख़ुदा के लिए क़ियामत को बरपा करना, इन्सान को दोबारा पैदा करना तथा जन्नत और दोज़ख़ वाली दुनिया बना देना क्या मुश्किल है? और क्या उस की रुबूबियत का यह तक़ाज़ा नहीं है कि वह एक दिन ऐसा लाए जिस में वह अपने बन्दों से हिसाब ले कि उन्हों ने उस की नेमतों से फ़ायदा उठा कर उस की शुक्रगुज़ारी की या ना शुक्री की? और क्या यह बात उस की हिकमत के ख़िलाफ़ न होगी कि इन्सान जैसी ऊँची मख़्लूक़ का कोई उद्देश्य न हो और उस की रचना के पीछे सिरे से कोई योजना और कोई स्कीम न हो?

19. अर्थात् पैगम्बर का काम दअवत देना, नसीहत करना और डराना एवं समझाना है। लोगों से जबरदस्ती बात मनवा लेने का काम पैग़म्बर के सुपुर्द नहीं किया गया है।

20. मुँह मोड़ना यह है कि आदमी नसीहत की बात सुनना पसन्द न करे, क़ुर्आन की नसीहत उस पर भारी हो और जब याददेहानी की कोई बात उस के सामने आ जाये तो वह उस में रुचि न ले या कतरा कर निकल जाये ।

21. कुफ़्र यह है कि आदमी क़ुर्आन की नसीहत को क़ुबूल न करे और उस की हिदायत और शिक्षाओं को मानने से इन्कार कर दे।

22. अर्थात् इन्कार करने वालों पर आख़िरत में अल्लाह का अज़ाब (यात्ना) ऐसा ज़बदस्त होगा कि उस का मुक़ाबला दुनिया की बड़ी से बड़ी सज़ा से नहीं किया जा सकता । मगर क़ुर्आन की इस स्पष्ट चेतावनी के बावजूद जो लोग कुफ़्र की राह अपनाऐं उन्हें इस अन्जाम को पहुँचने से कौन बचा सकता है।

23. अल्लाह की तरफ़ वापसी का मतलब यह है कि सब को एक दिन उसी के सामने हाज़िर होना है, किसी और के सामने नहीं, फिर यह कहाँ की बुद्धिमानी है कि आदमी इस फ़िक्र ही से बेपरवाह हो जाये कि उसे ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है।

24. अर्थात् क़ियामत के दिन जब अल्लाह के सामने तमाम लोगों की हाज़री होगी तो वह हर एक से हिसाब लेगा । उस उक़्त उन लोगों को जिन्होंने पैग़म्बर की बात पर कान नहीं धरा और क़ुर्आन की रहनुमाई को स्वीकार करने से इन्कार करते रहे, कड़ी जवाबदेही करना होगी ।

हूद समाज का ठीकाना

समूद समाज का ठीकाना

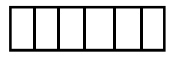

x x x x

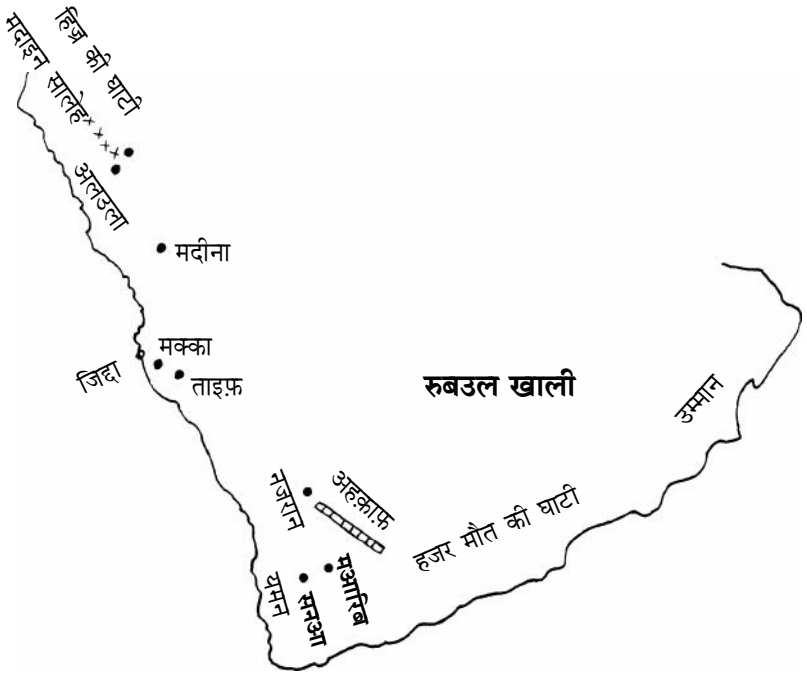

८९. अल्-फ़ज्र

नाम :- सूरह की शुरूआत "वल्-फ़ज्र وَالْفَجْرِ (क़सम है फ़ज्र की) से हुई है। इसी मुनासिबत से इस का नाम "अल् फ़ज्र" है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून (विषय) से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि मक्का वालों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहत का असर क़ुबूल करने के बजाय सरकशी और ज़ुल्म एवं फ़साद का रवैया अपना लिया था।

केन्द्रीय विषय :- जज़ा और सज़ा है, खास तौर से सज़ा के पहलू को स्पष्ट रुप से प्रस्तुत किया गया है ताकि जो लोग दुनिया परस्ती में मगन हैं वह होश में आऐं।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में रात और दिन की प्रकृतिक स्थिति को हिसाब के दिन के सबूत में पेश किया गया है।

आयत ६ से १४ में इतिहास की कुछ बड़ी क़ौमों के भयावह अन्जाम को इस बात के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस कायनात का शासक, व्यक्तियों और क़ौमों पर नज़र रखे हुए हैं और वह एक दिन ज़रुर उन से ज़रूर पूछ ताछ कर के हिसाब लेगा।

आयत १५ से २० में इन्सान के कुकर्मों विशेष रुप से कमज़ोर के अधिकार छीनने पर कड़ी पकड़ की गई है। और खोल कर बताया गया है कि इस तरह के ग़लत काम आख़िरत के इन्कार का ही नतीजा है।

आयत २१ से ३० में अल्लाह की अदालत का चित्रण प्रस्तुत करते हुए इन्कार करने वालों (मुन्किरीन और इमान लाने वालों (मोमिनीन) का अन्जाम बयान किया गया है।

८९.सूरह अल्-फ़ज्र

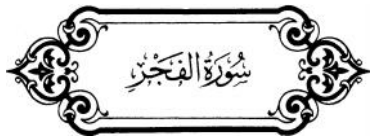

سُوْرَةُ الْفَجْرِ

अनुवाद आयतें :३०

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है [1] फ़ज्र की,[2]**

وَالْفَجْرِ ۙ ﴿١﴾

2. **और दस रातों की,[3]**

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ ﴿٢﴾

3. **और जुफ़्त (युग्म) और ताक़ (अयुग्म)की,[4]**

وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ ﴿٣﴾

4. **और रात की जब कि वह विदा हो रही हो।[5]**

وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۚ ﴿٤﴾

5. **क्या इस में एक अक़्लमन्द के लिए कोई क़सम नहीं है?[6]**

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۭ ﴿٥﴾

6. **तुम ने नहीं देखा[7] कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आद के साथ।[8]**

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾

7. **ऊँची इमारतों वाले [9] इरम के साथ।[10]**

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾

8. **जिन के मानिन्द (सदृश) कोई (क़ौम) किसी देश में पैदा नहीं की गई थी।[11]**

الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾

9. **और समूद के साथ [12] जो घाटी में [13] चट्टानें तराशा करते थे।[14]**

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

10. **और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ ![15]**

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ﴿١٠﴾

11. **इन लोगों ने देशों में सर उठा रखा था।**

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुटनोट नं.१४

2. फ़ज्र से मुराद वह वक़्त है जब रात के अन्धेरे में से दिन की रौशनी पूरब की ओर आसमान पर प्रकट होती है। इस का दूसरा नाम सुब्हे-सादिक़ (प्रात) है जिसे उर्दू में पौ फटना कहते हैं।

फ़ज्र का वक्त सूर्य उदय होने तक रहता है जब कि सुबह, सुर्योदय के बाद के समय को भी कहा जाता है।

3. दस रातों से मुराद चाँद के महीने (क़मरी माह) की दस रातें हैं और फ़ज्र की मुनासिबत से बीच की दस रातें यानी ग्यारहवीं से बीसवीं रात मुराद लेना ज़्यादा सही मालूम होता है क्यों कि यह रातें चाँद से रौशन (प्रकाशमान) रहती हैं।

4. कलाम के सिलसिले को ध्यान में रखते हुए यहाँ ज़ुफ़्त (युग्म) और ताक़ (अयुग्म) से मुराद जुफ़्त और ताक (युग्म और अयुग्म) रातें ही ली जा सकती हैं क्यों कि रात का ज़िक्र इस से पहले भी हुआ और इस के बाद भी । रातें किसी महीने में जुफ़्त (युग्म) अदद होती हैं और किसी में ताक़ (अयुग्म) अदद । अर्थात् कोई महीना ३० रातों का होता है और कोई २९ रातों का ।

5. रात के विदा होने से मुराद वह वक़्त है जब अन्धेरा ख़त्म होने और पौ फटने को होती है।

6. मतलब यह कि क्या इन चीज़ों में रहनुमाई का कोई सामान मौजूद नहीं है, और क्या एक आदमी पर जो अक़्ल और होश से काम ले,आसमान पर जाहिर होने वाले इन आसार से क़ुर्आन के बयान की सच्चाई रौशन नहीं होती । यह सवाल दावे के लिए और बात पर ज़ोर देने के लिए है। यहाँ दिन और रात की व्यवस्था पर सोचने और विचार करने पर उकसाया गया है जिस का अनुभव मनुष्य रोज़ाना करता है। इस की शुरुआत फ़ज्र से होती है और ख़ात्मा रात के विदा हो जाने पर। फ़ज्र रात के अन्धकार को चीर कर प्रकट होती है। जिस समय सुबह की सफ़ेद धारी आसमान पर झलकने लगती है तो वह मन्ज़र बहुत अजीब होता है। इसी तरह हर माह की बीच की दस रातें जो चाँद के नूर से रौशन होती है, इन्सान के दिल और दिमाग़ पर ख़ास असर डालती हैं। फिर हर महीने की समाप्ति या तो ३० रातों पर होती है या २९ रातों पर। इस में कभी कोई अन्तर घटित नहीं होता और रात के जब विदा होने का समय आ जाता है तो वह ख़ामोशी के साथ अपनी विसात लपेट देती है और इस तरह विदा हो जाती है कि गोया वह विदा होने ही के लिए आई थी । और उस के विदा होते ही वह महफ़िल भी बेरौनक़ हो जाती है जो उस ने सजाई थी ।

रात दिन मुशाहिदे (अनुभव) में आने वाले वह आसार क्या किसी मुदब्बिर (नीतिज्ञ) का पता नहीं देते? दिन और रात की यह विचित्र व्यवस्था और इस में कमाल दर्जे का नियम किस तरह पैदा हो सकता था अगर इस के पीछे एक ज़बरदस्त क़ुदरत और हिकमत रखने वाली हस्ती का साथ न होता? अत: यह अनुभव इन्सान को जिस नतीजे पर पहुँचाता है वह यह है कि निश्चय ही एक नीतिज्ञ हस्ती है जिस के इशारे पर क़ायनात की यह सारी व्यवस्था कमाल दर्जे के नियमानुसार अत्यन्त सुदृढ़ तरीक़े से चला रही है और जब वह हस्ती नीतिज्ञ (मुदब्बिर) है तो उस की बनाई हुई दुनिया बेमक़सद कैसे हो सकती है और उस का पैदा किया हुआ इन्सान बेनकील का ऊँट कैसे हो सकता है?ज़रूरी है कि इस दुनिया का एक मक़सद हो और इन्सान की रचना के पीछे कोई योजना हो । क़ुर्आन इस मक़सद की निशानदेही करता है ख़ुदा के मन्सूबे (योजना) को खोल कर बयान करता है। उस के बयान के मुताबिक दुनिया का मक़सद आख़िरत है और इन्सानी ज़िन्दगी के लिए ख़ुदा का मन्सूबा यह है कि उसे इम्तिहान से गुज़ारा जाये और जो इस इम्तिहान में खरा साबित हो उसे आख़िरत की कभी न मिटने वाली नेमतों से पुरस्कृत किया जाये और जो खोटा साबित हो उसे आग में झोंक दिया जाये। क़ुर्आन का यह बयान दरअसल उस वास्तविकता की व्याख्या है जो दिन और रात की व्यवस्था में और पूरी

कायनात (संपूर्ण ब्रहमाण्ड) में इशारों की भाषा में बोल रही हैं। और क़ुर्आन के बयान की कायनात में पायी जाने वाली इस वास्तविकता का इस दर्जा मेल खाना उस की सच्चाई का खुला सबूत है।

फ़ज्र की क़सम का एक और पहलू भी है। फ़ज्र का वक़्त रोज़ाना क़ियामत के प्रकट होने की याददेहानी करता है, जिस तरह रात के अन्धकार का पर्दा चीर कर फ़ज्र नमुदार (प्रकट) होती है उसी तरह दुनिया पर छाया हुआ अन्धकार का पर्दा चीर कर क़ियामत की फ़ज्र (सुबह) प्रकट होगी । और जिस तरह इन्सान सुबह नींद से जागता है उसी तरह क़ियामत की सुबह के प्रकट होते ही उठ बैठेगा और महसूस करेगा कि अभी सोया था और अभी जाग गया । इसी वास्तविकता की तरफ़ वह मस्नून दुआ ध्यान दिलाती है। जिस को सुबह जागते ही पढ़ने को हिदायत की गई है।

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانَا بَعْدَمَا اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النَّشُوْرُ۔ (مسلم کتاب الذکر)

''अल्हम्दुलिल्लाहिल्लजी अहयाना बाअद मा आमातना वा इलैहिन्नुशूर''(शुक्र अल्लाह का जिस ने मौत के बाद हमें ज़िन्दगी बख़्शी और उसी की तरफ़ उठ खड़े होना है।) (मुस्लिम किताबुज़्ज़िक्र)

7. ''तुम ने नहीं देखा'' ''क्या तुम ने ग़ौर नहीं किया'' के अर्थ में है, जिस तरह हम बोलते हैं ''तुम ने नहीं देखा हिटलर का क्या अन्जाम हुआ'' जब कि हिटलर के अन्जाम को हम अपनी आँखों से नहीं देखे होते बल्कि उस को एक ऐतहासिक घटना के तौर पर जानते हैं, ऐसे अवसर पर कहने वाले का अभिप्राय यह होता है कि यह घटना जिस की ऐतिहासिक सत्यता साबित है, तुम्हारे लिए ग़ौर करने योग्य है और इस से तुम्हें सबक़ हासिल करना चाहिए ।

8. **आद** एक क़ौम का नाम है जो दक्षिणी अरब के रेगिस्तानी बियाबान ''रुबउल खाली'' में अहक़ाफ़ के इलाक़े में जो यमन और हज़्रमौत के बीच में है, आबाद थी । इस का दौर नूह अलैहिस्सलाम के बाद और इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है अर्थात लगभग ३ हज़ार वर्ष पूर्व ईसा का ।

9. **''ज़ातुलइमाद''** (ऊँची इमारतों वाले) इस लिए कहा गया है कि वह बड़ी बड़ी ऊँची इमारतें बनाया करते थे और यह तरीक़ा उन्होंने किसी वास्तविक सामाजिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए नहीं बल्कि मात्र क़ौमी यादगार (राष्ट्रीय स्मारक) खड़ी करने और दिखावटी शौक़ के उद्देश्य से इख़्तियार किया था । उन की उस कला में फ़ुज़ूल खर्च भी था और दुनिया परस्ती की जड़ें मज़बूत करने का सामान भी ।

10. आद का सम्बन्ध इरम से इस लिए जोड़ा गया है कि ये लोग सामी नस्ल (Semetic Race) उस शाखा से सम्बन्ध रखते थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली । इरम का वर्णन बाइबिल में मौजूद है।

''शेम (साम) के पुत्र हैं------और आराम हुए और आराम के पुत्र उस --------(उत्पत्ति १०:२२)

बाइबिल के इस बयान में शब्द ''आराम'' इरम ही का उच्चारण है।

11. अर्थात् बल और शक्ति एवं शान और शौकत के लिहाज़ से उन के समय में कोई क़ौम उन की बराबरी की नहीं थी और उन से पहले भी इस शान की कोई क़ौम नहीं गुज़री थी ।

आद अरब भू भाग की सब से पुरानी क़ौम है जो नूह के तूफ़ान के बाद अपनी रचनात्मक प्रगति एवं बल और सत्ता के साथ उभरी थी और अपनी इन भौतिक विशेषताओं के आधार पर दुनिया की एक विख़्यात, प्रमुख और अद्वितीय क़ौम थी ।

12. आद के बाद भौतिक प्रगति और दुनियावी शानो शौकत के लिहाज़ से जो क़ौम उभरी उस

का नाम समूद था । इस का भी ज़माना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से पहले का है।

13. घाटी से मुराद क़ुरा की घाटी है जो हिजाज़ प्रदेश और सीरिया के बीच स्थित है। उस घाटी का महत्वपूर्ण स्थान ''हिज्र'' था जिस को अब ''मदाएन स्वालेह'' कहते हैं और जो मदीने से उत्तर में लगभग १८० मील के फ़ासले पर स्थित है। यह इलाक़ा समूद का ठिकाना था ।

14. समूद चट्टानों को काटकर घर बना लेते थे । इस निर्माण कला में वे बड़े निपुण थे और इस में उन की लगन निर्माण करने के शौक़ को पूरा करने के लिए था । इस तरह उन्होंने भवन निर्माण के क्षेत्र में शानदार तरक़्क़ी की थी और इस तरक़्क़ी से प्रभावित होकर यह समझ रखा था कि वह दुनिया में हर तरह से सुरक्षित हैं।

15. मेख़ों वालों से अभिप्राय लाव लश्कर वाला है। फ़िरऔन ने अपने देश की सुरक्षा के लिए स्थायी सेना तैयार की थी जब कि उस ज़माने में स्थायी सेना रखने का रिवाज न था बल्कि जब जंग की ज़रूरत पेश आ जाती, वक़्ती तौर से उस का इन्तिज़ाम कर लिया जाता । फ़ौज चूँकि खेमों में रहती थी और खेमा मेख़ें ठोक कर स्थापित किया जाता है इस लिए इस मुनासिबत से ये शब्द लावलश्कर वाला के अर्थ में संकेत के रुप में प्रयोग हुए हैं।

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾

12. और उन में बहुत फ़साद मचा रखा था।[16]

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾

13. तो तुम्हारे रब ने इन पर अज़ाब (यातना) का कोड़ा बरसाया।[17]

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾

14. वास्तव में तुम्हारा रब घात में रहता है।[18]

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

15. मगर इन्सान का हाल यह है कि जब उस का रब उस की आज़माइश इस तरह करता है कि उस को इज़्ज़त और नेमत बख़्शता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त बख़्शी।[19]

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ﴿١٦﴾

16. और जब उस की आज़माइश इस प्रकार से करता है कि उस का रिज़्क़ (जीविका) उस पर तंग कर देता है तो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील किया।[20]

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾

17. नहीं,[21] बल्कि तुम लोग यतीमों की क़द्र (आदर) नहीं करते।[22]

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾

18. और न मिस्कीन (मोहताज) को खाना खिलाने पर एक दूसरे को उकसाते हो,[23]

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾

19. और सम्पत्ति का माल समेट कर हड़प कर जाते हो,[24]

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾

20. और धन के मोह में मस्त रहते हो,[25]

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾

21. नहीं ![26] जब ज़मीन कूट कूट कर समतल (बराबर) कर दी जायेगी,[27]

16. अर्थात् इन क़ौमों ने एक भव्य समाज के साधनों और सत्ता पा कर बहुत ग़लत मार्ग अपना लिया । ख़ुदा से बेख़ौफ़ और आख़िरत से बे परवाह हो कर वह घमंड में लिप्त हो गई और उन्हों ने सरकशी का रवैया अपनाया जिस के परिणाम स्वरुप उन में हर तरह का बिगाड़ पैदा हुआ।

17. अर्थात ये क़ौमें जब सरकशी और बिगाड़ की राह पर चल पड़ी और पैग़म्बरों द्वारा ख़बरदार (सचेत) करने के बावजूद अपने सुधार के लिए आमादा नहीं हुई तो अल्लाह तआला का यातना में घेर लेने का नियम हरकत में आया और उस प्रकृतिक नियम ने इस तरह उन को अपने शिकन्जे में जकड़ लिया कि उन की सारी भौतिक प्रगति और उन की सारी शानो-शौकत (मान-सम्मान) मिट्टी में मिल गई । न ऊँची इमारतें उन्हें ज़िल्लत की मौत मरने से बचा सकी और न चट्टानों में काट तराश कर बनाये गये भवन उन की रक्षा कर सके । इसी तरह फ़िरऔन का लाव लश्कर उस को समुद्र में डूब जाने से नहीं बचा सका बल्कि वह लश्कर समेत डूब मरा ठीक उस तरह जिस तरह कि किसी शायर ने कहा है।

''हम तो डूबे है सनम, तुझ को भी ले डूबेंगे''

इन क़ौमों पर जो अज़ाब आया उस की तफ़सीलात (सविस्तार विवरण) सूरह अअराफ़, सूरह युनूस, सूरह हूद. सूरह हिज्र और दूसरी सूरों में बयान हुई हैं।

18. ऊपर जिन ऐतिहासिक घटनाओं की ओर इशारा किया गया वह गवाह है कि यह दुनिया अन्धेर नगरी नहीं है और इन्सान को पैदा करने वाले ने उस को पैदा कर के यूँही नहीं छोड़ दिया है बल्कि वह हर व्यक्ति और हर क़ौम की देख रेख कर रहा है और उन सब की बागडोर उस के हाथ में है । वह बाग़ी और फ़सादी क़ौमों को ढील ज़रूर देता है ताकि वह संभलना चाहे तो संभले । लेकिन यह ढील बस एक समय तक के लिए ही होती है इस के बाद अचानक ख़ुदा के अज़ाब का कोड़ा उन पर बरसता है और वह बुरे अन्जाम से दोचार होती है।

इतिहास की यह गवाही इस बात की खुली दलील है कि यह दुनिया खेल तमाशा नहीं बल्कि एक इम्तिहानगाह (परिक्षा स्थल) है जिस में व्यक्तियों का भी इम्तिहान हो रहा है और क़ौमों का भी और उन का रब उन के साथ हिकमत और इन्साफ़ के साथ मामला कर रहा है। और वह मुजरिमों को दंड देने पर पूरी तरह सक्षम (क़ादिर) है। तथा जब दुनिया इम्तिहानगाह करार पाई तो ज़रुरी हो जाता है कि एक रोज़ जज़ा और सज़ा (प्रतिफल) का आए। लिहाज़ा क़ुर्आन का यह दावा कि क़ियामत का आना एवं जज़ा और सज़ा का होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिस का इन्कार ही नहीं किया जा सकता और इतिहास की गवाही से भी साबित है।

19. यहाँ इन्सान का जो हाल बयान किया गया उस से इस भ्रम को दूर करना अभिप्रेत है जिस में दुनिया परस्त लोग लिप्त होते हैं। माल और दौलत, मान सम्मान एवं सत्ता और भौतिक वस्तुओं का मिलना उन के निकट सम्मान और मर्यादा का मेआर है और जिसको भौतिक वस्तुओं (माद्दी नेमतों) की सम्पन्नता प्राप्त होती है वह यह समझता है कि ख़ुदा की नज़र में वह अच्छा है इसी लिए वह उस का सम्मान बढ़ाने का सामान कर रहा है। और फिर यह ग़लत विचार उसे सरकशी पर आमादा करता है। हालाँकि अल्लाह तआला जिस को भी यह चीज़े प्रदान करता है, आज़माइश के लिए प्रदान करता है कि देखे वह इन नेमतों को पाकर अपने रब का शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) और फ़रमाँबरदार (आज्ञाकार) बन्दा बनता है और बन्दों के हुक़ूक़ (अधिकारों) को अदा करता है या उस का नाशुक्रा, घमंडी और बन्दों के अधिकारों को ठुकराने वाला बनता है। रहा वास्तविक मान और सम्मान, तो वह इम्तिहान में कामयाबी के बाद ही प्राप्त हो सकता है।

20. सांसारिक मोह का दृष्टिकोण रखने वालों के निकट निर्धन होना अपमान का कारण है। गोया

जिन को माल और दौलत अधिकता से नहीं मिल सकी है वह अल्लाह की नज़र में तुच्छ है हालाँकि अल्लाह ऐसी हालत से इन्सान को इस लिए गुज़ारता है ताकि उस की आज़माइश हो कि वह अपने आप को सब्र करने वाला साबित कर दिखाता है या नहीं और अपने रब के फैसले पर सन्तुष्ट होता है या उस के विरुद्ध शिकवा शिकायत करने लगता है। निर्धनता (गरीबी) इन्सान के अन्दर हालात का मुक़ाबला करने की ताक़त पैदा करती है उस के चरित्र को मज़बूत बनाती है और इन्सान इस मरहले से गुज़र कर मान और सम्मान का स्थान प्राप्त कर सकता है। बस शर्त यह है कि वह सब्र और धैर्य का दामन हाथ से छूटने न दे। ख़ुदा की यह ज़बरदस्त हिकमत है जो गरीबी के पीछे काम कर रही होती है किन्तु अदूरदर्शी एवं ऊपरी निगाहें इस भेद को नहीं पाती और धोखे का शिकार को जाती हैं। इस आयत ने बहुत ही सफ़ाई से और बहुत ही खोलकर इस भ्रम को दूर करने का सामान किया है। इस के लिए उस इम्तिहान में नाकामी ही है।

21. अर्थात् सम्मान और अपमान का यह पैमाना सही नहीं है जो दुनिया परस्तों ने बना रखा है।

22. यहाँ दुनिया परस्तों और ख़ास तौर पर मालदारों को सीधे सम्बोधित कर के कहा जा रहा है कि होना तो यह चाहिए था कि इस आज़माइशी ज़िन्दगी में दौलत पाकर तुम ख़ुदा के बन्दों के हक़ अदा करते, बेसहारा बच्चों और मुहताजों की मदद करते लेकिन तुम्हारे अन्दर धन दौलत का ऐसा घमंड पैदा हो जाता है कि बजाय इस के कि यतीमों की मदद करते, उन की अवहेलना और उन की नाक़दरी करने लगते हो और उन को अपमान भरी निगाह से देखते हो ।

इस से स्पष्ट हुआ कि क़ुर्आन यतीमों की न सिर्फ़ मदद करने का हुक्म देता है बल्कि उन का सम्मान करने का भी । दूसरे शब्दों में क़ुर्आन ग़रीब और कमज़ोर वर्ग को समाज में सम्मान की जगह दिलाना चाहता है और एक सही मुस्लिम सोसाइटी वह है जिस में उन को आदर की दृष्टि से देखा जाए।

23. ग़रीबों को खाना खिलाना और उस के लिए एक दूसरे को उकसाना मौलिक नैतिकता (बुनियादी अख़लाकियात) में से है जिस की ज़िम्मेदारी इन्सान पर उस के अपने स्वभाव स्वरुप लागू होती है। शरीअत ने इस की ताक़ीद कर के इस को और भी दृढ़ कर दिया । और इस सिलसिले में तफ़सीली एहकाम (विस्तृत आदेश) भी दिये हैं।

यहाँ क़ुर्आन ने अज्ञानता (जाहिलय्यत) के उस समाज पर कड़ी पकड़ की है जिस में लोग न मिस्कीनों को खाना खिलाने की चिन्ता करते हैं और न दूसरों के अन्दर भलाई की भावना पैदा करने की कोशिश करते हैं। इस से स्पष्ट है कि क़ुर्आन इन्सानी सोसाइटी को जिन ख़ूबियों से भरापूरा देखना चाहता है वह यह है कि उस के लोग ख़ुद भी गरीबों और मोहताजों की मदद करें और दूसरों को भी इस पर उकसाऐं। इस तरह से कन्जूसी, लोभ, धनपूजा और मोहमाया की समाप्ति होती है और हमदर्दी (सहानुभूति) और दान पुण्य एवं उदारता की भावना परवरिश पाने लगती है। गरीबी और भुखमरी की समाप्ति के लिए यह बात बुनियादी है।

24. अज्ञानता के दौर में औरतों और बच्चों को जायदाद से महरूम (वन्चित) रखा जाता था और बलवान मर्द संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेते थे जिस के नतीजे में यतीम बच्चे और बच्चियाँ तक अपने बाप की जायदाद में हिस्सा पाने से महरूम रह जाती, इस आयत में अज्ञानियों के इसी रवैये को ग़लत और निन्दनीय ठहराया गया है। (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा फुट नोट १९)

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि जायदाद के बंटवारे का क़ुर्आनी संविधान तो मदीना में सन ३ हिजरी के अन्त में नाज़िल हुआ जो सूरह निसा में शामिल है जब कि सूरह फ़ज्र मक्की है जिस में जायदाद का माल समेट कर खाने की निन्दा की गई है तो फिर यह तंबीह जायदाद के किस हुक्म की ख़िलाफ़ वर्जी करने पर की गई है? इस का जवाब यह है कि जायदाद का क़ुर्आनी संविधान यद्यापि

बाद में नाज़िल हुआ लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि जब तक यह संविधान नाज़िल नहीं हुआ था उस समय तक यह लोग सिरे से जानते ही नहीं थे कि जायदाद का हक़दार कौन है। कम से कम यह बात तो बिलकुल खुली हुई है कि बाप की जायदाद का हक़दार उस की औलाद है और ख़ास तौर से वह यतीम हो तो उस के हक़ की मर्यादा और अधिक बढ़ जाती है। इतनी मोटी सी बात समझने के लिए साधारण बुद्धि काफ़ी है तथा अक़्ल और इन्साफ़ के इस खुले तक़ाज़े को रद्द कर के बलवान सम्बन्धियों का संपत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेना उन की पकड़ के लिए काफ़ी क्यों न होगा? फिर यह भी हक़ीक़त है कि मक्का के अरब, अल्लाह की शरीअत से बिलकुल अपरिचित नहीं थे बल्कि यह इब्राहीमी शरीअत के वारिस (उत्तराधिकारी) थे यह और बात है कि उस के कुछ ही भाग उन के पास रह गये थे जैसे हज के मनासिक अर्थात हज की कृतियाँ व संस्कार इत्यादि। इस लिए यह ख़याल करना सही न होगा कि वह संपत्ति के सिलसिले में इतनी बात भी नहीं जानते थे कि औलाद बाप की जायदाद (संपत्ति) की हक़दार है, मगर यतीम बच्चों और बच्चियों को उन के बाप की जायदाद से महरुम रख कर उन का चचा पूरी जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लेता था । अख़िर ऐसी खुली ज़्यादती और इस तरह हक़ छीनने का क्या औचित्य था? और जहाँ तक तौरात का सम्बन्ध है उस में संपत्ति का क़ानून मौजूद था । बाइबिल में है।

''और इस्राइलियों से यह कह कि यदि कोई मनुष्य निपुत्र (बे औलाद) मर जाये तो उस का भाग उस की बेटी के हाथ सौंपना और यदि उस की कोई बेटी भी न हो तो उस का भाग उस के भाइयों को देना (गिनती २७:८,९)

25. यह चोट है उन के मोह माया और दौलत परस्ती पर जिस ने उन के अन्दर अखलाक़ी गिरावट (नैतिक पतन) पैदा की ।

धन दौलत को जहाँ अल्लाह तआला ने अर्थिक ज़रूरतों को पूरा करने का साधन बनाया है। वहाँ उस में इन्सान का बहुत बड़ा इम्तिहान भी रखा है। यह इम्तिहान एक तो इस पहलू से है कि इन्सान आख़िरत को लक्ष्य बनाता है या दुनिया के धन दौलत को । दूसरे इस पहलू से कि माल जायज़ तरीक़े से हासिल कर के जायज़ राहों में ख़र्च करता है या नाजयज़ तरीक़े से हासिल कर के नाजायज़ राहों में खर्च करता है। तीसरे इस पहलू से कि वह अल्लाह की ख़ातिर माल की क़ुर्बानियाँ देता और ख़ुदा के बन्दों के हक़ अदा करता है या कंजूसी से काम लेता और ख़ुदा के बन्दों के हक़ हड़प करता है।

26. अर्थात् तुम्हारा यह ख़याल ग़लत है कि तुम्हारे इस तरह के कामों पर पकड़ नहीं होगी।

27. क़ियामत के दिन जो ज़लज़ला आयेगा और जो धमाके होंगे वह पूरी जमीन को उधेड़ कर रख देंगे। इमारतें और महल तो क्या पहाड़ तक चूर चूर हो जाऐंगे और ज़मीन एक साफ़ मैदान का रुप धार लेगी जिस में तमाम इन्सानों को ख़ुदा के सामने जवाबदेही के लिए हाज़िर होना होगा ।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾

22. और तुम्हारा रब आयेगा पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों की जिलौ (संगत) में ।[28]

وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾

23. और जहन्नम उस रोज़ हाज़िर कर दी जायेगी।[29] उस रोज़ इन्सान होश में आयेगा,मगर उस वक़्त उस के होश में आने का क्या फ़ायदा ? [30]

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ﴿٢٤﴾

24. वह कहेगा कि काश मैं ने अपनी ज़िन्दगी के लिए पहले से कुछ कर रखा होता।[31]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾

25. उस दिन उस के अज़ाब (यातना) जैसा कोई अज़ाब देने वाला न होगा,[32]

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٦﴾

26. और न उस के बाँधने जैसा कोई बाँधने वाला होगा।

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

27. ऐ मुत्मइन नफ़्स।[33](शान्त एवं परितुष्ट आत्मा)।

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

28. चल अपने रब की तरफ़, तू उस से राज़ी, वह तुझ से राज़ी।[34]

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾

29. शामिल हो जा मेरे बन्दों में।[35]

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

30. और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में।[36]

28. अर्थात् अल्लाह तआला क़ियामत के दिन ख़ुद अदालत बरपा करेगा और वह स्वयं पूछ ताछ भी करेगा और फैसला भी फ़रमाएगा । और उस की आज्ञा का पालन और उस के फैसले को लागू करने के लिए फ़रिश्ते मौजूद होंगे । इस से अल्लाह की अदालत की दहला देने वाली तस्वीर सामने आती है और यक़ीन पैदा हो जाता है कि आज तो अल्लाह तआला पर्दे के पीछे से इन्सान का इम्तिहान ले रहा है लेकिन क़ियामत के दिन यह पर्दा उठा दिया जायेगा और सच्चाई बिलकुल बेनक़ाब होकर उस के सामने आ जायेगी ।

29. अर्थात् जब अल्लाह की अदालत बरपा होगी तो जहन्नम बिलकुल सामने मौजूद होगी ।

30. मतलब यह कि अल्लाह की अदालत में अपने को घिरा हुआ और जहन्नम को सामने मौजूद पा कर इन्सान को होश आ जायेगा कि आख़िरत से बेपरवाह हो कर वह कितने ज़बरदस्त घाटे में पड़ा है। उस समय उसे याद आयेगा कि अल्लाह के पैग़म्बर का इस दिन के बारे में ख़बरदार करना बिलकुल ठीक था और जो रास्ता वह बताते थे वही सही था । उन की नसीहत को न मान कर उस ने बड़ी मूर्खता की । मगर उस रोज़ होश में आने का कोई फ़ायदा न होगा इस लिए कि इम्तिहान का समय गुज़र चुका होगा । क़ियामत का दिन तो परिणाम सामने आने का दिन होगा । उस दिन होश में आना और नसीहत पकड़ना ऐसा ही है जैसे कोई विद्यार्थी अपनी परीक्षा में तो पर्चा हल करने के बजाय हँसी दिललगी में समय गुज़ार दे और जब नतीजे का ऐलान हो और वह नाकाम हो जाये तो उसे अपनी ग़लती का एहसास हो जाये । ज़ाहिर है समय गुज़र जाने के बाद उस का एहसास उस की नाकामी को कामयाबी में परिवर्तित नहीं कर सकता अलबत्ता उस को मायूसी और हसरत के हवाले ज़रूर कर देता है।

31. अर्थात् उस रोज़ इन्सान महसूस करेगा कि वास्तविक जीवन तो आख़िरत का जीवन है और मैं दुनिया के जीवन ही को सब कुछ समझता रहा । काश कि मैं ने अपने इस जीवन के लिए दुनिया में कुछ सामान कर लिया होता ।

32. अर्थात् आख़िरत की सज़ा को उन सज़ाओं की तरह न समझो जो दुनिया की हुकूमतें मुजरिमों को देती हैं। अल्लाह की यातना ऐसी कठोर होगी कि उस तरह यातना न कभी किसी ने दी होगी और न कोई दे सकता है।

इस से आगाह करने के बाद भी जो लोग अल्लाह के अज़ाब (यातना) की परवाह न करें एवं मुजरिम और सरकश बने रहें उन को उस के अज़ाब का अन्दाज़ा उसी समय होगा जब कि वह उस का मज़ा चखेंगे।

अज़ाब (यातना) की यह कठोरता कठोर जुर्म की वजह से होगी । जो लोग अपना ख़ालिक़, मालिक और कायनात के स्वामी एवं शासक के ख़िलाफ़ बाग़ियाना रवैया अपनाते हैं वह ज़बरदस्त ढिटाई का सबूत देते हैं। इस लिए वह कठोरतम अज़ाब के भागीदारी हैं।

33. शान्त एवं परितुष्ट आत्मा (मुत्मइन नफ़्स) से मुराद वह इन्सान है जिस ने आत्मा संतोष (इत्मीनाने क़ल्ब) के साथ तौहीद (एकेश्वरवाद) का इक़रार किया था, जिस को अख़िरत पर यक़ीन था और ख़ुशहाली एवं परेशानहाली, हर तरह कि स्थितियों में वह अपने रब से राज़ी एवं संतुष्ट रहा कि उस का कोई काम हिकमत से खाली नहीं ।

जिस व्यक्ति ने दुनिया में आत्मसंतोष की यह ख़ूबी पैदा कर ली वह ख़ुदा के यहाँ इस का हक़दार होगा कि उसे हमेशा के लिए चैन और राहत एवं सुकून नसीब हो ।

34. यह बड़े प्यारे रहमत भरे अल्फ़ाज़ हैं जिन में मुत्मइन नफ़्स को फैसले के दिन कामयाबी की ख़ुशख़बरी सुनायी जायेगी । और कामयाबी भी ऐसी कि आदमी ख़ुदा को पा ले जिस के बाद पाने

के लिए क्या चीज़ बाक़ी रह जाती है। जहाँ पहुँचने की मनुष्य कल्पना कर सकता है?

35. ''मेरे बन्दे'' से मुराद ख़ुदा के नेक बन्दे हैं। जन्नत की सोसाइटी इन नेक बन्दों पर ही आधारित होगी । नेक लोगों की पंक्ति में शामिल करना अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत होगी। लेकिन यह नेमत उन्ही लोगों के हिस्से में आयेगी जो वास्ताव में उस की क़द्र करने वाले हैं। जो नेक लोगों से मिलना पसन्द करते हैं और उन के साथ रहने में खुशी महसूस करते हैं। इस के विरुद्ध जो लोग दुनिया में नेक लोगों से नफ़रत करते और उन से दूर भागते रहे और उन की सारी रुचि ख़ुदा बेज़ार लोगों से रही उन का अन्त भी ख़ुदा बेज़ार लोगों ही के साथ होगा ।

36. जन्नत को अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ मंसूब फ़रमाया है (मेरी जन्नत) यह निस्बत (सम्बन्ध) जन्नत के सम्मान की ओर भी इशारा करती है और इस बात की तरफ़ भी कि वह अल्लाह तआला की रज़ा (प्रसन्नता) का मज़हर (द्योतक) होगी ।

९०. अल्-बलद्

नाम :- पहली आयत में अल्-बलद (शहर) का लफ़्ज़ आया है जिस से मुराद मक्का शहर है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-बलद्'' क़रार दिया गया है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के शुरु के दौर में नाज़िल हुई लगती है।

केन्द्रीय विषय:- यह सूरह पिछली सूरह की पूरक है जिस में स्पष्ट किया गया है कि इन्सान एक अख़लाक़ी वजूद (नैतिक अस्तित्व) रखने वाली मख़्लूक़ है जिसे इम्तिहान के मैदान में खड़ा कर दिया गया है लिहाज़ा उस का यह समझना कि मैं मनमानी करने के लिए आज़ाद हूँ और मुझे ख़ुदा के सामने जवाबदेही के लिए हाज़िर होना नहीं है, वह बुनियादी ग़लती है जो इन्सान के पूरे रवैये को ग़लत बना कर रख देती है। इस के बाद न उस में ज़िम्मेदारी का एहसास (कर्तव्य परायणता) पैदा होता है और न हुक़ूक़ (अधिकारों) को अदा करने का एहसास उभरता है। नतीजा यह कि इन्सान जहन्नम के गढ़े में जा गिरता है।

कलाम की तरतीब:- आयत १ से ४ में जो शहादतें (गवाहियाँ) पेश की गई हैं उन से अभिप्राय यह स्पष्ट करना है कि यह दुनिया ऐश करने की जगह नहीं हैं और न इन्सान को यहाँ ऐश और आराम के लिए पैदा किया गया है बल्कि उस की पैदाइश एक ख़ास मक़सद के तहत हुई है इस लिए उसे पैदा ही मश्क़्क़त (कष्ट) की हालत में किया गया है।

आयत ५ से ७ में इन्सान की लापरवाह चाल चलन पर पकड़ करते हुए उस के ज़मीर को झंझोड़ा गया है कि क्या वह इस भ्रम में है कि उस के ऊपर कोई उच्चतम शक्ति नहीं है जो उस के चाल चलन की देख रेख करने वाली हो?

आयत ८ से १७ में स्पष्ट किया गया है कि इन्सान के लिए अख़लाक़ (नैतिकता) और व्यवहार की बुलन्दी की राह भी खोल दी गई है और पस्ती (गिरावट) की राह भी। बुलन्दी की राह कठिन ज़रूर है मगर इस चढ़ाई पर चढ़ कर आदमी अख़लाक़ी तरक़्क़ी की मन्ज़िलें तय कर लेता है और बुलन्द स्थान पर पहुँच जाता है।

आयत १८ से २० में बताया गया है कि ईमान के साथ अख़लाक़ी बुलन्दी की राह अपनाने का अन्जाम यह है कि आदमी सौभाग्य और भलाई की मन्ज़िल को पहुँच जाता है। इस के विरुद्ध कुफ़्र की राह अपनाने वाले जहन्नम के गड्ढे में जा गिरते है जिस से निकलने की कोई सूरत न होगी।

९०.सूरह अल्-बलद्

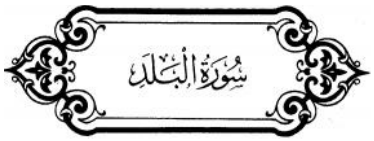

अनुवाद आयतें : २०

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **नहीं ![1] मैं क़सम खाता हूँ [2] इस शहर की।[3]**

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾

2. **---और तुम इस के रहने वाले हो [4]---**

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾

3. **और जनने वाले की [5] और उस की जिसे उस ने जना,[6]**

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾

4. **हक़ीक़त में हम ने इन्सान को बड़ी मशक़्क़त में पैदा किया है।[7]**

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ؕ﴿۴﴾

5. **क्या वह यह ख़याल करता है कि उस पर किसी का बस नहीं चलेगा ?[8]**

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾

6. **कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया।[9]**

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾

7. **क्या वह समझता है कि उस को किसी ने देखा नहीं ?[10]**

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ۘ﴿۷﴾

8. **क्या हम ने उस को नहीं दी दो आँखें ?[11]**

اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۙ﴿۸﴾

9. **और ज़बान और दो होंट?[12]**

وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۙ﴿۹﴾

10. **और उसे दोनों रास्ते नहीं दिखाए ?[13]**

وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۚ﴿۱۰﴾

11. **मगर उस ने घाटी पार नहीं की।[14]**

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ﴿۱۱﴾

1. अर्थात् तुम्हारा यह ख़याल सही नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी मज़े उड़ाने के लिए है। यहाँ न कोई आज़माइश हो रही है एवं न कभी जज़ा और सज़ा से मामला पेश आएगा ।

2. क़सम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर फुट नोट.१४

3. इस शहर से मुराद मक्का है जहाँ यह सूरह नाज़िल हुई।

4. सम्बोधन (ख़िताब) मक्का वालों से है जो इस सूरह के पहले सम्बोधित (मुख़ातब या Addressee) थे । सर्वनाम एकवचन (अन्ता اَنْتَ) प्रयोग हुआ है। क्यों कि यहाँ सम्बोधित मक्का का हर व्यक्ति है। गोया मक्का के रहने वालों को अलग अलग हर एक को सोचने और विचार करने का न्योता दिया गया है।

5. मुराद माँ है जो बच्चे को तकलीफ़ से जनती है। वालिद (पिता) का लफ़्ज़ पुल्लिंग इस्तेमाल हुआ है, लेकिन यह लफ़्ज़ जिस तरह बाप के लिए बोला जाता है उसी तरह माँ के लिए भी बोला जाता है। (देखिए लिसानुल अरब, लफ़्ज़ वलद) इस की मिसाल (उदाहरण) लफ़्ज हामिल है जो हामिला (गर्भवती) के लिए बोला जाता है। इन पुल्लिंग शब्दों का प्रायोग स्त्रीलिंग के लिए उस समय किया जाता है जब कि बात स्पष्ट रुप से कहना हो और मर्द या औरत का उल्लेख अर्थपूर्ण भाव की दृष्टि से अनुचित हो।

कलाम की शैली और मौक़े के लिहाज़ से यहाँ माँ मुराद लेना ही सही है क्यों कि बाद वाली आयत में इन्सान के मशक़्क़त (कष्ट एवं परिश्रम) में पैदा किये जाने का ज़िक्र है। ज़ाहिर है जनने की मशक़्क़त माँ को होती है न कि बाप को ।

6. मुराद हर वह बच्चा है जो माँ के पेट से जन्म लेता है और बच्चे का जन्म लेना तकलीफ़ के साथ होता है।

7. यह वह दावा है जिस पर क़समें बतौर शहादत (गवाही) के खाई गई है। इन्सान का मशक़्क़त की हालत में पैदा होना एक ऐसी हक़ीक़त है जिस से इन्कार नहीं किया जा सकता । इस हक़ीक़त के पक्ष में कुछ बातों को पेश कर के उसे और भी दृढ एवं वज़नदार कर दिया गया है। मक्का की ज़मीन पहाड़ों से घिरी हुई एक ऐसी घाटी है जहाँ न पानी है और न ही वह खेती के लायक़ है। रेगिस्तान होने की वजह से यहाँ का मौसम बड़ा सख़्त होता है। क़ुर्आन के अवतरण काल (ज़माना-ए-नुज़ूल) में यहाँ का जीवन कठोर परिश्रमी जीवन था । मक्का के इस प्राकृतिक वातावरण की ओर क़ुर्आन ने मक्का वासियों को ध्यान दिलाया कि तुम ने इस बात पर भी ग़ौर किया कि यह वातावरण परिश्रमी एवं मुशक़्क़त से भरा हुआ क्यों बनाया गया है? अगर यह दुनिया ऐश की जगह होती तो कोई वजह न थी कि जो शहर ''उम्मुल क़ुरा'' (शहरों की माँ) करार पाया वह मशक़्क़तो से घिरा हुआ होता । तुम न केवल यह कि उस के वातावरण (माहौल) का अनुभव करते हो बल्कि उस के इतिहास से भी अच्छि तरह परिचित हो कि किन दुश्वारियों से गुज़र कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के निर्माण का ऐतिहासिक कारनामा अन्जाम दिया था । कुल मिलाकर यह कि इस शहर के भौगोलिक और ऐतिहासिक हालात दोनों इस बात की शहादत देते हैं कि यह दुनिया तफ़रीह की जगह नहीं है बल्कि मेहनत और मशक़्क़त की जगह है । और इस में इन्सान का इम्तिहान है। इसी तरह इन्सान की अपनी पैदाइश भी इस हक़ीक़त का नाक़ाबिले इन्कार सबूत है। बच्चा जब माँ के पेट से जन्म लेता है तो यह मरहला माँ के लिए कितना मुश्किल और कष्टदायक होता है और जब वह इस दुनिया में आता है तो मशक़्क़तों से घिरा हुआ और रोते हुए ही आता है जो इस बात का खुला सबूत है कि इन्सान दुनिया में मज़े उड़ाने के लिए नहीं आया है बल्कि तक्लीफ़ और मशक़्क़त को साथ ले कर

आज़माइश की भट्टी से गुज़रने के लिए आया है। अत: इन्सान के मशक़्क़त की हालत में पैदा होने की हक़ीक़त एक दूसरी बहुत बड़ी हक़ीक़त का पता देती है और वह है जज़ा और सज़ा का मामला। जिस से इन्सान को ज़रूर दोचार होना है। क्यों कि यह ज़िन्दगी जब मुसीबतों एवं आज़माइश की ज़िन्दगी ठहरी तो इस का ज़रूरी तक़ाज़ा (Invitable Demand) है कि हिसाब का दिन बरपा हो और इम्तिहान में कामयाबी एवं नाकामी के परिणाम सामने आऐं।

यह है वह तर्क (Argument) जो इन आयात में निहित (पोशिदा) है। साथ ही एक अहम पहलू की तरफ़ भी इशारा निकलता है और वह यह है कि मशक़्क़तों और तकलीफ़ों में इन्सान की बुलन्दी एवं महानता का भेद छिपा हुआ है। मक्का शहर को जिस व्यक्ति ने बसाया उसे कैसी कैसी मशक़्क़तों और तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा और उस की ज़िन्दगी कितनी धैर्यपूर्ण रही लेकिन इन हालात से गुज़र कर ही उस के हाथों ख़ाना-ए-काबा की तामीर (निर्माण) का महान और ऐतिहासिक कारनामा अन्जाम पा सका और इस के बाद ही वह इमामत के पद पर आसीन हुआ मालूम हुआ कि इस दुनिया में जो तकलीफ़ें और मशक़्क़ते इन्सान के साथ लगी हुई है वह वास्तव में इन्सान को तकलीफ़ में डालने के लिए नहीं बल्कि उस को ऊपर उठाने के लिए है। इन्सान अगर अपना हौसला न छोड़े और ख़ुदा की रहनुमाई को स्वीकार कर के पेश आने वाली तकलीफ़ों में कर्तव्य परायणता का सबूत दे तो उस के अन्दर इन्सानियत का जो जौहर (तत्व) है वह खिलने लगता है और वह बुलन्दियों को छू लेता है।

''रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद
आदमी बनता है इन्साँ, ठोकरें खाने के बाद''

अल्लाह तआला ने अपने घर के निर्माण के लिए किसी ऐसे भुभाग का चुनाव नहीं फ़रमाया जहाँ बाग़ो-बहार हो बल्कि पहाड़ों से घिरी हुई रेगिस्तानी ज़मीन को चुना इस चुनाव के पीछे यह महान नीति निहित है कि उस के घर का दर्शन (ज़ियारत) करने वालों के लिए अन्दरुनी कशिश का सामान हो न कि बाह्य अकर्षण का । और इस से इन्सान को यह रहनुमाई (मार्गदर्शन) मिले कि ख़ुदा तक पहुँचने की राह ऐश्वर्य से होकर नहीं बल्कि दुश्वारियों और कठिनाइयों से हो कर गुज़रती है।

इस स्पष्ट वास्तविकता के बाद और इन खुली दलीलों की मौजूदगी में इन्सान तकलीफ़ पहुँचने पर क्यों बिलबिला उठता है और हिम्मत छोड़ देने का क्यों शिकार हो जाता है? इस की असल वजह यह है कि इन्सान अपनी हैसियत और इस दुनिया के बारे में सही दृष्टिकोण नहीं अपनाता । वह दुनिया को आराम की जगह समझता है और उस से ऐश की ही उम्मीदें रखता है। लेकिन जब उस के इन जज़्बात को ठेस पहुँचती है और तकलीफ़ और दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है तो वह बिलबिला उठता है और फिर ज़िम्मेदारी निभाने का सबूत देने और हौसले से काम करने में असमर्थ रहता है। इस तरह इन्सान की पूरी ज़िन्दगी ग़लत हो कर रह जाती है और इम्तिहान में नाकाम हो जाने के कारण वह सज़ा का भागीदार बन जाता है।

8. अर्थात् इन्सान जो मशक़्क़तों में घिरा हुआ पैदा होता है और इस के बाद उसे ज़िन्दगी की ख़तरों भरी राहों से गुज़रना पड़ता कि मालूम नहीं किस वक़्त उसे किस हादसे से दोचार होना पड़े और कौन सी मुसीबत उस पर नाज़िल हो जाये । वह इस धोखे और घमंड में किस तरह फ़ँस जाता है कि कोई उच्चतम शक्ति उस को पकड़ने वाली नहीं है और वह जो चाहे करे, उस पर किसी का बस नहीं चलेगा? इन्सान का मशक़्क़त से घिरा होना तो उस की अपनी बेबसी को ज़ाहिर करता है और यह इस बात का सबूत है कि उस पर एक उच्चतम हस्ती की सत्ता स्थापित है जिस के फैसले उस पर लागू होकर रहते हैं।

9. यह एक मिसाल है इस बात की कि दुनिया को तफ़रीह की जगह समझने के नतीजे में इन्सान का आचरण कितना अनुत्तरदायी एवं लापरवाह हो कर रह जाता है। यह मिसाल उन मालदारों की है जो दौलत को बेजा (अनुचित) ख़र्च करते हैं और फिर अपने इन दिखावटी खर्चों पर गर्व करते हैं । हालाँकि अल्लाह तआला ने दौलत इस लिए प्रदान की थी कि वह इस को सही और भलाई की राह में ख़र्च करते, अपनी उचित ज़रुरतें भी पूरी करते और ख़ुदा के बन्दों के हुक़ूक़ भी अदा करते मगर उन्हों ने इसे दिखावटी और फ़ुज़ूल (व्यर्थ) के खर्चों का साधन बना लिय । इस तरह इम्तिहान के इस महत्वपूर्ण पर्चे को हल करने में वह बुरी तरह नाकाम रहे।

माल को उड़ाना चाहे वह मुश्रिकाना रस्मों को अदा करने के लिए हो चाहे जाहिली रस्मों (मूर्खतापूर्ण प्रथाओं) को पूरा करने के लिए, दावतों और समारोहों की शान बढ़ाने के लिए हो या आर्ट और कला के नाम पर दिखावटी स्मृतियाँ निर्माण करने के लिए, दिखावे की शोहरत एवं प्रचार हासिल करने के लिए हो या आन बान दिखाने के लिए, न केवल खुले गुनाह का काम है बल्कि इस से ग़रीबों और मोहताजों का हक़ भी मारा जाता है।

10. अर्थात् क्या फ़ुज़ूल ख़र्ची कर के इस पर गर्व करने वाला यह समझता है कि कोई ताक़त उस की देखरेख नहीं कर रही है और उस को दौलत इस लिए मिली है कि वह गुलछर्रे उड़ाये या अपने लिए ऐश्वर्य का सामान करे?अगर ऐसा है तो यह सब से बड़ी मूर्खता है। ख़ुदा तो इन्सान की हर हरकत को देख रहा है और जब देख रहा है तो पूछ ताछ भी करेगा ।

11. अर्थात् ख़ुदा ने उसे देखने की क्षमता प्रदान की थी ताकि वह कायनात की सब से बड़ी और सब से अधिक उभरी हुई हक़ीक़त का अनुभव करे मगर उस ने उसी तरफ़ से आँखे बन्द कर ली । वह सब कुछ देखता रहा मगर उसे एक सर्वशक्तिमान हस्ती का हाथ कही नज़र नही आया ।

12. अल्लाह तआला ने जबान और दो होंट देकर इन्सान को बोलने की शक्ति प्रदान की । और यह शक्ति इस लिए प्रदान की ताकि वह अपने रब के गुण गाए तथा सत्य और इन्साफ़ की बातें करे मगर इन्सान का हाल अजीब है। इस नेमत को पा लेने के बावजूद उस में शुक्र अदा करने का जज़्बा नहीं उभरता । वह बातें खूब बनाता है मगर उस की जबान नहीं खुलती तो अपने रब का गुण गाने के लिए, और वह लफ़्फ़ाज़ी से खूब काम लेता है मगर सत्य और इन्साफ़ के लिए उस की ज़बान गूँगी हो जाती है।

13. अर्थात् भलाई और बुराई, नेकी और बदी और पाप और पुण्य के दोनों रास्ते उसे दिखा दिये। यह प्रकृति का मार्गदर्शन है जो इन्सान को प्रदान किया गया है। अत: भलाई और बुराई में इन्सान स्वभावत: तमीज़ करता है। (अधिक व्याख्या सूरह अश्-शम्स में आ रही है। इन्शाअल्लाह)

पाप और पुण्य की दोनों राहें दिखाई, ताकि इन्सान अपनी ज़िम्मेदारी पर जिस रास्ते को चाहे स्वीकार कर ले ।

14. मतन (मूल या Text) में लफ़्ज़ ''अक़्बः'' इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ घाटी के हैं। अर्थात् वह कठिन रास्ता जो पहाड़ो के बीच से गुज़रता और जिस को पार करने के लिए आदमी को चढ़ाई चढ़ना पड़ती है। यहाँ इस से मुराद नेकी का रास्ता है जो कठिनतम और परिश्रमी है किन्तु यह चढ़ाई चढ़कर आदमी बुलन्दी पर पहुँच जाता है।

नेकी के कामों में चूँकि लज़्ज़त महसूस नहीं होती और इच्छाओं के विरुद्ध यह काम अन्जाम देना पड़ता है इस लिए वह मन (नफ़्स) को बुरे लगते हैं, इस के विरुद्ध बुराई और गुनाहों के काम लज़्ज़तदार होते हैं और इच्छाऐं भी उन पर उभारती हैं। इस लिए तबीयत (नफ़्स) उस की तरफ़ आसानी से झुकती और चल पड़ती है। इस हक़ीक़त को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह

बयान फ़रमाया:-

حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَ حُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ۔

''जहन्नम नफ़्स की इच्छाओं से ढाँप दी गई है और जन्नत ऐसी बातों से जो नफ़्स (मन) को नागवार (अप्रिय) हैं ।''(बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़)

और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने भी इस को एक मिसाल देकर बयान फ़रमाया है। अत: इन्जील मत्ती में है।

''सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्यों कि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्यों कि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। (मत्ती ७:१३,१४)

फिर वह शामिल होता उन लोगों में जो ईमान लाए और जिन्हों ने एक दूसरे को सब्र (धैर्य) की और हमदर्दी की तल्किन (अनुदेश) की। यही लोग हैं सआदतमन्द (सौभाग्यशाली)। और जिन्हों ने हमारी आयात का इन्कार किया वह बदबख़्त (दुर्भाग्यशाली) लोग हैं। उन पर आग छाई हुई होगी जिस को बन्द कर दिया जाएगा। *(अल-क़ुर्आन)*

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

12. और तुमने क्या समझा कि वह घाटी क्या है?[15]

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

13. गर्दन छुड़ाना, [16]

أَوْ إِطْعٰمٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

14. या फ़ाक़े के दिन खाना खिलाना,[17]

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

15. क़राबतदार (नातेदार) यतीम को,[18]

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

16. या ख़ाक में पड़े मिस्कीन (मोहताज) को।[19]

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

17. फिर वह शामिल होता उन लोगों में जो ईमान लाए [20] और जिन्हों ने एक दूसरे को सब्र (धैर्य) की और हमदर्दी की तल्किन (अनुदेश) की।[21]

أُولٰئِكَ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

18. यही लोग हैं साआदतमन्द (सौभाग्यशाली)।[22]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيٰتِنَا هُمْ أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾

19. और जिन्हों ने हमारी आयात का इन्कार किया वह बदबख़्त (दुर्भाग्यशाली) लोग हैं।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

20. उन पर आग छाई हुई होगी जिस को बन्द कर दिया जाएगा।[23]

15. यह सवाल घाटी के महत्व को स्पष्ट करने के लिए है । मतलब यह है कि अच्छी तरह समझ लो नेकी की राह कठिन राह है जिस से गुज़रे बगैर आदमी कामयाबी की मन्ज़िल को नहीं पहुँच सकता । इस राह में माल की क़ुर्बानियाँ देनी पड़ती है लेकिन जिन लोगों ने माल को ऐश्वर्य का साधन बनाया हो वह इस राह में क्या क़दम रख सकेंगे ।

16. अर्थात् ग़ुलाम को आज़ाद करना या उस को आज़ाद करने में धन की सहायता करना । इस सूरह में जो एक मक्की सूरह है और शुरू के दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों में से है,ग़ुलामों को आज़ाद करने की इस हद तक ताकीद कि नेकी के कठिनतम रास्ते की पहली सीढ़ी ही यह कार्य ठहराया जाये, न केवल इस के महत्व को स्पष्ट करने के लिए काफ़ी है बल्कि इस से ग़ुलामी की समस्या में क़ुर्आन का वास्तविक दृष्टिकोण भी खुल कर सामने आ जाता है। जब ग़ुलाम को आज़ाद करना सब से बड़ी नेकी करार पाई तो किसी आज़ाद को ग़ुलाम बनाने के लिए इस्लाम में क्या गुन्जाइश हो सकती है। इसी लिए हदीस में आता है कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उस व्यक्ति से कड़ी पूछताछ करेगा जिस ने किसी आज़ाद को बेच कर के उस की क़ीमत खाई।------ (बुख़ारी)

رَجُلٌ بَاعَ حُرًّا ثُمَّ اَكَلَ ثَمَنَهٗ۔ بخاری

(अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह निसा फुटनोट ६४)

17. मोहताजों को खाना खिलाना हर हाल में नेकी का काम है लेकिन भूख की हालत में और सूखे (अकाल) के ज़माने में इस की ज़रूरत और अहमियत बढ़ जाती है।

18. हर यतीम मदद का हक़दार है लेकिन अगर वह सम्बन्धी हो तो और ज़्यादा मदद का हक़दार हो जाता है ।

19. मिस्कीन (मोहताज) भी हर हाल में मदद का हक़दार है लेकिन जब उसे गरीबी ने लाचार कर दिया हो या निर्धनता और बदहाली ने उसे ज़मीन पर पड़े रहने (मौजूदा ज़माने में यूँ कहिये कि फुटपाथ पर गुज़र बसर करने) के लिए मजबूर कर दिया हो तो वह और ज़्यादा मदद का हक़दार हो जाता है।

इन आयतों में नेकी के कामों की कुछ मिसालें बयान की गई हैं। बताने का मक़सद यह है कि माल का सही और बेहतरीन इस्तेमाल यह है और इस प्रकार के काम कर के ही आदमी अख़लाक़ एवं किरदार की बुलन्दी की तरफ़ जा सकता है। रहे वह लोग जो शोहरत (नाम) के लिए फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं। तो उन के हिस्से में सिवाए महरुमी के कुछ नहीं आता ।

20. अर्थात् इन नेक कामों को करने के साथ यह ज़रुरी है कि आदमी ईमान लाकर ईमान वालों की पंक्ति में शामिल हो क्यों कि ईमान के बग़ैर कोई नेकी भी अल्लाह तआला के यहाँ मक़बूल (मान्य) नहीं होगी । क़ुर्आन ने दूसरी जगहों पर भी इस का उल्लेख किया है। और ईमान विश्वस्नीय नहीं है जब तक कि आदमी क़ुर्आन और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान न ले आए ।

21. यहाँ ईमान वालों कि दो महत्वपूर्ण विशेषताऐं बयान की गई हैं। एक यह कि वह एक दूसरे को सब्र (धैर्य) की तल्कीन (अनुदेश) करते हैं और दूसरी यह कि वह एक दूसरे को हमदर्दी की नसीहत करते हैं। मालूम हुआ एक मोमिन का अपने तौर पर सब्र करना और दूसरों के साथ हमदर्दी करना काफ़ी नहीं बल्कि ज़रुरी है कि इन दोनों बातों की दूसरों को तल्कीन की जाये । यह इशारा है इस बात की तरफ़ कि ईमान वालों को आपस में सम्बन्ध (जुड़ा हुआ) एवं एक दूसरे का हमदर्द और शुभचिन्तक

होना चाहिए । तथा यह समझ लेना चाहिए कि ईमान वालों की पंक्ति में शामिल हो जाने के बाद उन पर सामाजिक और सामूहिक ज़िम्मेदारीयाँ भी लागू हो गई हैं।

22. अर्थात् ये कामयाब और अपनी मुराद को पहुँचने वाले लोग है क्यों कि यह इम्तिहान में पूरे उतरे और इन्हों ने वह ख़ूबियाँ अपने अन्दर पैदा कर ली जो कामयाबी की ज़मानत थीं । यह सौभाग्यशाली रुहें (आत्माऐं) हैं जो हमेशा हमेशा के सौभाग्य से लाभान्वित होंगी ।

23. अर्थात् उन को आग में डालने के बाद ऊपर से दरवाज़े बन्द कर दिये जाऐंगे और वह आग में इस तरह घिरे रहेंगे कि उस से निकलने का कोई रास्ता न पा सकेंगे ।

९१. अश्-शम्स

नाम :- पहली ही आयत में अश्-शम्स (सूरज) की क़सम खाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अश्-शम्स'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुटलाने और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुख़ालफ़त की शुरुआत हो चुकी थी।

केन्द्रीय विषय:- इन्सान को सरकशी और बग़ावत के बुरे अन्जाम से आगाह करना है और इस हक़ीक़त को साफ़ (स्पष्ट) करना है कि नफ़्स (मन अथवा आत्मा) की पाकीज़गी और उस की सही दिशा में सही परवरिश कामयाबी की ज़मानत है। इस के विरूद्ध नफ़्स को बुराइयों में लुथेड़ना नाकामी और नामुरादी का कारण है, क्यों कि बुराइयाँ सरकशी पर आमादा करती है और सरकशी का अन्जाम बरबादी है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से १० में सूरज और चाँद, दिन और रात, एवं ज़मीन और आसमान की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस कायनात के ख़ालिक़ (रचयता) की क़ुदरत के चमत्कार और उस की नीति (हिकमत) का सबूत पेश करती है। इस के अलावा इन्सानी नफ़्स की शहादत को जज़ा और सज़ा की ताईद (पक्ष) में पेश किया गया है।

आयत ११ से १५ में ऐतिहासिक गवाही पेश की गई है। इस सिलसिले में क़ौम समूद का क़िस्सा संक्षेप में बयान किया गया है ताकि उन की सरकशी का जो अन्जाम हुआ उस से लोग सबक़ (इबरत) हासिल करें और क़ुर्आन और पैग़म्बर के साथ दुश्मनी का रवैया अपनाने से बाज़ रहें।

९१.सूरह अश्-शम्स

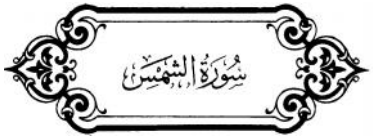

अनुवाद आयतें :१५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है [1] सूरज और उस की रौशनी की [2]**

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١

2. **और चाँद की, जब कि उस के पीछे आए।[3]**

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝٢

3. **और दिन की, जब उसे बेनिक़ाब करे।[4]**

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۝٣

4. **और रात की, जब उस को ढाँक ले।[5]**

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝٤

5. **और आसमान की और उस हस्ती की जिस ने इसे बनाया।[6]**

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝٥

6. **और ज़मीन की और उस हस्ती की जिस ने इसे बिछाया।**

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٦

7. **और नफ़्स (आत्मा) की और उस हस्ती की जिस ने इसे दुरुस्त बनाया।[7]**

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝٧

8. **फिर उस की बदी और परहेज़गारी उस पर इल्हाम (अंतस्फूर्ती) कर दी।[8]**

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝٨

9. **निश्चय की कामयाब हुआ वह जिस ने इस का तज़्किय: (शुद्धिकरण) किया ।[9]**

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝٩

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट १४ ।

2. अर्थात् जब सूरज उदय होता है तो चारों ओर जगत में रौशनी फैल जाती है और जैसे जैसे सूरज चढ़ने लगता है उस की तपिश बढ़ने लगती है। यह स्थिति इस बात का ख़ुला प्रमाण है कि सूरज की बाग़ डोर उस के ख़ालिक़ (रचयिता) के हाथ में है। क्यों कि वह उस के निश्चित किये गये समय पर ही उदय होता और ऊपर चढ़ता है ।

3. अर्थात् अगर सूरज द्वारा रौशनी फैलाने का काम दिन में होता है तो चाँद की शोभा और सौन्दर्य का उदय रात में । सूरज दिन का बादशाह है तो चाँद रात का । अत: वह अपनी महफ़िल रात ही में सजाता है। इस सच्चाई के रहते ही चाँद को सूरज के पीछे आने के अर्थ में बयान किया गया है। उस अर्थ की व्याख्या इस लिहाज़ से भी सही है कि चाँद सूरज ही से रौशनी हासिल करता है। इस तरह चाँद का सूरज के अधीन होना इस बात की खुली दलील है कि सूरज की तरह चाँद की बाग़ डोर भी उस के ख़ालिक़ (रचयिता) ही के हाथ में है।

4. सूरज की सारी चमक दमक दिन के समय में होती है गोया वह दिन ही है जो सूरज को बेनिक़ाब करता है और सूरज की मजाल नहीं कि वह समय से पहले निकल आए ।

यद्यापि सूरज का उदय ज़मीन के चक्कर लगाने के परिणाम स्वरुप होता है। लेकिन यहाँ वास्तविक दशा की स्थिती का भौगोलिक या अंतिरिक्ष से सम्बन्धित पहलू को बहस में लाना अभिप्रेत नहीं बल्कि उस अहम हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान आकर्षित करना अभिप्रेत है कि जो मनोदशा दुनिया पर हावी होती है वह एक नियमबद्ध व्यवस्था के तहत प्रकट होती है। क़ुदरत के इस अनुशासित व्यवस्था में हर चीज़ यहाँ तक कि सूरज भी जिस से यह दुनिया चमक उठती है, ऐसी जकड़ी हुई है कि किसी के लिए रत्ती भर मुँह मोड़ने की गुन्जाइश नहीं वरना जगत की सारी व्यवस्था तितर बितर हो कर रह जाये ।

ज़मीन के जिस भाग को रात ढाँप लेती है वहाँ सूरज की रौशनी नहीं पहुँच सकती । इस लिए ऐसा महसूस होता है कि जैसे रात ने आकर सूरज को ढाँप लिया है। बयान करने का यह अन्दाज़ अनुभव के अनुकूल अपनाया जाता है। यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि दुनिया के जिस भाग पर रात छा जाती है वहाँ सूरज प्रकट नहीं हो सकता । दूसरे शब्दों में वह रात के समय अपना चेहरा छिपाने के लिए मजबूर है और उस की यह मजबूरी इस बात की दलील है कि वह इस क़ानून के अनुबन्ध (पाबन्दी) से रत्ती बराबर उल्लंघन नहीं कर सकता जो उस के रचयिता (ख़ालिक़) ने उस के लिए निश्चित कर रखा है। इस प्रसंग से अनीश्वरवाद (इल्हाद) का भी खंडन होता है और अनेकेश्वरवाद (शिर्क) का भी । क्यों कि अगर सूरज आकस्मिक घटना स्वरुप अस्तित्व में आ गया होता तो वह एक सुदृढ़ व्यवस्था का पाबन्द नहीं हो सकता था और अगर वह देवता होता तो क़ुदरत के क़ानून में जकड़ा न रहता और रात के बस की बात नहीं थी कि उस के चेहरे को छिपा लेती । बल्कि वह अपने बल पर रात को भी प्रकट होता। मगर इस पूरी सौर्य व्यवस्था (Solar System) में जो अनुबन्ध पाये जाते हैं वह सुर्य देवता के अनेकेश्वरवादी कल्पना को सिरे से नकारते हैं ।

6. आसमान की क़सम खाने का मतलब यह है कि उस की भव्यतम बनावट और उस की बुलन्दी इन्सान को इस बात की ओर ध्यान खींचती है कि उस की चोटी भी उस के रचयिता के हाथ में है।

''उस हस्ती की क़सम जिस ने इसे बनाया'' से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि आसमान को पैदा करने वाली एक सर्वशक्तिमान हस्ती है और उस का होना एक ऐसी हक़ीक़त है जो संदेहों से बहुत ही ऊपर है। क़सम जहाँ शहादत अर्थात गवाही के भावार्थ में आती है वहाँ वह किसी बात के जाँची परखी

हुई और विश्वसनीय होने के पहलू को स्पष्ट करने के लिए भी आती है। अत: यहाँ और बाद की दो आयतों में ''उस हस्ती की क़सम'' जो खाई गई है वह इसी भावार्थ में हैं। अर्थात् यह क़सम चेतावनी स्वरुप है।

7. नफ़्स (शख़सियत) को दुरस्त बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने नफ़्से इन्सानी (इन्सान की शख़सियत) को सीधे प्रकृति पर पैदा किया और उस को उच्च कोटि की योग्यताऐं समर्पित की । उसे पैदाइशी गुनहगार नहीं बनाया और न उसे अपने स्वभाव से फसादी और बुराई पसन्द करने वाला बनाया कि ख़ुदा से सरकशी एवं बगावत करने और शैतानी गुणों को अपनाने पर विवश हो । उस ने उसे सही और सीधी प्रकृति का बनाया है और उस की आत्मा में फ़साद का कोई तत्व नहीं रखा कि वह सीधे और सही रास्ते को अपनाना चाहे और न अपना सके। तथा गुमराही को अपनाने पर मजबूर हो । इस हक़ीक़त को क़ुर्आन ने दूसरी जगह खोल कर बयान फ़रमाया है:-

فِطْرَةَ اللهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا۔ (سورۂ روم:۳۰)

''अल्लाह की वह फ़ितरत जिस पर उस ने इन्सानों को पैदा किया''। (सूरह रूम -३०)
और इस की व्याख्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हदीस में इस तरह फ़रमाई है।

مامن مولودٍ الّا یولد علی الفطرة۔ فأبواه یهودانه وینصّرانه ویشّرکانِهِ۔ (مسلم کتاب القدر)

''कोई बच्चा ऐसा नहीं जो प्रकृति पर पैदा न होता हो । फिर उस के माता पिता उसे यहूदी, ईसाई या मुश्रिक (बहुदेववादी) बना देते है।''

8. अर्थात् अल्लाह तआला ने नेकी और बदी की सीख प्रदान की है जिस की बुनियाद पर वह भलाई और बुराई में फ़र्क़ (भेद) करता है और यह अनुभव करता है कि यह काम अच्छे हैं और वह काम बुरे। इसी लिए इन्सान झूट, अन्याय एवं अत्याचार और बे हयाई को स्वभावत: (फितरतन) बुरा समझता है और इस प्रकार के आचरण एवं व्यवहार से नफ़रत करता है और सच्चाई, न्याय, इन्सानी हमदर्दी और शर्म एवं हया की सुरक्षा को अच्छा समझता है और इस प्रकार के आचरण एवं व्यवहार को पसन्द करता है। यह सीख अथवा यह ज्ञान वास्तव में प्रकृति की रहनुमाई है और यह रहनुमाई अल्लाह तआला ही ने हर नफ़्स के अन्दर समर्पित कर दी है जिसे यहाँ इल्हाम से अलंकृत (ताबीर) किया गया है।

यह ज्ञान और यह सीख इन्सान के अपने नफ़्स की शहादत है कि वह नैतिक अस्तित्व रखने वाली ज़िम्मेदार मख़्लूक़ (सृष्टि अथवा रचना) है । और जब उस की हैसियत यह है तो इस का अनिवार्य तक़ाज़ा (Demand) है कि वह कर्मों के सिलसिले में अपने रब के सामने जवाबदेह (उत्तरदायी) क़रार पाये और उस के कर्मों के परिणाम उस के सामने आऐं । नफ़्स की इस शहादत (गवाही) को स्वीकार न करने का मतलब यह होगा कि इन्सान की प्रकृति और उस का स्वाभाव गलत, उस का ज्ञान और उस की सीख अनुचित और उस का अस्तित्व बेकार है। किन्तु यह बात कोई व्यक्ति भी कहने के लिए तैयार नहीं है, मगर करोड़ों इन्सान फिर भी अपने नफ़्स अपनी अन्तरात्मा की गवाही के विरुद्ध जीवन व्यतीत करते हैं और इस भुलावे में डूबे रहते हैं कि वह मन मानी करने के लिए आज़ाद हैं और उस के परिणाम का कभी इन्हें सामना नहीं करना पड़ेगा ।

ध्यान रहे कि बुराई करने और बुराई से बचने का यह इल्हाम (ईश प्रेरणा) एक दर्जे में अल्लाह तआला की रहनुमाई है, रही मुकम्मल रहनुमाई, तो इस का सामान अल्लाह तआला ने आसमानी हिदायत के द्वारा किया है। यह आसमानी हिदायत, जो अब क़ुर्आन के रुप में मौजूद है, उस प्रकृतिक

ज्ञान एवं सीख को जो इन्सान के नफ़्स को समर्पित हुआ है, सुदृढ़ करती और उजागर करती है। और वहीं से यह हक़ीक़त भी खुल कर सामने आती है कि जिन लोगों तक आसमानी हिदायत न पहुँची हो वह भी अपने प्रकृतिक ज्ञान एवं सीख की हद तक अपने अच्छे और बुरे कर्मों के ज़रुर ज़िम्मेदार हैं और इस सिलसिले में उन्हें भी अल्लाह के सामने जवाब देना पड़ेगा ।

9. मतन (मूल भाषा या Text) में लफ़्ज़ زَكّٰهَا ''ज़क्काहा'' इस्तेमाल हुआ है जो तज़्किय: से है और जिस का अर्थ पाक करने, विकास एवं उन्नति देने के हैं। ऊपर की आयत में नफ़्स पर फुजूर (बदी) और तक़वा (परहेज़गारी) के इल्हाम किये जाने का जो ज़िक्र हुआ है उस से नफ़्स के तज़्किय: (आत्मा के शुद्धिकरण) का भावर्थ भी उभरता है। अर्थात् नफ़्स को फ़ुजूर (बुराइयों) से पाक करना और तक़वा (ईशभय और परहेज़गारी की बातों) से उस को विकास एवं उन्नति देना । दूसरे शब्दों में उस की इस तरह तरबियत या परवरिश करना कि उस में भलाई उभरे और नेकियाँ विकसित हों । नफ़्स की वास्तविक प्रगति और रूह का विकास इन विशेषताओं के पैदा करने में हैं। इस हक़ीक़त को एक मिसाल से समझा जा सकता है। वह यह कि एक पौदा तभी फल फूल सकता है जब कि उसे अनुकूल वातावरण मिल जाए और उस की सिंचाई की जाती रहे वरना तेज़ हवा का एक झोंका ही उस को मिट्टी में मिला देने के लिए काफ़ी होता है।

इस सूरह में जो मज़मून (विषय) बयान हुआ है उस से नफ़्स के तज़्किय: का जो महत्वपूर्ण पहलू उभर कर सामने आता है, वह यह है कि आदमी सब से पहले अपने आप को कुफ्र और सरकशी से मुक्त कर ले और अल्लाह की हिदायत को क़ुबूल कर के अपने को इताअत (आज्ञापालन) की राह पर डाल दे । यह इताअत की राह शरीअत की राह है जिस पर चल कर आदमी सदाचारी और नेक बन जाता है ।

यह है नफ़्स के तज़्किय: का सीधा सादा और क़ुर्आनी भावार्थ । इस में न कोई दुश्वारी है और न संदेह तथा इस के लिए न किसी दार्शनिक वाद विवाद की ज़रूरत है और न ही अनावश्यक बातों में उलझने की । क़ुर्आन ने नफ़्स के तज़्किय: (आत्मा के शुद्धिकरण) के लिए जो बेहतरीन और अत्यन्त प्रभावपूर्ण नुस्खा प्रस्ताव किया है वह है ख़ुदा की सर्वोच्च एवं संपूर्ण शरीअत जिस पर न ''तरीक़त'' (सूफ़ियों का भक्तिमार्ग) की वृद्धि की ज़रूरत है और न सुलूक (तसव्वुफ़ की परिभाषा में ईश्वर की खोज) की मन्ज़िलों से गुज़रने की बल्कि ईमान और यक़ीन तथा सच्चे दिल और ईशभय के साथ शरीअत पर चल पड़ना काफ़ी है।

नफ़्स के तज़्किय: के इस सही तरीक़े की तरफ़ रहनुमाई कर के क़ुर्आन ने इन्सान को उन तमाम अप्राकृतिक, अस्वाभाविक और मुश्किल तौर तरीक़ों से मुक्ति दिलाई है जो धर्मों के ठेकेदारों ने रुह और आत्मा को पाक करने (Purification) के लिए ख़ोज कर रखे हैं, मिसाल के तौर पर योगा, तपस्सया, इच्छाओं को मारना, सन्यास इत्यादि।

और इस सिलसिले कि आख़री बात यह है कि नफ़्स को पाक करने का काम अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ के बग़ैर नहीं हो सकता । इस लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दुआ की तालीम दी है कि :- اَللّٰهُمَّ! آتِ نَفْسِیْ تَقْوَاهَا وَ زَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكّٰهَا۔

اَنْتَ وَلِيُّهَا وَ مَوْلَاهَا۔ (مسلم کتاب الذکر)

''ऐ अल्लाह मेरे नफ़्स को उस का तक़वा प्रदान कर और उस का तज़्किय: कर कि तू बेहतरीन तज़्किय: करने वाला हैं और उस का सरपरस्त और मददगार है।''

10. और नामुराद हुआ वह जिस ने इसे लुथेड़ा।[10]

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾

11. समूद ने अपनी सरकशी (उद्दंडता) की वजह से झुठलाया।[11]

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾

12. जब उन का सब से बड़ा बदबख़्त (अभागा) उठ खड़ा हुआ।[12]

إِذِ انْۢبَعَثَ أَشْقٰىهَا ﴿١٢﴾

13. तो अल्लाह के रसूल ने [13] उन लोगों से कहा कि ख़बरदार अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से छेड़ न करना।[१४]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿١٣﴾

14. मगर उन्होंने उस को झुठलाया और ऊँटनी के घुटने की नसें (कूँचें) काट दीं।[15] आख़िरकार अल्लाह ने उन के गुनाह के बदले में उन पर अज़ाब नाज़िल किया और उन को (ज़मीन के) बराबर कर दिया।[16]

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿١٤﴾

15. और उस को उन के अन्जाम से कोई भय नहीं।[17]

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿١٥﴾

10. अर्थात् बजाए इस के कि तक़वा (परहेज़गारी) का रास्ता अपना कर के नफ़्स का तज़्किय: (आत्मा का शुद्धिकरण) करता, उस ने फ़ुजूर (बदी) की राह अपना कर के नफ़्स को बुराइयों और गुनाहों में लुथेड़ा । इस तरह नेकी की प्रवृत्ति को दबाने और बदी की प्रवृत्ति को अपने ऊपर हावी करने का नतीजा यह निकला कि नफ़्स का यह गुन्चा (कली) जो खिल कर फूल बन सकता था और जिस की महक उस के पूरे वजूद को महका सकती थी, दब कर अन्दर ही अन्दर मुरझा गया । और किसी शायर के कथनानुसार

''हसरत उन ग़ुन्चों पे है जो बिन खिले मुरझा गये''

आयत १ से ७ में क़समें खायी गई हैं और इस के बाद जो दावा पेश किया गया है उस का सारांश यह है कि सूरज से लेकर इन्सानी नफ़्स तक सब की बागडोर अल्लाह के हाथ में है और उन सब चीज़ो का अस्तित्व और उन से पैदा होने वाले हालात स्वयं अपने हाल से इस बात की शहादत देते हैं कि उन का ख़ालिक़ (रचयिता) ज़बरदस्त क़ुदरत का मालिक और बड़ी ही हिकमत वाला और ज्ञान वाला है। और जब उस की क़ुदरत के आगे किसी को दम मारने की मजाल नहीं और उस की हिकमत (नीति) ने इन्सान को ज्ञान एवं सीख रखने वाला तथा नेकी और बदी में तमीज़ करने वाली मख़लूक़ बना कर उठाया है तो उस के लिए सही रवैया यही हो सकता है कि वह उस की आज्ञापालन एवं दासता की राह स्वीकार करे और इस एहसास के साथ ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारे कि उसे अपने रब के सामने जवाब देही के लिए हाजिर होना और फिर अपने कर्मो के अनुसार इनाम या सज़ा पाना है । क़ुर्आन इसी हक़ीक़त पर इन्सान की निगाहों को केन्द्रित करना चाहता है ताकि वह उस के अनुसार अपनी ज़िन्दगी संवारे और जब दुनिया के इस इम्तिहानगाह (Examination Hall) से लौटे तो कामयाबी की मन्ज़िल उस के सामने हो ।

इस वास्तविकता का समर्थन यद्यापि ज़मीन से ले कर आसमान तक हर चीज़ से हो रहा है और स्वयं इन्सानी नफ़्स की भी शहादत यही है फिर भी इन्सान इस वास्तविकता को मुश्किल ही से स्वीकार करने के लिए तैयार होता है। वह ख़ुदा की हिदायत से बेपरवाह रहना चाहता है। इस लिए वह नाफ़रमानी (अवज्ञा) और सरकशी (उद्दंडता) का रवैया अपनाता है जिस के फ़लस्वरूप उस के अन्दर अनुत्तरदायित्व एवं लापरवाही पैदा हो जाती है और फिर वह नेकी और बदी में कोई तमीज़ नहीं कर पाता ।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण और व्यापक विषय है जो ऊपर की आयात के अन्दर समो दिया गया है।

11. ऊपर जो दा'वा पेश किया गया है उस के पक्ष में यह ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया जा रहा है कि सरकशी (उद्दंडता) का कैसा भयंकर एवं शिक्षाप्रद परिणाम दुनिया के सामने आता रहा है। समूद की क़ौम की घटना क़ुर्आन में कई जगहों पर विस्तार से बयान हुई है। इस सूरह में उस का ज़िक्र संक्षिप्त रूप से किया गया है। झुटलाने से मुराद पैग़म्बर हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम को झुटलाना है जो उन की हिदायत के लिए भेजे गये थे । समूद के ठिकाने वग़ैरह के सिलसिले में देखिए सूर फ़ज्र फुट नोट.१३

12. यह अभागा समूद की क़ौम का सरदार था और उस का नाम ''किदार'' था । अत: अरब जाहिलिय्यत (इस्लाम से पूर्व दौर) के शेरों (दोहों) में इस का ज़िक्र मिलता है।

इस को सब से बड़ा अभागा (बदबख़्त) इस लिए कहा गया है कि वह अत्यन्त उद्दंड था और उस ने अपनी क़ौम को गुमराह कर के उद्दंडता की बहुत बड़ी मिसाल क़ायम की और फलस्वरूप वह खुद भी तबाह हुआ और क़ौम को भी तबाही के घाट उतार दिया ।

13. मुराद हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम हैं जो उस क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर बना कर भेजे गये थे।

14. समूद की क़ौम ने हज़रत स्वालेह अलैहिस्सलाम से माँग की थी कि यादि सचमुच वह ख़ुदा के रसूल (दूत) हैं तो कोई मोअजज़ा (निशानी) पेश करें। उन की इस माँग पर अल्लाह तआला ने ऊँटनी को मोअजज़े के तौर पर पेश कर दिया । चूँकि वह ऊँटनी मोअजज़े के तौर पर पेश की गई थी इस लिए इसे ''नाक़तल्लाह''(अल्लाह की ऊँटनी कहा गया)

इस मोअजज़े ने जहाँ उन की माँग पूरी कर दी वहाँ उन को आज़माइश में भी डाल दिया । और इस की सूरत यह हुई कि हज़रत स्वालेह ने कहा, एक दिन इस के पानी पीने के लिए निश्चित होगा और दूसरा दिन तुम्हारे लिए और तुम्हारे जानवरों के पानी पीने के लिए होगा । और ख़बरदार किया कि ऊँटनी को नुक़सान न पहुँचाना वरना अल्लाह का प्रकोप (अज़ाब) तुम्हें आ लेगा । लेकिन क़ौम ने अपने उद्दंड सरदार को इस बात पर उकसाया कि वह इस ऊँटनी का क़िस्सा तमाम कर दे।

15. ऊँट को जब मारना होता तो उस की कूँचें अर्थात घुटने के पीछे की नसें काट डाली जाती थीं जिस के बाद वह मर जाता था । यही तरीक़ा समूद के लोगों ने अल्लाह की ऊँटनी को मारने के लिए अपनाया और इस काम के लिए सब ने मिल कर अपने बदतरीन सरदार को आगे किया था इस लिए पूरी क़ौम इस की मुजरिम क़रार पायी ।

16. अर्थात् उन को इस तरह तबाह कर दिया कि वह ख़ाक में मिल गये और मलियामेट हो गये।

17. अर्थात् अल्लाह को दुनिया के शासकों जैसा न समझो जो किसी दोषी समूह को सज़ा देते समय भयभीत होते हैं कि मालूम नहीं इस का क्या नतीजा निकलेगा और कहीं इस से उन की सत्ता तो खतरे में नहीं पड़ेगी । अल्लाह तआला की सत्ता और उस का इक़्तिदार सब से उच्चतम और सब पर हावी है इस लिए जब वह किसी क़ौम को सज़ा देना चाहता है तो उसे किसी का भय अथवा संदेह लागू नहीं होता ।

९२. अल्-लैल

नाम :- पहली ही आयत में अल्-लैल (रात) की क़सम खायी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-लैल'' है।

नाज़िल होने का समयः- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के शुरु के चरण (मरहले) में नाज़िल हुई।

केन्द्रीय विषय :- यह स्पष्ट करना है कि इन्सान की कोशिश की दो विभिन्न दिशाँए हैं जिस का तक़ाज़ा है कि दोनों के प्रभाव एवं परिणाम भी भिन्न भिन्न और मन्ज़िलें भी अलग अलग हों ।

इस सूरह का मज़मून (विषय) सूरह ''अश्-शम्स'' के मज़मून से गहरा सम्बन्ध रखता है। उस में नफ़्स (आत्मा) को पाक करने और गन्दा करने का अन्जाम बयान किया गया था इस सूरह में इस बात पर रौशनी डाली गयी है कि नफ़्स को पाक करने वाली चीज़ें क्या है और गन्दगी में लिप्त करने वाली चीज़ें क्या ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ४ में कुछ प्रमाणों को प्रस्तुत कर के इस बात पर तर्क वितर्क किया गया है कि इन्सान की दौड़ धूप एवं कर्म जब अलग अलग हैं तो ज़रूरी है कि उस के परिणाम भी अलग अलग हों ।

आयत ५ से ११ में अच्छे और बुरे आचरण को कुछ विशेषताअें प्रस्तुत कर के स्पष्ट किया गया कि अच्छे गुण नेकी का मार्ग प्रशस्त करते हैं। और बुरे गुण बदी के मार्ग को ।

आयत १२ से १४ में बताया गया है कि अल्लाह का काम हिदायत की राह दिखा देना है और उस ने यह राह तुम्हें दिखा दी है। दुनिया और आख़िरत का मालिक वही है। इस लिए उस ने तुम्हें ख़बरदार कर दिया है कि आख़िरत में क्या कुछ पेश आने वाला है।

आयत १५ से २१ में बताया गया है कि बुरे आचरण के लोग किस तरह बुरे अन्जाम से दोचार होंगे और अच्छे आचरण के लोगों का अन्जाम कितना अच्छा और दिलपसंद होगा ।

९२.सूरह अल्-लैल

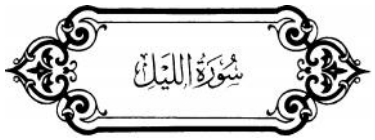

अनुवाद आयतें : २१

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **क़सम है [1] रात की जब कि वह छा जाये,[2]**

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ﴿۱﴾

2. **और दिन की जब कि वह रौशन हो,[3]**

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾

3. **और उस हस्ती की [4] जिसने नर और मादा पैदा किये।[5]**

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۙ﴿۳﴾

4. **निश्चय ही तुम्हारी कोशिशें अलग अलग है।[6]**

اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ؕ﴿۴﴾

5. **तो [7] जिस ने माल दिया [8] और परहेज़गारी अपनायी,[9]**

فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۙ﴿۵﴾

6. **और बेहतरीन बात को सच माना,[10]**

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۶﴾

7. **उस के लिए हम आसानी को पहुँचने वाला मार्ग प्रशस्त कर देंगे।[11]**

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ؕ﴿۷﴾

8. **और जिस ने कंजूसी की [12] और बेपरवाही बरती,[13]**

وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ﴿۸﴾

9. **और बेहतरीन बात को झुठलाया।[14]**

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿۹﴾

10. **उस के लिए हम सख़्ती को पहुँचने वाला मार्ग प्रशस्त कर देंगे।[15]**

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿۱۰﴾

11. **और जब वह गढ़े में गिरेगा तो उस का माल उस के कुछ काम न आयेगा।[16]**

وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿۱۱﴾

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट १४

2. इशारा है इस बात की तरफ़ कि रात की विशेषता अन्धियारा है। जब वह आ जाती है तो सब पर अन्धियारा छा जाता है।

3. अर्थात् रात के मुक़ाबले दिन की विशेषता उजाला है। जब वह उभरता है तो सब चीज़ें उज्जवल (रौशन) हो जाती है।

4. मुराद ख़ालिक़ (सृष्टा अथवा रचयिता) की क़सम है। और ख़ालिक़ की क़सम यहाँ बात को और भी दृढ़ करने और दअवे को निश्चित रूप से पेश करने के लिए है।

5. नर और मादा जानवरों में भी पैदा किये और इन्सानों में भी । यह शारीरिक फ़र्क़ अपनी विशेषताऐं रखता है। जो विशेषता मर्द की है वह औरत की नहीं और जो औरत की है वह मर्द की नहीं।

6. यह है वह हक़ीक़त जिस पर उक्त क़समें खाई गई हैं। मतलब यह है कि इस कायनात की तख़्लीक़ (रचना) इस तरह हुई है कि इस में चीज़ें एक दूसरे से भिन्न हैं और अलग अलग विशषताओं की मालिक हैं । मिसाल के तौर पर रात और दिन परस्पर भिन्न हैं और यदि एक की विशेषता अन्धेरा फैलाना है तो दूसरे की विशेषता उजाला फैलाना। मर्द और औरत भी शारीरिक रुप से परस्पर भिन्न हैं और अगर एक में किरयाशीलता की विशेषता पाई जाती है तो दूसरे में सहनशीलता की । अगर एक जाति में बाप बनने की विशेषता पाई जाती है तो दूसरी जाती में माँ बनने की । यही हाल इन्सान की कोशिशों का है कि कोई नेकी और भलाई का मार्ग अपनाता है तो कोई बदी और उपद्रव का । कोई ख़ुदा का वफ़ादार बन्दा बन कर रहता है तो कोई नाफ़रमान सरकश (उद्दंड) बनकर। कोई, एक सच्चे ख़ुदा को मानता है और किसी ने हज़ारों झूटे ख़ुदा बना रखे हैं। किसी की दौड़ धूप भलाई की राह में होती है और किसी की बुराई की राह में, कोई उपद्रवी और ज़ालिम बन कर उठता है और कोई सुधारक बनता है और इन्साफ़ के तराज़ू क़ायम करता है। कोई दुनिया में मज़े उड़ाता है और कोई कर्तव्यपरायणता का परिचय देता है। कार्य क्षेत्र में इन्सान की कोशिशों का यह अन्तर भी अपने अन्दर अलग अलग विशेषताऐं और अपने अलग अलग प्रभाव रखता है और यह परिस्थिती इस बात का तक़ाज़ा करती है कि इन के अलग अलग नतीजे भी ज़ाहिर हों । और जब दुनिया की हैसियत कर्मभूमि और परीक्षा स्थल की ठहरी तो एक बदला पाने की जगह की ज़रुरत उभर कर सामने आती है। अत: क़ुर्आन का यह दावा कि आख़िरत बदला पाने की जगह हैं जहाँ नेकी और बदी के अलग अलग परिणाम सामने आऐंगे और इन्सान अपने कामों और कोशिशों के अनुकूल इनाम या सज़ा पायेगा, ठीक उस हक़ीक़त के मुताबिक है जो कायनात की निशानियों पर ग़ौर करने से उभर कर सामने आती है।

जो लोग इतनी बड़ी हक़ीक़त को क़ुबूल नहीं करते वह निरे मूर्ख होने का सबूत देते हैं क्यों कि उन के नज़दीक हर चीज़ अपनी एक विशेषता रखती है किन्तु अगर कोई चीज़ अपनी विशेषता नहीं रखती तो वह नैतिक और अनैतिक रवैया है। वह समझते हैं कि हर चीज़ अपना असर (प्रभाव) रखती है लेकिन अगर कोई चीज़ अपना असर नहीं रखती तो वह नेकी और बदी है। वह इस बात के क़ायल हैं कि हर काम का एक नतीजा है परन्तु उन के नज़दीक अगर कोई काम बेनतीजा (परिणाम रहित) है तो वह ख़ुदा की आज्ञा का पालन और उस की अवज्ञा के काम हैं कि दोनों काम और दोनों मार्ग एक जैसे हैं और इन का कोई अच्छा और बुरा नतीजा बरामद होने वाला नहीं । इन्सान ख़ुदा पर ईमान लाए या कुफ़्र करे उस की हिदायत को स्वीकार करे या न करे परिणाम की दृष्टि से कोई फ़र्क नहीं पड़ता । बताइये इस से बढ़ कर नादानी और मूर्खता की बात और क्या हो सकती है।

7. यहाँ अच्छी और बुरी कार्यप्रणाली का अन्तर स्पष्ट किया जा रहा है। इस सिलसिले में पहले

कुछ गुणों का वर्णन किया गया है जो इन्सान को संवारते और उस के चरित्र का निर्माण करते हैं। इस के बाद वह अवगुण बताये गये हैं जो इन्सान को बिगाड़ते और उस को चरित्रहीन बनाते हैं।

8. तात्पर्य भलाई के कामों पर ख़र्च करना है।

9. अर्थात् अल्लाह से डरते हुए ज़िन्दगी बसर करे । जो काम उस की नाराज़गी के हैं उन से परहेज़ करे ।

10. बेहतरीन बात (अलहुसना اَلْحُسْنٰى) से तात्पर्य यह बात है जिस की तरफ़ क़ुर्आन दअवत दे रहा है। अर्थात् कलमा-ए-तौहीद को क़ुबूल करने और आख़िरत पर ईमान लाने की दअवत ।

11. अर्थात् नेकी की राह पर चलना उस के लिए आसान होगा और उस पर चल कर वह उस मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा जहाँ आसानियाँ ही आसानियाँ और राहत ही राहत है। नेकी की राह यद्यपि अत्यन्त कठिनतम राह है। लेकिन इस पर चलना उन लोगों के लिए आसान हो जाता है जो ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान ला कर तक़वा (परहेज़गारी) अपनाते हैं और अल्लाह की प्रसन्नता की ख़ातिर अपना माल ख़र्च करते हैं। गोया यह तौफ़ीक़ अल्लाह तआला उन लोगों को प्रदान करता है जो सत्यमार्ग पर चलने की हिम्मत करते हैं और उस की बुनियादी शर्तें पूरी कर देते हैं।

12. कंजूसी (बुख़्ल) से मुराद नेकी और भलाई के कामों में माल न ख़र्च करना है और इस लिहाज़ से वह व्यक्ति भी कन्जूस है जो अपने ऐश और आराम और दूसरे दिखावटी कामों पर तो ख़ूब ख़र्च करता है लेकिन ख़ुदा और बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी उसे बोझ लगती है।

यदि कलाम के संदर्भ का लिहाज़ रखा जाये तो यह बात अपने आप स्पष्ट हो जाती है कि कंजूसी और मायामोह वह नैतिक बुराइयाँ है जो नफ़्स को लुथेड़ देती हैं और पाकीज़गी (पवित्रता) अपनाने के लिए ज़रूरी है कि आदमी अल्लाह की राह में ख़र्च करे।

13. बेपरवाही (बेनियाज़ी) बरतने का मतलब यह है कि आदमी ख़ुदा और उस की हिदायत से बिलकुल अलग (पृथक) हो जाये और उसे इस बात की परवाह न हो कि अल्लाह की प्रसन्नता किन कामों के करने से प्राप्त होती है और उस का प्रकोप किस तरह के काम करने से टूट पड़ता है।

''इस्तिग़ना'' اِسْتِغْنَاء (बेनियाज़ी या बेपरवाही बरतने) का लफ़्ज़ तक़वा (ईशभय और परहेज़गारी) के मुक़ाबले में इस्तेमाल हुआ है इस लिए अगर तक़वा, अल्लाह के डर से प्रभावित होकर ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारने और अपने कर्तव्य को पहचानने एवं उसे पूरा करने का नाम है तो ''इस्तिग़ना''यह है कि आदमी ख़ुदा से बेपरवाह होकर ग़ैरज़िम्मेदाराना (दायित्वहीन) ज़िन्दगी गुज़ारें और अपने कर्तव्य को न पहचाने एवं उसे पूरा न करे।

14. बेहतरीन बात की व्याख्या ऊपर फुटनोट १० में गुजर चुकी है।

15. अर्थात् बदी की राह चलना उस के लिए आसान होगा और इस पर चलकर वह उस कठिन मन्ज़िल तक पहुँच जाऐगा जहाँ कष्ट ही कष्ट है। बदी की राह इस लिहाज़ से आसान है कि उस पर चलने वाला अपनी इच्छाओं एवं स्वार्थ के पीछे चलता है और इस में उसे सांसारिक (माद्दी) फ़ायदे भी प्राप्त होते हैं और दुनियावी लज़्ज़तें भी । जो व्यक्ति इन जल्द मिलने वाले फ़ायदे के लालच में आ कर इस ग़लत राह को चुन लेता है अल्लाह तआला उस को उस पर चलने के लिए ढील देता है और उस के लिए वह साधन कर देता है जो बुराइयाँ व्यवहार में लाने को उस के लिए आसान बना देते हैं। लेकिन अन्त में यह आसानियाँ उसे अत्यन्त कठिन मन्ज़िल पर ले जाकर छोड़ देती हैं।

16. गढ़े (गड्ढे) में गिरने से तात्पर्य तबाही के गढ़े में गिरना है। मतलब यह है कि यह माल जिसे आदमी जमा करता है और भलाई के कामों में नहीं लगाता उस के लिए कुछ भी लाभदायक न होगा बल्कि तबाही का कारण होगा । अगर यह ख़ुदा की ख़ातिर भलाई के कामों में उसे ख़र्च करता तो यह उस की आख़िरत (परलोक) में मिलने वाली ज़िन्दगी के लिए सुरक्षित पूँजी बन जाती।

निस्सन्देह मार्ग दिखाना हमारे ज़िम्मे है। और आख़िरत और दुनिया दोनों हमारे ही क़ब्ज़े में हैं। तो मैं ने तुम को भड़कती आग से ख़बरदार कर दिया है। इस में वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त (अभागा) होगा। जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा। और उस से ऐसे व्यक्ति को बचा लिया जायेगा जो बेहद परहेज़गार है। *(अल-क़ुर्आन)*

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿١٢﴾

12. निस्सन्देह मार्ग दिखाना हमारे ज़िम्मे है।[17]

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ﴿١٣﴾

13. और आख़िरत और दुनिया दोनों हमारे ही क़ब्ज़े में हैं।[18]

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ﴿١٤﴾

14. तो मैं ने तुम को भड़कती आग से ख़बरदार कर दिया है।

لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿١٥﴾

15. इस में वही पड़ेगा जो बड़ा बदबख़्त (अभागा) होगा।[19]

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٦﴾

16. जिस ने झुठलाया और मुँह मोड़ा।

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ﴿١٧﴾

17. और उस से ऐसे व्यक्ति को बचा लिया जायेगा जो बेहद परहेज़गार है।[20]

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾

18. जो अपना माल पाकीज़गी हासिल करने की ख़ातिर देता है।[21]

وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ﴿١٩﴾

19. और उस के नज़दीक किसी के हक़ (पक्ष) में कोई एहसान बदले के लिए नहीं है।[22]

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾

20. बल्कि वह सिर्फ अपने बरतर (सर्वोच्च) रब की प्रसन्नता को हासिल करने के लिए देता है।[23]

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾

21. और वह ज़रूर प्रसन्न होगा।[24]

17. अर्थात् जहाँ तक इन्सान को सीधा मार्ग दिखाने का सम्बन्ध है, अल्लाह तआला ने यह ज़िम्मा ज़रूर लिया है और यह काम उसने अपने पैग़म्बर को भेजकर और अपनी इस किताब को नाज़िल कर के पूरा कर दिया है। रहा सीधा एवं सत्य मार्ग अपना लेना तो यह इन्सान की अपनी ज़िम्मेदारी है। करेगा तो कामयाब होगा और नहीं करेगा तो नामुराद होगा ।

18. अर्थात् दुनिया और आख़िरत (लोक परलोक) दोनों जहानों के मालिक हम ही हैं और दोनों का नफ़ा, नुक़सान हमारे ही हाथ में है। अत: जो व्यक्ति दुनिया के भौतिक (माद्दी) लाभ की ख़ातिर सीधे मार्ग को स्वीकार नहीं करता उसे समझ लेना चाहिए कि दुनिया में वह उतने ही फ़ायदे हासिल कर सकेगा जितने कि उस की गुमराही के बावजूद उस का ख़ुदा उसे पहुँचाना चाहे। उस से अधिक वह दुनिया में कुछ हासिल न कर सकेगा । रही आख़िरत तो वहाँ ऐसे लोगों के लिए महरूमी के सिवा कुछ न होगा ।

19. इस का यह मतलब नहीं है कि जो कम दर्जे का बदबख़्त (अभागा) होगा वह आग में नहीं पड़ेगा बल्कि मतलब यह है कि इस सूरह के नाज़िल होने के समय जो दो चरित्र के लोग सामने थे एक जो पैग़म्बर को झुठला रहे थे और उन की लायी हुई हिदायत से मुँह मोड़ रहे थे और दूसरे वह जो पैग़म्बर की पुष्टि कर रहे थे और उन की लायी हुई हिदायत को स्वीकार कर के अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च कर रहे थे । इन में से पहले चरित्र के लोग ही अर्थात पैग़म्बर को झुठलाने वाले भड़कती आग में पड़ेंगे न कि दूसरे चरित्र के लोग जो पैग़म्बर की पुष्टि कर रहे थे। उन झुठलाने वालों को अत्यन्त अभागा (इन्तेहाई बदबख़्त اَشْقٰی) इस लिए फ़रमाया कि जब पैग़म्बर ने स्वयं उन लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया जिस की वजह से अल्लाह की हुज्जत (तर्क) पूरी तरह क़ायम हो गई और फिर भी वह इन्कार करते रहे तो उन से ज़्यादा बदबख़्त और कौन हो सकता है।

क़ुर्आनी आयात का मफ़हूम (भावार्थ) निश्चित करते समय, जगह, अवसर और उन हालात को जिन में वह आयात नाज़िल हुई है, लिहाज़ रखना ज़रूरी है एवं किसी आयत का ऐसा मतलब लेना भी सही न होगा जो क़ुर्आन के दूसरे बयानों से मेल न खाती हो।

20. यहाँ भी कहने का उद्देश्य यह नहीं है कि सिर्फ़ बड़े परहेज़गार (मुत्तक़ी) ही आग से बचाए जायेंगे और साधारण परहेज़गार नहीं बचाये जायेंगे बल्कि मतलब यह है कि जो दो चरित्र उभर कर सामने आ गये हैं। और यह इस सूरह के नाज़िल होने के समय और पैग़म्बर की मौजूदगी में उभर कर सामने आ गये थे । उन में से सिर्फ दूसरे आचारण के लोग ही आग से बचा लिये जायेंगे। जिन्होंने अपने मुत्तक़ी (परहेज़गार) ही नहीं बल्कि '' اَتْقٰی अतक़ा''(बेहद परहेज़गार) होने का सबूत दिया है। रहे ''अशक़ा اَشْقٰی '' (बेहद बदबख़्त) तो वह ज़रूरी ही आग में पड़ेंगे जैसा कि ऊपर बयान हुआ । स्पष्ट रहे कि जिन लोगों ने शुरू ही में रसूल की दअवत क़ूबूल कर ली थी और अल्लाह से डरते हुए अपने अन्दर पाकीज़गी पैदा कर रहे थे । उन्होंने बहुत बड़े हौसले का सबूत दिया था इस लिए उन का दर्जा बहुत बड़ा है और तक़वा (परहेज़गारी) के ऊँचे मेयार पर होने की वजह से वह सब ''अतक़ा'' (बेहद परहेज़गार) हैं।

21. मालूम हुआ कि अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना ''तज़्किया-ए-नफ़्स'' (नफ़्स के शुद्धीकरण) का बहुत बड़ा साधन है। क्यों कि इस से माया मोह और दुनिया परस्ती की जड़ कट जाती है और ख़ुदा परस्ती और आख़िरत पसन्दी का जज़्बा परवविश पाने लगता है।

22. अर्थात् वह जो कुछ किसी को देता है बदले के उद्देश्य से नहीं देता । उस के नज़दीक किसी की मदद करना उस को एहसान का आभारी करने के लिए नहीं कि उस से किसी न किसी सूरत में उस

का बदला चाहा जाये बल्कि वह ख़ुलूस (शुद्धहृदयता) के साथ और नि:स्वार्थ होकर मदद करता है।

23. अल्लाह तआला के नज़दीक इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में किया गया ख़र्च) वही मान्य है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ उस की प्रसन्नता के लिए किया जाये और ऐसे ही इन्फ़ाक़ से नफ़्स का तज़्किय: होता है। इस के विरुद्ध जो इन्फ़ाक़ किसी पर एहसान धरने या शोहरत (प्रचार) और नाम करने के उद्देश्य से किया जाये उस से न अल्लाह की प्रसन्नता हासिल होती है और न नफ़्स का तज़्किय: (शुद्धिकरण) होता है।

24. अर्थात् जिस व्यक्ति का आचरण यह है उस पर उस का रब इस तरह अपनी कृपा उडेलेगा कि वह ख़ुश हो जायेगा । यह आयत सिर्फ़ दो लफ़्ज़ों की है लेकिन इस के अन्दर बताये गये गुणों और ख़ुबियों वालों के लिए ख़ुशख़बरियों की एक दुनिया छिपी हुई है।

९३. अज़्-ज़ुहा

नाम :- शरू में ''ज़ुहा'' (रोज़े रौशन या प्रकाशमान दिन) की क़सम खाई गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अज़्ज़ुहा'' है।

नाज़िल होने का समय:- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि नुबुव्वत की शुरूआत होने के कुछ ही समय बाद नाज़िल हुई थी जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने हक़ की दअवत की मुशकिलें पहाड़ बनकर खड़ी थीं और रिसालत (Prophethood) को झुठलाने वालों के व्यंग्य कसने और बुरा भला कहने से आप का दिल दुख रहा था।

केन्द्रीय विषय:- सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को शानदार भविष्य और महान उपहारों एवं कृपा से सुसज्जित किये जाने की ख़ुशखबरी देते हुए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तसल्ली का पूरा सामान किया गया है। यह तो है इस सूरह का ख़ास पहलू, लेकिन इस विशेष पहलू के साथ इस का एक साधारण पहलू भी है जो कलाम के मज़मून और उस के अन्दाज़ (भावार्थ) से स्पष्ट है। और वह यह है कि जीवन के संघर्ष में इन्सान को जिन मुशकिलों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ता है या सत्य के मार्ग में जिन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ता है उन को अल्लाह की नाराज़गी ख़याल करना सही नहीं बल्कि यह विपत्ति एवं परीक्षा और आज़माइश के लिए होती है और वह इन्सान के लिए वास्तविक उन्नति के दर्जे पूर्ण करने का साधन हैं। यही इस सूरह का केन्द्रिय विषय हैं।

कलाम की तरतीब:- आयत १ और २ में दिन और रात की शहादत पेश कर के इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है कि अल्लाह तआला ने यह दुनिया बनाई ही इस तरह है कि यहाँ नूर (प्रकाश) भी है और ज़ुल्मत (अन्धकार) भी है। इसी तरह तक़लीफ़ें भी हैं और राहत भी और यह दोनों हालतें आज़माइश के लिए ज़रूरी हैं।

आयत ३ में ऊपर बताई गई हक़ीक़त के अनुकूल यह स्पष्ट किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सत्यमार्ग की जिन कठिनाइयों से दोचार होना पड़ रहा है इस का यह मतलब लेना हरगिज़ सही नहीं कि अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसलल्लम) की तरफ़ से अपनी कृपादृष्टि फेर ली है यह वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से नाराज़ हुआ है।

आयत ४ और ५ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को महान सफलताओं की ख़ुशख़बरी दी गई है।

आयत ६ से ८ में उन कठिनाइयों का वर्णन किया गया है जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नबी बनाये जाने से पहले दो चार हुए एवं ख़ुदा के उन एहसानों का भी जिन के नतीजे में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए राहें खुली।

आयत ९ से ११ में बताया गया है कि उन एहसानात का तक़ाज़ा क्या है अर्थात् इस के नतीजे में तुम्हारा रवैया कमज़ोरों और बेबसों के साथ स्नेह और हमदर्दी का होना चाहिए और ख़ुदा की नेमत का एतिराफ़ (स्वीकरण) और इज़हार करना चाहिए।

९३.सूरह अज़्-ज़ुहा

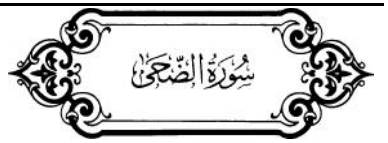

अनुवाद आयतें : ११

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1. **क़सम है प्रकाशमान दिन की,[1]** وَالضُّحَىٰ ﴿١﴾

2. **और रात की जब कि वह छा जाये,[2]** وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ﴿٢﴾

3. **(ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे रब ने न तुम्हें छोड़ा और न तुम से नाराज़ हुआ।[3]** مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ﴿٣﴾

4. **और आख़िरत तुम्हारे लिए दुनिया से कहीं बेहतर है।[4]** وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ﴿٤﴾

5. **और बहुत जल्द तुम्हारा रब तुम्हें वह कुछ प्रदान करेगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे।[5]** وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ﴿٥﴾

6. **क्या यह सत्य नहीं है कि उस ने तुम को अनाथ पाया तो ठिकाना दिया?[6]** أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ﴿٦﴾

7. **और राह से बेख़बर पाया [7] तो हिदायत दी?[8]** وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ﴿٧﴾

8. **और नादार (निर्धन) पाया तो ग़नी (धनी या सम्पन्न) कर दिया ?[9]** وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ﴿٨﴾

9. **अतः तुम अनाथ को मत दबाओ।[10]** فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

10. **और साइल (माँगने वाले) को न झिड़को।[11]** وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

11. **और अपने रब की नेमत का इज़हार करो।[12]** وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर फुट नोट नं.१४

2. यहाँ जो क़समें खाई गई हैं उन से इस उसूली हक़ीक़त को जेहन में बिठाना अभिप्रेत है कि इस संसार की व्यवस्था अल्लाह तआला ने इस तरह बनाई है कि यहाँ हमेशा एक ही हालत बनी नहीं रहती यहाँ दिन की रौशनी भी है और रात का अन्धकार भी ।

ومهما استطال الليل فالصبح واصل

"और रात चाहे कितनी ही लम्बी हो, सुबह प्रकट हो कर रहती है।"

इस लिए जिस तरह रात के अन्धाकार को देख कर किसी का रौशनी से मायूस हो जाना सही नहीं उसी तरह तकलीफ़ और मुसीबत के उमड़ते हुए बादलों को देख कर यह ख़याल करना भी सही नहीं कि ये बादल कभी छटने वाले नहीं हैं । और न इस से यह नतीजा निकालना सही है कि दुनिया की तकलीफ़ निश्चित रुप से अल्लाह तआला की नाराज़गी का नतीजा होती है। बल्कि जिस तरह आज़माइश के लिए रात और दिन दोनों का वजूद ज़रूरी है उसी तरह तक्लीफ़ और राहत दोनों आज़माइश के लिए ज़रूरी है एवं तकलीफ़ें इन्सान की तरबियत (प्रशिक्षण) और उस की छिपी हुई क्षमताओं और प्रतिभाओं को उभारने का महत्वपूर्ण साधन भी हैं ।

3. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब दअवत की शुरूआत फ़रमाई तो मुशकिलें और कठिनाइयाँ पहाड़ बन कर आप के सामने खड़ी हो गईं और आप के इस दावे पर कि आसमान से आप पर वह्य नाज़िल होती है, विरोध का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ । इन्कार करने वाले आप का मज़ाक़ उड़ाने और वयंग्य करने एवं भला बुरा कहने लगे । एक नबी को इन हालात में घिरा हुआ देख कर यह सवाल पैदा होता था कि अगर नबी वास्तव में ख़ुदा का महबूब (प्रिय) है तो उस की राह में यह मुशकिलें कैसी? और फिर जब वह्य कुछ दिनों के लिए रुक जाती तो विरोधी यह व्यंग्य करते कि अल्लाह ने आप को छोड़ दिया है और आप से नाराज़ है। विरोधियों के इन संदेहों को दूर करते हुए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्मीनान और तसल्ली दी जा रही है कि जिन हालात में आप अपने को घिरा हुआ पा रहे हैं वह नुबुव्वत की सरगर्मियों का तक़ाज़ा और अल्लाह की उस महान नीति के अन्तर्गत हैं जिस के अनुसार इस दुनिया की पूरी व्यवस्था चलाई जा रही है। और वह नीति यह है कि इन्सान की आज़माइश हो जिस से अम्बिया अलैहिस्सलाम भी अलग नहीं हैं और इस का तक़ाज़ा यह है कि नर्म गर्म हर तरह के हालात से वास्ता पड़े। एक पैग़म्बर जब सत्यमार्ग की मुशकिलों और विपत्तियों एवं विरोध के तूफ़ान से ग़ुज़रता है तो उस के बहुत बड़े बड़े फ़ायदे हासिल होते हैं। जैसे पैग़म्बर की अख़लाक़ी ख़ूबियाँ (नैतिक विशेषताऐं) निखर कर सामने आ जाती हैं और उस के किरदार की बुलन्दी आसमान को छूने लगती है। जिन दिलों में इन्सानियत जाग रही होती है उन में पैग़म्बर से मुहब्बत और अक़ीदत पैदा हो जाती है और वह उस पर अपनी जानें निछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी तरह पैग़म्बर की हिम्मत और हौसले को देख कर उन के अनुयायियों में भी स्थिरता, मज़बूती, और बहादुरी की सिफ़त पैदा हो जाती है। रहा अल्लाह की वह्य के नाज़िल होने में विलम्ब तो यह भी इस कारण नहीं है कि अल्लाह पैग़म्बर से नाराज़ हो गया है बल्कि वह्य का पूरा मामला अल्लाह की हिकमत और मसलहत पर आधारित है। उस की हिकमत जिस समय और जितनी वह्य का तक़ाज़ा करती है वह नाज़िल कर देता है।

4. यह ख़ुशख़बरी अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस समय सुनाई जब कि आप को बेहद नासाजगार (अत्यन्त प्रतिकूल) हालात से गुज़रना पड़ रहा था और सख़्त

मुश्किलें आप की राह में आड़े थीं । इन हालात में आप के लिए आख़िरत की कामयाबी की ख़ुशखबरी न केवल तसल्ली बल्कि हौसला बढ़ाने का कारण भी थी ।

मालूम हुआ कि अगर आदमी आख़िरत की कामयाबी पर नज़र रखे तो इस से हिम्मत और हौसला पैदा होता है। और सत्यमार्ग की मुशकिलें आसान हो जाती हैं।

ध्यान रहे कि अरबी मूल (Text) में ''अल आख़िरा''और ''अलऊला'' के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं जो ''आख़िरत'' और ''दुनिया'' के लिए क़ुर्आन के पारिभाषिक शब्द (Technical Terms) हैं और क़ुर्आन में जहाँ भी यह शब्द स्वतंत्र रूप से आये है, इसी भावार्थ में आए हैं। इस से पहले कि सूरह अल्लैल आयत १३ में وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ''बेशक आख़िरत और दुनिया दोनो हमारे ही कब्ज़े में हैं'' में भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रयोग हुए हैं।

5. इशारा है आख़िरत के उन हमेशा हमेशा रहने वाले इनामों की तरफ़ जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नवाज़ा जायेगा । वहाँ आप इज़्ज़त और बुलन्दी के जिस पद पर आसीन होंगे और इनाम और कृपा की आप पर जो बारिश होगी उस की एक झलक उन आयतों और हदीसों में देखी जा सकती है जिन में आप के रब की तरफ़ से आप पर की जाने वाली कृपा का वर्णन हुआ है वरना इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने रसूल को जो कुछ देने का वादा फ़रमाया है उस के विस्तार और बुलन्दी की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

6. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यतीम पैदा हुए थे आप अभी गर्भ में ही थे कि आप के पिता अब्दुल्लाह का इन्तिक़ाल हो गया और जब ६ साल के हुए तो आप की माँ आमिना दुनिया से कूच कर गईं। आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश की लेकिन अभी आप आठ साल ही के थे कि दादा का भी इन्तिक़ाल हो गया । उन के बाद आप के चचा अबू तालिब ने आप की ज़िम्मेदारी उठाई और आप के साथ बड़ा अच्छा बरताव किया । यहाँ तक कि उन की दया एवं स्नेह आप की बअसत (नबी होने) के बाद भी बरक़रार रही।

सीरतुन्नबी, इब्ने हश्शाम, भाग, १ पृष्ट १७१, १७९, १८०, १९३)

आप की परवरिश का यह बेहतरीन प्रबन्ध और वह भी एक ऐसे माहौल में जहाँ यतीमों की उपेक्षा (नाक़दरी) की जाती थी अल्लाह तआला की कृपा का ही परीणाम था ।

यहाँ यह पहलू भी विचार करने योग्य है कि अनाथ होने की हालत में यद्यापि तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है लेकिन बाप के सहारे से वन्चित रहने की वजह से आदमी के अन्दर एक तरह का आत्मविश्वास पैदा होने लगता है और इस से बढ़ कर अल्लाह पर विश्वास का जज़्बा पलने लगता है। ग़ौर कीजिये यतीमी की हालत में डाल कर के अल्लाह तआला किस तरह तरबियत का सामान करता है।

7. अरबी मूल (Text) में शब्द ''ज़ाल्लन'' इस्तेमाल हुआ है जो ज़लाज़त (गुमराही) से है। यह लफ़्ज़ हिदायत के मुक़ाबले में कई अर्थों में बोला जाता है। इस का एक अर्थ बेख़बर और अनभिज्ञ होने के भी हैं। अत:अरबी की सब से बड़ी और प्रमाणिक डिक्शनरी ''लिसानुल अरब'' में है।

وضَللت المسجد والدار اذا لم تعرف موضعهما

अर्थात् अगर तुम मस्जिद और घर की जगह से भिज्ञ न हो तो कहोगे, मैं मस्जिद और घर से ज़लालत में (अनभिज्ञ) रहा (देखिए लिसानुल अरब शब्द ज़लल) यहाँ यह शब्द इस अर्थ में प्रयोग हुआ है।

बअसत (नबी चुने जाने) से पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उचित स्वभाव

(Rightful Nature) पर क़ायम थे और तमाम अम्बिया अलैहिस्सलाम का बअसत (नबी चुने जाने से पहले यही हाल होता है कि वह उचित स्वाभाव (Rightful Nature) से विमुखता नहीं बरतते- और इन्सान का उचित स्वभाव अपने रब की पहचान रखता है और उसी को माबूद (पूज्य) क़रार देता है एवं भलाई और बुराई में तमीज़ भी करता है। और यह दोनों ही ख़ूबियाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में पायी जाती थी अत: बअसत (नबी चुने जाने) से पहले आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का ''ग़ारे हिरा'' में एकाग्रता के साथ अल्लाह की इबादत में लीन हो जाना इस बात का सबूत है कि आप तौहीद पर क़ायम थे । इसी तरह आप का पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारना यहाँ तक कि आप क़ौम की नज़र में विश्वास पात्र ठहरे और अमीन (अमानतदार) के उपनाम से पुकारे गये, यह आप की अख़लाक़ी बुलन्दी की खुली दलील है। इस के अलावा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सच्चे दीन के जो अंश उस समय तक बाक़ी रह गये थे जैसे बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का आदर हज इत्यादि, उन पर आप अमल करते थे अत: यह सच्ची घटनाऐं इतिहास से प्रमाणिक है।(सीरतुन्नबी, इब्ने हश्शाम, भाग १ पृष्ट १९७ और२२१) गोया जिस हद तक प्रकृति (Nature) और इब्राहीम के सच्चे दीन की रौशनी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने मौजूद थी आप उस रौशनी में चलते लेकिन आप पर हिदायत की राह पूरी तरह रौशन नहीं थी इस लिए न आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईमान की हक़ीक़त मालूम थी और न शरीअत की विस्तृत जानकारी थी। अत: क़ुर्आन ने इस का स्पष्टीकरण किया है।

مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ (سورۃ الشوریٰ۔۵۲)

(तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है और ईमान क्या है। सूरह अश्-शूरा -५२)इसी हालत को यहाँ ''ज़ाल्ल'' (जो राह से बेख़बर हो) से ताबीर (व्यंजन) किया गया है। दूसरे शब्दों में यह राह की खोज और हक़ की तलाश की हालत थी इस लिए इन ज़लालत को गुमराही के अर्थ में हरगिज़ नहीं कहा जा सकता और ख़ास तौर पर जब कि आप के बारे में मालूम है कि न कभी आप ने ख़ुदा का इन्कार किया और न बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) अपनायी न बुराई से आप को वास्ता रहा और न दुष्कर्म से और न ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी बातिल (असत्य, ग़लत) चीज़ की तरफ़ लोगों को दअवत दी। बुख़ारी (हदीस की एक किताब) में यह घटना वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लन के सामने खाना पेश किया गया जो बुत के नाम पर वध किये हुए जानवर का था । आपने खाने से इन्कार कर दिया और यह देख कर ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील ने भी इन्कार किया । (बुख़ारी, किताबुलमनासिक बाब हदीस ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील)

जहाँ तक इब्राहीमी दीन के कुछ अंशो के बरक़रार रहने का सम्बन्ध है अल्लामा इब्ने हजर बुख़ारी की टीका में लिखते हैं:-

انما كان عند اهل الجاهلية بقايا من دين ابراهيم

''जाहिलिय्यत के लोगों के पास इब्राहीमी दीन के कुछ अंश ही बाक़ी रह गये थे ।'' (फ़तहुलबारी भाग ७ पृष्ट ११३)

8. हिदायत से मुराद अल्लाह की वह्य है जिस ने सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पूरी तरह आप पर रौशन कर दी ।

9. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बचपन यतीमी की हालत में गुज़रा और जब आप जवान हुए तो निर्धनता की ही हालत रही । यहाँ तक कि क़ुरैश की सब से अधिक मालदार स्त्री ने आप के साथ मुजारिबत (Partnership) का मामला किया और आप (सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) को शाम (Syria) के व्यवसायिक सफ़र में ख़ूब लाभ हुआ । हज़रत ख़दीजा ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दयानतदारी (सत्यनिष्ठा) शराफ़त और अच्छे अख़लाक़ से प्रभावित होकर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से निकाह कर लिया जिस के बाद आप की आर्थिक स्थिती काफ़ी अच्छी हुई। (सीरतुन्नबी, इब्ने हश्शाम, भाग १, पृष्ट नं.२०२ से २०६)

यह जो कुछ हुआ सांसारिक नियम के अनुसार हुआ किन्तु वास्तव में यह अल्लाह तआला ही की कृपा का फल था कि निर्धनता की दशा सम्पन्नता से बदल गई।

10. ऊपर अल्लाह तआला ने अपने एहसानों का ज़िक्र फ़रमाया था अब संक्षेप में उन के तक़ाज़े बयान किये जा रहे हैं। इस सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया गया है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने तुम्हारी यतीमी की हालत में तुम्हें पनाह दी उसी तरह तुम भी यतीमों के हुक़ूक़ के रखवाले बन जाओ । किसी यतीम के साथ सख़्ती से पेश न आओ । इस हिदायत का संबोधन यद्यापि सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है किन्तु आप के माध्यम से यह हिदायत क़ुर्आन के हर पढ़ने वाले के लिए है और इस में धन के लोभियों के इस रवैये की निन्दा भी है जो यतीमों और कमज़ोरों के सिलसिले में वह अपनाते हैं। अर्थात् उन को तुच्छ जानकर उन के साथ आदर का बरताव नहीं करते, उन को दबाते हैं और उन के हुक़ूक़ चट कर जाते हैं।

11. यह उस एहसान का तक़ाज़ा है जो ऊपर आयत ८ में बयान हुआ अर्थात् ''निर्धन'' पाया तो सम्पन्न कर दिया''। इस एहसान का हक़ यह है कि मोहताजों के साथ अख़लाक़ से पेश आया जाये और अगर किसी माँगने वाले की मदद न की जा सकती हो तो अच्छे अन्दाज़ से असमर्थता प्रकट कर दी जाए और उन लोगों का तरीक़ा हरगिज़ न अपनाया जाये जो माल के घमंड में गरीबों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं और माँगने वालों को डाँटते और झिड़कते हैं।

इस आज्ञा का पालन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतनी कड़ाई के साथ की, कि न केवल यह कि किसी माँगने वाले को कभी डाँटा नहीं बल्कि ''नहीं'' कह कर उसे खाली हाथ वापस लौटाना भी पसन्द न फ़रमाते। अत: हज़रत जाबिर का बयान है की :-

مَاسُئِلَ رسولُ اللهِ ﷺ شَيْئًا قَطُّ فَقَالَ لَا۔

(بخاری کتاب الادب)

(कभी ऐसा नहीं हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कोई चीज़ माँगी गई हो तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हो ''नहीं'')

और हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हिदायत भी मिलती है कि

اِتَّقُوا لنّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمَرَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ

فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ۔ (مسلم کتاب الزکوٰۃ)

''जहन्नम से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा सदक़ा कर के बचने का सामान कर सको और अगर यह भी मयस्सर न हो तो अच्छी बात ही कहो ।)

मतलब यह कि माँगने वाले को डाँटने के बजाय अच्छी बात कह कर असमर्थता प्रकट कर दो।

12. नेमत से मुराद साधारण नेमतें भी हैं और विशेष नेमत हिदायत भी है।

ऊपर आयत ७ में हिदायत से नवाज़े जाने का जो ज़िक्र हुआ यहाँ उसी का हक़ बयान किया जा रहा है। यद्यपि तरतीब (क्रम) के लिहाज़ से इस का स्थान एक आयत पहले था लेकिन बात को दृढ़

करने के लिए इस को अन्त में बयान कर दिया गया, ताकि इस की अहमियत अच्छी तरह स्पष्ट हो जाये और उस पर ध्यान केन्द्रित हो । अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर को जिन मेहरबानियों से सुसज्जित किया उन में उस की सब से बड़ी मेहरबानी हिदायत ही है। यह हिदायत क़ुर्आन की सूरत में आप को मिली और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को रिसालत पद के (मंसब) से प्रतिष्ठित किया गया । यहाँ इसी नेमत के इज़हार की ताक़ीद की गई है। मतलब यह है कि अल्लाह तआला की इस महान कृपा का कि उस ने तुम को पैग़म्बर बनाया और क़ुर्आन जैसी महान और हिकमत से भरी किताब प्रदान की, लोगों में इस का ख़ूब चर्चा करो, इस पैग़ाम को उन तक पहुँचाओं और उन्हें उस राह की तरफ़ जो अल्लाह तआला ने अपनी किताब के द्वारा तुम पर खोली है, दअवत दो । यह हिदायत यद्यापि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित कर के दी गयी है लेकिन आप के माध्यम से इस का सम्बोधन इस्लाम के अनुयाईयों से भी है। उन्हें क़ुर्आन की जो नेमत पैग़म्बर के माध्यम से मिली है। वह छिपाने के लिए नहीं है बल्कि इज़हार और बयान करने के लिए है ताकि इस का फ़ैज़ (लाभ) सर्वसाधारण में फैले ।

सूरह अलम्-ऩश्रह

९४. अलम्-ऩश्रह

नाम :- सूरह की शुरूआत अलम् नश्रह के अल्फ़ाज़ से हुई है। इस मुनासिबत से यह अल्फ़ाज़ इस सूरह का नाम क़रार पाये हैं।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि उस दौर में नाज़िल हुई जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अन्दर नुबुव्वत के कार्यभार की भारी ज़िम्मेदारियाँ संभालने का हौसला पैदा हो गया था जिस के नतीजे में विरोध के तूफ़ान से ग़ुजरना आप के लिए आसान हो गया था । नुबुव्वत का चर्चा भी सर्व साधारण में हो गया था और आप की दअवत पर हाथ उठाने वालों (हामी भरने वालों) की एक तादाद भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आसपास जमा हो गई थी ।

केन्द्रीय विषय :- यह सूरह पिछली सूरह (अज़्-ज़ुहा) का पूरक है पिछली सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ेहनी परेशानी को दूर करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने उन एहसानों का हवाला दिया है जिन से उस ने अपने नबी को नवाज़ा । इस सूरह में आत्मविश्वास और आत्म संतोष (शरह सद्र) अर्थात् सीना खोल देने जैसी बड़ी नेमत से पुरस्कृत किये जाने का ज़िक्र करते हुए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इत्मीनान दिलाया है कि हर मुशकिल के बाद आसानी है और यही इस सूरह का केन्द्रीय बिन्दु है अर्थात हर मुशकिल के बाद आसानी की राह खुलती है। गोया मुशकिलों के साथ आसानियाँ लगी हुई है। इस लिए एक दाअी (आहवानकर्ता) को सत्यमार्ग की मुशकिल देख कर हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में अल्लाह तआला के उस एहसान का वर्णन है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आत्मसंतोष एवं आत्मविश्वास (शरह सद्र अर्थात सीना खोल देने) की नेमत से पुरस्कृत किया और वह बोझ उतार दिया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कमर तोड़े दे रहा था ।

आयत ४ में यह ख़ुशख़बरी सुनाई गई है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख्याती एवं प्रसिद्धि बुलन्द कर दी गई है।

आयत ५ और ६ में इत्मीनान दिलाया गया है कि सत्यमार्ग की हर मुशकिल आसानियों की भूमिका है।

आयत ७ और ८ में अत्यन्त महत्वपूर्ण हिदायत दी गई है कि जब अपनी व्यस्तता से तुम छुट्टी पाओ तो अल्लाह की इबादत में सरगर्म हो जाओ और उसी से लौ लगाओ क्यों कि तमाम उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की सीमा यही है।

९४.सूरह अलम् नश्रह

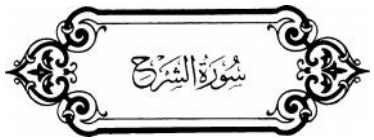

अनुवाद आयतें :८

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. **(ऐ पैग़म्बर !) क्या हम ने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया?[1]** اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١

2. **और तुम पर से वह बोझ उतार नहीं दिया,** وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝٢

3. **जो तुम्हारी कमर तोड़े दे रहा था?[2]** الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣

4. **और तुम्हारा ज़िक्र (चर्चा ध्वनि) बुलन्द नहीं किया।[3]** وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

5. **तो (देखो) मुश्किल के साथ आसानी है,** فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥

6. **बेशक (निस्संदेह) मुश्किल के साथ आसानी भी है।[4]** اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦

7. **अत: जब तुम फ़ारिग़ (कार्यमुक्त) हो जाओ तो इबादत में सरगर्म हो जाओ,[5]** فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧

8. **और अपने रब ही से लौ लगाओ।[6]** وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

1. शरह सद्र (सीना खोल देने) से मुराद दिल के इत्मीनान तथा हिम्मत और हौसला की मानोदशा है जो ईमान और अन्तदृष्टि (Insight या बसीरत) के नतीजे में पैदा होती है। यह मनोदशा शक्ति और क्षमता का स्रोत है जिस के हासिल हो जाने के बाद सत्यमार्ग की मुशकिलों को बर्दाश्त करना, विरोध का सामना करना और रोड़ा अटकाने वाली शक्तियों से टक्कर लेना आसान हो जाता है। सूरह अनआम में इरशाद हुआ :-

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ

''जिस व्यक्ति को अल्लाह हिदायत देने का इरादा करता है उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। (अन्आम आयत १२५)

अत: सीना खुल जाना सरासर अल्लाह की तौफ़ीक़ है। यहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शरह सद्र (आत्म विश्वास एवं आत्मसंतोष) की नेमत से पुरस्कृत किये जाने का जो ज़िक्र हुआ है उस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तमाम ज़ेहनी उलझन को दूर कर दिया और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वह मज़बूत इरादे, व विशाल हौसला और अन्तदृष्टि (Insight) की वह ज्योति प्रदान की जो नुबुव्वत की महान ज़िम्मेदारियों को संभालने के लिए आवश्यक थी ।

सूरह ''अज़्-ज़ुहा'' की आख़री आयत में रिसालत की नेमत के इज़हार और एलान की जो हिदायत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दी गई है वह एक भारी भरकम और कमरतोड़ ज़िम्मेदारी थी क्योंकि एक ऐसे माहौल में जहाँ लोग जाहिलिय्यत (अज्ञानता) की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और बुत परस्ती और शिर्क जिन की घुट्टी में पड़ा हुआ था, तौहीद और आख़िरत की दअवत पेश करना और ख़ास तौर से यह कहना कि अल्लाह ने मुझे रसूल बना कर भेजा है कोई आसान काम न था बल्कि कठिनतम और जान घुलाने का काम था अत: जैसे ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दअवत की शुरुआत की हर तरफ़ से विरोध का एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ और आप की रिसालत का लोगों ने न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि वह ख़ूब मज़ाक उड़ाने लगे । दअवत और तब्लीग़, इज़्हारे-हक़ (सत्यभिव्यक्ति) और रिसालत के कर्तव्यों को पूर्ण करने की यही वह कमरतोड़ ज़िम्मेदारी थी जिस को अदा करने की चिन्ता में आप इस तरह डूबे रहते कि गोया ग़मों का पहाड़ आप पर टूट पड़ा है। बाद के मरहले में यह स्थिती नहीं रही क्यों कि शरह सद्र ने ज़बरदस्त शक्ति एवं ढारस का सामान किया, हौसले की बुलन्दी ने मुश्किल काम को भी आसान कर दिया एवं मुख़लिस (विश्वासपात्र एवं सत्यप्रिय) साथियों के एकत्रित हो जाने से दिल को इत्मीनान और सुकून नसीब हुआ इसी इत्मीनान और सुकून (आत्मासंतोष) की मनोदशा जो बाद के मरहले में पैदा हुई बोझ उतार देने से ताबीर (प्रकट) किया गया है। और वास्तविक स्थिती का ज्ञान अल्लाह ही को है।

3. यह सब से बड़ा सम्मान है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुनिया में प्रदान किया गया ''रफ़अ ज़िक्र''(ज़िक्र को बुलन्द किया) का मतलब सिर्फ शोहरत (प्रचार) नहीं है बल्कि इस में अर्थों की गहराई और बड़े भेद है। एवं ख़ुशख़बरियों की एक दुनिया छिपि हुई है। इस के कुछ पहलू ये हैं कि आप का ज़िक्र मुबारक बुलन्द सतह से होगा, आप की रिसालत का चर्चा आम होगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम अत्यन्त अदब और आदर से लिया जायेगा, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत की गवाही दिये बग़ैर कोई व्यक्ति भी इस्लाम में दाख़िल नहीं हो सकता । अज़ान में आप के नाम की सदा (ध्वनि) बराबर गुँजती रहेगी, कोई नमाज़ आप के अच्छे ज़िक्र से खाली नहीं होगी, आप मानवता के संसार को मुक्ति दिलाने वाले कहलाएंगे, कोई

आप को यतीमों का रक्षक एवं अभिभावक कहेगा तो कोई ग़ुलामों का मौला, कहीं आप का तज़किरा (चर्चा) अख़लाक़ सिखाने वाले और नफ़्स को पवित्र करने वाले की हैसियत से होगा तो कही इतिहास रचने वाले क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की हैसियत से, कही आप सरवरे आलम (विश्वनायक) के उपनाम से पुकारे जायेंगे तो कहीं रहमतुल लिलआलमीन (सारेजगत के लिए रहमत) के उपनाम से, क़ौमें आप को हादी-ए-आज़म के नाम से याद करेंगी तो उलेमा और फ़ुज़ला नूरे मुजस्सम के नाम से,आप की सीरत (जीवनी) दिलों पर अंकित होगी और आप की हयाते-तैय्यबा (पवित्र जीवनी) के ज़िक्र से महफिलें महक उठेंगी, आप की शान में नअत पढ़ना लोगों के लिए गर्व की बात होगी और ''बलग़लउ्ला बिकमालिही''जैसे कलमे लोगों की ज़बान पर होंगे । ईमान वालों को आप से गहरी अक़ीदत (श्रद्धा) होगी और रात दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में दरूद एवं सलाम का तोहफ़ा पेश करते रहेंगे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (उन पर ख़ुदा का दरूद रहमत और सलाम हो)

इस आयत के नाज़िल होने के समय तो ''रफ़अ ज़िक्र'' की एक झलक ही देखी जा सकती थी लेकिन बाद में जब जगत को जगमगा देने वाले सूरज की तरह इस की सच्चाई जगमगा उठी तो किसी को इन्कार की मजाल न रही । सिवाय इस के कि किसी ने अपनी आँखे ही बन्द कर ली हों ।

कलाम के मौक़े के लिहाज़ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह इत्मीनान दिलाना अभिप्रेत है कि ऐ नबी ! तुम्हारे विरोधी तुम्हें कितना ही झुठलाऐं और तुम्हारा कैसा ही मज़ाक़ उड़ाऐं अल्लाह ने तो तुम्हारी शान बुलन्द की है और अपने नेक बन्दों में तुम्हारे लिए कमाल दर्जो की मक़बूलियत रख दी है। अत: तुम्हारे ज़िक्र से वातावरण गूँज रहा है लिहाज़ा तुम विरोध की कोई परवाह न करो और इत्मीनान रखो कि वह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे ।

4. यह वह अहम हक़ीक़त है जिस को वास्तव में ज़ेहन में बिठाना अभिप्रेत है। इस सूरह में एवं पिछली सूरह (अज़-ज़ुहा) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़िन्दगी से सम्बन्धित जिन वाक़िआत (वस्तुस्थिती) का हवाला दिया गया है वह इस बात का खुला सबूत है कि अल्लाह तआला निर्धन्ता के बाद सम्पन्नता, तकलीफ़ के बाद राहत और मुशकिलों के बाद आसानी की राह खोलता है। इस हक़ीक़त को पेश कर के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्मीनान दिलाया गया है कि मुशकिलें आगे भी पेश आ सकती हैं लेकिन आप परेशान न हों क्यों कि हर मुशकिल आसानी की भूमिका है और कठिनाई, आराम की ज़मानत । आज़माइश के इन मरहलों से गुज़र कर ही आप उस मन्ज़िल को पहुँच सकेंगे जहाँ आसानियाँ ही आसानियाँ होंगी ।

इस से यह उसूली हक़ीक़त खुल कर सामने आती है कि आदमी सत्यमार्ग में पेश आने वाली मुशकिलों से परेशान और दुखी न हों बल्कि इत्मीनान रखें, कि मुशकिलों के बाद आसानियों का दौर भी आयेगा और आसानियों का दौर इतना करीब है कि गोया साथ ही चला आ रहा है।

''मुशकिल के साथ आसानी भी है'' यह बात दो बार दोहराई गई ताकि बात साफ़ हो जाए कि हक़ के रास्ते में मुशकिलें बार बार पेश आ सकती हैं लेकिन हर मुशकिल के बाद आसानी की राह ज़रूर खुलेगी शर्त यह है कि आदमी हिम्मत न हारे ऐसे ही हालात से गुज़र कर ईमान वाले अपनी मन्ज़िले मक़सूद (अमीष्ट लक्ष्य) को पहुँच सकते हैं। अर्थात् उस मक़ाम को जहाँ मुशकिलों का गुज़र ही नहीं और जिस का परिभाषिक नाम (Technical Term) जन्नत है।

5. फ़ारिग़ होने के अर्थ में हर तरह की व्यस्तता से छुट्टी पाना शामिल है लेकिन यहाँ विशेष रूप से इशारा दअवती सरगर्मियों से छुट्टी पाने की तरफ़ है क्योंकि इस से पहले की सूरह की आख़िरी आयत وَاَمَّابِنِعْمَةِرَبِّکَ فَحَدِّثْ۔ में दअवत और तब्लीग़ की ज़िम्मेदारियाँ अदा करने की हिदायत

दी गई थी और यहाँ इसी सिलसिले में फ़रमाया गया कि ''जब तुम फ़ारिग़ (कार्य मुक्त) हो जाओ तो इबादत में सरगर्म हो जाओ'' मतलब यह है कि जब कोई और व्यस्तता न रहे तो अल्लाह की इबादत में लीन हो जाओ, कि सब से बड़ी वयस्तता अल्लाह की इबादत ही है इसी लिए इस निर्देश (हिदायत) के पालन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत में लीनता इतनी बढ़ गई थी कि रात में लम्बे क़याम (नमाज़ में खड़े रहने) की वजह से आप के पाँव में वरम पड़ जाते ।

عن عائشه رضی الله عنها قالت : كان النّبی صلى الله عليه وآله وسلم يقوم من
الليل حتى تتفطر قدماه، فقلت له: لم تصنع هذا يا رسول الله
وقد غفر لک ما تقدم من ذنبک وما تاخر؟ قال: افلا اكون
عبداً شكوراً۔ (بخاری مسلم)

''हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में इतना लम्बा क़याम फ़रमाते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में वरम पड़ जाते । मैं ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप इतना लम्बा क़याम क्यों फ़रमातें हैं जब कि आप के अगले पिछले सब गुनाह बख़्श दिये गये हैं। फ़रमाया क्या मैं शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दा न बन जाऊँ ''।

इस से यह बात अच्छी तरह साफ़ हो जाती है कि इस्लाम में इबादत का मक़ाम क्या है। यद्यपि शरीअत के सभी आदेश अपनी जगह महत्व रखते हैं लेकिन जो चीज़ तमाम आदेशों पर वरीयता रखती है । वह इबादत ही है अर्थात् नमाज़, ज़िक्र, दुआ जैसी चीज़ कि यह इबादत निश्चित समय पर ज़रूरी है और इस समय भी जब कि दूसरी व्यस्तताओं से आदमी छुट्टी पाये। दुसरे शब्दों में ईमान वालों को सब से अधिक जिस काम में रुचि होनी चाहिए और जो काम नियमित करते रहना चाहिए वह अल्लाह की इबादत ही है। अगर अन्न और पानी इन्सान के ज़िन्दा रहने के लिए ज़रूरी है तो उस से कहीं ज़्यादा ज़रूरी साँस लेने की क्रिया है। अगर एक मिनट के लिए आदमी साँस न ले तो वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा । इसी तरह शरई आदेश चाहे वह आदेश दअवत और तबलीग़ से सम्बन्धित हों या शिक्षण और प्रशिक्षण से सम्बन्धित, व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित हो या सामाजिक जीवन से सम्बन्धित, अगर इस्लामी जीवन व्यतीत करने के लिए इन की पाबन्दी ज़रूरी है तो अल्लाह की इबादत और पूजा इस से अधिक आवश्यक है। यही कारण है कि दूसरे आदेशों के पालन के सिलसिले में हालात के हिसाब से जिम्मेदारियों में कमी बेशी होती रहती है। लेकिन नमाज़ मोमिन की ज़िन्दगी का एक अटूट हिस्सा और एक अभिन्न अंग है और इस की जितनी वह तैयारी करता है उतना ही उस का सम्बन्ध अल्लाह से मज़बूत हो जाता है यहाँ तक कि नमाज़ उस की आँखों की ठंडक बन जाती है।

6. अर्थात् अपने रब ही की ओर आकर्षित हो जाओ, उस को अधिक से अधिक याद करो, उस की तस्बीह (पाकी बयान) करो और हम्द (गुण्गान) करो, उस के कलाम की तिलावत (Recitation) करो उस से क्षमा याचना (इस्तिग़फ़ार) करो और विनम्रता के साथ उस से प्रार्थना करो, दुआऐं माँगों ।

यह हिदायत यद्यापि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के दी गई है मगर यह सब के लिए आम है और इस से जो अहम तरीन हक़ीक़त खुल कर सामने आती है वह यह है कि तमाम उद्देश्यों की सीमा अल्लाह से लौ लगाना या दूसरे शब्दों में अल्लाह से सम्बन्ध (ताअल्लुक़ बिल्लाह) है ।

९५. अत्-तीन

नाम :- पहली आयत में ''तीन'' (इन्जीर) की क़सम खायी गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अत्-तीन है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और इस के मक्की होने को आयत नं.३ प्रामाणित करती है जिस में ''इस अमन वाले शहर'' की क़सम खायी गई है जिस से तात्पर्य ज़ाहिर है कि शहर मक्का ही है। मज़मून पर ग़ौर करने से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- कर्मों का फल है जिस का औचित्य बहुत ही मनमोहक अन्दाज़ में स्पष्ट किया गया है ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में उन स्थलों को शहादत में पेश किया गया है जो अत्यन्त शान और आदर वाले पैग़म्बरों की याद ताज़ा करते हैं और जहाँ से हिदायत की रौशनी फैली ।

आयत ४ से ६ में यह हक़ीक़त बयान की गई है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त (बनावट) पर पैदा किया है ताकि वह अपने को उस ऊँचे स्थान के योग्य साबित करे जहाँ उस का रब उसे पहुँचाना चाहता है, मगर उस ने पस्ती (गिरावट) की राह अपनायी इस लिए अल्लाह तआला ने उसे बेहद पस्ती के गढ़े में फेंक दिया । अलबत्ता जिन लोगों ने अपने को उच्च स्थान के योग्य साबित कर दिया वह अपने मक़सद में कामयाब हुए । उन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से कभी न ख़त्म होने वाले इनाम का वादा है।

आयत ७ और ८ में इस बात पर ग़ौर करने का न्यौता दिया गया है कि जब इन्सानों में यह दो अलग अलग और विपरीत कार्यपद्धति पाई जाती हैं तो दोनों का अन्जाम एक जैसा कैसे होगा?या यह बात किस तरह सही हो सकती है कि सिरे से कोई अन्जाम होगा ही नहीं । इस का मतलब तो यह हुआ कि अल्लाह के नज़दीक न्याय और इन्साफ़ नाम की कोई चीज़ नहीं है, हालाँकि यह बात सरासर अनुचित है क्यों कि अक़्ल (बुद्धि) और प्रकृति दोनों की गवाही यह है कि अल्लाह तमाम हाकिमों से बढ़ कर हाकिम है फिर जो सब से बड़ा हाकिम हो वह इन्साफ़ कैसे नहीं करेगा?

९५.सूरह अत् -तीन

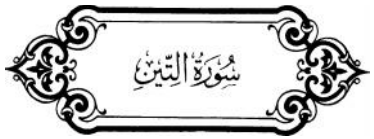

अनुवाद आयतें :८

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١

1. क़सम है,[1] इन्जीर और ज़ैतून की,[2]

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢

2. और तूरे-सीनीन की,[3]

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝٣

3. और इस अमन वाले शहर की,[4]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤

4. निस्संदेह हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त (बनावट) पर पैदा किया।[5]

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥

5. फिर उसे पस्त तरीन (सब नीचों से नीच) हालत की तरफ़ फेर दिया,[6]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

6. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और नेक अमल (सुकर्म) करते रहे उन के लिए ऐसा इनाम है जिस का सिलसिला कभी ख़त्म न होगा।[7]

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧

7. तो (ऐ पैग़म्बर !) इस के बाद कौन है जो तुम्हे जज़ा और सज़ा के मामले में झुठलाता है? [8]

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं ?[9]

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिये सूरह तकवीर फुट नोट १४

2. यहाँ इन्जीर और ज़ैतून का वर्णन उस क्षेत्र के लिए संकेत है जहाँ यह दोनों चीज़े अधिक मात्रा में पैदा होती हैं, अर्थात् बैतुलमुक़द्दस की सरज़मीन । इस का समर्थन इस बात से भी होता है कि इस के बाद तूरे-सीना और अमन वाले शहर की क़सम खायी गई है। इस मुनासिबत से इन्जीर और ज़ैतून से मुराद उन की पैदावार का क्षेत्र ही हो सकता है।

फ़िलस्तीन की सरज़मीन इन्जीर और ज़ैतून की पैदावार के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रही है, अत: पुराने नियम में है।

''क्यों कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है-------- फिर वह गेहूँ, जौ, द्राक्षा (अंगूर) अंजीरों और अनारों का देश है और तलवाली जलपाई (रौग़नदान ज़ैतून) और मधु (शहद) का भी देश है।'' व्यवस्थाविवरण ८: ७,८)

और नये नियम में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इंजीर के पेड़ के पास से गुज़रने और उस की मिसाल बयान करने का ज़िक्र कई जगहों पर हुआ है जैसे मरकुस रचित सुसमाचार के अध्याय ११: १२,१३,१४ में और लूका रचित सुसमाचार के अध्याय २१:२९ से ३३ में और ज़ैतून के पहाड़ का वर्णन तो मौजूदा इन्जीलों में इतनी अधिकता से हुआ है कि उस के एक परिचित और प्रसिद्ध स्थान होने में किसी संदेह के पूर्व गुन्जाइश बाक़ी ही नहीं रहती । यह मशहूर पहाड़ येरुश्लम के पूर्व की ओर है।

"Mount of Olives: ------A hill which is before Jerusalem on the east." -(A Dictionary of the Bible. – p. 554).

इस पहाड़ पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले जाते और अपने शागिर्दों को शिक्षा देते । इस सिलसिले में आप ने अत्यन्त प्रभावपूर्ण भाषण दिये हैं जो मौजूदा इन्जील में नक़ल किये गये हैं और जो जैतून के पहाड़ पर दिये गये थे ।

अत: इन्जीर के क्षेत्र में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने जो दअवत पेश की और जैतून के पहाड़ पर आप ने जो पाठ दिया उस में आख़िरत के इनाम और सज़ा की विस्तृत कल्पना प्रस्तुत की गई थी । मिसाल के तौर पर कुछ उदाहरण देखिए :-

''तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा, धन्य हो तुम जो दीन हो । क्यों कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है। धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो,क्यों कि तृप्त किये जाओगे, धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्यों कि हंसोगे--------क्यों कि देखो तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफ़ल है--------परन्तु हाय तुम पर, जो धनवान हो, क्यों कि अपनी शान्ति पा चुके। हाय, तुम पर, जो अब तृप्त हो, क्यों कि भूखे होंगे । अफ़सोस तुम पर, जो अब हँसते हो, क्यों कि शोक करोगे और रोओगे-------क्यों कि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जायेगा-------- कोई अच्छा पेड़ नहीं । जो निकम्मा फल लाए और न तो कोई निकम्मा पेड़ है जो अच्छा फल लाए । हर एक पेड़ अपने अपने फल से पहचाना जाता है, क्यों कि लोग झाड़ियों से इन्जीर नहीं तोड़ते।'' (लूका ६:२० से ४४)

''जब वह ज़ैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था, तो पतरस और याक़ूब और यूहन्ना और आन्द्रियास ने अलग अलग जा कर उस से पूछा कि हमें बता कि ये बातें कब होंगी?---------उन दिनों में उस कलेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा और चाँद प्रकाश न देगा और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जायेंगी------- अत: इन्जीर के पेड़ से यह दृष्टाँत सीखो । जब उस की डाली कोमल हो जाती, और पत्ते निकलने लगते हैं,

तो तुम जान लेते हो कि ग्रिीष्म काल निकट है। इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हों लेंगी तब तक यह लोग जाते न रहेंगे। (यह पीढ़ी जाती न रहेगी) आकाश और पृथ्वी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी । उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता ।'' (मरक़ूम १३:३ से ३२)

यह अनन्त दंड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।''(मत्ती २५:४६)

बाइबिल के इन उदाहरणों में ज़ैतून और इन्जीर दोनों का न केवल ज़िक्र मौजूद है बल्कि साथ ही क़ियामत और इनाम एवं सज़ा का बयान भी । क़ुर्आन का इशारा ''तीन'' और ज़ैतून की क़सम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के इसी पाठ और इसी शिक्षा की ओर है। और ये शब्द संकेत के तौर पर इस लिए प्रयोग किये गये हैं ताकि वह माहौल चित्रित हो कर सामने आ जायें जिस में ईनाम और सज़ा का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत किया गया था और जहाँ इन्जिल नाज़िल हुई थी । यह वार्ता की एक भावपूर्ण शैली है ताकि बात अच्छी तरह मस्तिष्क में बैठ जायें ।

3. इस का दूसरा नाम तूरे सीना है। कोहे-तूर जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम को शरीअत प्रदान हुई थी, प्रायद्वीप सीना में स्थित है। बनी इस्राईल मिस्र से निकलने के बाद सीना की पहाड़ियों में ठहरे हुए थे। तूरे-सीनीन से तौरात की ओर इशारा है जिस में विस्तार के साथ यह बात प्रस्तुत की गई थी कि क़ियामत के दिन इनाम और सज़ा का मामला ज़रूर पेश आयेगा ।

4. मुराद शहर मक्का है जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ के परिणाम अमन (शान्ति) वाला क़रार पाया और उस की यह हैसियत हमेशा बरक़रार रही । यहाँ तक कि अज्ञानता काल (जाहिलिय्यत के ज़माने) में भी यहाँ लड़ाई मना (वर्जित) थी । इस की यह विशेषता कि यह अमन वाला है इस बात की ओर दिशा दिखलाती है कि इन्सान की बुलन्दी का राज ख़ुदा की ठहराई हुई मर्यादाओं का पास और लिहाज़ करने में है और उस की अवज्ञा इन्सान के लिए अपमान का कारण हैं।

''बलदिल अमीन'' (अमन वाला शहर) इस बात का इतिहासिक प्रमाण है कि यहाँ से हिदायत की रौशनी फ़ैली है। और हिदायत का एक महत्वपूर्ण अंश आख़िरत की जज़ा और सज़ा पर ईमान लाना था । और जो सहीफ़ा (पवित्र ग्रंथ) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया गया था उस में जज़ा और सज़ा का यह तसव्वुर शामिल था । (देखिए सूरह आला फुट नोट १९)

5. बेहतरीन साख़्त पर पैदा करने का मतलब यह है कि जिस उद्देश्य के लिए इन्सान को पैदा किया गया है उस के लिहाज़ से उसे अत्यन्त उचित साख़्त (बनावट) प्रदान की गई है। शरीर भी बहुत ही उच्च कोटि का दिया गया है और उस में क्षमता और योग्यता भी उच्च कोटि की रख दी गई है। फिर बुद्धि एवं विवेक और ज्ञान एवं नीति की प्रतिभाओं ने तो गोया उस के सर पर अशरफ़ुल मख़्लूक़ात (तमाम सृष्टि में सर्वश्रेष्ट) का ताज रख दिया है। वह न पैदाइशी गुनहगार हैं और न उस का स्वभाव बुराइयों को पसन्द करता है बल्कि सत्य यह है कि उसे बिलकुल उचित, सीधी और सुदृढ़ प्रकृति पर पैदा किया गया है। और भलाई और बुराई की पहचान उस को समर्पित कर दी गई है। भलाई की प्रवृत्ति उस के अन्दर अवश्य पाई जाती है लेकिन जहाँ तक उस की वास्तविक प्रकृति एवं स्वभाव का सम्बन्ध है वह भलाई को ही पसन्द करने वाला है।

इन्सान को यह बेहतरीन साख़्त (बनावट) जो प्रदान हुई है वह एक अल्लाह की ज़बरदस्त कारीगरी और उस की दया का परिणाम है और अभिप्रेत यह है कि इन्सान इन प्रतिभाओं से काम लेकर वह ज़िम्मेदारियों पूरी करे जो ख़ुदा ने उस के सुपुर्द की है और वह गुण अपने अन्दर पैदा करे जो इन्सानियत का कमाल (कौशल) हैं। ताकि वह आने वाले जीवन में अपने रब के कभी न ख़त्म होने वाले इनामों का अधिकारी ठहरे। स्पष्ट हुआ कि आख़िरत की जज़ा और सज़ा घटित होकर रहेगी । इस की सत्यता के प्रमाण हैं और इस की यह दअवत कि इस कल्पना के आधार पर अपने जीवन संवारो कोई अनोखी दअवत नहीं है जो पहली बार प्रस्तुत की गई हो बल्कि इस से पहले भी यही दअवत अम्बिया अलैहिस्सलाम पेश करते रहे हैं। अत: इन शान एवं आदर वाले पैग़म्बरों ने जिन से बड़ी बड़ी मिल्लतें सम्बन्धित है अर्थात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने अनुयाईयों को इसी की शिक्षा दी थी । इन्जीर और ज़ैतून की सरज़मीन (बैतुलमक़दिस) गवाह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की अदालत के तसव्वुर को उजागर कर के पेश किया था । और ज़ैतून के पहाड़ पर अपने चेलों को यह शिक्षा दी थी कि तुम्हारे प्रयत्नों एवं संघर्ष का उद्देश्य आख़िरत की प्राप्ति होना चाहिए। जज़ा और सज़ा की हक़ीक़त इन्जील में बड़े प्रभावपूर्ण ढंग से बयान हुई है।

इसी तरह तूरे-सीना गवाह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर जो किताब-तौरात-नाज़िल की गई थी । उस में भी इस हक़ीक़त को खोल कर बयान किया गया था । और आप ने बनी इस्राईल को जो पाठ कोहे-तूर के दामन में दिया था और उन से शरीअत की पाबन्दी का प्रण (अहद) लिया था उस में आख़िरत की जज़ा और सज़ा का यह बुनियादी तसव्वुर पूरी तरह शामिल था । और मक्का शहर का इतिहास गवाह है कि उस की नीव रखने वाले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जज़ा और सज़ा के तसव्वुर (कल्पना) ही की बुनियाद पर एक नये शहर एक नया समाज की आधार शिला रखी थी । इब्राहीमी ग्रंथ (सहीफ़े) में आख़िरत पर ईमान की दअवत स्पष्ट रुप से मौजूद थी और उन्हों ने जो आवाज़ बुलन्द की वह आख़िरत की सफ़लता और मुक्ति की तरफ़ दौड़ने की ही आवाज़ थी । इन ऐतिहासिक तथ्यों से साबित होता है कि :-

प्रथम :- जिस तरह अम्बिया अलैहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दअवत दी थी उसी तरह इनाम और सज़ा पर विश्वास रखने का न्योता भी दिया था । हज़रत ईसा, हज़रत मूसा और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने शिक्षा और निर्देश के जो केन्द्र स्थापित किये थे वह अपने अन्दर इस शिक्षा का ऐतिहासिक प्रमाण रखते हैं।

द्वितीय :- क़र्मों के प्रतिफ़ल का इन्कार, अम्बिया अलैहिस्सलाम को झुठलाने और उन की दअवत का इन्कार है।

तृतीय :- हर वह विचार धारा जो आख़िरत की जज़ा और सज़ा के ख़िलाफ़ हो चाहे वह संसार को लक्ष्य बनाने की विचार धारा हो या मरने के बाद इन्सान के किसी दूसरी सृष्टि के रुप में परिवर्तित हो जाने (आवागमन) की विचारधारा, जैसे जानवर या पेड़ इत्यादि बन जाने का ख़याल या फिर यह ख़याल कि मरने के बाद ज़िन्दगी हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, या यह वहम कि (नऊज़ुबिल्लाह) इन्सान मरने के बाद ख़ुदा में विलीन हो जाता है,वह गुमराही है जो इन्सान की सारी श्रेष्ठता को मिट्टी में मिलाकर रख देती है और उस की ज़िन्दगी को नाक़ाम बना कर उसे तबाही के घाट उतार देती है।

चतुर्थः- ईनाम और सज़ा का तसव्वुर इन्सान को ज़िम्मेदार और चरित्रवान बनाता है एवं उस की योग्यताओं एवं प्रतिभाओं को परवान चढ़ाकर उसे वास्तविक उन्नति एवं प्रगति की राह पर लगा देता है।

पंचम :- यह ऐतिहासिक स्थल जहाँ महानुभाव पैग़म्बर भेजे गये, इस बात पर गवाह हैं कि ये पवित्र आत्माऐं अख़लाक़ और किरदार (नैतिकता एवं चरित्र) के ऊँचे मेयार पर थे और उन की बुलन्दी ने आसमान को छू लिया था । एवं जिन लोगों ने उस की दअवत को स्वीकार कर के कर्मों के प्रतिफल के आधार पर अपने चरित्र का निर्माण किया था वह सर्वोच्य शिखर पर पहुँच गये । यह इस बात का अखंडनीय प्रमाण है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को उत्तम योग्यताऐं एवं प्रतिभाऐं समर्पित कीं और वह तौहीद और आख़िरत की बुनियाद पर जीवन व्यतीत कर के इन योग्यताओं और प्रतिभाओं को परवान चढ़ा सकता है और अपने को इतना ऊँचा उठा सकता है कि सुरैया (ऊँचाई पर रहने वाले सितारे) भी उस की बुलन्दी और उच्चता पर रश्क (ईष्या सहित गर्व) करने लगे ।

''उरूजे आदमे ख़ाकी से अन्जुम सहमे जाते हैं
कि यह टूटा हुआ तारा महे कामिल न बन जाए ''

आयत १ से ३ में जो कसमें खायी गई हैं और आयत ४ में जो बात बयान हुई हैं उन के भेद और संकेत उन तमाम सच्चाइयों को अपने दामन में समेटे हुए हैं जिन को संक्षेप में हम ने ऊपर बयान किया है।

6. पस्त तरीन हालात से मुराद गिरावट और पतन की अन्तिम सीमा है। मतलब यह है कि जब इन्सान ने अपनी साख़्त का आदर नहीं किया और उन क्षमताओं एवं योग्यताओं का सही इस्तेमाल नहीं किया जो उस को समर्पित की गई थी और ऊपर उठने के बजाय उस ने गिरना चाहा तो अल्लाह ने उसे गिरावट की अन्तिम सीमा को पहुँचा दिया । परिणाम यह कि वह जहन्नुम की गहराईयों में जा गिरा ।

मालूम हुआ कि इन्सान जब इस उद्देश्य को अपना लक्ष्य नहीं बनाता जिस के लिए उसे उच्चतम योग्यताऐं एवं प्रतिभाऐं प्रदान की गई हैं तो फिर वह इन्सानियत का अंश (Cream of Humanity) खो देता है और हैवान से भी बदतर साबित होता है। इसी लिए इन्सानी गिरावट की बदतरीन मिसालों से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं और ज़लील हरकतों और कमीनापन की ऐसी ऐसी घटनाऐं तजरिबे में आती रहती है कि इन्सानित मातम करने लगती है। इबादत के पवित्र जज़्बे की यह तौहीन कि इन्सान ईंट पत्थर को माबूद (पूज्य) बना ले यहाँ तक कि लिंग को पूजने लगे । इन्सानों के ख़ून का यह अनादर कि जानवर की क़ीमत और सम्मान इन्सानी जानों से भी अधिक क़रार पाये । महिलाओं पर यह अत्यचार कि पुरुष उन को अपनी हवस का निशाना बना लें । कमज़ोरों के अधिकारों की यह अवहेलना कि अनाथों का माल हड़प कर जाए। अपने स्वार्थ की यह सीमा कि ग़रीबों का ख़ून चूसने लगे । इन्सानों का इस दर्जा अनादर कि उन को तक़लीफ़ देने के दर्दनाक तरीक़े प्रयोग में लाए और मानव समाज का यह किरदार और उस के साथ ऐसी दुशमनी कि साइंस और टेकनोलाजी को उस की तबाही के लिए इस्तेमाल करे। यहाँ तक कि एक बम के धमाके में लाखों इन्सान मौत के घाट उतर जायें । यह और इस तरह की दूसरी ख़राबियाँ इन्सानी गिरावट के ऐसे सबूत हैं जिन का इन्कार नामुमकिन है ।

7. अर्थात् जिन लोगों ने अपने बेहतरीन साख़्त पर पैदा होने की क़दर की और अपने को

ईमान और नेक अमल से संवारा, वह पस्ती में गिरने से बच गये । उन्होंने अपनी सलाहिय्यतों का इस्तेमाल सही मक़सद के लिए किया और आख़िरत की मन्जिल को सामने रखते हुए बुलन्दियों पर चढ़ने का हौसला किया । इस लिए वह आख़िरत में अनन्त प्रतिफल के अधिकारी होंगे और कभी न ख़त्म होने वाले इनाम से पुरस्कृत किये जाऐंगे।

8. अर्थात् इस स्पष्ट और सुदृढ़ तर्क के सामने आ जाने के बाद क़ियामत और कर्मों के फल के बारे में पैग़म्बर को झुठलाने का क्या औचित्य है? अतः जो लोग इस के बावजूद पैग़म्बर को झुठलाने में लगे हुए हैं वह अपने ही असत्य और अनुचित होने का सबूत दे रहे हैं।

9. अर्थात् ख़ुदा का सब हाक़िमों से बढ़ कर हाकिम होना एक अखंडनीय वास्तविकता है क्यों कि आसमान और ज़मीन, इन्सान और फ़रिश्ते एवं जिन्न सब पर उस की हुकूमत (सत्ता) क़ायम है। फिर क्या तुम उस से यह आशा रखते हो कि वह अच्छे और बुरे इन्सानों में फ़र्क़ न करेगा? उस के नज़दीक़ इन्साफ़ कोई चीज़ नहीं, और वह कभी अदालत बरपा नहीं करेगा? वह न मुजरिमों को सज़ा देगा और न नेकी करने वालों को ईनाम? जब तुम दुनिया के हाकिमों से इन्साफ़ की आशा रखते हो तो अल्लाह तआला के बारे में जो सब शासकों का शासक है,यह विचार करना कैसे सही हो सकता है कि वह कभी न्याय करने वाला नहीं है और न ईनाम और सज़ा की कोई हक़ीक़त है।

सूरह अल्-अलक़

९६. अल्-अलक़

नाम :- आयत २ में इन्सान के ''अलक़'' (ख़ून की फुटकी) से पैदा किये जाने का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-अलक़'' है । और इस का दूसरा नाम ''इक़रा'' (पढ़) भी है । इस मुनासिबत से कि सूरह की शुरुआत इसी लफ़्ज़ से हुई है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और पहली वह्य जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई वह इस सूरह की शुरू की पाँच आयतें थी । शेष आयतें बाद में उस समय नाज़िल हुई जब कि अबू जहल ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदे-हराम में नमाज़ पढ़ने से रोकने की कोशिश की और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खुली मुख़ालफ़त पर उतर आया ।

केन्द्रीय विषय :- यह है कि यह किताब कायनात (ब्रहमाण्ड) के रचयिता का हुक्मनामा है जो इन्सान की रहनुमाई के लिए पैग़म्बर पर नाज़िल हुआ है ताकि वह इस की रौशनी में अपने रब की बन्दगी करे और उस का सान्निध्य (Nearness या क़ुर्ब) प्राप्त करे। लेकिन इन्सान का हाल अजीब है, बजाय इस के कि वह इस सौभाग्य को प्राप्त करता है, अपने रब से सरकशी करने लगता है और पैग़म्बर के विरोध पर उतर आता है इस तरह अपना अगला जीवन जो परलोक में मिलने वाला है, ख़राब करता है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में क़ुर्आन पढ़ने की हिदायत (निर्देश) की गई है और इसी परिवेश में इन्सान के रचयिता की चमत्कृति का वर्णन करते हुए जो उस की रचना एवं सृष्टि में प्रमुख और स्पष्ट है, वास्तविक ज्ञान की दौलत से पुरस्कृत किये जाने की खुशख़बरी सुनाई गई है।

आयत ६ से ८ में इन्सान को इस बात पर तंबीह की गई है कि वह इन नेमतों की क़दर करने के बजाय उल्टा अपने रब से सरकशी करता है हालाँकि पहुँचना उसे अपने रब ही के पास है।

आयत ९ ता १४ में उन लोगों की सरज़निश (तंबीह) की गई है जो पैग़म्बर की मुख़ालफ़त पर उतारू हो गये हैं। और आप की राह में तरह तरह की रूकावटें पैदा कर रहे थे ।

आयत १५ से १८ में सरकशों को उन के बुरे अन्जाम से आगाह किया गया है।

आयत १९ में पैग़म्बर को और उस के माध्यम से ईमान वालों को हिदायत (आदेश एवं निर्देश) की गई है कि इन सरकशों की बात न मानों और अल्लाह की बन्दगी में लगे रहो ।

९६.सूरह अल् -अलक़

अनुवाद आयतें : १९

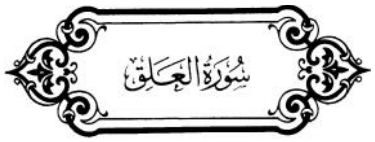

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **पढ़ो [1] अपने रब के नाम से [2] जिस ने पैदा किया।[3]**

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾

2. **पैदा किया इन्सान को जमे हुए ख़ून से।[4]**

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾

3. **पढ़ो,[5] और तुम्हारा रब बड़ा करीम (कृपालु) है।[6]**

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾

4. **जिस ने क़लम के द्वारा इल्म (ज्ञान) सिखाया,[7]**

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾

5. **इन्सान को वह इल्म (ज्ञान) दिया जो वह नहीं जानता था।[8]**

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾

6. **मगर इन्सान का हाल यह है कि वह सरकशी करता है,[9]**

كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰۤى ۙ﴿۶﴾

7. **इस आधार पर कि वह अपने को बेनियाज़ (निष्काम) समझता है।[10]**

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ﴿۷﴾

8. **(जब कि) यह बात निश्चित है कि तुम्हारे रब ही की तरफ़ लौट कर जाना है।[11]**

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ﴿۸﴾

9. **तुम ने उस व्यक्ति को देखा जो रोकता है।**

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۙ﴿۹﴾

10. **एक बन्दे को जब कि वह नमाज़ पढ़ता है?[12]**

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ﴿۱۰﴾

1. यह शुरु की पाँच आयतें पहली वह्य है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई जब कि आप गारे-हिरा (हिरा की गुफ़ा) में जो मक्का से तीन मील के फासले पर है, अल्लाह की इबादत के उद्देश्य से ठहरे हुए थे । यह रमज़ान के महीने की कोई रात थी और उस समय आप की आयु ४० साल थी । ईसवी सन के हिसाब से यह ६१० A.D. की घटना है। बुख़ारी में यह घटना विस्तार से बयान हुई है जिस का सारांश यह है कि ग़ारे हिरा (गुफ़ा) में अचानक फ़रिश्ता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने प्रकट हुआ और उस ने कहा ''اِقْرَا इक़रा '' (पढ़ो) आपने कहा ''मा अना बिक़ारी مَاۤ اَنَا بِقَارِئٍ (मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ) इस के बाद आप फ़रमाते हैं कि मुझे फ़रिश्ते ने पकड़ कर ज़ोर से दबाया यहाँ तक कि मेरी सहनशक्ति जवाब देने लगी । फिर उस ने मुझे छोड़ा और कहा ''पढ़ो'' मैं ने कहा ''मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ'' उस ने दूसरी बार मुझे दबाया इतना कि मेरा सहन करना मुश्किल हो गया । फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा ''पढ़ो'' मैं ने कहा ''मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।''उस ने तीसरी बार मुझे दबाया यहाँ तक कि मेरा सहन कर पाना मुश्किल हो गया फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ (पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया) यहाँ तक कि उस ने مَا لَمْ يَعْلَمْ की आयतें पढ़ी । (बुख़ारी बिदुउल वह्य किताबुत्तफ़्सीर)

इस तरह क़ुर्आन के नाज़िल होने की शुरुआत हुई और आप को नुबुव्वत का दायित्व सौपा गया । यह मामला अचानक पेश आया था । इस से पहले यह बात आप के ध्यान और कल्पना में भी नहीं थी कि आप को नबी नियुक्त किया जाने वाला है । अलबत्ता नुबुव्वत से पहले भी आप शुद्ध हृदयता से मात्र अल्लाह तआला की इबादत (उपासना) करते रहे, और यह इबादत की लगन ही थी जो आप को ग़ारे हिरा में ख़ींच लायी ताकि आप पूरी एकाग्रता के साथ इबादत में लीन हो जाऐं । जिस फ़रिश्ते को आप ने देखा यह जिब्राईल हैं जो अल्लाह तआला का कलाम लेकर आये थे । चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी थे अर्थात् आप ने पढ़ना लिखना नहीं सीखा था इस लिए अल्लाह के कलाम को पढ़ने के सिलसिले में कठिनाई महसूस किया । लेकिन जब फ़रिश्ते ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तीन बार दबाया तो आप की कठिनाई दूर हो गई और अल्लाह के कलाम को समझ लेने (Grasping) और पढ़ने की असाधारण क्षमता पैदा हो गई।

इस से यह बात बिलकुल साफ़ हो जाती है कि यहाँ जो पढ़ने का हुक्म दिया गया है इस से तात्पर्य क़ुर्आन का पढ़ना है जो हिदायत की किताब है। जो लोग क़ुर्आन के पहले सम्बोधित (Addressees) थे उन की ज़बान अरबी थी और क़ुर्आन अरबी में ही नाज़िल हो रहा था । इस लिए पढ़ने का हुक्म उन के लिए समझ कर पढ़ने के समानार्थ था लेकिन जिन की ज़बान अरबी नहीं है उन के लिए इस हुक्म की अनिवार्य माँग (लाज़मी तक़ाज़ा) यह है कि वह क़ुर्आन के मूल को पढ़ते हुए उस के अर्थ और भाव को भी समझने का प्रयत्न करे। जो किताब हिदायत के लिए नाज़िल की गई है उस को आदमी जब तक समझ कर नहीं पढ़ेगा, उस की हिदायत एवं ख़ैर और बरकत से किस तरह लाभन्वित हो सकेगा? ध्यान रहे कि क़ुर्आन पढ़ने का यह हुक्म अरब वासियों या मुसलमानों के लिए विशेष नहीं है बल्कि इस हुक्म का सम्बोधित (Addressee)हर वह व्यक्ति है जिस तक यह किताब पहुँचे । क्यों कि यह किताब इन्सान के ख़ालिक़ (रचयिता) ने इन्सान की हिदायत के लिए नाज़िल की है । इन्सानों के किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं और चूँकि यह क़ियामत तक के लिए हिदायत है इस लिए क़ियामत तक पैदा होने वाले सारे इन्सान इस हुक्म (आदेश) के सम्बोधित (Addressee) है अगर एक दोस्त के ख़त को किसी दूसरी ज़बान में पाकर आदमी के अन्दर उसे समझने की बेचैनी पैदा होती है तो इस से कहीं अधिक बेचैनी आदमी को अपने

ख़ालिक़ (रचयिता) का हिदायत नामा समझने के लिए होगी जो यद्यपि उस की अपनी भाषा में नहीं है मगर उस को समझने के लिए साधन एकत्रित कर दिये गये हैं । बस शर्त यह है कि उस के अन्दर इन्सानियत ज़िन्दा हो ।

2. अर्थात अपने रब का नाम ले कर क़ुर्आन पढ़ो । बिस्म का ''ब'' बा-ए-इस्तिआनत है जो इस बात की ओर संकेत कर रहा है कि क़ुर्आन पढ़ना ख़ुदा की तौफ़ीक़ पर निर्भर है अत: इस का प्रारम्भ करते हुए अपने रब से सहायता माँगी जाये। इस आदेश के पालन की विधि भी अल्लाह ने बता दी है और वह है بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' का पढ़ना । इस लिए सूरह फ़ातिहा जो क़ुर्आन की प्रस्तावना अथवा भूमिका है और दूसरी तमाम सूरतों की शरुआत सिवाय सूरह ''तौबा'' के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' ''अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से'' ही होती है।

क़ुर्आन को अल्लाह के नाम से जो प्रस्तुत किया गया है वह वास्तव में इस सत्यता को प्रदर्शित करता है कि यह किताब शब्द शब्द अल्लाह की वाणी (कलाम) है । पैग़म्बर की अपनी वाणी नहीं और यह हर तरह की मिलावट से पवित्र है । (अधिक व्याख्या के लिए देखिए सूरह फ़ातिहा नोट नं.१)

3. अर्थात जिस ने तमाम कायनात (संपूर्ण ब्रहमाण्ड) को पैदा किया ।

4. जमे हुए ख़ून से मुराद गर्भाधान अर्थात् शुक्राणु (Ovum) के मिलाप (Fertilize) होने के बाद की वह स्थिति है जब कि इन्सान अपनी रचना के आरम्भिक चरण में होता है। और उस की शक्ल जमे हुए ख़ून की सी होती है।

यहाँ इस के वर्णन से इस वास्तविकता की और ध्यानाकर्षित करना अभिप्रेत है कि इतनी तुच्छ वस्तु से मानव जैसी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि को बना कर खड़ा कर देना सृष्टा की विशाल क्षमता, सर्वोच्च नीति, उस के चमत्कारों और अत्यन्त कृपाओं एवं मेहरबानियों पर प्रमाणित है।

5. इक़रा اِقۡرَاۡ अर्थात पढ़ने का हुक्म यहाँ दोबारा दिया गया है। जिस से आग्रह एवं चेतावनी भी अभिप्रेत है और क़ुर्आन के महत्व की अभिव्यक्ति भी कि यह अपनी तरह की अकेली किताब है जो बार बार पढ़े जाने योग्य है और तुम्हें ताकिदी आदेश दिया जा रहा है कि इसे एक बार नहीं बार बार पढ़ो ।

6. अल्लाह तआला की सिफ़त ''अकरम'' बयान हुई है जिस का मतलब यह है कि वह बड़े सम्मान वाली और बुलन्द हस्ती है और वह बन्दों के पक्ष में अत्यन्त परोपकारी है। यहाँ इस सिफ़त के वर्णन से अभिप्रेत इस वास्तविकता की अभिव्यक्ति है की अपने अस्तित्व के एतिबार से अल्लाह तआला ही सम्मान वाला और सरवोच्चता प्राप्त है। इन्सान की रचना तो अत्यन्त तुच्छ तत्वों से हुई है इस लिए उसे अहं और घमंड में डूबना नहीं चाहिए । इसी तरह इन्सान को यह एहसास दिलाना भी अभिप्रेत है कि अल्लाह तआला ने उस पर यह कितना बड़ा एहसान किया है कि सर्वश्रेष्ठ सृष्टि बना कर उस की हिदायत और संमार्ग का सामान किया ।

7. अर्थात् क़लम इल्म (ज्ञान) के प्रकाशन एवं प्रसार का सुरक्षित और महत्वपूर्ण साधन है । यह साधन अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है। और इस नेमत का बेहतरीन इस्तेमाल यह है कि क़ुर्आन लिपिबद्ध किया जाए । चूँकि क़ुर्आन एक ऐसी क़ौम पर नाज़िल किया जा रहा था जो उम्मी (अनपढ़) थी इस लिए क़लम (लेखन किरया) का महत्व स्पष्ट किया गया ताकि अब उसे क़ुर्आन के प्रकाशन एवं प्रसार की जो सेवा करनी है और उस में लिपि एवं लेखनक्रिया का जो स्थान है उसे वह महसूस करे और इस के लिए कमर कसले । अत: आगे चलकर शिक्षा के मैदान में उस ने जो उन्नति

की और क़ुर्आन को लिपिबद्ध कर के उस के प्रकाशन से सम्बन्धित जो बहुमूल्य सेवा की वह इसी रब्बानी हिदायत के प्रभाव एवं परिणाम थे ।

8. अर्थात् यह अल्लाह तआला के करम (कृपा) की शान है कि उस ने तुच्छतम तत्व से उच्चतम गुणों की रचना खड़ी कर दी जिस का एक प्रमुखतम गुण उस का ज्ञान वाला होना है।

''वह इल्म (ज्ञान) दिया जो वह नहीं जानता था'' से तात्पर्य ग़ैब की (आँखों से ओझल रहने वाली वास्तविकताओं का वह ज्ञान है जो वह्य द्वारा इन्सान को दिया गया। यह वास्तविक और मौलिक ज्ञान है जो क़ुर्आन के रुप में मनुष्य को प्रदान हुआ है। और इसी पर उस की उन्नति और सफलता का दारोमदार है। अर्थात् क़ुर्आन का अवतरण, मनुष्य पर अल्लाह तआला का सब से बड़ा एहसान है। अत: सूरह ''रहमान'' में इस को अपनी रहमत की सब से बड़ी दया एवं उपकार ठहराया है।

اَلرَّحۡمٰنُ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ''रहमान ने क़ुर्आन सिखाया'' और इस का ज़िक्र इन्सान की पैदाइश के ज़िक्र से पहले किया है। خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ''इन्सान को पैदा किया'' ताकि स्पष्ट हो कि उस की पैदाइश का मक़सद हिदायत की प्राप्ति है जिस का स्रोत क़ुर्आन है।

9. अर्थात् बजाय इस के कि इन्सान अल्लाह की इस नेमत का मूल्य समझता और उस का आदर करता, उस से सरकशी करने लगता है।

10. अर्थात् इस सरकशी का कारण यह है कि वह अपने को ख़ुदा से बेपरवाह समझने लगता है। इन्सान चाहता है कि वह मनमानी करने के लिए आज़ाद रहे इस लिए उसे न ख़ुदा की परवाह होती है और न उस की हिदायत की । तथा अगर उसे माल और दौलत एवं पद और सम्मान भी प्राप्त हो तो फिर उस के अन्दर अहंता मनावृत्ति बड़ी तेज़ी से पैदा होने लगती है और वह ख़ुदा के विरुद्ध सरकशी पर उतर आता है।

11. अर्थात् ख़ुदा से बेपरवाह हो कर के कोई व्यक्ति भी अपने को अल्लाह की अदालत में उपस्थिति से बचा नहीं सकता । वहाँ उसे मालूम हो जायेगा कि इस सरकशी का क्या नतीजा निकला ।

12. इशारा है इस घटना की ओर जो हदीस में बयान हुई है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बअसत (नबी नियुक्त होने) के बाद जब मस्जिदे-हराम में नमाज़ अदा करने लगे तो अबू जहल ने जो बड़ा सरकश था आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नमाज़ से रोकने की कोशिश की लेकिन उस में कामयाब न हो सका ।

इस प्रमुख घटना की ओर इशारे के अलावा आयत का सामान्य अर्थ यह है कि जो व्यक्ति भी जिस किसी बन्दे को नमाज़ से रोकता है वह एक बेहूदा हरकत करता है जो हर तरह से निन्दनीय है।

11. तुम ने सोचा अगर वह (बन्दा) हिदायत पर हो,

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ﴿١١﴾

12. या परहेज़गारी का हुक्म देता हो।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ﴿١٢﴾

13. तुम ने सोचा अगर यह (रोकने वाला व्यक्ति) झुठलाता और मुँह मोड़ता हो ![13]

اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٣﴾

14. क्या उसे नहीं मालूम कि अल्लाह देख रहा है ?[14]

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ﴿١٤﴾

15. ख़बरदार! अगर वह बाज़ न आया तो हम उस की पेशानी (माथे) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे,[15]

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ﴿١٥﴾

16. झूठी और ख़ताकार (दोषी) पेशानी।[16]

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ﴿١٦﴾

17. अतः वह बुलाले अपनी टोली को,[17]

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ﴿١٧﴾

18. हम भी बुलाते हैं अज़ाब (यात्ना) के फ़रिश्तों को,[18]

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾

19. ख़बरदार ! उस की बात न मानें [19] और सजदा करो [20] और क़ुर्ब (सान्निध्य) हासिल करो।[21]

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾ السجدة

13. इन आयत में क़ुर्आन के हर संबोधित (Addressee) को यह सोचने का निमंत्रण दिया गया है कि एक तरफ़ अल्लाह का वह बन्दा है जो स्वयं सीधी और दुरुस्त राह पर है और दूसरों को ख़ुदा से डरने और उस की अवज्ञा से बचने का उपदेश देता है और दूसरी ओर वह व्यक्ति है जिस का काम सत्य को झुठलाना और उस से मुँह मोड़ना है तो बताओ इन में से किस का रवैया सही है? और फिर अगर यह झुठलाने वाला व्यक्ति इस्लाम दुश्मनी में अन्धा हो कर उस नेक बन्दे पर अत्याचार कर रहा हो और उस की राह में रुकावटें पैदा कर रहा हो तो उस की यह हरकत कैसी है?

पृष्ठ भूमि के लिहाज़ से इन आयात का इशारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबू जहल की तरफ़ है मगर अपने भावार्थ के लिहाज़ से यह सभी के लिए है । जो व्यक्ति भी इस्लाम दुश्मनी में किसी नेक बन्दे को सत्यमार्ग से रोके उस की यह हरकत उसी तरह निन्दनीय है जिस तरह कि अबू जहल की हरकत निन्दनीय थी ।

14. अर्थात् क्या यह अत्याचार करने वाला व्यक्ति इस बात से बेख़बर है कि अल्लाह यह सब कुछ देख रहा है। और जब वह ज़ालिम और मज़लूम एवं कुकर्मी और सुकर्मी को देख रहा है तो वह ज़ालिम को सज़ा कैसे नहीं देगा और मज़लूम की फ़रयाद कैसे नहीं सुनेगा? क्या जिस हस्ती की नज़र उस के बन्दों और उन की तमाम हरकतों, आदतों एवं तौर तरीक़ों पर हो, उस के नज़दीक उस की बन्दगी करने वाले और उस की बन्दगी से रोकने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं? अगर ऐसा नहीं है और निस्सन्देह ऐसा नहीं है तो इस का अनिवार्य तक़ाज़ा यह है कि इन्साफ़ का एक दिन बरपा हो।

15. अर्थात् यह सरकश अगर अपनी इन हरकतों से बाज़ नहीं आया तो वह दिन आता है जब कि फ़रिश्ते उस के मस्तक (पेशानी) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे । सूरह रहमान में मुजरिमों के बारे में फ़रमाया है कि :- فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ۔ (الرحمٰن: ۴۱)

(उन के मस्तकों (पेशानियों) के बाल और उन की टाँगे पकड़ कर घसीटा जायेगा)

सरकश बड़े घमंड में लिप्त होते हैं और उन के दिमाग़ में हवा भर जाती है कि वह बड़े लोग हैं इस लिए उन को क़ियामत के दिन यह अपमानजनक यात्ना (अज़ाब) दी जायेगी कि फ़रिश्ते उन की पेशानियों (मस्तकों) के बाल पकड़ कर घसीटेंगे और उन्हें जहन्नम में झोंक देंगे ।

16. झूठी और दोषी पेशानी (मस्तक) इस लिए कहा कि जो पेशानी अपने पैदा करने वाले के सामने न झुकी और दूसरों को भी उस के सामने झुकने से रोकती रही उस के झूठी और दोषी होने में क्या संदेह हो सकता है।

17. इशारा है अबू जहल की उस धमकी की तरफ़ कि इस वादी (क्षेत्र) में मेरी टोली के लोग अधिक हैं।

18. अर्थात् अगर किसी को अपनी टोली के लोगों पर गर्व है तो वह उन को अपने समर्थन एवं सहायता के लिए बुला लें, हम भी अपनी पुलिस (ज़बानियः) अर्थात् दोज़ख़ के फ़रिशतों को बुलाते हैं । फिर यह देख ले कि उस के अन्दर कितना बल बूता है।

19. मतलब यह कि इन सरकशों की बातों में न आओ जो एक अल्लाह की बन्दगी से तुम्हें रोकना चाहते हैं।

20. सजदा के अर्थ झुकने के भी हैं और माथा ज़मीन पर टेक देने के भी । यहाँ सजदा करने का जो हुक्म दिया गया है उस का मतलब यह है कि एक अल्लाह ही के आगे झुको, उसी के आगे माथा टेको और उसी के लिए नमाज़ पढ़ो ।

21.अर्थात् अपने रब का समीपता (Nearness) प्राप्त करो हदीस में आता है कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

أَقْرَبُ مَايَكُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهٖ وَهُوَ سَاجِدٌ۔ (مسلم کتاب الصلوٰۃ)

''बन्दा अपने रब के अधिक निकट सज्दे की हालत में होता है''

स्पष्ट हुआ कि सजदा नमाज़ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्तंभ है, अल्लाह के समीप्य एवं निकट (क़ुर्ब) का महत्वपूर्ण माध्यम है। क्यों कि सज़दे में इन्सान अपने माथे को जो शरीर का श्रेष्ठतम अंग है धरती पर रख देता है और ख़ुदा की वर्चस्वता एवं महानता को स्वीकार करते हुए उस की पाकीज़गी बयान करता है। سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

इस से पहले की आयत में दोषी मस्तक का वर्णन था जिसे जहन्नम में फेंक दिया जायेगा । उस की तुलना में यह आयत मोमिन के मस्तक (पेशानी) की ओर इशारा कर रही है जो ख़ुदा के सामने झुकते (सजदा करते) रहने के कारण सम्मानजनक ठहराया जायेगा ।

सूरह की शुरुआत क़ुर्आन पढ़ने के हुक्म से हुई थी और समाप्ति ख़ुदा का समीप्य एवं निकटता (क़ुर्ब) प्राप्त करने के हुक्म पर हुई है। इस से स्पष्ट हुआ कि क़ुर्आन पढ़ने का फल ख़ुदा का समीप्य एवं निकटता (क़ुर्ब) है। इस से ऊँचा कोई स्थान नहीं जिस की इन्सान कल्पना कर सके। और इस से बुलन्द कोई लक्ष्य नहीं जो प्राप्त किया जा सकता हो ।

इस आयत पर सजदा करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है। (मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

९७. अल्-क़द्र

नाम :- पहली आयत में क़ुर्आन के शबे-क़द्रे (क़द्र की रात) में नाज़िल होने का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल-क़द्र'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है जैसा कि इमाम सुयूती ने अल्इत्कान में पुष्टि की है (अल् इत्कान भाग १ पृष्ट २२) एवं मज़मून से भी इस के मक्की होने का अन्दाज़ा होता है।

केन्द्रीय विषय :- क़ुर्आन के महत्व और उस की महानता को स्पष्ट करना है।

क़ुर्आन के नाज़िल होने की शुरुआत सूरह ''अलक्'' की आरम्भिक आयतों से हुआ था। इस सूरह में बताया गया है कि वह घड़ी अति शुभ थी जब कि क़ुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ।

कलाम की तरतीब :- सब से पहले इस महान ऐतिहासिक सच्चाई से आगाह किया गया है कि क़ुर्आन के अवतरण का आरम्भ अत्यन्त महत्वशाली विधि पर एक महामहिम रात्रि में किया गया। क्यों कि क़ुर्आन का अवतरण कोई मामूली बात नहीं है। बल्कि यह अल्लाह का वह ज़बरदस्त और बुलन्द फ़ैसला है जो क़ौमों की तक़दीर बदलने वाला और मानवता के संसार की काया पलट देने वाला है।

इस के बाद बताया गया है कि इस रात की बरकतें क्या हैं और किस तरह यह रात सुबह तक सरासर सलामती (शन्ति) की रात होती है।

इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो किताब इस शान के साथ नाज़िल हुई है उस से बेरुख़ी बरतने वाले और इस को बेक़ीमत (मूल्यहीन) समझने वाले वही लोग हो सकते हैं जो इतने बड़े ख़ैर (भलाई) से अपने को महरूम (वन्चित) रखना चाहते हैं।

९७.सूरह अल् -क़द्र

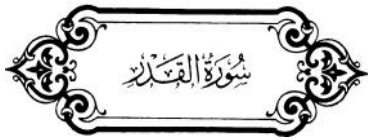

अनुवाद आयतें : ५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **हम ने इसे [1] शबे-क़द्र (क़द्र की रात) में नाज़िल किया,[2]**

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١

2. **और तुम्हें क्या मालूम कि शबे-क़द्र क्या है ?[3]**

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢

3. **शबे-क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है।[4]**

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣

4. **इस में फ़रिश्ते और रूह (अल अमीन)[5] अपने रब की अनुज्ञा से हर हुक्म (आदेश) को लेकर उतरते हैं।[6]**

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤

5. **सरासर सलामती है वह रात तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक।[7]**

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

1. अर्थात् क़ुर्आन को,

2. क़द्र का अर्थ क़द्र एवं मन्जिलत (मान एवं सम्मान) के हैं और शबे-क़द्र का अर्थ है मान और सम्मान वाली रात । यह वह रात है जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पहली वह्य नाज़िल हुई जब कि आप ग़ारे-हिरा (हिरा की गुफ़ा) में ठहरे हुए थे । चूँकि इस रात को यह शर्फ़ (श्रेष्ठता) हासिल है कि इस में क़ुर्आन के अवतरण (नाज़िल होने) का आरम्भ हुआ इस लिए इसे लैलतुल क़द्र لیلۃالقدر (क़द्र की रात) के नाम की संज्ञा दी गई और सूरह ''दुखान'' में ''लैलितिम्मुबारक:'' لیلۃٍمبارکۃٍ (मुबारक़ रात) भी कहा गया है। यह ऐसी ही बात है जैसे उन दिनों को मन्हूस क़रार दिया गया जिन में ''आद'' की क़ौम पर अज़ाब (प्रकोप) नाज़िल हुआ था।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ۔ (حٰمٓ السجدہ-۱۶)

''तो हम ने मनहूस दिनों में सख़्त तेज़ हवा भेज दी''(हा मीम सज्दा -१६)

साफ़ है इस आयत में मनहूस दिनों का मतलब यह नहीं है कि वह दिन स्वयं मनहूस थे बल्कि चूँकि उन दिनों में ''आद'' की क़ौम पर अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) नाज़िल हुआ था । इस लिए वह दिन उस क़ौम के लिए मनहूस क़रार पाये । इस की दूसरी मिसाल रमज़ान का महीना है कि उस की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) और बरकत इस कारण है कि इस में क़ुर्आन नाज़िल हुआ, इसी तरह लैलतुलक़द्र (क़द्र की रात) की फ़ज़ीलत और बरकत इस आधार पर है कि इस में क़ुर्आन के अवतरण का सिलसिला शुरू हुआ ।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ

''रमज़ान का महीना जिस में क़ुर्आन नाज़िल किया गया ।''(बक़रह- १८५)

यह रात जैसा कि सही हदीसों में आता है कि रमज़ान के आख़िरी अश्रे (अन्तिम दहाई) की एक रात थी ।

ध्यान रहे कि लैलतुलक़द्र में क़ुर्आन के नाज़िल होने का यह मतलब नहीं है कि इस रात पूरा क़ुर्आन नाज़िल हुआ । बल्कि मतलब यह है कि इस पवित्र किताब के नाज़िल होने की शुरुआत इसी रात में हुई । अर्थात अल्लाह की रहमत इसी रात को जोश में आयी और हिदायत के स्रोत इसी रात में फूट पड़े ।

क़ुर्आन के अवतरण के लिए दिन के बजाए रात का चुनाव हिकमत से खाली नहीं है। रात का समय शान्ति और संतोष का समय होता है। यही शान्तिमय समय आत्मा के विकास (रूह की बालीदगी) के लिए बहुत उचित होते हैं और विशेष कर रात का आख़री हिस्सा तो अल्लाह से प्रार्थना और उस से क्षमायाचना के लिए अत्यंत उचित समय होता है। इसी लिए क़ुर्आन और हदीस से रात के आख़री हिस्से में नमाज़ और दुआ की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है और संभव है कि क़ुर्आन का अवतरण भी रात के आख़िरी हिस्से में हुआ हो ।

3. यह सवाल लैलतुल क़द्र की अज़मत और बरकत (Greatness & Importance) स्पष्ट करने के लिए है । एवं इस का इशारा इस बात की तरफ़ भी है कि इस रात का मामला ग़ैब के भेदों में से है इस लिए इस के बारे में वह्य द्वारा जो कुछ बताया गया है उस से अधिक विस्तार की जानकारी का इन्सान के पास कोई साधन नहीं ।अत: इस रात का ठीक ठीक निर्धारण करना इन्सान के बस की बात नहीं है। हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमज़ान के आख़िरी दहाई (अश्रा) की ताक़ (विषम या Odd) रातों में उसे तलाश करने का जो हुक्म दिया है उस को काफ़ि

समझना चाहिए।

4. हज़ार महीनों की व्याख्या ख़ैर और बरकत की अधिकता को स्पष्ट करने के लिए है। मतलब यह है कि यह रात अपनी इस विशेषता और श्रेष्ठता के आधार पर कि इस में इन्सान को हिदायत समर्पित किये जाने का हिकमत भरा (नीतिपूर्ण) फैसला हुआ और क़ुर्आन के अवतरण का आरम्भ हुआ और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नुबुव्वत सौंपी गयी, दूसरी हज़ारों रातों बल्कि हज़ारो महीनों पर भी भारी है। और जब ज़र्फ़ (रात) इस श्रेणी की है तो मज़रुफ़ (क़ुर्आन) किस श्रेणी का होगा ।

इस रात ने अपनी बरकतों के ख़ज़ाने तो उस वक़्त खोल दिये थे जब कि फ़रिश्ता ग़ारे-हिरा (हिरा की ग़ुफ़ा) में पहली बार वह्य लेकर आया था । लेकिन उस की बरकतें स्थायी रुप से बाक़ी रह गई। अत: हर साल रमज़ान के महीने में ''क़ुर्आन के अवतरण'' (नुज़ूले-क़ुर्आन) की यादगार (स्मृति) के तौर पर उसे मनाया जाता और उस के मनाने का प्रारुप यह होता है कि उस में नमाज़, तिलवते-क़ुर्आन और ज़िक्र एवं दुआ का अधिक से अधिक आयोजन किया जाता है। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

مَنْ قَامَ لَيْلَةَالْقَدْرِ اِيْمَاناً وَ احْتِسَاباً غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ۔ (بخاری کتاب صلاۃ التراویح)

''जिस व्यक्ति ने ईमान के साथ और अल्लाह से अज्र (इनाम पाने) की उम्मीद पर शबे-क़द्र में इबादत की उस के तमाम पिछले गुनाह माफ़ कर दिये गये''(बुख़ारी किताब, सलातुत्तरावीह)

जिस तरह कि बारिश का मौसम खेती के लिए उचित और अनुकूल होता है उसी तरह अल्लाह के नज़दीक, उस के समीप्य (क़ुर्ब) के लिए शरीअत के निश्चित किये विशिष्ट समय, विशिष्ट दिवस और विशिष्ट रातें अत्यंत उचित और अनुकूल होती हैं। जैसे तहज्जुद (आधी रात के बाद और अरुणोदय से पहले) का समय, जुमे का दिन, अराफ़ात का दिवस और रमज़ान का महीना इत्यादि। इसी तरह लैलतुलक़द्र अल्लाह के निकट (क़ुर्बे-इलाही) के लिए बेहतरीन, उचित और अतयन्त अनुकूल रात है इसी लिए हदीस में इसे रमज़ान की आख़िरी दस रातों में तलाश करने का हुक्म दिया गया है।

عن عائشة رضی اللہ عنہا ان رسول اللہ ﷺ قال :

تَحَرَّوْ لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي الْوِتْرِ مِنَ الْعَشْرِ الْاَوَاخِرِ مِنْ رَمَضَانَ۔ (بخاری۔کتاب صلاۃ التراویح)

''हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ''शबे क़द्र को रमज़ान के आख़री अशरे (दस दिनों) की ताक़ रातों में तलाश करो । (बुख़ारी)

ताक़ (विषम) रातों से मुराद रमज़ान की इक्कीसवीं, तेइसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताइसवी और उन्तीसवीं रात है। किसी एक रात को इस लिए निर्धारित नहीं किया गया कि उस की तलाश का शौक़ पैदा हो और लोग कई रातें इबादत में गुज़ारें । इस पहलू से एतिकाफ़ (मस्जिद में निश्चित समय के लिए ठहरने) की मसलहत भी स्पष्ट है जो रमज़ान के आख़िरी अशरे (दहाई) में किया जाता है।

रहा यह सवाल कि दुनिया के एक हिस्से में रात होती है तो दूसरे हिस्से में दिन । इस लिए जब मक्के में शबे क़द्र हो तो दूर के इलाक़े के लोग किस तरह उस को पा सकेंगे । इस का जवाब यह है कि शरीअत ने जिस घड़ी को बरकत वाली क़रार दे कर इबादत के लिए विशिष्ट किया है उस के

सिलसिले में स्थानीय समय का एतिबार होगा । जैसे रात का आख़िरी हिस्सा जो दुआ के क़ुबूल होने के लिए विशिष्ट है या जुमा का वक्त तो इस सिलसिले में स्थानीय समय ही का एतिबार किया जाता है और इसी के अनुसार नमाज़ वग़ैरा अदा की जाती है और इस से वह बरकतें गायब नहीं हो जाती जो विशिष्ट समय या विशिष्ट दिन के साथ होती हैं। इसी तरह शबे क़द्र की बरकतें भी स्थानीय समय का एतिबार करने के बावजूद बाक़ी रहती है और हर इलाक़े के लोग इसे पा सकते हैं।

5. रुह से तात्पर्य रूहुलअमीन है जो हज़रत जिब्रील का उपनाम है। उन का ज़िक्र विशेष रुप से इस लिए किया गया है कि वह फ़रिश्तों के सरदार हैं।

6. ''तनज़्ज़ुल'' (उतरते हैं) का प्रयोग तस्वीरे हाल के लिए हुआ है ताकि उस समय का दृश्य सामने आ जाए जब कि फ़रिश्ते अल्लाह के कलाम को ले कर नाज़िल हो रहे थे । मतलब यह है कि जिस तरह किसी बादशाह के सिपाही शाही फ़रमान को ले कर किसी मुहिम (अभियान) पर दौड़ पड़ते हैं उसी तरह जिब्रील फ़रिश्तों की फ़ौज के साथ अल्लाह के फ़रमान को लेकर नाज़िल हुए थे और इस शान से नाज़िल हुए थे कि गोया रुहानी जगत में यह जश्न क़ुर्आन की रात है।

हर हुक्म को लेकर नाज़िल होने का मतलब यह है कि शबे क़द्र में फ़रिश्तों का नुज़ूल (अवतरण) यूँ ही नहीं हुआ था बल्कि अल्लाह तआला के हर हर हुक्म की तामील (पालन) के लिए हुआ था। उदाहरण के तौर पर यह कि क़ुर्आन की पाँच आयतों को जो सूरह अलक़ की आरम्भिक आयतों को जो सूरह अलक़ की आरम्भिक आयतें हैं नाज़िल करना मक्का के ग़ारे-हिरा (हिरा की ग़ुफ़ा) में नाज़िल होना, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्य नाज़िल करना आप को नुबूव्वत से सुशोभित एवं अलंकृत करना, आप को पकड़ कर भींचना ताकि आप में वह्य को गृहण (Grasp) करने की और उस को स्वस्थ रूप में पढ़ने की क्षमता पैदा हो जाए इत्यादि । इन के अलावा ख़ैर और बरकत के नाज़िल होने के सिलसिले में फ़रिश्तों को जो आदेश दिये गये थे उन में से हर हर आदेश का पालन ठीक ठीक किया । इस लिए क़ुर्आन का अवतरण और नुबुव्वत से अलंकृत किये जाने का जो मामला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पेश आया उस पर कदापि संदेह नहीं किया जा सकता ।

ध्यान रहे कि वह्य के आरम्भ होने के अवसर पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिर्फ़ जिब्रील अलैहिस्सलाम दिखाई दिये थे । मगर जैसा कि यह आयत पुष्टी करती है उस रात में दूसरे फ़रिश्ते भी नाज़िल हुए थे । चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए फ़रिश्ते को देखने का यह पहला मौक़ा था जिस को सहन कर ले जाना कोई आसान बात नहीं थी । इस लिए आप के सामने सिर्फ़ जिब्रील अलैहिस्सलाम को ज़ाहिर किया गया ।

7. क़ुर्आन के अवतरण के अवसर पर आसमान पर सख़्त पहरे बिठा दिये गये थे ताकि शैतानों की टोली क़ुर्आन में ख़लल न पैदा कर सके और न उन्हें फ़रिश्तों से सुन गुन लेने का मौक़ा मिल सके। क्यों कि अगर इन्हें पैग़म्बर की नियुक्ति की ख़बर समय से पहले हो गई या जो संदेश पैग़म्बर (संदेष्टा) की तरफ़ भेजे जा रहे हैं उन की भनक उन्हों ने पाई तो वह काहिनी (ज्योतिष्यों) के कानों में उल्टी सीधी बोतें डाल कर ज़मीन पर उपद्रव बरपा करेंगे। अत: यह अल्लाह तआला के असाधारण प्रबन्ध का परिणाम था कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियुक्ति से पहले किसी को कानों कान ख़बर न हुई कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को नबी बनाया जाने वाला है और न क़ुर्आन के अवतरण से पहले किसी को यह ख़बर हुई कि उस रात को यह और यह पैग़ाम नाज़िल होने वाला है।

इस तरह अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के नाज़िल होने वाली रात को हर तरह की आफ़तों से सुरक्षित रखने का सामान किया था और उस रात को पूर्ण रूप से सलामती (शान्ति) की रात बनाया

था । और यह स्थिती थोड़ी देर के लिए नहीं बल्कि तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक रही क्यों कि यह शुभ रात क़ुर्आन करीम के उद्घाटन की रात थी और अब जो क़ुर्आन के अवतरण की यादगार (स्मृति) के तौर पर शबे क़द्र मनाई जाती है तो उस में भी उस की सलामती और बरकते तुलू-ए-फ़ज्र (अरुणोदय) तक रहती है। इस लिए यह पूरी रात इस लायक है कि इबादत (उपासना) में गुज़ारी जाए ।

शबे-क़द्र सरासर सलामती की रात थी और इस में जो किताब नाज़िल हुई यह भी सरासर सलामती ही की किताब है, यह इन्सानियत के लिए सलामती का पैग़ाम है। इस को स्वीकार करने वाले दुनिया में भी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और आख़िरत (परलोक) में इन्हें अबदी (अनन्त) सलामती नसीब होगी ।

पहली वही (ईश-संदेश) जो शबे क़द्र में उतरी

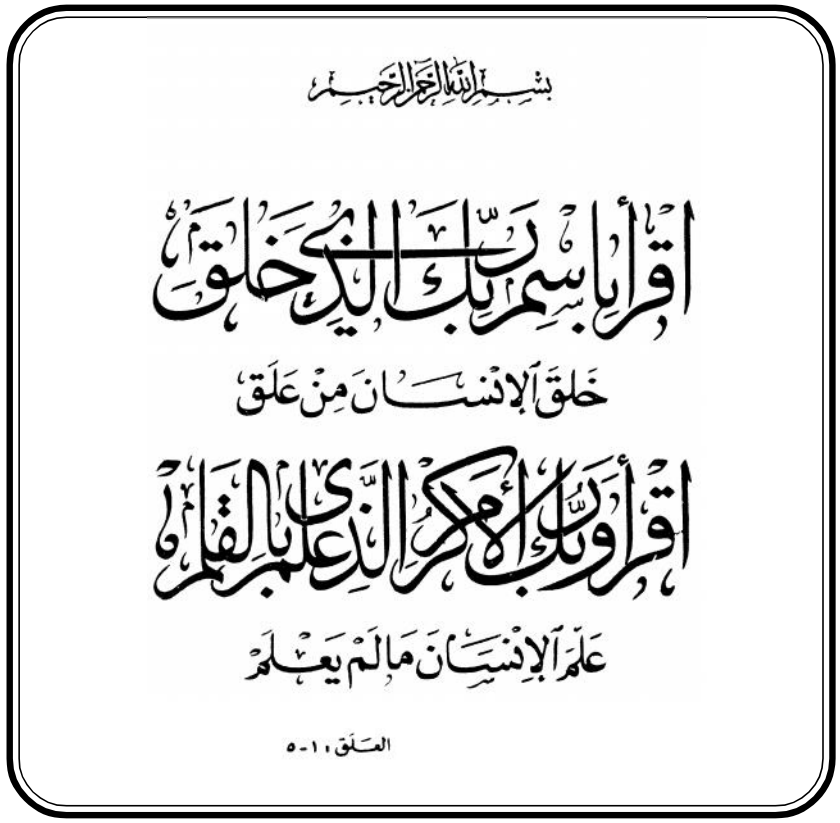

९८. अल्-बैय्यिनः

नाम :- पहली आयत में अल्-बैय्यिनः (रौशन दलील) का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-बैय्यिनः रखा गया है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के उस दौर में नाज़िल हुई जब कि अहले किताब (यहूदियों और ईसाईयों) और मुश्रिकीन (बंहुदेववादियो) पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रसूल होना अच्छी तरह ख़ुल गया था और इस के बावजूद उन्होंने इन्कार का रास्ता अपना लिया था ।

केन्द्रीय विषय :- इस सूरह में यह स्पष्ट किया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बना कर भेजने और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर किताब नाज़िल करने की क्या ज़रूरत थी ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में बताया गया है कि लोगों को कुफ़्र (इन्कार) की हालत से निकालने के लिए ज़रूरी था कि किताब के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह अल्लाह के दीन को सही रुप में प्रस्तुत करे।

आयत ४ और ५ में स्पष्ट किया गया है कि अहले किताब के पास अल्लाह तआला की तरफ़ से खुली शिक्षाऐं आ चुकी थीं । लेकिन इस के बावजूद यह मतभेद और फूट में पड़ गये और दीन की वास्तविक शिक्षाओं को भुला बैठे।

आयत ६ से ८ में बयान किया गया है कि रसूल का इन्कार करने वाले कैसे भयावह अन्जाम से दोचार होंगे। इस के विरूद्ध रसूल पर ईमान लाकर ख़ुदा से डरते हुए ज़िन्दगी बसर करने वाले किस तरह कामयाब और बामुराद होंगे।

इर्शादे-रसूल :- हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैइ बिन कअब से फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें सूरह

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا

"लम् यकुनिल्लज़ीन कफ़रु" सुनाऊ। हज़रत उबैइ बिन कअब ने अर्ज़ किया, क्या अल्लाह तआला ने मेरा नाम लेकर यह हुक्म दिया है। आप ने फ़रमाया, जी हाँ यह सुन कर हज़रत उबैइ बिन कअब की आँखें आँसूओं से तर हो गयीं। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

हज़रत उबैइ बिन कअब अहले किताब में से थे जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये थे और चूँकि इस सूरह में इन ईमान लाने वालों के लिए ख़ुशख़बरी है, इस लिए अल्लाह तआला ने उन की सराहना के लिए उन्हें यह सूरह सुनाने का हुक्म अपने नबी को दिया। और अल्लाह तआला की तरफ़ से यह सम्मान देखकर हज़रत उबैइ बिन कअब रुदित हो गये जो ईमान की पहचान है।

९८.सूरह अल्-बैय्यिनः

अनुवाद आयतें : ८

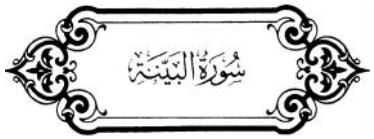

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ﴿۱﴾

1. अहले किताब,[1] और मुश्रिकों [2] में से जिन्होंने कुफ़्र किया [3] वह बाज़ आने वाले न थे जब तक कि उन के पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाता,[4]

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿۲﴾

2. (अर्थात्) अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल जो पाक सहीफ़े [5] (पवित्र पृष्ठ) पढ़ कर सुनाये।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ﴿۳﴾

3. जिन में दुरुस्त एहकाम (बिलकुल ठीक आदेश) लिखे हुए हों।[6]

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ﴿۴﴾

4. जिन लोगों को किताब दी गई थी वह स्पष्ट हिदायत आ जाने के बाद ही फूट में पड़ गये।[7]

وَمَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ
وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ
وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ﴿۵﴾

5. हालाँ कि उन को यही हुक्म दिया गया था कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें,[8]दीन (आज्ञापालन) को उस के लिए ख़ालिस कर के,[9] रास्त रवी (सत्यनिष्ठा) के साथ [10] और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें,[11] यही सही दीन है।[12]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ﴿۶﴾

6. अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने कुफ़्र किया [१३] वह जहन्नम की आग में पड़ेंगे और हमेशा उस में रहेंगे। यह लोग बदतरीन मख़्लूक़ हैं।[१४]

1. अहले किताब से तात्पर्य यहूदी और ईसाई है जिन के पास अल्लाह की किताब------ परिवर्तन होकर सही -----मौजूद थी -----और जहाँ इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे तौहीद (एकेश्वरवाद) का सम्बन्ध है आज भी तौरात, ज़बूर और इन्जील में यह स्पष्ट रुप से मौजूद है। यह और बात है कि परिवर्तन की वजह से उस में शिर्क (बहुदेववाद) की मिलावट भी हो गई है लेकिन यहूदी और ईसाई वास्तव में तौहीद को मानते थे और शिर्क उन के अन्दर ग़लत व्याख्या और बेजा बहानों के परिणाम स्वरूप आ गया था । वह आख़िरत और रिसालत के सिलसिले को भी मानते थे इस लिए क़ुर्आन ने इस गिरोह के लिए ''अहले किताब'' की परिभाषा प्रयोग की और उन के साथ मामला करने के सिलसिले में विशेष शरई आदेश भी दिये । जैसे, उन की औरतों से निकाह किया जा सकता है और उन का ज़बीहा (वध्य) अगर शरई तरीक़े पर हो-- खाया जा सकता है।

रहे दूसरे धर्मों के लोग तो चूँकि इन बुनियादी अक़ीदों (आस्थाओं) के सिलसिले में उन की धारणाऐं अत्यंत भिन्न थी और उन के पास कोई आसमानी किताब इस रुप में भी मौजूद नहीं थी जिस रुप से तौरात और इन्जील यहूदियों और ईसाईयों के पास मौजूद थी । इस लिए इन दो गिरोहों के अलावा किसी भी धार्मिक गिरोह को क़ुर्आन ने अहले किताब क़रार नहीं दिया यहाँ तक कि बनी इस्माईल,मक्का के क़ुरैश को भी जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सन्तान में से थे और जिन के पास हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन के कुछ अंश जैसे काबा का तवाफ़ और हज्ज इत्यादि मौजूद थे, अहले किताब में शामिल नहीं किया और खुली बुत परस्ती में लिप्त होने के कारण उन के लिए मुश्रिक की परिभाषा प्रयोग की । इसी तरह मजूसियों को इस के बावजूद कि उन के पास धार्मिक पुस्तक थी ''अहले किताब'' करार नहीं दिया । इस से स्पष्ट हुआ कि ''अहले किताब'' की परिभाषा (Term) यहूदियों और ईसाईयों के लिए ख़ास है और इस आदेश का पालन (Implement) किसी दूसरे धार्मिक गिरोह पर नहीं किया जा सकता यद्यापि उस के पास कोई धार्मिक पुस्तक हो ।

2. मुश्रिकों अर्थात् अल्लाह का शरीक (साझेदार) ठहराने वाले । यहाँ यह लफ़्ज़ अरब के बुत परस्तों के लिए परिभाषा के तौर पर प्रयोग हुआ है।

3. यहाँ क़ुफ़्र से मुराद वह क़ुफ़्र (इन्कार) है जिस के साथ हटधर्मी भी हो जैसा कि बाद के वाक्य ''बाज़ आने वाले न थे'' से स्पष्ट है। ऐसे हठधर्म काफ़िर अहले किताब में भी थे और मुश्रिकों में भी । मुश्रिकों का कुफ़्र तो जाहिर है ही उन्हों ने तौहीद को छोड़ कर बुत परस्ती का तरीक़ा अपनाया था वह आख़िरत का भी इन्कार करने वाले थे और रिसालत के सिलसिले के भी । रहे अहले किताब तो उन के क़ुफ़्र (इन्कार) की विभिन्न सूरतें थी जैसे कोई हज़रत उज़ैर को ख़ुदा का बेटा क़रार देता था तो कोई हज़रत ईसा को,कोई तो हज़रत ईसा की रिसालत ही का मुन्किर (इन्कार करने वाला) था और किसी के निकट, वह कफ़्फ़ारा बन गये (अर्थात ईसाईयों के गुनाहों की माफ़ी का द्वार बन गये ।

4. स्पष्ट प्रमाण से तात्पर्य एक नये रसूल की आमद (आगमन) है जैसा कि बाद वाली आयत में बयान हुआ है। मतलब यह है कि अहले किताब और मुश्रिकों में से जो लोग क़ुफ़्र में कठोर थे उन के कुफ़्र के टूटने की अगर कोई सूरत हो सकती थी तो वह यही थी कि एक नये रसूल का आगमन हो । गोया एक नये रसूल का आगमन हालात की उचित और आवश्यक माँग थी । इस ज़रूरत को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बअसत (नियुक्ति) ने पूरा कर दिया है। इस के बाद भी अगर कोई हठधर्मी में लिप्त रहता है तो उस के जुर्म की संगीनी और बढ़ जाती है।

5. सहीफ़े अर्थात लिखे हुए पृष्ट । पाक सहीफ़ो से तात्पर्य अल्लाह की किताब के पृष्ट हैं जो

शुद्ध रुप से अल्लाह के कलाम पर आधारित हों और हर प्रकार के परिवर्तन और ग़लत आस्थाओं और नैतिक बुराइयों की मिलावट से पवित्र हों ।

आज जो लोग धर्म बैरी हैं वह बाइबिल और दूसरी पवित्र किताबों का अध्यन करें तो उन में पाई जाने वाली गुमराहीयों, ख़ुदा के बारे में तुच्छ धारणाऐं, नबियों से जुड़ी अनैतिक बातों, बेसिर पैर के उल्लेखों (रिवायतों) व्यर्थ कथाओं और रस्मों की जकड़ बन्दियों को देख कर उन का धर्म से बैर कुछ बढ़ ही जायेगा । इस धर्म के बैर को अगर कोई किताब दूर कर सकती है तो वह क़ुर्आन ही है जो न केवल इन तमाम ख़राबियों से पाक है बल्कि साथ ही उच्च कोटि की और अत्यंत हिकमत भरी (नीतिपूर्ण) शिक्षाओं पर आधारित है।

6. अपनी तरफ़ से बातें गढ़ कर अल्लाह की तरफ़ मंसूब करना और उन को पवित्र किताबों में शामिल करना धर्म का अवैध एवं स्वार्थपूर्ण प्रयोग (Exploitation) करने वालों का तरीक़ा रहा है और उस की मिसालें बाइबिल और दूसरी धार्मिक पुस्तकों में देखी जा सकती हैं। इन पवित्र ग्रन्थों का यह हाल देख कर एक ऐसी किताब की ज़रूरत उभर कर सामने आती है जिन में अल्लाह के आदेश (एहकाम) सही शक्ल में मौजूद हों और ऐसी ठोंस बातें हों जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए सही मन्ज़िल का निर्धारण कर सकें और उस को सही दिशा पर डाल सकें। क़ुर्आन ही वह किताब है जो इस कसौटी (मेयार) पर पूरी उतरती है और इन्सान की इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए नाज़िल हुई है।

7. अर्थात् अहले किताब में फूट पड़ जाने का कारण यह नहीं है कि उन के पास अल्लाह की हिदायत स्पष्ट रुप से नहीं आयी थी बल्कि इस की वजह अल्लाह की हिदायत से बेपरवाही, इच्छाओं के पीछे चलना और स्वार्थपरायणता (नफ़्सानियत) है वरना उन्हें जो किताब दी गई थी उस में अल्लाह की रौशन हिदायत मौजूद थी और कोई कारण न था कि वह गुमराह होते और अलग अलग फिरकों में बँट जाते ।

ध्यान रहे कि अहले किताब दो बड़े फ़िरक़ों (सम्प्रदाय) में बँट गये । यहूदी और ईसाई और इन दोनों ने अलग अलग धर्म का रुप धारण कर लिया एवं इन के अन्दर उप सम्प्रदाय भी काफ़ी पैदा हो गये जैसे ईसाईयों में कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट इत्यादि ।

8. अर्थात् इन्हें एक अल्लाह की उपासना और बन्दगी का हुक्म दिया गया था मगर इन्होंने इस प्रथम हिदायत ही के विरुद्ध काम किया अत: यहूदियों को बुत परस्ती में भी झिझक न हुई और वह हज़रत उज़ैर को अल्लाह का बेटा बना बैठे और ईसाईयों ने एक की जगह तीन ख़ुदा बना लिए एवं दोनों गिरोहों ने अपने धर्मशास्त्रियों और गुरूजनों को रब बना लिया कि वह जिस चीज़ को चाहे हराम क़रार दे और जिस को चाहे हलाल ।

9. यहाँ दीन का अर्थ उस आज्ञापालन के हैं जो शुद्ध हृदयता (ख़ुज़ू) के साथ हो एवं स्वतंत्र और बिनाशर्त हो । ख़ालिक़ और मालिक होने की हैसियत से इस आज्ञापालन का अधिकारी मात्र अल्लाह तआला है इस लिए यह इताअत (आज्ञापालन) शुद्ध रुप से उसी के लिए होनी चाहिए। इस की हिदायत पिछली किताबों में भी दी गई थी और क़ुर्आन में भी दी गई है।

एक ख़ुदा जो वास्तव में अकेला ख़ुदा है कि इबादत का जो हुक्म दिया गया है उस के साथ ''दीन'' को उस के लिए ख़ालिस करने का मुतालबा इस्लाम में इबादत की स्थिति को ख़ूब अच्छी तरह खोल कर रख देता है। और वह है परस्तिश (पूजा एवं उपासना) के साथ इताअत (आज्ञापालन) का सम्मिश्रण या घुल मिल जाना । दूसरे शब्दों में इस्लाम में एक अकेले ख़ुदा की उपासना इस तरह से अभीष्ट (मतलूब) है कि आदमी उस की बिना शर्त आज्ञा पालन के लिए दिल से आमादा

हो और इस स्वयं स्थापित हस्ती की इताअत को अल्लाह के लिए विशिष्ट कर दे। इस इताअत (आज्ञापालन) में अल्लाह की शरीअत और उस का पूरा दीन शामिल है।

10. रास्तरवी (सत्यनिष्ठा) के साथ अल्लाह की इबादत करने का मतलब यह है कि न तो दिल का झुकाव अल्लाह के सिवा किसी की पूजा, उपासना की तरफ़ हो और न उस की इबादत में यह बिदअतों (अप्रमाणित विधियों) को शामिल करें बल्कि एकाग्रता के साथ अल्लाह की इबादत उस तरीके पर करे जिस तरीक़े को अल्लाह ने इबादत के लिए निश्चित कर दिया है। चूँकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तरीक़ी यही था इस लिए हनीफ़ियत (एकाग्रता) इब्राहीमी तरीक़े का दूसरा नाम है ।

11. नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने का हुक्म अहले किताब को दिया गया था लेकिन उन्होंने नमाज़ को नष्ट कर दिया यहाँ तक कि तौरात से यह हुक्म ग़ायब कर दिया अलबत्ता ज़कात के एहकाम किसी न किसी रुप में अब भी बाइबिल में मौजूद हैं।

12. अर्थात् सच्चे दीन की यह बुनियादी शिक्षाऐं हैं। यही दीन अहले किताब को दिया गया था लेकिन उन्होंने इन बुनियादी शिक्षाओं को खो दिया और खोखली दीनदारी को ले कर बैठ गये। इस कसौटी पर दूसरे धर्मों को भी परखा जा सकता है।

13. यहाँ क़ुफ्र से मुराद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल और क़ुर्आन को उस की नाज़िल की हुई किताब मानने से इन्कार करना है।

14. जो मख़्लूक़ (सृष्टि) अपने ख़ालिक़ (सृष्टा) से कुफ्र और बग़ावत का रवैया अपनाये उस के बदतरीन मख़्लूक़ होने में संदेह की क्या गुन्जाइश हो सकती है?मालूम हुआ कि कुफ्र के नतीजे में इन्सान इन्सायित का जौहर (Cream of humanity) खो बैठता है और प्रगति के बजाय पतन के आख़िरी गढ़े में गिरता है।

7. **निस्संदेह जो लोग ईमान लाये [15] और जिन्होंने नेक अमल (सुकर्म) किये वह बेहतरीन मख़्लूक़ हैं।[16]**

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧

8. **उन का बदला उन के रब के पास हमेशा रहने के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी । वह उन में सदा सर्वदा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी [17] और वे उस से राज़ी ! यह (ईनाम) उस के लिए है जो अपने रब से डरे।[18]**

جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝٨

15. ईमान लाने के भावार्थ में तौहीद के अलावा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल और क़ुर्आन को उस की नाज़िल की हुई किताब स्वीकार करना भी शामिल है।

16. मालूम हुआ कि ईमान और नेक अमल (सुकर्म) के नतीजे में मानवता का सार खिलता है और वह वास्तविक प्रगति की उच्चश्रेणी तक पहुँचता है।

जो मख़लूक हर तरह के शैतानी प्रलोभन के विरुद्ध और हर तरह की आज़माइशों से गुज़रने के बावजूद क़ायम रही और उस की वफ़ादार और आज्ञाकारी बन कर रही उस के बेहतरीन मख़्लूक़ होने में संदेह की क्या गुन्जाइश हो सकती है?

17. अल्लाह की रज़ा सब से बड़ा ईनाम है जिस से ईमान वाले पुरस्कृत किये जायेंगे । जन्नत अल्लाह तआला की रज़ा की निशानी होगी और वहाँ जाहिरी नेमतों के साथ साथ यह बातिनी (अन्दुरुनी) नेमत भी ईमान वालों को नसीब होंगी ।

18. अपने रब से डरना दीन की असल रुह है। जिन लोगों के अन्दर यह रुह मौजूद होती है उन के अन्दर सही दीनदारी होती है। इसी आधार पर वह इस ईनाम के योग्य होते हैं जो इस आयत में बयान हुई है।

पवित्र क़ुर्आन

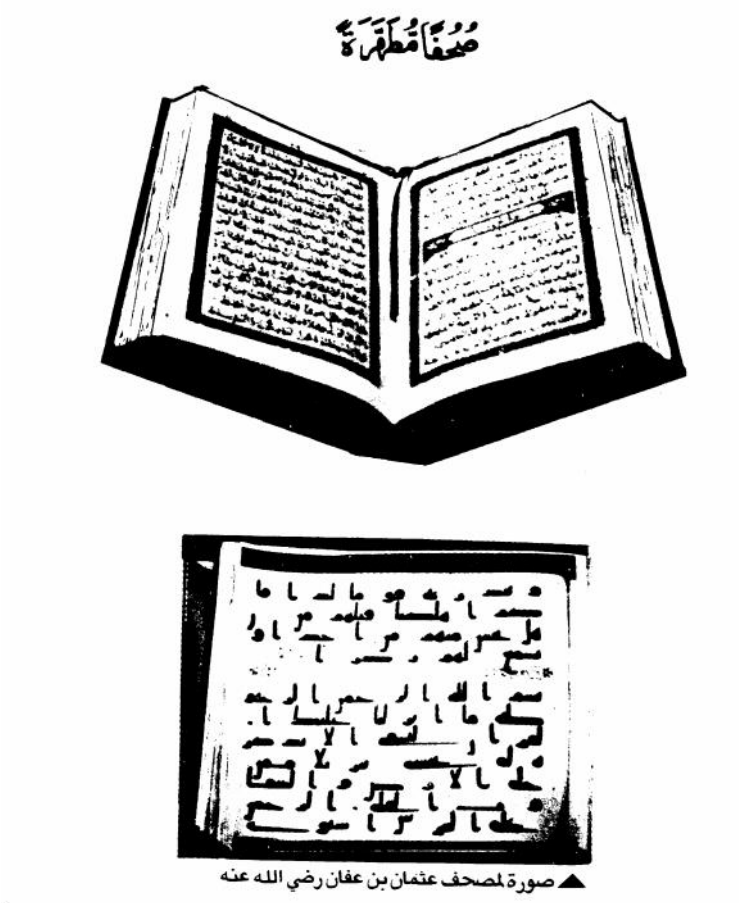

صورة لمصحف عثمان بن عفان رضي الله عنه

ख़लीफ़ा उस्मान के हाथ का लिखा हुआ क़ुर्आन

९९. अज़्-ज़िल्ज़ाल

नाम :- पहली आयत में क़ियामत के दिन ज़मीन के हिलाये जाने का ज़िक्र हुआ है और इस सिलसिले में लफ़्ज़ ज़िलज़ाल आया है जिस की मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अज़्-ज़िल्ज़ाल'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के आरम्भिक चरण में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- क़ियामत के दिन इन्सान का खड़ा होना है ताकि उस के कर्मों का पूरा कच्चा चिट्ठा उस के सामने रखा जाए।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में ज़मीन की उस स्थिति का वर्णन है जो क़ियामत के दिन उस पर छाई होगी और जिस को देख कर इन्सान हक्का बक्का रह जायेगा।

आयत ४ और ५ में बताया गया है कि उस रोज़ ज़मीन बोल पड़ेगी और अपनी दास्तान सुनाऐगी ताकि इन्सान उस की पीठ पर जो कुछ करता रहा है उस की ऐतिहासिक गवाही सामने आ जाये।

आयत ६ से ८ में बताया गया है कि उस रोज़ लोग विभिन्न गिरोहों के रुप में आमाल (कर्मों) की पेशी के लिए निकल पड़ेंगे और कोई छोटी भलाई या बुराई ऐसी नहीं होगी जो उस के सामने न आ जाए।

९९.सूरह अज़्-ज़िल्ज़ाल

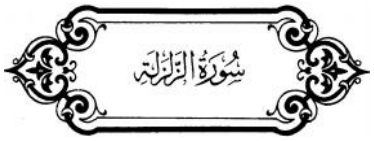

अनुवाद आयतें : ८

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. **जब ज़मीन अपनी पूरी शिद्दत (प्रचण्डता) के साथ हिला दी जाएगी।[1]**

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١

2. **और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी,[2]**

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝٢

3. **और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया है।[3]**

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝٣

4. **उस रोज़ वह अपनी ख़बरें सुनायेगी।[4]**

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝٤

5. **क्यों कि तुम्हारे रब ने उस को हुक्म दिया होगा।[5]**

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝٥

6. **उस रोज़ लोग विभिन्न गिरोहों के रुप में निकलेंगे ताकि उन्हें उन के आमाल (कर्म) दिखा दिये जाऐंगे ।**

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝٦

7. **तो जिस ने ज़र्रा (कण) बराबर भलाई की होगी वह उस को देख लेगा।**

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝٧

8. **और जिस ने ज़र्रा (कण) बराबर बुराई की होगी वह उस को देख लेगा।**

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝٨

1. यह कियामत के दूसरे चरण का वर्णन है जब कि तमाम मरे हुए इन्सान ज़िन्दा निकल पड़ेंगे जैसा कि आगे के मज़मून से साफ़ है ।

उस रोज़ पूरा भूमण्डल इस प्रचण्डता (शिद्दत) के साथ हिलाया जायेगा कि उस हिलाये जाने की सही कल्पना भी नहीं की जा सकती । ज़मीन पर जितने भी ज़लज़ले आये हों, क़ियामत का ज़ल्ज़ला इतना ज़बरदस्त होगा कि बड़े से बड़ा ज़लज़ला भी उस के मुक़ाबले में कुछ न होगा ।

2. तात्पर्य मुर्दे हैं जिन को ज़मीन क़ियामत के दिन उगल देगी । गोया मुर्दे ज़मीन के लिए बोझ हैं जिन से वह खाली हुआ चाहती है। इस से यह बताना अभिप्रेत है कि मरने के बाद इन्सान का शरीर मिट्टी में जो मिल जाता है वह नाश नहीं हो जाता बल्कि यह अमानत बनकर ज़मीन के पास रहता है चाहे रसायनिक विधि पर (Chemically) उस ने किसी भी तत्व का रुप धारण कर लिया हो और यह अमानत अपने असली रुप में क़ियामत के दिन ज़मीन हाज़िर कर देगी । अर्थात मानव शरीर के अंग अंग रसायनिक परिवर्तन से गुज़रने के बाद अपने वास्तविक रुप में फिर सामने आ जाऐंगे ।

बोझा बाहर निकालने के भावार्थ में वह प्रमाण भी शामिल हैं जो ज़मीन में दफ़न हैं।

(अधिक व्याख्या के लिए देखिऐ सूरह इन्शिक़ाक़ नोट नं. ४)

3. अर्थात इन्सान क़ब्र से निकलते ही बदहवासी की दशा में पुकार उठेगा कि ज़मीन को यह क्या हो गया है कि वह झटके पर झटके ले रही है और एक ज़बरदस्त हादसे से दोचार है। ज़मीन की यह हालत देख कर इन्सान पहले तो परेशान होगा इस के बाद उस पर यह बात खुलेगी कि यह क़ियामत का दिन है। अलबत्ता जो लोग अपने ईमान में सच्चे हैं उन पर क़ियामत की कोई घबराहट नहीं छाएगी ।

4. अर्थात् ज़मीन अपनी सारी आप बीती सुनायेगी कि इन्सान ने जिसे ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया गया था उस को किस तरह से प्रयोग किया । कौन ज़मीन के पैदा करने वाले के आगे झुका और कौन भूमि पूजा करता रहा, किस ने धरती पर मस्जिद बनाई और किस ने मन्दिर, किस ने लोकहित के विभाग क़ायम किये और किस ने सिनेमा घर, किस ने दीनी सभाऐं आयोजित किए और किस ने नाच रंग की महफ़िलें सजायी, कौन मानवता के अमन और शान्ति के लिए दौड़ धूप करता रहा और कौन बस्तियों को उजाड़ने के लिए बम बरसाता रहा, कौन सुधार का काम करता रहा और किस ने फ़साद बरपा किये, जंग किन लोगों ने लड़ी, कब लड़ी किस मैदान में लड़ी और किन उद्देश्यों के लिए लड़ी । मतलब यह कि ज़मीन गुज़री हुई तमाम घटनाऐं इस तरह सुनायेगी जैसे सभी घटनाऐं जो ज़मीन पर घटी थी को टेप कर लिया गया हो और क़ियामत के दिन यह पूरा रेकार्ड इन्सान को सुनाया जायेगा । ताकि वह ज़मीन पर जो कुछ करता रहा है उसका प्रमाण एकत्र हो और इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे हों । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी और पूछा, जानते हो ज़मीन क्या ख़बरें सुनायेगी? लोगों ने कहा अल्लाह और उस का रसूल ही बेहतर जानते हैं। फ़रमाया वह हर बन्दे और बन्दी के बारे में गवाही देगी कि उस ने यह और यह काम फ़लाँ और फ़लाँ दिन उस की पीठ पर किये थे । (तिर्मिज़ी अबवाब तफ़सीरुल क़ुर्आन)

5. यह सवाल दिमाग़ में पैदा हो सकता है कि ज़मीन तो बेजान धातु में से है फिर वह इन्सानों के कर्मों की गुज़री दास्तान किस तरह सुनायेगी? इस का जवाब इस आयत में दिया गया है कि वह अल्लाह तआला के हुक्म से बोल पड़ेंगी । क़ुर्आन में दूसरी जगह पर यह स्पष्टीकरण भी किया गया है कि क़ियामत के दिन मुजरिमों की खालें भी उस के विरुद्ध गवाही देंगी और वह जब आश्चर्य

से पूछेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी तो खालें जवाब देंगी कि जिस ख़ुदा ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की उस ने हमें भी जबान दे दी । (हा मीम अस्सजदा -२१)

मतलब यह कि जो चीज़े हमारे अनुभव में बोलने वाली नहीं हैं उन के बोलने लग जाने का अनुभव हम क़ियामत के दिन करेंगे, और जो हस्ती मिट्टी से इन्सान बना कर खड़ा कर सकती है उस के लिए मिट्टी में वाक शक्ति (बोलने की ताक़त) पैदा करना क्या मुशकिल है? जब हम अपनी आवाज़ की प्रतिध्वनि (गूँज) गुँबदों से इसी दुनिया में सुन सकते हैं तो क़ियामत के दिन जब कि एक नयी व्यवस्था क़ायम होगी, अपनी इन बातों की जो दुनिया में करते रहे हैं, प्रतिध्वनि (गूँज) सुनना क्यों असंभव है?और टेलिवीज़न, टेप रेकार्ड और फोटोग्राफ़ी जैसे अविष्कारों के इस दौर में तो यह बात दलील की मोहताज न रही कि इन्सान के चाल चलन और तौर तरीक़े कण कण पर अंकित हो रहे है ।

6. अर्थात् क़ियामत के दिन लोग ज़मीन के विभिन्न भागों से विभिन्न दिशा में गिरोहों के रुप में निकलेंगे ताकि हश्र के मैदान में जमा हो जायें और वहाँ उन्हें उन के सारे कर्म दिखाऐं जायें । क़ियामत तक जितने इन्सान भी पैदा हुए और मरे, चाहे कोई ज़मीन में दफ़न हुआ हो या समूद्र में डूब गया हो, किसी की लाश जला दी गई हो या हवा में उड़ा दी गई हो, क़ियामत के दिन सब के सब ज़मीन से निकल पड़ेंगे ताकि वह जो कुछ करते रहे हैं उस का नतीजा उन के सामने आये । ''ताकि उन्हें उन के आमाल (सारे कर्म) दिखा दिये जाये'' से स्पष्ट होता है कि इन्सान के सामने उस की अमली ज़िन्दगी (Practical Life) के दृश्य प्रस्तुत किये जायेंगे ।

7. अर्थात् क़ियामत के दिन हर व्यक्ति को जो स्वयं उस के पूरे जीवन ---- जो कुछ भी कहा और जो कुछ भी किया -----का अनुभव कराया जायेगा तो वह अपनी छोटी से छोटी नेकी और छोटी से छोटी बदी को देख लेगा । रहा ईनाम और सज़ा का मामला तो वह इन्साफ़ के तकाज़ों को पूरा करते हुए उन उसूलों के अनुसार होगा जिन की पुष्टि क़ुर्आन में दूसरी जगहों पर की गई है। जैसे यह कि जिन के पलड़े भारी होंगे वह कामयाब होंगे या यह कि काफ़िरों के आमाल (सारे कर्म) निष्फल करार पायेंगे या यह कि शिर्क (बहुदेववाद) ऐसा गुनाह है जो क्षमा योग्य नहीं और काफ़िरों के लिए सदा सर्वदा जहन्नम की सज़ा है। इत्यादि।

१००. अल्-आदियात

नाम :- पहली आयत में ''अल्-आदियात्''(दौड़ने वाले घोड़ों) की क़सम खाई गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-आदियात्'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के पहले मरहले (चरण) में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- ख़ुदा के सामने जवाबदेही से बेपरवाह रहने के नतीजे में पैदा होने वाला दायित्वहीन रवैया है जो इन्सान को ख़ुदा का नाशुक्रा (कृतघ्न) बनाता है और उस की प्रदान की हुई नेमतों और शक्तियों के अवैध इस्तेमाल पर उसे आमादा करता है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में जंगी घोड़ो को इस बात की गवाही में पेश किया गया है कि इन्सान ख़ुदा की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत इस्तेमाल करता है।

आयत ६ से ८ में इन्सान को ख़ुदा का नाशुक्रा (कृतघ्न) होने और उस के धन के प्रेम में बँधा होने पर भर्त्सना एवं निंदा की गई है।

आयत ९ से ११ में इन्सान को सचेत किया गया है कि उसे क़ियामत के दिन क़ब्र से उठा खड़ा किया जायेगा और उसे ख़ुदा के सामने उपस्थित होना होगा। उस रोज़ इन्सान के अन्दर का हाल खुल कर सामने आ जायेगा और वह अनुभव करेगा कि कोई बात भी यहाँ तक कि उस की वह नियतें और इरादे भी अल्लाह से छिपे हुए नहीं हैं जो दुनिया में विभिन्न कामों को अन्जाम देते हुए उस ने अपने दिल में छिपाये रखे थे।

१००.सूरह अल्-आदियात्

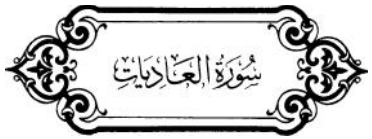

अनुवाद आयतें : ११

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾

1. **क़सम है [1] दौड़ने वाले घोड़ो की [2] जो हाँप उठते हैं।[3]**

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾

2. **जो टाप मार कर चिंगारियाँ झाड़ते हैं।[4]**

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿٣﴾

3. **और प्रातः समय धावा मारते हैं।[5]**

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿٤﴾

4. **और इस दौड़ से गुबार (धूल) उड़ाते हैं।[6]**

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿٥﴾

5. **और इस हालत में समूह में जा घुसते हैं।[7]**

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ﴿٦﴾

6. **सत्य यह है कि इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है।[8]**

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿٧﴾

7. **और वह स्वयं उस पर गवाह है।[9]**

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿٨﴾

8. **और वह धन के लोभ में बहुत कठोर है।[10]**

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ﴿٩﴾

9. **तो क्या वह उस समय को नहीं जानता जब कब्रों में जो कुछ है उसे बाहर निकाल लिया जायेगा।[11]**

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ﴿١٠﴾

10. **और सीनों में जो कुछ छिपा है उस को निकाल कर परखा जायेगा।[12]**

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾

11. **निस्संदेह उन का रब उस रोज़ उन से अच्छी तरह भिज्ञ (वाक़िफ़) होगा।[13]**

1. क़सम की व्याख्या के लिए देखिए सूरह तकवीर नोट नं.१४

2. तात्पर्य जंगी घोड़े हैं जो सरपट दौड़ते हैं। क़ुर्आन के अवतरण के समय में घोड़े युद्ध के लिहाज़ से बड़ा महत्व रखते थे ।

3. घोड़ों का हाँप उठना और हाँपने के बावजूद अपनी दौड़ जारी रखना इस बात को व्यक्त करता है कि अल्लाह तआला ने उन के अन्दर ज़बरदस्त शक्ति रखी है।

4. अर्थात जब युद्ध अथवा ग़ारतगरी (विनाश) के लिए घोड़े दौड़ाये जाते हैं तो वह ऐसी सरगर्मी (कुशलता) दिखाते हैं कि उन की टापों से चिंगारियाँ झड़ने लगती है। यह चिंगारियाँ घोड़ों की टापों के तेज़ी से पथरीली ज़मीन से टकराने के फलस्वरूप निकलती है और रात के अन्धेरे में दिखाई देती हैं।

घोड़ों का चिंगारियाँ झाड़ते हुए सरपट भागना इस बात का सबूत है कि अल्लाह तआला ने एक ज़बरदस्त ताक़त इन्सानों के अधीन कर दी है।

5. अरबों का नियम था कि जब वह किसी क़बीला या बस्ती पर हमला करना चाहते तो रात को घोड़े दौड़ाते और बिलकुल सुबह हमला कर देते । रात को इस लिए हमला नहीं करते थे कि रात के अंधेरे में लड़ना मुश्किल था और सुबह को इस लिए हमला कर देते थे कि दुश्मन पर उन्हें अचानक टूट पड़ने का मौक़ा मिलता ।

अर्थात् यह घोड़े ऐसी तीव्र गति से दौड़ते हैं कि गर्द-गुबार का एक तूफ़ान उठ खड़ा होता है और जब यह धावा बोलते है तो अपने साथ गर्द-गुबार की एक आँधी लिये होते हैं।

समझ लीजिए कि अरबिस्तान का इलाक़ा रेगिस्तानी है और क़ुर्आन के अवतरण के समय में पक्की सड़कें भी नहीं थी । इस लिए घोड़ों की दौड़ से जो गर्द-गुबार उठती होगा उस को देख कर लोग दूर ही से अन्दाज़ा कर लेते होंगे कि यह विनाश के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

7. अर्थात् समूह में घुस कर तबाही मचाते हैं । इन आयतों में अरब वासियों के उन हमलों का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो लूट मार और ग़ारतगरी (विनाश) के उद्देश्य से वह किया करते थे। एक क़बीला जब दूसरे क़बीले पर चढ़ाई करता तो इस के लिए घोड़े इस्तेमाल किये जाते । यह घोड़े रात के अंधेरे में चिंगारियाँ झाड़ते हुए निकलते और बिलकुल सुबह गर्द-गुबार की आँधी उठाये हुए बस्ती पर हमला बोल देते और बचाव करने वालों की भीड़ में जा घुसते । इस के बाद लूट मार का बाज़ार गरम होता और औरतों और मर्दों को पकड़ कर दासी और दास बना लेते । इस चीज़ ने अरब के इलाके में अशान्ति का वातावरण पैदा कर दिया था और बस्तियों पर यह ख़तरा मंडलाता रहता था कि मालूम नहीं कौन क़बीला किस बस्ती पर कब हमला कर बैठे।

क़ुर्आन ने इस अन्याय एवं अत्याचार का एहसास दिलाने के लिए विनाशकारी के उस षडयंत्र का चित्र प्रस्तुत कर दिया जिस में तेज़ रफ़्तार घोड़ो को इस्तेमाल किया जाता था । यह ऐसी ही बात है जैसे आज ग़लत एवं व्यर्थ उद्देश्यों के लिए लड़ी जाने वाली जंगों में जो तेज़ रफ़्तार विमान प्रयोग किये जाते हैं और उन के द्वारा जो बमबारी की जाती है और शहरों और बस्तियों को जिस तरह तबाह किया जाता है उस की तस्वीर अल्फ़ाज़ में खींच ली जाये ताकि इन अन्यायपूर्ण एवं अत्याचारी कारवाइयों के विरुद्ध इन्सानियत को झिंझोड़ा जा सके।

8. यह वह बात है जिस का एहसास दिलाने के लिए सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम खाई गई है। मतलब यह है कि तेज़ रफ़्तार घोड़े अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत हैं और युद्ध में अपना ज़बरदस्त महत्व रखते हैं। लेकिन इन को ग़लत एवं अवैध उद्देश्यों और अन्यायी एवं अत्याचारी कारवाईयों के लिए इस्तेमाल करना इस नेमत का निरादर और अपने रब की बड़ी नाशुकरी (कृतघ्नता) है।

वर्तमान दौर में परमाणू शक्ति का अविष्कार इन्सान के लिए अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत है और इस नेमत का शुक्र वह इसी सूरत में अदा कर सकता है जब कि वह इस शक्ती को रचनात्मक कामों के लिए इस्तेमाल करे लेकिन अगर वह विनाश के कामों जैसे ऐटम बम बनाना और उस को बड़े बड़े शहरों को तबाह करने और इन्सानियत पर अत्याचार तोड़ने के लिए इस्तेमाल करता है तो यह इस नेमत का खुला अनादर और इस को प्रदान करने वाले की बड़ी नाशुक्री (कृतघ्नता) होगी ।

9. अर्थात् इन्सान की यह कृतघ्नता (नाशुक्री) दलील की मुहताज नहीं उस का ज़मीर स्वयं इस पर बहुत बड़ा गवाह है। वह ख़ुदा की प्रदान की हुई नेमतों के अवैध प्रयोग के लिए कितने ही बहाने बनाए उस की प्रकृति अन्दर से पुकार उठेगी कि उस ने यह ग़लत हरकत की है। कितने ही इन्सान खुल्लम खुल्ला अपने परवरदिगार के विरुद्ध कृतघ्नता प्रकट करते हैं। वह अपनी कृतघ्नता पर स्वयं प्रमाण है।

10. अर्थात् इन्सान को ख़ुदा से अधिक धन दौलत से प्रेम है। वह ख़ुदा परस्त बनने के बजाय धन का पुजारी बन जाता है । अत: वह धन की प्राप्ति के लिए ख़ून खराबा और विनाश करने से नहीं रुकता ।

स्पष्ट रहे कि क़ुर्आन दौलत की मुहब्बत को जो बुरा क़रार देता है तो वह इस अर्थ में कि आदमी ख़ुदा से अधिक धन दौलत को प्रिय रखे । आख़िरत के बजाए संसार को लक्ष्य बनाये । धन प्राप्त करने में वैध और अवैध एवं हलाल और हराम में फ़र्क़ न करे और ख़ुदा के बन्दों के हक़ मारे एवं उन की संपत्तियों पर अवैध क़ब्ज़ा करने में न हिचकिचाऐं ऐसी धनपूजा हर ज़माने में मौजूद रही है और इस का नया रुप मौजूदा ज़माने का पूँजीवाद (Capitalism) है।

11. अर्थात् तमाम मरे हुए इन्सानों को ज़िन्दा उठा खड़ा किया जायेगा (देखिये सूरह ज़िलज़ाल नोट नं.२ और ६ यहाँ सवाल तंबीह के तौर पर है कि इन्सान लूट खसोट इस लिए करता है और माया के मोह में इस लिए लिप्त होता कि उसे न अपने दोबारा ज़िन्दा किये जाने का यक़ीन है और न ख़ुदा के सामने जवाबदेही का एहसास, हालाँकि यह मरहला ज़रूर पेश आना है।

12. अर्थात् क़ियामत के दिन केवल ज़ाहिरी आमाल को ही नहीं देखा जायेगा जो दुनिया में इन्सान करता रहा है बल्कि उस के पीछे जो भावना, इरादे, नीयतें, उद्देश्य और प्रेरक रहे हैं। उन को भी देखा और परखा जायेगा । ताकि इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे हों और इस के बाद ही ईनाम या सज़ा का फैसला सुनाया जाऐगा ।

इस सिलसिले में सब से पहले सीने के जिस भेद को ज़ाहिर किया जायेगा वह ईमान या कुफ़्र होगा अर्थात् किस के दिल में ईमान था और किस के दिल में कुफ़्र, जो लोग अपने को मुसलमान व्यक्त करते रहे लेकिन दिलों में कुफ़्र छिपाए हुए थे उन के सीनों से उस रोज़ कुफ़्र ही बरामद होगा इसी तरह जिन लोगों ने नेकी और भलाई के काम किसी ग़लत मक़सद या अवैध प्रेरक के अन्तरगत किये होंगे तो उन की हक़ीक़त भी खुल जायेगी और जो लोग ग़लत काम कर के उन को सही साबित करने की कोशिश करते हैं ताकि लोग समझ लें कि उन्होंने कोई ग़लत काम नहीं किया है, उन के उद्देश्य और नीयतें भी खुल कर सामने आ जाएगी ।

13. अल्लाह तआला हर व्यक्ति के ज़ाहिर और बातिन (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष) से आज भी बाख़बर (भिज्ञ) हैं लेकिन क़ियामत के दिन हर व्यक्ति पर यह हक़ीक़त ख़ुल जायेगी और वह मानने के लिए विवश होगा कि वास्तव में अल्लाह तआला को हर व्यक्ति के अन्दर और बाहर के हालात का पूरा पूरा ज्ञान था और आज क़ियामत के दिन वह जो फैसला भी कर रहा है पूरी तरह जानकारी रखते हुए कर रहा है।

१०१.अल्-क़ारिअः

नाम :- आयत नं. १ में क़ियामत की महान घटना को ''अल्-क़ारिअः'' (खड़खड़ाने वाली आफ़त) की संज्ञा दी गई है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-क़ारिअः'' है ।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से पता चलता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- क़ियामत की महान घटना से ख़बरदार (सचेत) करना है और इस बात से आगाह करना है कि उस रोज़ सफ़लता और असफ़लता की कसौटी अच्छे कर्म होंगे ।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ५ में क़ियामत की हौलनाकी और उस के फल्सवरूप पैदा होने वाले हालात से ख़बरदार (सचेत) किया गया है।

आयत ६ और ७ में उन लोगों का हुस्ने अन्जाम (सुपरिणाम) बयान किया गया है जिन के कर्म इन्साफ़ के तराज़ू में भारी होंगे ।

आयत ८ से ११ में उन लोगों का ख़राब अन्जाम (कुपरिणाम) बयान किया गया है जिन के कर्म इन्साफ़ के तराज़ू में हल्के होंगे ।

१०१.सूरह अल्-क़ारिअः

अनुवाद आयतें : ११

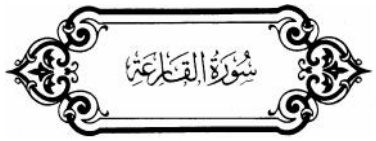

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. **वह खड़खड़ाने वाली आफ़त,[1]** اَلْقَارِعَةُ ۝١

2. **क्या है वह खड़खड़ाने वाली आफ़त।[2]** مَا الْقَارِعَةُ ۝٢

3. **और तुम्हें क्या मालूम कि वह खड़खड़ाने वाली आफ़त क्या है?[3]** وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣

4. **वह दिन जब लोग बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगे।[4]** يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝٤

5. **और पहाड़ धुनके हुए ऊन की तरह हो जायेंगे।[5]** وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝٥

6. **फिर जिस का पलड़ा भारी होगा,[6]** فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦

7. **वह दिलपसंद ऐश में होगा।** فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧

8. **और जिस का पलड़ा हलका होगा,[7]** وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨

9. **उस का ठिकाना ''हावियः'' होगा,[8]** فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩

10. **और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है?** وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝١٠

11. **दहकती हुई आग।[9]** نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

1. अरबी Text में लफ़्ज़ ''अल्क़ारिअः'' इस्तेमाल हुआ है जो क़ियामत के कई नामों में से एक नाम है । इस के शाब्दिक अर्थ हैं ठोंकने वाली, खड़खड़ाने वाली बड़ी आफ़त । क़ियामत को इस नाम की संज्ञा देने का कारण यह है कि यह बहुत बड़ी आफ़त की सूरत में प्रकट होगी और जिस तरह कोई रात में आने वाला दरवाज़े को खटखटा देता है और सोने वाले अचानक जाग उठते हैं उसी तरह यह आफ़त अचानक आयेगी जिस को देख कर लोग घबरा उठेंगे ।

2. यह सवाल इस लिए है ताकि लोग अचेतना से मुक्त हो जायें ।

3. यह सवाल क़ियामत की हक़ीक़त और उस की हौलनाकी से आगाह करने के लिए । अर्थात् इस आफ़त को मामूली घटना न समझो । क़ुर्आन क़ियामत का वर्णन जिस विश्वास और दृढ़ता के साथ करता है और उस के जो हालात विस्तार से बयान करता है वह उस की सच्चाई का खुला प्रमाण है । आज आसमानी किताबों में कोई किताब ऐसी मौजूद नहीं है जो क़ियामत की इतनी स्पष्ट कल्पना इस विस्तार के साथ प्रस्तुत करती है।

4. अर्थात् क़ियामत के दिन लोग क़बरों से अस्तव्यस्त बिखरे हुए निकल पड़ेंगे और उन की घबराहट का यह हाल होगा जैसे बिखरे हुए पतिंगे । अस्तव्यवस्तता का चित्रण सूरह क़मर में इस तरह किया गया हो ।

خُشَّعاً اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۔ (القمر۔٧)

''झुकी हुई निगाहों के साथ क़बरों से इस तरह निकलेंगे कि गोया वह बिखरी हुई टिड्डियाँ है।''

इन्सान जब क़ब्र से उठेगा तो न उस के साथ उस का परिवार होगा और ना ज़ात बिरादरी के लोग बल्कि वह अपने को एक अस्तव्यस्त झुंड और एक नये माहौल में पाएगा और ज़मीन और आसमान को बदला हुआ देख कर उस पर कड़ा आतंक छाया होगा ।

5. अर्थात् जिस तरह धुनका हुआ ऊन रेशा रेशा (तंतु तंतु) हो कर हवा में उड़ता है उसी तरह यह बड़े बड़े पहाड़ क़ियामत के दिन टुकड़े टुकड़े हो कर हवा में उड़ रहे होंगे । और जब हिमालय जैसे पहाड़, उस रोज़ उड़ रहे होंगे । तो कौन सा क़िला कौन सा महल और कौन सी बिल्डिंग है जो ज़मीन पर बाक़ी रह सकेगी ।

क़ियामत का इन्कार करने वालों को इस बात पर आश्चर्य होता था कि पहाड़ जैसी मज़बूत चीज़ को किस तरह उखाड़ फेंका जा सकता है? उन का आश्चर्य ख़ुदा की क़ुदरत (क्षमता) का सही अन्दाज़ा न करने की वजह से था । ज़ाहिर है जो ख़ुदा पहाड़ों को पैदा करने और उन को ज़मीन में गाड़ देने पर क़ादिर (सक्षम) है वह उन को टुकड़े टुकड़े कर हवा में उड़ा देने पर क्यों क़ादिर न होगा? वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों एवं अन्वेषणों के दौर में तो इन बातों को समझना बिलकुल आसान हो गया है। अगर एक ज़र्रे (कण) में इतनी शक्ति है कि उस को तोड़ने (Splitting) के नतीजे में ज़बरदस्त धमाका हो सकता है तो पहाड़ों के ज़र्रों को तोड़ने (Splitting) के नतीजे में क़ियामत (प्रलय) क्यों नहीं बरपा हो सकती ?

6. क़ियामत के दिन आमाल (कर्म) तौले जायेंगे और उन के लौतने के लिए मीज़ान (तराज़ू) क़ायम की जायेगी । इस तराज़ू में वही कर्म वज़नी होंगे जो हक़ की बुनियाद पर अन्जाम दिये गये होंगे । क्यों कि क़ियामत के दिन वज़न सिर्फ़ हक़ (सत्य) को हासिल होगा । जैसा कि सूरह ''आराफ़'' में फ़रमाया है।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ ط (الاعراف۔٨)

''वज़न उस रोज़ हक़ (सत्य) होगा ।

और कामयाबी के लिए शर्तें यह होगी कि यह पलड़ा भारी हो । और किसी व्यक्ति का पलड़ा इसी सूरत में भारी होगी जब कि उस ने व्यवहारिक जीवन (Practical Life) हक़ (सत्य) की बुनियाद पर गुजारी होगी । और जिस व्यक्ति की नेकियों की मात्रा जितनी अधिक होगी उतना ही अधिक यह पलड़ा भारी साबित होगा ।

इस मीज़ाने-अद्ल (इन्साफ़ के तराज़ू) का सम्बन्ध आख़िरत के हालात से है और आख़िरत (परलोक़) के ज़मान और मकान (Space & Time) और यहाँ के पैमाने सब कुछ इस दुनिया से बहुत भिन्न होंगे इस लिए हम आख़िरत की मीज़ान-अद्ल की परिस्थिति का पूरी तरह इस दुनिया में अन्दाज़ा नहीं कर सकते । अत: हमें क़ुर्आन के संक्षिप्त बयान को काफ़ी समझना चाहिए ।

आमाल के तौले जाने में अगर आश्चर्य की कोई बात थी तो विज्ञान के अविष्कारों ने इस को बिलकुल समाप्त कर दिया है। क्यों कि भावों एवं दशाओं को नापने के लिए कई तरह के यंत्र ईजाद हो गए हैं । अत: शरीर के ताप को जो एक दशा ही है। थर्मा मीटर के द्वारा नापा जाता है। इसी तरह हवा के दबाव को मालूम करने के लिए बैरोमीटर (Barometer) का प्रयोग किया जाता है। और जब मनुष्य के लिए दिशाओं एवं भावों का नापना संभव हो गया है तो ज़मीन और आसमान के रचयिता के लिए आमाल (कर्म) तौलने वाली मीज़ान (तराज़ू) क़ायम करना क्या मुशकिल है?

7. हल्क़ा पलड़ा उन लोगों का होगा जिन्होंने असत्य (बातिल) की बुनियाद पर जीवन व्यतीत किया था । उन के आमाल (कर्म) चाहे वह ऊपर से कितने ही अच्छे क्यों न दिखाई देते हों, आख़िरत की मीज़ाने-अदल (इन्साफ़ के तराज़ू) में बिलकुल बेवज़न होंगे क्यों कि असत्य (बातिल) सिरे से कोई वज़न ही नहीं रखता । इसी तरह ''सैयिआत'' (बुराइयाँ) भी परलोक (आख़िरत) में बेवज़न होंगी । आज जब कि यह बात अनुभव में आ रही हैं कि जो चीज़ ज़मीन पर वज़न रखती है वह अन्तरिक्ष में बिलकुल बेवज़न हो जाती है, यह मत लेना क्या मुशकिल है कि असत्य प्रेमियों कि ''ज़िन्दगी का कारनामा'' (दुनियाँ वालों की नज़रों में कितना ही वज़नी और शानदार रह हो आख़िरत (परलोक) के वातावरण में वह बिलकुल बेवज़न साबित होगा ।

8.''हाविय:'' का अर्थ गहरे गढ़े और खड्ड के हैं। यह जहन्नम का नाम है और इस नाम की संज्ञा देने का कारण यह है कि वह बहुत गहरी होगी और उस में दोज़ख़ वालों को ऊपर से फेंक दिया जाएगा ।

9. अर्थात् जहन्नम का यह गहरा गढ़ा दहकती हुई आग से भरा हुआ होगा ।

जहन्नम की विशालता, उस की गहराई और उस की असाधारण आग का हाल सुनकर कितने ही लोग इसे अविश्वस्नीय समझते रहे हैं । और आज भी समझते हैं लेकिन वास्तव में यह उन की संकीर्णता एवं अदूरदर्शिता बल्कि दृष्टि की ख़राबी है वरना जहन्नम का अस्तित्व हरगिज़ हैरत की बात नहीं । सूरज की मिसाल हमारे सामने मौजूद है, उसका तापमान २७ मिलियन डिग्री फारेनहाइट,उस का अक्षांश पृथ्वी के अक्षांश से १०९ गुना बड़ा और उस की मोटाई पृथ्वी की मोटाई से तीन लाख तैंतीस हज़ार गुना अधिक है। सूरज वास्तव में गर्म गैसों (Highly Heated Gases) का संग्रह है। जिस में ज़बरदस्त चुम्बकीय तूफ़ान उठते रहते हैं। विज्ञान द्वारा एकत्रित की गई जानकारीयों से सूरज की अथाह विशालता उस की बेअन्दाज़ (अनुभानरहित) गहराई और उस के ज़बरदस्त ताप का अच्छी तरह अन्दाज़ा हो जाता है। अर्थात सूरज दुनिया में जहन्नम का एक जीता जागता नमूना है और उस को देखते हुए आख़िरत की जहन्नम न केवल संभव मालूम होती है बल्कि उस का विश्वास (यकीन) पैदा हो जाता है।

१०२.अत्-तकासुर

नाम :- पहली आयत में ''तकासुर'' (धन दौलत को अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा) को वास्तविक जीवन लक्ष्य से बेपरवाही का कारण बताया गया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अत्-तकासुर'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवती दौर के शुरु में नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- लोगों को इस हक़ीक़त से आगाह करना है कि धन दौलत और दूसरे सांसारिक लाभ की प्राप्ति में इस तरह से लिप्त होना कि पूरी आयू उसी में खप जाये और आख़िरत की पूछ ताछ का ख़याल तक न आए, बहुत बड़ी मूर्खता एवं अदूरदर्शिता है और ज़बरदस्त घाटे का सौदा ।

कलाम की तरतीब:- आयत १ और २ में उन लोगों को झिंझोड़ा गया है जो दुनिया की दौलत को सब कुछ समझ बैठे हैं। और इस को अधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि मौत के उस पार जो कुछ पेश आने वाला है उस का उन्हें होश ही नहीं ।

आयत ३ से ५ में ख़बरदार किया गया है कि मौत के उस पार क्या है वह तुम्हें आँखें बन्द होते ही मालूम हो जायेगा । अगर आज तुम्हें इस का यक़ीन होता तो अपने भविष्य की तरफ़ से ग़ाफ़िल (बेपरवाह) न होते और संसार प्राप्ति की यह धुन तुम पर सवार न होती ।

आयत ६ से ८ में ख़बरदार किया गया है कि जहन्नम के अस्तित्व पर तुम विश्वास करो या न करो वह दिन आकर रहेगा । जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे, उस समय तुम्हें उस के अस्तित्व का पूरी तरह विश्वास हो जायेगा । लेकिन वह वक्त अमल (करने) का नहीं बल्कि हिसाब देने का होगा और तुम्हें हर हर नेमत के बारे में ख़ुदा के हुज़ूर जवाब देही करनी होगी ।

१०२.सूरह अत्-तकासुर

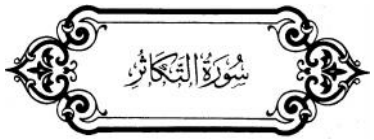

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ

अनुवाद आयतें : ८

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ①

1. **धन दौलत को अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा ने तुम्हें ग़फ़लत (बेपरवाही) में डाल रखा।[1]**

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ②

2. **यहाँ तक कि तुम क़बरों में जा पहुँचे।[2]**

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ③

3. **मगर नहीं। बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायेगा।[3]**

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ④

4. **फिर सुन लो ! यह धुन सही नहीं, बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायेगा।[4]**

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ⑤

5. **हरगिज़ नहीं ! अगर तुम पूरे यक़ीन (विश्वास) के साथ जान लेते।[5] (तो दुनिया के पीछे न पड़ते)**

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ⑥

6. **तुम ज़रुर दोज़ख़ को देख लोगे,[6]**

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ⑦

7. **फिर तुम उसे बिलकुल यक़ीन के साथ देखोगे,[7]**

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ⑧

8. **फिर उस रोज़ तुम से नेमतों के बारे में ज़रुर पूछताछ होगी।[8]**

1. अर्थात् तुम लोग धन दौलत कमाने, सांसारिक लाभ प्राप्त करने और ऐश के सामान एकत्र करने में ऐसे डूबे हो कि वास्तविक जीवन लक्ष्य और अपनी वास्तविक मन्ज़िल तुम्हारी नज़रों से ओझल हो गई है। तुम्हारी सारी दौड़ धूप और तुम्हारे सारे प्रयास धन अर्जित करने और वैभव और सत्ता की प्राप्ति के लिए होती है। इस से बुलन्द हो कर कुछ सोचने के लिए तुम आमादा ही नहीं हो।

धन दौलत का लोभ और सांसारिक लाभ की प्राप्ति में मनुष्य का हद से ज़्यादा वयस्त होना उस की वह बुनियादी कमज़ोरी है जिस में वह हमेशा मुब्तिला रहा है। अलबत्ता मौजूदा दौर में उस ने कुछ नया और प्रगतिशील रुप धारण कर लिया है अत: धन प्रेम ने पूँजीवाद की, और संसार प्रेम ने भौतिकवाद का रुप धारण कर लिया है। अगर इन्सान पहले आख़िरत का इन्कार करता था तो अब सिरे से ख़ुदा ही को नहीं मानता । अगर पहले नैतिक मूल्यों (Moral Values) को पीछे फेंक कर सांसारिक लाभ प्राप्त करता था तो अब सांसारिक लाभ की ख़ातिर नैतिक मूल्यों (Moral Values) से बिलकुल खाली हो गया है। फिर मौजूदा सामाजिक उन्नति से प्रभावित हो कर हर व्यक्ति को अपना जीवन स्तर (Standard of Life) ऊँचा करने की चिन्ता है और आर्थिक क्षेत्र में व्यक्ति और समूह एक दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। लेकिन नैतिकता का स्तर (Standard of Moral) बुलन्द करने की फिक्र किसी को नहीं है, और न कोई यह सोचने का कष्ट उठाता है कि क्या संसार जीवन कर आख़िरी मरहला है या उस से आगे भी मरहले तै करने होंगे? इस महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर ध्यान न करके इन्सान अपने जीवन लक्ष्य से बहुत दूर जा पड़ा है और ऐसा बेसुध है कि उसे आगे पीछे की कुछ ख़बर नहीं ।

2. अर्थात अधिक से अधिक धन समेटने और संसार प्राप्ति के प्रयासों में तुम ने अपनी पूरी आयु खपा दी और मरते दम तक तुम्हें यह तौफ़ीक़ नसीब न हुई कि मौत के बाद जिस चीज़ से मामला पेश आने वाला है उस पर विचार करते ।

इन्सान की अधिक चाह की इच्छा और कभी न समाप्त होने वाले लोभ पर उसे हदीस में भी बड़े प्रभावपूर्ण अन्दाज़ से ख़बरदार किया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास से उल्लिखित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:-

لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغٰى ثَالِثًا وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ

ابْنِ آدَمَ اِلَّا التُّرَابُ۔ (بخاری کتاب الرقاق)

"आदमी के पास अगर धन से भरी दो वादियाँ हों तो वह तीसरी की तमन्ना करेगा । आदमी का पेट तो मिट्टी ही भर सकती है।" का मतलब यह है कि आदमी की लालच की समाप्ति मिट्टी में मिल जाने के बाद ही हो सकती है।

3. अर्थात बहुत जल्द यह सच्चाई तुम पर खुल जाएगी कि धन दौलत की अधिकता और सांसारिक साज़ो-सामान का अधिक मात्रा में प्राप्त हो जाना असल कामयाबी नहीं है। बल्कि असल कामयाबी आख़िरत की नेमतों की प्राप्ति है। उस समय तुम्हें अपनी ग़लती का अधिक एहसास होगा कि अख़िरत को नज़र अन्दाज़ कर के तुम ने कितने बुरे अन्जाम को बुलावा दिया है।

4. मज़मून की यह पुनरवृत्ति (Repetition) ताक़ीद के लिए भी है और इस बात की ओर इशारा करने के लिए भी कि संसार प्राप्ति की इच्छा की हक़ीक़त पहली बार तो मौत के आते ही सामने आएगी और दूसरी बार क़ियामत के दिन प्रकट होगी ।

5. अर्थात् क़ुर्आन जिस दिन की सूचना दे रहा है। उस पर अगर तुम्हें यक़ीन होता तो संसार के पीछे पड़कर बेपरवाही की ज़िन्दगी हरगिज़ न गुज़ारते बल्कि उस दिन के लिए तैयारी करते ।

6. अर्थात् तुम जहन्नम के अस्तित्व को अगर मानना नहीं चाहते तो न मानों उस का अस्तित्व बहरहाल एक हक़ीक़त है और वह दिन ज़रुर आना है जब कि वह तुम्हारे सामने आ प्रकट होगी और तुम उस का अपनी आँखों से अनुभव करोगे ।

7. अर्थात् तुम्हारा जहन्नम को देखना सपनों की दुनिया में नहीं बल्कि वास्तविकता की दुनिया में होगा । आज जिस चीज़ को तुम अविश्वस्नीय समझ रहे हो वह कल जब तुम्हारे अनुभव में आ जायेगी तो तुम्हें उस के अस्तित्व का पूरी तरह विश्वास हो जाएगा ।

8. नेमतों में अल्लाह तआला की प्रदान की हुई तमाम नेमतें शामिल हैं। जैसे जीविका अर्जित करने का सामान, धन दौलत, औलाद शक्ति और योग्यता, उपकरण एवं, साधन, पद,वैभव और सत्ता इत्यादि । दुनिया में इन्सान की जो नेमत भी मिलती है वह अपने साथ एक ज़िम्मेदारी भी लाती है और वह ज़िम्मेदारी यह है कि इन्सान उस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा (धन्यवाद) करे और उसे उन कामों में इस्तेमाल करे जो उसे पसन्द हैं। इस तरह अगर इन्सान अल्लाह तआला की नेमतों का हक़ अदा करता है तो क़ियामत के दिन उस के लिए जवाबदेही का मरहला आसान होगा और यह अपने रब की आनन्त नेमतों का पात्र ठहरेगा । लेकिन अगर वह सिरे से ख़ुदा के अस्तित्व को स्वीकार ही नहीं करता या स्वीकार तो करता है मगर यह समझता है कि इन नेमतों को प्रदान करने वाले बहुत से ख़ुदा हैं या फ्लाँ नेमत फ़्लां देवी या देवता की प्रदान की हुई है और इस विषैली धारणा की बुनियाद पर वह उन नेमतों को अल्लाह की पसन्द और नापसन्द से बेपरवाह हो कर इस्तेमाल करता है तो क़ियामत के दिन उस से कड़ी पूछ ताछ होगी और इस नाशुक्री (कृतघ्नता) और दोषपूर्ण कार्यविधि के कारणवश वह कठोर दंड का भागीदार होगा ।

मौक़े के लिहाज़ से इस आयत का इशारा विशेष रुप से धन दौलत की नेमत की ओर है कि इस को अधिक प्राप्त करने की चिन्ता तुम्हें ज़रूर है लेकिन इस सिलसिले में जो जवाबदेही करना होगी उस की तुम्हें बिलकुल चिन्ता नहीं । अगर ख़ुदा के सामने जवाबदेही का एहसास तुम में होता तो धन दौलत के लोभी बनने के बजाय धैर्य एवं संतोष प्रिय होते कि दौलत जितनी अधिक मात्रा में मिलेगी हिसाब का मामला उतना ही बढ़ जायेगा और जवाबदेही कठिन होगी । ध्यान रहे कि क़ियामत के दिन जवाबदेही हर किसी को करना होगी चाहे व मुसलमान हो या काफ़िर। हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

لَاتَزُوْلُ قَدَمَاعَبْدٍحَتّٰى يُسْأَ لَ عَنْ عُمرِهٖ فِيْمَا اَفْنَاهُ

وَعَنْ عِلْمِهٖ فِيْمَا فَعَلَ وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ اَيْنِ اِكتسَبَهٗ وَفِيْمَا

اَنْفَقَهٗ وَعَنْ جِسمِهٖ فِيْمَا اَبْلَاهُ۔ (ترمذی ابواب الزہد)

"(क़ियामत के दिन) बन्दे के क़दम हट न सकेंगे जब तक कि उस से इन बातों के बारे में पूछ न लिया जायेगा । उस की आयु के बारे में कि कैसे ग़ुज़ारी, उस के इल्म (ज्ञान) के बारे में कि कहाँ तक उस पर अमल किया, उस के माल के बारे में कि कहाँ से कमाया और किस चीज़ में ख़र्च किया और उस के शरीर के बारे में कि किस चीज़ में जीर्ण (ख़त्म) किया"।

एक अवसर पर जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म और आप के साथ हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर (रजि.) भूख की तेज़ी को दूर करने के लिए एक अंसारी (सहायक) के घर गये और उन्होंने आप लोगों की सेवा खजूर और गोश्त से की और सब का पेट भर गया तो आप (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) ने अपने साथियों से फ़रमाया :-

وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَتُسْأَلُنَّ عَنْ هٰذَا النَّعِيْمِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

(فتح القدیر للشوکانی ج ۵ ص ۴۹۰ بروایۃ مسلم)

"क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है, क़ियामत के दिन तुम से ज़रुर इस नेमत के बारे में पूछा जाएगा"।

१०३.अल्-अस्र

नाम :- पहली आयत में ''अस्र'' (ज़माना) की क़सम खाई गई है इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-अस्र है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि दअवत के आरम्भिक चरण (मरहले) में नाज़िल हुई होगी।

केन्द्रीय विषय :- इस बात से आगाह करना है कि इन्सानी क़ाफ़ला तेजी के साथ तबाही की तरफ़ बढ़ रहा है। इस तबाही से वही लोग बच सकते हैं। जो ईमान और अच्छे अमल की राह अपना लें और उस के तक़ाज़ों को पूरा करें।

कलाम की तरतीब:- यह सूरह तीन छोटी छोटी आयतों पर आधारित है मगर अर्थ के लिहाज़ से इस क़दर व्यापक है कि न केवल मानवता के उत्थान और पतन का पूरा इतिहास इस में सिमट कर आ गया है बल्कि हिदायत का मीनारा बन कर व्यक्ति और समूहो को आगे चलने बढ़ने की सही दिशा से आगाह कर रही है, ताकि वह अभीष्ट (मन्ज़िले-मक़सूद) को पहुँच जायें और ग़लत राह पर पड़ कर तबाही के गढ़े में गिरने से बचें।

ज़माने की गवाही इस बात के पक्ष में प्रस्तुत की गई है कि इन्सान तबाही से नहीं बच सकता अगर वह अपने अन्दर ईमान के गुण न पैदा कर ले।

१०३.सूरह अल्-अस्र

अनुवाद आयतें : ३

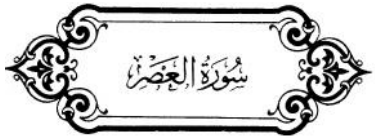

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **ज़माने की क़सम,[1]**

وَالْعَصْرِ ۝١

2. **इन्सान घाटे में है,[2]**

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢

3. **सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए।[3] और जिन्होंने अच्छे कर्म किये [4] और एक दूसरे को हक़ की हिदायत की [5] और सब्र की तल्क़ीन (मंत्रण)की।[6]**

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

1. इस से पहले हम बता चुके हैं कि क़ुर्आन में विभिन्न चीज़ों की जो क़समें खायी गई हैं वह उन के पुज्य, पवित्र या महान होने के आधार पर नहीं खायी गई हैं बल्कि गवाही और दलील के तौर पर खाई गई हैं । यहाँ ज़माने की क़सम भी इसी अर्थ में है।

Text में लफ़्ज़ ''अस्र'' इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ ''ज़माना'' है। यह लफ़्ज़ विशेष रुप से ज़माने की तेज़ रफ़्तारी (द्रुतगति) की ओर इशारा कर रही है।

2. यह है वह बात जिस पर ज़माने की गवाही पेश की गई है । यह गवाही निम्न लिखित पहलुओं से है।

(i) इन्सान के पास सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु समय ही की पूँजी है जो ग़ुज़रते हुए ज़माने का एक भाग है। यह समय अत्यंत सीमित है और बड़ी तेज़ी से गुज़र जाता है। जिस तरह बर्फ़ हर क्षण पिघलती रहती है और अगर एक व्यापारी उस को जल्द बेच कर के उस की क़ीमत खड़ी न कर ले बर्फ़, ख़त्म हो जायेगी और उस के पल्ले कुछ भी न पड़ेगा इसी तरह इन्सान को जो उम्र (आयु) की मोहलत मिली है उस से अगर वह फ़ायदा न उठाए और अपने परलोक का सामान न करे तो वह निश्चय ही घाटे में रहेगा । क्यों कि जो क्षण भी बीत रहा है उस की पूँजी बराबर घट रही है। गोया सेकेन्ड की सुई जिस तेज़ी के साथ चलती है उसी तेज़ी के साथ हमारी आयु को घटा कर हमारे घाटे में वृद्धि ही करती है सिवाय इस के कि हम समय का मूल्य पहचानें और उस को उन कामों में गुज़ारें जो लाभदायक परिणाम सामने लाने वाले और हमारे अन्त (परलोक) को संवारने वाले हों ।

(ii) इतिहास की वह घटनाऐं जो अल्लाह के प्रकोप (अज़ाब) का द्योतक (निशानी) थे, इस बात का प्रमाण हैं कि जिन क़ौमों ने क़ुफ़्र, सरकशी (उद्दंडता), सत्य का विरोध एवं अत्याचार और उपद्रव की राह अपनायी वह तबाही से दोचार हुई। अर्थात् ज़माना अपने इतिहास के आईने में इस सच्चाई को प्रस्तुत करता है कि तबाही और बरबादी से दोचार होने वाले कौन हैं और उस से बचने वाले कौन ।

(iii) यह दुनिया इम्तिहान गाह (Examination Hall) है न कि सैर और तफ़रीह की जगह। इस इम्तिहानगाह में इन्सान को विभिन्न विषयों पर पर्चे हल करने के लिए दिये गए हैं और इस के लिए समय भी निर्धारित कर दिया गया है अत: जो व्यक्ति पर्चा हल करने के बजाये तफ़रीह में समय गुज़ार देता है वह निश्चय ही अपना नुक़्सान करता है, और समय को नष्ट करने वाले के लिए नाकामी ही लिखी है।

इन पहलुओं के अलावा अस्र (ज़माने) की क़सम में यह इशारा भी छिपा हुआ है कि दुनिया की समाप्ति का समय करीब आ लगा है। अर्थात आख़िरी नबी की बअसत (नियुक्ति) और क़ियामत (प्रलय) के बीच इतना ही फासला रह गया है जितना कि इन्सानी आबादी की कुल उम्र (आयु) को एक दिन मान लेने की स्थिती में अस्र (अपरान्ह का समय) और मग़रिब (सूर्यास्त का समय) के बीच होता है। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है कि :-

اِنَّمَا بَقَاءُكُم فِيمَنْ سَلَفَ قَبْلَكُمْ مِنَ الْاُمَمِ
كَمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعَصْرِ اِلَى غُرُوْبِ الشَّمْسِ۔

(روح المعانی ج۱۰ص۲۹۲بحوالہ بخاری)

''जो उम्मतें ग़ुज़र चुकी उन के मुक़ाबले में तुम्हारा दुनिया में रहना उतने ही समय के लिए है जितना समय अस्र की नमाज़ (अप्रान्ह की नमाज़) और सूरज डूबने के बीच होता है।''

ख़ुसरान से मुराद ज़िन्दगी भर का घाटा अर्थात् हमेशा हमेशा की तबाही और बर्बादी है जिस से फैसले के दिन इन्सान को दो चार होना होगा ।

3. अर्थात् आख़िरत की सदा सर्वदा बर्बादी से वही लोग सुरक्षित रहेंगे जो ईमान ला कर भलाई एवं सकारात्मक जीवन अपनाऐंगे ।

ईमान लाने का मतलब सूरह बक़र: नोट नं. ६में बयान किया जा चुका है।

4. पता चला कि आख़िरत के ख़सारे (घाटे) से बचने के लिए केवल ईमान लाना काफ़ी नहीं बल्कि उस के साथ नेक अमल (सुकर्म) भी ज़रूरी है । और सत्य यह है कि जहाँ ईमान सचमुच मौजूद होगा वहाँ उस की रौशनी से अमली ज़िन्दगी (Practical Life) भी उज्जवल होगी और इन्सान सदाचारी और चरित्रवान बनेगा । लेकिन जहाँ ईमान मात्र अचल (जामिद) धारणा के रुप में होगा जिस ने विवेक (शऊर) को प्रभावित न किया हो तो अमली ज़िन्दगी (Practical Life) भी संवर न सकेगी । अच्छे बीज से अच्छा पौधा ही पैदा होता है और ख़राब बीज से ख़राब पेड़। इस लिए हो नहीं सकता कि ईमान तो दिल में मौजूद हो और व्यवहारिक जीवन (Practical Life) दुष्कर्म,अवज्ञा एवं पथभ्रष्ठता से भरा हुआ हो । व्यवहारिक जीवन का फ़साद (विकार) इस बात का प्रमाण है कि ईमान स्वस्थ दशा में मौजूद नहीं ।

नेक कामों (सुकर्मों) की हक़ीक़त अल्लामा फ़राही ने बड़े सुन्दर ढंग से बयान की है। लिखते हैं:-

''अल्लाह तआला ने अच्छे कामों को ''स्वालिहात'' से अलंकृत किया है। इस लफ़्ज़ के इस्तेमाल से इस महान नीति (हिकमत) की तरफ़ रहनुमाई होती है कि इन्सान की तमाम बाहरी एवं अन्दरुनी, दीनी एवं दुनियावी, व्यक्तिगत एवं सामूहिक और शारीरिक एवं बौद्धिक सुधार एवं उन्नति का माध्यम अच्छे काम ही हैं। अर्थात स्वालेह अमल (सुकर्म) वह काम हुआ जो इन्सान के लिए ज़िन्दगी और विकास का कारण बन सके और जिस के द्वारा इन्सान प्रगति कर के उन उच्च श्रेणियों तक उन्नति कर सके जो उस के स्वभाव में समर्पित है।'' (मजमुआ तफ़ासीर फ़राही पृष्ट ३५२)

5. हक़ और सब्र यद्यपि स्वालेह आमाल में शामिल है लेकिन ये चूँकि बुनियादी नेकियों में से है इस लिए उन का ज़िक्र विशेष रुप से किया है।

हक़ उस बात को कहते हैं जो सच्ची, न्याय पर आधारित और वास्तविकता के अनुकूल हो । यह बातिल (असत्य) का विलोम है और यह पूरे दीने-हक़ (सत्यधर्म) पर भी लागू होता है और उस की शिक्षाओं पर भी जो इन्साफ़ के तक़ाज़े के तहत ज़ालिम शासकों या असत्यप्रेमियों (बातिल परस्तों) के सामने पेश किया जाए । इस के अलावा यह उन अधिकारों (हुक़ूक़) पर भी लागू होता है जिन का अदा करना नैतिक रुप से और संवैधानिक (क़ानूनी) रुप से इन्सान पर वाजिब है। जैसे ख़ुदा का हक़, माँ, बाप, का हक़ रिश्तेदारों का हक़, पड़ोसियों का हक़,गरीबों और मोहताजों का हक़ इत्यादि ।

ईमान वालों की इस ख़ूबी (गुण) का जो ज़िक्र फ़रमाया कि वह हक़ की एक दूसरे को हिदायत करते हैं । तो इस से यह बात आप से आप स्पष्ट हो जाती है कि ईमान वाले हक़ (सत्य) पर न सिर्फ़ ख़ुद जमे रहते हैं। बल्कि वह दूसरों को भी इस की हिदायत और तल्क़ीन (मंत्रणा) करते हैं। दूसरे शब्दो में ईमान वाले ऐसे बेहिस नहीं होते कि बातिल (असत्य) उभर रहा हो या समाज में सत्यविरोधी और ग़लत बातें प्रचलित हो रही हो और वह ख़ामोश तमाशाई (मूक दर्शक) बने रहे बल्कि वह अपनी घरेलू और सामाजिक ज़िम्मेदारी महसूस करते हुए हक़ की आवाज़ बुलन्द करते हैं। और एक दूसरे की इस्लाह (सुधार) के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

इसी परिवेश में इस से यह उसूली बात भी साबित होती है कि इज़हारे हक़ (सत्यभिव्यक्ति) ईमान

वालों का हक़ है और इस की आज़ादी बहरहाल इन्हें होनी चाहिए।

6. हक़ (सत्य) को स्वीकार करने, उस का समर्थन करने, सत्यवचन कहने और सत्यमार्ग पर चलने के परिणाम स्वरुप तरह तरह की कठिनाईयाँ आती हैं, तकलीफ़ों कष्टों एवं परिश्रमों का सामना करना पड़ता है और विरोध के तूफ़ान से गुज़रना पड़ता है। हानियाँ भी सहन करनी पड़ती है और क़ुर्बानियाँ भी देनी पड़ती हैं। इस लिए हक़ के साथ सब्र और इस्तिक़ामत (दृढ़ता) तहम्मुल एवं बुर्दबारी (सहिष्णुता एवं सहनशीलता) और हिम्मत एवं हौसले का होना भी ज़रूरी है। सब्र के मफ़हूम (भवार्थ) में यह तमाम बातें शामिल हैं और इसी मुनासिबत से सब्र की तल्क़ीन (मंत्रणा) को ज़रूरी क़रार दिया गया है।

सूरह
अल्-हुमज़ः

१०४.अल्-हुमज़ः

नाम :- पहली आयत में ''हुमज़:'' ईमान वालो पर उंगलियाँ उठाने वालों को ख़बरदार किया गया है कि इन की हरकतें उन के लिए तबाही का कारण होगी इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम अल्-हुमज़: है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि सूरह ''अस्र'' के बाद नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- धन के पुजारियों को झिझोड़ना है कि जिन के चरित्र की यह दशा है तो निश्चय ही वह कर्मभोग तक पहुँच कर रहेंगे ।

आयत की तरतीब:- आयत १ से ३ में धन के पुजारियों का चरित्र चित्रण किया गया है और उन्हें ख़बरदार किया गया है कि ऐसे आचरण निश्चय ही तबाही का कारण है।

आयत ४ से ९ में धन के पुजारियों का आख़िरत से होने वाला अन्जाम बयान किया गया है।

यह सूरह पिछली सूरह से इस हद तक जुड़ी हुई है कि बिलकुल इस का पूरक (परिशिष्ठ) मालूम होती है। अगर पिछली सूरह की समाप्ति उन गुणों के बयान करने पर हुई थी जो कामयाबी की ज़मानत है तो इस सूरह का आरम्भ उन गुणों के ज़िक्र से हुआ है जो बर्बादी का कारण हैं।

१०४.सूरह अल्-हुमज़:

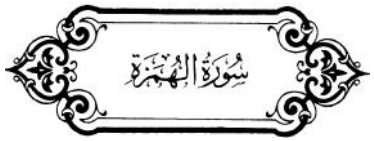

अनुवाद आयतें : ९

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. **तबाही है हर उस व्यक्ति के लिए जो (ईमान वालों पर) उंगलियाँ उठाता और तिरस्कार करता है।[1]**

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ۝١

2. **जिस ने माल समेटा और उसे गिन गिन कर रखा।[2]**

اِلَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢

3. **वह समझता है कि उस के माल (धन)ने उस को हमेशा की ज़िन्दगी बख़्शी (प्रदान की) है।[3]**

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۝٣

4. **हरगिज़ नहीं, और वह हुतम: [5] (कुचल देने वाली) में फेंक दिया जायेगा।[6]**

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۝٤

5. **और तुम्हें क्या मालूम कि हुतम: क्या है?[7]**

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥

6. **अल्लाह की भड़कायी हुई आग,[8]**

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦

7. **जो दिलों पर जा चढ़ेगी,[9]**

الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧

8. **उस में उन को बन्द कर दिया जाएगा।**

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨

9. **लम्बे लम्बे सुतूनों (स्तम्भों) में।[10]**

فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

1. पिछली सूरह कि आख़िरी आयत में वह गुण बयान किये गये थे जो आख़िरत के घाटे से बचाने वाले और कामयाबी की ज़मानत हैं। ये गुण ईमान वालों के किरदार की विशेषताऐं हैं लेकिन दुनिया परस्तों की नज़र में इन का कोई महत्व नहीं होता और ख़ास तौर से जो लोग धन दौलत के पुजारी होते हैं वह इस क़िरदार के लोगों को बेइज़्ज़त ख़याल करते हैं बल्कि उन के अपमान और तिरस्कार पर उतर आते हैं। दौलत का घमंड उन के अन्दर ओछापन पैदा कर देता है और वह उन पर उंगलियाँ उठाते हैं कि इस पर बस आख़िरत ही की धुन सवार है। वह उन की दीनदारी का मज़ाक़ उड़ाते हैं और जहाँ मौक़ा पाते हैं उन पर व्यंग्य कस देते हैं।

इस सूरह के नाज़िल होने के समय में क़ुरैश के सरदारों का यही हाल था । वह दौलत के घमंड में डूबे हुए थे और जो धन के पीछे पड़ने के बजाए आख़िरत की दौलत जमा कर रहे थे उन पर उंगलियाँ उठा रहे थे कि ये किस सम्मान के अधिकारी हैं? सम्मान वाला तो वही है जो दौलतमन्द है। उन की दीनदारी और परहेज़गारी की ज़िन्दगीयों पर वह तरह तरह की फ़ब्तियाँ कसते और बड़ा व्यंग्य एवं तिरस्कार करते यहाँ उन की इन ही हरकतों पर पकड़ की गई है।

कलाम के अवसर के लिहाज़ से ईमान वालों पर उंगलियाँ उठाने और व्यंग्य एवं तिरस्कार करने की बुरी हरकत को कंजूस एवं संकीर्ण हृदय के पूँजीपतियों का तरीक़ा (नीति) क़रार दिया गया है जैसा कि आगे की आयत से स्पष्ट है लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि यह हरकत केवल धन के पुजारी ही करते हैं बल्कि आयत का असल अभिप्राय एवं उद्देश्य यह है कि जो भी यह हरकत करेगा वह अपनी तबाही का सामान करेगा । सूरह तौबा में जो मदीने में नाज़िल होने वाली सूरह है, मुनाफ़िक़ों (ईमान का झूटा दावा करने वालों) के इस व्यंग्य एवं तिरस्कार का वर्णन हुआ है जो ईमान वालों पर वह ''सदक़ों'' (दान) के सिलसिले में किया करते थे ।

गरीब ईमान वाले मेहनत मज़दूरी कर के जो कुछ कमाते उस में से अल्लाह की राह में ख़र्च करते । धन की बड़ी मात्रा उन के पास दान के लिए न होती मगर मुनाफ़िक़ीन इस पर व्यंग्य करते और उन का मज़ाक़ उड़ाते ।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقَاتِ وَا لَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَ هُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ۔ (التوبۃ۔۷۹)

''जो ख़ुशी ख़ुशी इन्फ़ाक़ (अल्लाह की राह में ख़र्च) करने वाले मोमिनों पर उन के दान के सिलसिले में ताना मारते हैं और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत और मज़दूरी के सिवा इन्फ़ाक़ के लिए कुछ और नहीं पाते ।'' (तौबा ७९)

जहाँ तक आयत के खास पहलू का सम्बन्ध है अर्थात प्रसंग और संदर्भ (Reference & Contex) के लिहाज़ से इस का जो भावार्थ है उस की व्याख्या ऊपर हो चुकी । रहा इस का सामान्य पक्ष तो वह यह है कि शरीअत ने जिन लोगों के आदर का आदेश दिया है उन का आदर करने के बजाय उन की पगड़ी उछालना, ऐब निकालना और उन के विरुद्ध दिल दुखाने की बातें करना वह निन्दनीय अवगुण है जिस का नतीजा आख़िरत में बहुत बुरा निकलेगा चाहे इस का करने वाला कोई मुसलमान ही क्यों न हो ।

यहाँ यह बात याद रहनी चाहिए कि पुराने ज़माने में ऐबचीनी (छिद्रान्वेषण) और व्यंग्य एवं तिरस्कार की जो विधियों प्रचलित थी जैसे राह चलते आँखों से इशारा करना, उंगलियाँ उठाना,

आवाज़ें कसना, फ़ब्तियाँ चुस्त करना, बुरे नाम धरना, व्यंग्य करना और ख़ास तौर से कविताओं (शायरी) में व्यंग्यकाव्य कहना इत्यादि । मौजूदा ज़माने में इन के अलावा कुछ नये तरीक़ों की भी वृद्धि हो गई है जैसे कार्टून, तन्ज़ निगारी (कटाक्ष-लेख) व्यंग्यात्मक ड्रामे, तीरो-नश्तर के कालम जो आजकल समाचार पत्रों की शोभा बने हुए हैं और जिस ने बाक़ायदा फ़न का रुप धारण कर लिया है. ''हम्ज़ व लम्ज़'' (छिद्रान्वेषण एवं तिरस्कार) ही की उन्नति प्राप्त रुप है जब कि उन के द्वारा ऐसे लोगों की पगड़ी उछाली जाये जिन की इज्जत को शरीअत ने आदरणीय ठहराया ।

2. अर्थात् यह दौलत का घमंड है जिस ने उस के अन्दर ऐसा ज़ेहन पैदा कर दिया है कि वह इन ग़रीबों को तुच्छ जाने और उन का मज़ाक उड़ायें जिन्हों ने अपने रब से सही तअल्लुक़ (सम्बन्ध) पैदा कर लिया है और अपनी ज़िन्दगियों को नेकियों से संवारा है।

दौलत के पुजारियों को हमेशा धन की फ़िक्र लगी रहती है और लालची पूँजीपति हमेशा पूँजी ही के उलट फेर में लगे रहते हैं। उन का दिल कारोबार में अटका हुआ होता है और उन का दिमाग़ हिसाब किताब में लगा हुआ । उन का सारा ध्यान एक ही समस्या पर केन्द्रित होता है और वह यह कि उन की पूँजी में किस तरह वृद्धि हो और उन का बैंक बैलन्स (Bank Balance) किस तरह बढ़े। यह चिन्ता उन के दिल और दिमाग़ को इस तरह परेशान किये रहती है कि उन्हें ख़ुदा और आख़िरत के बारे में कुछ सोचने की फ़ुरसत होती है और न वे अपनी मनोवृति के अनुसार नसीहत की बातें सुनने के लिए आमादा होते हैं। उन की बढ़ती हुई लालच उन्हें इस बात की भी इजाज़त नहीं देती कि वह ख़ुदा के दिये हुए माल में ख़ुदा के बन्दों का जो हक़ है वह अदा करें बल्कि वह अपने माल पर साँप बन कर बैठ जाते हैं।

माया प्रेम एवं धन की पूजा की निन्दा इन्जिल में भी बड़े प्रभाव पूर्ण अन्दाज़ में की गई है। जैसे:-

''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्यों कि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा ।'' (मत्ती ६:१९ से २१)

''तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। (मत्ती ६:२४)

यह धन के पुजारियों की मनोवृत्ति का प्रतिबिम्म (अक्स) है। वह अपने धन को जीवन की पूँजी समझता है और जो कार्यविधि अपनाता है उस से जाहिर होता है कि जैसे दुनिया में उस को हमेशा रहना है और कभी मौत आने वाली नहीं हैं।

दौलत चूँकि सांसारिक ऐश्वर्य का साधन है इस लिए पूँजीपति इस फरेब में मुब्तिला हो जाते हैं कि दौलत उन के लिए जीवनदायक है और उन की स्थिरता का कारण है। हालाँकि दौलत में न जीवन शक्ति है और न स्थिरताशक्ति अगर उस में जीवन शक्ति होती तो वह इन्सान को ज़रूर दिल का सुकून प्रदान करता जब कि मालदारों को यही चीज़ नसीब नहीं होती और सामान्यत: उन का जीवन परेशानियों में घिरा हुआ होता है। अलबत्ता परहेज़गारी (तक़वा) की ज़िन्दगी अपना कर के इन्सान दिल का सुकून महसूस करता है। पता चला कि इन्सान को अनन्त जीवन प्रदान करने वाली चीज़ परहेज़गारी (तक़वा) है न कि दौलत । क़ुर्आन में यह हक़ीक़त विभिन्न जगहों पर बयान हुई है और इन्जील में इसे इस तरह बयान किया गया है कि ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु परमेश्वर के वचन से जीता है'' (मत्ती ४:४) और वास्तविकता यह है कि आदमी की दौलत उस की क़ब्र तक भी नहीं जाती फिर यह तो बहुत दूर रहा कि उसे अनन्त जीवन प्रदान करे। मगर आज भी दौलत के मामले में इन्सान का विचार वही है जो इस से पहले (माज़ी में) था । अर्थात् वह दौलत को दुनिया की

ज़िन्दगी का सामान समझने और भलाई के कामों में ख़र्च करने के बजाए उस से अपनी स्थिरता की आशाऐं बाँधता है और उसे जमा करता रहता है। फिर जमा करने की भी कोई हद नहीं होती । लखपति बन जाने के बाद वह करोड़पति बनना चाहता है और करोड़पति बन जाने के बाद अरबपति । जब कि समाज में कितने ही लोग अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए मोहताज होते हैं और भलाई के कितने ही काम मात्र रुपये की कमी के कारण हो नहीं पाते ।

सारांश यह कि क़ुर्आन धन जमा करने की इस प्रवृत्ति को निन्दनीय क़रार देता है सिवाय इस के कि आदमी अपनी और अपने सम्बन्धियों की वास्तविक ज़रुरतों के लिए दौलत रोके रखे ।

4. यह दौलत के पुजारियों के इस विचार का खंडन है जो ऊपर बयान हुआ ।

5. Text (मूल) में लफ़्ज़ ''हुतम:'' इस्तेमाल हुआ है जिस का अर्थ चूर चूर कर देने वाली और कुचलने वाली के हैं। यह जहन्नम का नाम है और इस की यह सिफ़त (ख़ूबी) ''हुमज़ व लुम्ज़'' की उस निन्दनीय अवगुण के साथ बयान हुई है जिस का ज़िक्र आयत नं. १ में हुआ । इस से यह स्पष्ट करना अभिप्रेत है कि जो व्यक्ति अल्लाह के मुख़लिस (नि:स्वार्थ) बन्दों की इज़्ज़त को क्षति पहुँचाता है, जहन्नम उस की इज़्ज़त के परखच्चे उड़ायेगी और ईमान वालों का अपमान एवं तिरस्कार करने के जुर्म में उसे कुचल डालेगी ।

ग़ौर किजिए ''हुमज: व लमज:'' की तुलना में ''हुतम:'' के लफ़्ज़ ने लफ़्ज़ी यक्सानियत (शाब्दिक समानता) ही नहीं बल्कि अर्थ की मुनासिबत भी पैदा कर दी है और क़ुर्आन की अलंकारिक शैली (बलाग़त) और उस के चमत्कार की यह मामूली मिसाल है।

6. फेंक देने में इशारा है इस बात की तरफ़ कि यह माल और दौलत की वजह से जिस घमंड में मुब्तिला था इस का पता उसे उस समय चलेगा जब कि यह जहन्नम में अपमान के साथ फ़ेंक दिया जाएगा ।

7. यह सवाल जहन्नम की हौलनाकी का एहसास दिलाने के लिए है।

8. यह ''हुतम:'' की व्याख्या है जो अल्लाह तआला ने ख़ुद ही फ़रमाई है।

9. इशारा है इस बात की तरफ़ कि जिन दिलों में अल्लाह की मुहब्बत के बजाय माल की मुहब्बत रच बस गई थी उन पर यह लोग चढ़ दौड़ेंगे और दिल में आग के घुस जाने से दुख और पीड़ा की जो मनोदशा होगी उस का अन्दाज़ा दिल के मरीज़ की दशा से भी नहीं किया जा सकता ।

10. अर्थात् वह उस आग के लम्बे लम्बे स्तंभो (सुतूनों) में घिरे हुए होंगे ।

सूरह अल्-फ़ील

१०५.अल्-फ़ील

नाम :- पहली आयत में असहाबुलफ़ील (हाथी वालों) का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-फ़ील'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और आरम्भिक दौर के अवतरणों में से है।

केन्द्रीय विषय :- ऐतिहासिक और शिक्षाप्रद मिसाल उन लोगों के अन्जाम की जो दौलत और सत्ता के नशे में खाना-ए-काबा को ढा देने के उद्देश्य से निकले ।

आयत की तरतीब:- यह पूरी सूरह उस ऐतिहासिक घटना के इबरतनाक (शिक्षाप्रद) पहलुओं पर आधारित है जो ''फ़ील'' की घटना के नाम से प्रसिद्ध था ।

आयत १ में इस बात पर विचार एवं चिन्तन करने का न्योता दिया गया है कि जिस लश्कर ने खाना-ए-काबा को ढा देने के लिए क़दम उठाया था उस के साथ अल्लाह तआला ने क्या मामला किया ?

आयत २ में बताया गया है कि उन की चाल किस तरह उलटी पड़ी ।

आयत ३ और ४ में अल्लाह तआला की क़ुदरत के करिश्मे का ज़िक्र हुआ है जो उस के घर की सुरक्षा के लिए प्रकट हुआ ।

आयत ५ में हमलावरों का इबरतनाक (शिक्षा प्रद) अन्जाम बयान किया गया है जिस को इतिहास ने अपने पन्नों में हमेशा के लिए सुरक्षित कर दिया है।

१०५.सूरह अल्-फ़ील

अनुवाद आयतें : ५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **तुम ने नहीं देखा [1] कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या मामला किया?[2]**

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ①

2. **क्या उन की तदबीर को बेकार नहीं कर दिया ?[3]**

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ②

3. **और उन पर परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड नहीं भेजे ?[4]**

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ③

4. **जो उन पर पकी हुई मिट्टी के [5] पत्थर फेंक रहे थे,[6]**

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ④

5. **फिर उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस।[7]**

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ⑤

1. सम्बोधन (Address) यद्यापि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है लेकिन इस के वास्तविक सम्बोधित (Addressee) क़ुरैश और अरब वासी हैं जो इस घटना से भली भाँति परिचित थे ।

2. हाथी वालों (असहाबुल फ़ील) से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है जो हाथियों को ले कर अल्लाह के पवित्र घर पर चढ़ दौड़ा था । इस घटना की तफ़सीलात (विवरण) क़ुर्आन ने बयान नहीं की क्यों कि इस घटना से अरब का बच्चा बच्चा परिचित था एवं इस सूरह के नाज़िल होने के समय उस के प्रत्यक्ष गवाह भी मौजूद थे । इस लिए क़ुर्आन ने इस के इबरतनाक (शिक्षाप्रद) पहलुओं की तरफ़ इशारा करने और अपने इस एहसान का ज़िक्र करने पर बस किया की उस ने किस असाधारण तरीक़े से अपने घर की हिफ़ाज़त का सामान किया । हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस घटना की कोई तफ़सील नक़ल नहीं की गई है। अलबत्ता उल्लेखों (रिवायात) और सीरत (जीवनी) की किताब में विवरण पाए जाते हैं। ख़ास तौर से सीरत इब्ने इस्हाक़ में यह किस्सा साविस्तार बयान हुआ है। लेकिन उस में उचित अनुचित सभी कुछ मौजूद है। दूसरी रिवायत (उल्लेखों) का भी लगभग यही हाल है इस लिए हम इन उल्लेखों को सामने रखते हुए सिर्फ उन बातों के ज़िक्र पर संतोष करेंगे जिन का समर्थन तथ्यपूर्ण परिस्थितियों से होता है। या जिस को स्वीकार करने में कोई दुविधा नहीं है।

यह घटना सन ५७० ई. या ५७१ ई. की है जब कि यमन में अब्रहा नामी एक ईसाई शासक जो हब्शा के ईसाई बादशाह के मातहत (आधीन) था, शासन कर रहा था । उसे यह देख कर कि अरब वासियों की आस्था का केन्द्र ख़ाना-ए-काबा है और हर साल यहाँ हज का बड़ा इज्तिमा (सम्मेलन) होता है,ईर्ष्या पैदा हो गई और उस ने सनआ (Sana) में बहुत ही शानदार गिर्जा बनावाया ताकि अरब वासियों के हज का रुख इस की तरफ़ फेरा जा सके । इस उद्देश्य के लिए उस ने खाना-ए-काबा को ढा देने की योजना बनाई और साठ हज़ार का भारी लशकर ले कर मक्का की तरफ़ कूच किया । इस लश्कर में आगे आगे हाथियों की एक तादाद थी इसी कारण यह लोग "असहाबुलफील" कहलाए ।

यह लश्कर जब यमन से मक्का के लिए रवाना हुआ तो रास्ते में कुछ अरब क़बीलों ने प्रतिरोध किया लेकिन वह उस को रोकने में कामयाब न हो सके यहाँ तक कि यह लश्कर मिना के निकट मुहस्सिर की घाटी में पहुँच गया जो मक्का से कुछ ही मील की दूरी पर है।

इधर क़ुरैश को जब इस आक्रमण की ख़बर हुई तो उन के सरदार अब्दुल मुत्तलिब ने जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हैं, ख़ाना-ए-काबा के दरवाज़े को पकड़ कर अल्लाह तआला से दुआ माँगी । इस दुआ में क़ुरैश के दूसरे लोग भी शामिल थे । इस अवसर पर अब्दुल मुत्तलिब ने जो अशआर (काव्य पंक्ति) पढ़े वह यह है :-

لَاهُمَّ اِنَّ الْعَبْدَ يَمْنَعُ رَحْلَهٗ فَامْنَعْ رِحَالَكَ

"ऐ ख़ुदा ! बन्दा अपने घर वालों की रक्षा करता है तू भी अपने लोगों की रक्षा कर"

لَا يَغْلِبَنَّ صَلِيْبُهُمْ وَمِحَالُهُمْ غَدْوًا مِحَالَكَ

"कल इन की सलीब और इन की शक्ति तेरी शक्ति पर हावी न होने पाए ।"

اِنْ كُنْتَ تَارِكَهُمْ وَقِبْلَتَنَا فَاَمْرٌ مَا بَدَا لَكَ

"अगर तू इन को और हमारे क़िबले को यूँ ही छोड़ देना चाहता है तो फिर तेरी मर्ज़ी"
(सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ट ५१)

क़ुरैश के लिए जो तादाद में थोड़े थे, साठ हज़ार के भारी लश्कर का मुक़ाबला करना कठिन था। अगर उन के और लश्कर के बीच मुठभेड़ हो भी जाती हो विजय की आशा नहीं थी और मामला अल्लाह के घर की सुरक्षा का था ।

इस घर की सुरक्षा का जो दुनिया में अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया पहला घर है। इस का यह असाधारण महत्व एवं श्रेष्ठता का यह ज़रुरी तक़ाज़ा हुआ कि इस की सुरक्षा का सामान भी असाधारण हो । अत: अल्लाह की ग़ैरत जोश में आयी और उस ने लश्कर को आगे बढ़ने नहीं दिया अब्रहा का ख़ास हाथी जो आगे आगे था मुहस्सिर की घाटी में सहसा बैठ गया, उसे मार कर ज़ख़्मी कर दिया गया मगर वह न उठा । उसे यमन या शाम या पूरब की तरफ़ मोड़ने की कोशिश की जाती तो वह उठ कर दौड़ने लगता और जब मक्का की तरफ़ मोड़ा जाता तो वह फ़ौरन बैठ जाता । इतने में परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड आये जिन की चोंचों और पन्जों में कंकरियाँ थीं । उन्हों ने लश्कर पर उन की बारिश कर दी । इन कंकरियों की विशेषता यह थी कि वह जिस पर भी गिरती उस के शरीर पर फोड़ा निकल आता और पीप और ख़ून बहने लगता और थोड़ी ही देर में पूरा शरीर गलने लगता । जैसा कि कुछ रिवायत (उल्लेखों) से ज़ाहिर होता है । यह अनुमानत: चेचक की तरह का कोई खतरनाक मर्ज़ था जो अचानक फट पड़ा था । कंकरियाँ जो पकी हुई मिट्टी की थी कुछ ऐसा विष लिये हुए थीं कि जिस के कंकरी लग जाती उस का शरीर सड़ने लगता । इस आफ़त ने लश्कर को इस तरह लपेट में ले लिया कि उस के अन्दर ज़बरदस्त भगदड़ मच गई और लाशों पर लाशें गिरती चली गयीं । अब्रहा का भी बहुत बुरा हाल हुआ । उस के शरीर से ख़ून और पीप (मवाद) बह रहा था और जिस्म झर रहा था । आख़िरकार उस का सीना फट गया और वह बुरी तरह विनष्ट हो गया ।

यह घटना मुहर्रम के महीने में घटी थी और इसी साल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश मुबारक हुई। (अल-बिदाय: वन्निहाय: भाग १ पृष्ट १७५)

इस घटना का सब से अहम पहलू यह है कि अल्लाह तआला ने अपने घर की सुरक्षा का असधारण प्रबन्ध किया । परिन्दों के द्वारा कंकरियों की बारिश और कंकरियाँ भी ऐसी जो बन्दूक़ की गोली का काम करें, ख़ुदा की एक चमत्कृत निशानी थी जो प्रकट हुई। और इस प्रकार की निशानियाँ ख़ास ख़ास अवसरों पर प्रकट होती हैं।

रहा इस का ऐतिहासिक प्रमाण तो क़ुर्आन स्वयं सब से बड़ा ऐतिहासिक प्रमाण है क्यों कि अगर क़ुर्आन का बयान ग़लत होता -------- और यह बात वही लोग सोच सकते हैं जिन को क़ुर्आन की सत्यता पर विश्वास नहीं ------- तो मक्का के वासी ज़रुर इस का खंडन करते लेकिन चूँकि इस घटना को अपनी आँखों से देखने वाले उन के बीच मौजूद थे और घटना की शोहरत (प्रसिद्धि) के कारण वह इस सच्चाई को जानते थे इस लिए क़ुर्आन के बयान को ग़लत क़रार देने की किसी को जुर्रत नहीं हुई। इस के अलावा पूर्व इस्लाम के अरब शायरों ने इस घटना का वर्णन अपने दोहों और कविताओं में किया है। मिसाल के तौर पर नुफ़ैल जिस ने इस घटना को अपनी आँखो से देखा है, कहता है :

حَمِدْتُ اللّٰهَ اِذْ اَبْصَرْتُ طَيْرًا

''मैं ने अल्लाह का शुक्र अदा किया जब परिन्दों को देखा''

وَخِفْتُ حِجَارَةً تُلْقَىٰ عَلَيْنَا

''और डरा कि कोई पत्थर न लग जाए जिस की हम पर बारिश हो रही थी''

और अब्रहा की पराजय और विनष्टता का ज़िक्र इस तरह करता है।

اَيْنَ الْمَفَرُّ وَالْاِلٰهُ الطَّالِبُ

''अब भाग कर कहाँ जाऐं जब कि ख़ुदा पीछा कर रहा है।''

وَالْاَشْرَمُ الْمَغْلُوْبُ لَيْسَ الْغَالِبُ

''और नकटा (अब्रहा) मग़लूब (पराजित) है ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) नहीं '' (सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ट ५३, ५४)

3. अर्थात् अब्रहा और उस के लश्कर ने ख़ाना-ए-काबा को ढाने के उद्देश्य से जो अभियान किया था उस को अल्लाह तआला ने नाकाम बना दिया और वह अपने नापाक इरादों में हरगिज़ कामयाब न हो सका ।

असहाबुल फ़ील (हाथी वालों) की तदबीर को नाकाम बनाने में बुतों या देवी देवताओं का कोई दखल नहीं था बल्कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला की क़ुदरत का करिश्मा था जो उन पर प्रकोप के रुप में प्रकट हुआ । अरब वासी भी इस को स्वीकारते थे । अत: अरब शायरों (कवियों) ने भी अब्दुलमुत्तलिब के साथ ख़ाना-ए-काबा के दरवाज़े पर जो दुआ माँगी थी वह ख़ुदा ही से माँगी थी न कि बुतों से । यह इस बात का सबूत है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) सत्य है जिस की ओर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुला रहे हैं। और बुत परस्ती कदापि ग़लत (असत्य) है।

4. यह इस बात की तफ़सीर है कि अल्लाह तआला ने हाथी वालों की तदबीर को किस तरह बेकार कर दिया । सूरत यह हुई कि अल्लाह तआला ने इन को तबाह करने के लिए परिन्दों के झुण्ड के झुण्ड भेज दिये ।दूसरे शब्दों में हाथी वाले लश्कर का मुक़ाबला परिन्दों के लश्कर ने किया।

उल्लेखकर्ताओं (रावियों) का बयान है कि ये परिन्दे ख़ास किस्म के थे और समुद्र की तरफ़ से आए थे ।

5. Text (मूल) में लफ़्ज़ ''सिज्जील'' इस्तेमाल हुआ है जो फ़ारसी के दो लफ़्ज़ संग (पत्थर) और गिल (मिट्टी) से बनाया गया है और इन से मुराद वह कंकर है जो पकी हुई मिट्टी से बने हों। ज्वालामुखी क्षेत्र में लावे की वजह से मिट्टी जो पत्थर का रुप धारण कर लेती है शायद उसी को सिज्जील कहा गया है। और आश्चर्य नहीं कि परिन्दे इन पत्थर की कंकरियों को अपनी चोंचों और पंजों में क़रीब के किसी ज्वालामुखी क्षेत्र से ले कर आए हों और उन के अन्दर विषैला पदार्थ हो या उस के साथ ज़हरीले कीटाणु हों जिस ने अचानक महामारी का रुप धारण कर लिया हो । बहरहाल यह साधारण पत्थर नहीं बल्कि विशेष प्रकार के पथरीले कंकर थे इसी लिए क़ुर्आन ने इस का ज़िक्र ''सिज्जील की क़िस्म के पत्थर'' की पुष्टि के साथ किया ।

6. परिन्दों की यह संगबारी गोया आसमानी बमबारी थी जिस ने हाथियों को भी तबाह किया और हाथी वालों को भी । परिन्दों के पथरीले कंकर गिराने को कंकर फेंकने (तरमीहिम) से इस लिए ताबीर (अलंकृत) किया गया कि उन्हों ने लश्कर पर पथरीले कंकरों की ऐसी बौछार कर दी थी कि वह पूरी तरह उस की ज़द में आ गया जैसे ये तीर थे जो निशाने पर लग गए। इस परिस्थिति के पैदा होने में हो सकता है कि हवा का भी दखल (रोल) रहा हो अर्थात उस समय तेज़ हवा चली हो। शायद इसी वजह से कुछ अरब शायरों ने परिन्दों की इस संगबारी (कंकर फेकने) को ''हासिब'' (पत्थर बरसाने वाली आँधी) से ताबीर किया है।

हाथी वालों पर परिन्दों के जो झुण्ड के झुण्ड भेजे गये थे इस की एक तावील (अर्थापन) यह

की जाती है कि यह परिन्दे हाथी वालों की लाशें खाने के लिए आए थे न कि कंकर बरसाने के लिए। मगर आयतों का क्रम और मज़मून इस तावील से मेल नहीं खाता एवं परिन्दों का लाशें खाना कोई ऐसी बात नहीं है कि क़ुर्आन इस एहतिमाम के साथ इस का ज़िक्र करे। इस लिए जम्हूर मुफ़स्सिरीन (अधिकांश तफ़सीर करने वालों) ने आयतों का जो मतलब बयान किया है वही सही है और इस के हिसाब से परिन्दें लाशें खाने के लिए नहीं बल्कि लाशें गिराने के लिए आए थे ।

रहा यह सवाल कि क़ुरैश ने जो बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के संचालक (मुतवल्ली) थे, फ़ौज का मुक़ाबला किया या नहीं? तो सच यह है कि उन की मुठभेड़ फ़ौज से हुई ही नहीं । वह मक्का में थे और लश्कर मिना और मुज़दल्फ़ा के बीच था इस लिए न यह बात सही है कि वह डर कर पहाड़ों में छिप गये थे जैसा कि रिवायतों में बयान किया गया है और न यह ख़्याल सही है कि उन्होंने पहाड़ों पर से लश्कर पर पथराव किया था । पहाड़ों में छिपने की बात इस लिए स्वीकार योग्य नहीं कि क़ुरैश बुज़दिल नहीं थे और जब कि अब्रहा का प्रतिरोध कुछ अरब क़बीलों ने रास्ते में किया था । जैसा कि उन रिवायतों ही में बयान हुआ है तो क़ुरैश किस तरह प्रतिरोध न करते । उन की ग़ैरत एवं स्वाभिमान इस बात को कैसे गवारा कर सकता था कि बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) को छोड़ कर सब के सब भाग जाऐं? और अल्लाह के घर पर क़ुर्बान होने के लिए एक आदमी भी मौजूद न रहे? अब्दुल मुत्तलिब के उन वंदनीय दोहों से जिन के उदाहरण ऊपर दिये गए हैं बुज़दिली का इज़हार नहीं होता अलबत्ता चूँकि क़ुरैश तादाद में थोड़े होने की वजह से एक भारी लश्कर के मुक़ाबले में कामयाब नहीं हो सकते थे । इस लिए अल्लाह तआला ने अपने घर की सुरक्षा का असाधारण सामान किया । रहा यह दावा कि दरअसल इन्होंने पहाड़ों पर से पथरीले कंकर बरसाये थे न कि परिन्दों ने, तो यह दावा बिना दलील है। और जब क़ुरैश का अब्रहा के लश्कर के निकट आना ही साबित नहीं तो फिर पत्थर फेंकने का क्या सवाल पैदा होता है ?

7. अर्थात् इन हाथी वालों को अल्लाह तआला ने ऐसी इबरतनाक (भयावह एवं शिक्षापद) सज़ा दी कि वह सड़ी गली लाशों के ढेर बन कर रह गये । खाये हुए भूसे से उदाहरण देने का मतलब यह है कि जिस तरह भूसा एक बेक़िमत चीज़ है और पैरों तले रौंदा जाता है उसी तरह यह भारी लश्कर बेक़ीमत और पैरों के नीचे आ कर रहा । भूसे को जब जानवर खा लेता है तो उस की अत्यन्त घिनावनी शकल बनती है। हाथी वालों की लाशों का भी यही हाल हुआ । इस लिए उन को खाये हुए भूसे से उदाहरण दिया गया ।

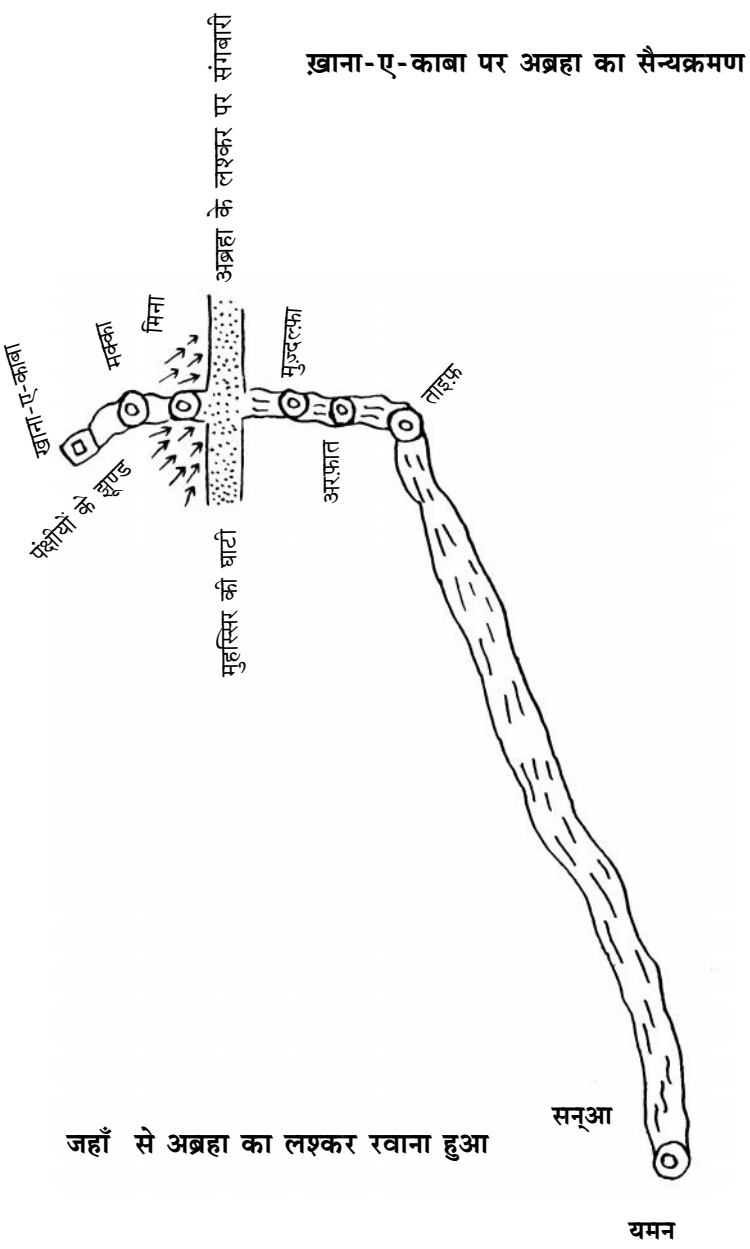

सूरह क़ुरैश

१०६. क़ुरैश

नाम :- पहली आयत में क़ुरैश का ज़िक्र हुआ है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम क़ुरैश है।

नाज़िल होने का समय :- इस सूरह में ''रब्बा हाज़लबैति'' (इस घर का रब) के अल्फ़ाज़ आये हैं जो इस बात का सबूत हैं कि यह सूरह मक्की है क्यों कि ख़ाना-ए-काबा के लिए निकट होने का संकेत (हाज़ा) मक्का में नाज़िल होने की सूरत ही में उचित हो सकता है। मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह सूरह फील के बाद नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- क़ुरैश पर अल्लाह का यह हक़ है कि वह उसी की इबादत करें।

आयत की तरतीब:- आयत १ और २ में क़ुरैश की इस उल्फ़त को जो उन को अपने तिजारती सफ़र से थी आश्चर्यजनक क़रार दिया गया है क्यों कि उन्हें यह नेमत अल्लाह के घर की बदौलत हासिल थी मगर वह अल्लाह की नाशुक्री (कृतघ्नता) कर रहे थे ।

आयत ३ में उस नेमत का यह तक़ाज़ा बयान किया गया है कि वह सिर्फ़ अल्लाह ही की इबादत करें।

आयत ४ में बताया गया है कि रिज़्क़ (जीविका) और अमन अल्लाह ही की प्रदान की हुई नेमतें हैं लिहाज़ा इस को स्वीकार करते हुए सिर्फ़ उसी की इबादत करनी चाहिए ।

१०६.सूरह क़ुरैश

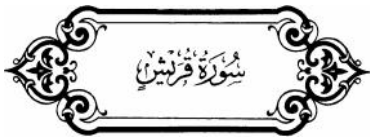

अनुवाद आयतें :४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **किस क़दर [1] लगाव है क़ुरैश को ।[2]**

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١

2. **इन को जो लगाव है सर्दी और गर्मी के सफ़र से।[3]**

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

3. **लिहाज़ा इन को चाहिए कि इस घर [4] के रब की इबादत करें,[5]**

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣

4. **जिस ने इन को भूख से बचा कर खाना खिलाया और ख़ौफ़ (भय) से बचा कर अमन (शान्ति) प्रदान किया ।[6]**

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

1. लाम मजरूर (अर्थात ल पर इ की मात्रा यानी लि) यहाँ तअज्जुब (आश्चर्य) के अर्थ में है जिसे अरबी में लाम तअज्जुब कहते हैं। इब्ने जरीर ने भी इसी अर्थ को वरीयता दी है। इस लिए हम ने लिईलाफ़ि का अनुवाद ''किस क़दर लगाव है'' किया है।

2. क़ुरैश एक क़बीले का नाम है जिस के हाथ में ख़ाना-ए-काबा का संचालन एवं प्रबन्ध था। हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल को मक्का की पवित्र धरती पर बसाया था । क़ुरैश इन ही की नस्ल से हैं । इस क़बीले की एक शाख़ बनी हाशिम कहलायी । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध इसी ख़ानदान से है।

3. मक्के की धरती खेती करने योग्य नहीं थी । इस लिए क़ुरैश ने व्यपार को अपना व्यवसाय बना लिया था । अत: उन के तिजारती क़ाफ़िले सर्दियों में यमन की ओर जाते और गर्मियों में शाम (Syria) और फ़िलस्तीन की ओर। यह तिजारती सफ़र उन के कमाने का बहुत बड़ा साधन और उन की दौलत में वृद्धि का कारण थे । वह जिन राहों से गुज़रते थे वे यद्यापि अर्न्तराष्ट्री राजमार्ग (International highways) थे लेकिन व्याप्त अशान्ति और लूट मार के कारण सुरक्षित नहीं थे । इस के बावजूद क़ुरैश के तिजारती काफ़िले निर्भीकता से आया जाया करते थे क्यों कि काबा के संचालक एवं प्रबन्धक होने के कारण लोग उन का आदर करते थे । इस के अलावा उन्हों ने इन राज्यों के बादशाहों से व्यापारिक सुविधाऐं एवं सुरक्षा प्राप्त कर ली थी कि वह बे रोक टोक उन के मुल्क में आते जाते रहेंगे । अत: हाशिम ने जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा हैं, शाम (Syria) रोम और ग़स्साम के बादशाह से, अब्द शम्स ने नजाशी से, नौफ़ल ने किसरा से और मुत्तलिब ने हिमयर (यमन) के बादशाह से आदेश प्राप्त कर लिये थे । (अल्बिदाय: वन्निहाय: भाग २ पृष्ट २५३)

इस तरह अल्लाह के घर की बदौलत उन पर रिज़्क़ (जीविका) का रास्ता भी खुल गया था और सर्व व्याप्त अशान्ति के बावजूद उन के लिए सफ़र भी शान्ति मय हो गया था । इन लाभों के कारण उन को अपने तिजारती सफ़रों से लगाव और चाव पैदा हो गया था । अत: वह पाबन्दी के साथ सर्दियों के मौसम में यमन का और गर्मियों के मौसम में सीरिया और फ़िलस्तीन का सफ़र करते । यमन का इलाक़ा चूँकि गर्म है इस लिए सर्दियों के मौसम में इस मुल्क के सफ़र को वह वरीयता देते और सीरिया एवं फ़िलस्तीन का इलाक़ा चूँकि ठंडा है इस लिए गर्मियों के मौसम में उन मुल्कों के सफ़र को उचित समझते थे ।

इस आयत में उन के इन तिजारती सफ़रों से प्रेम और लगाव को इस आधार पर आश्चर्य योग्य क़रार दिया गया है कि वह अपने आचरण एवं कार्य विधि से हक़ को न पहचानने और नाशुक्री (कृतघ्न्ता) का सबूत दे रहे हैं। क्यों कि ये नेमतें उन्हें हासिल हो रही है ख़ुदा के घर की बदौलत लेकिन वह ख़ुदा के ही हक़ को भुला बैठे हैं। वह खाते हैं ख़ुदा का दिया हुआ रिज़्क़ मगर गुन गाते हैं बुतों के ।

4. इस घर से मुराद ''खाना-ए-काबा'' है।

5. क़ुरैश को ध्यान दिलाया गया है कि जब तुम इस घर को अल्लाह का घर मानते हो तो फिर तुम्हें इस का हक़ अदा करना चाहिए और वह हक़ यह है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत (उपासना) करो और उस की इबादत के साथ किसी और की इबादत न करो । इसी तरह इस घर की बदौलत जो व्यापारिक लाभ तुम्हें हासिल हो रहे हैं और जो निश्चितता एवं सम्पन्नता तुम्हारे हिस्से में आ रही है उस का तक़ाज़ा है कि इस घर के रब के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) बन्दे बन कर रहो और नाशुक्री (कृतघ्नता) का तरीक़ा न अपनाओ ।

खाना-ए-काबा का निर्माण एक अल्लाह की इबादत के लिए हुआ था फिर इस घर के संचालकों के लिए बुतों की परस्तिश (पूजा) के लिए वैधता कहाँ मिल गयी?

6. उस ज़माने में अरबों की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय थी और उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि खाद्य वस्तुओं की भी बड़ी कमी थी । गोया यह गरीबी और भुख़मरी का इलाका था इस के अलावा कबायली सिस्टम होने और किसी मज़बूत हुकूमत के न होने के कारण बड़ी अशान्ति फैली हुई थी । हत्याओं और लूट पाट की घटनाओं ने उन की ज़िन्दगी का सुकून छीन लिया था मगर क़ुरैश की हालत आर्थिक दृष्टि से भी बेहतर थी और अमन-व-अमान के लिहाज़ से भी । आर्थिक दृष्टि से बेहतर होने की वजह तो उन के कामयाब तिजारती सफ़र थे । रहा अमन-व-अमान तो उन्हें शहर मक्का में भी हासिल था और इस के बाहर भी। मक्का में अमन-व-अमान तो उस के हरम (पवित्र) होने के कारण था और बाहर निकलने के बाद उन पर हाथ डालने की जुर्रत कोई व्यक्ति या क़बीला या हुकूमत इस लिए नहीं करती थी कि वह हरम (पवित्र स्थल) की देख रेख करने वाले और हाजियों की सेवा करने वाले समझे जाते थे । सारांश यह कि क़ुरैश को ये दोनों नेमतें अर्थात जीविका और सुरक्षा जो इन्सान की बुनियादी ज़रूरतें हैं, ख़ुदा के प्रदान करने से प्राप्त हो रही थी । इस लिए इस का शुक्र (कृतज्ञता) और बन्दगी का हक़ उन पर अनिवार्य था न कि बुतों का जिन का न भूक को मिटाने में कोई हाथ था और न भय को दूर करने में ।

इस सूरह में अकेले एक ख़ुदा की इबादत का मुतालबा यद्यापि क़ुरैश से किया गया है लेकिन वास्तव में यह मुतालबा पूरी इन्सानियत से है क्यों कि तमाम इन्सानों का रब वही है जो खाना-ए-काबा का रब है।

क़ुरैश और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वंश क्रम (संक्षेप में)

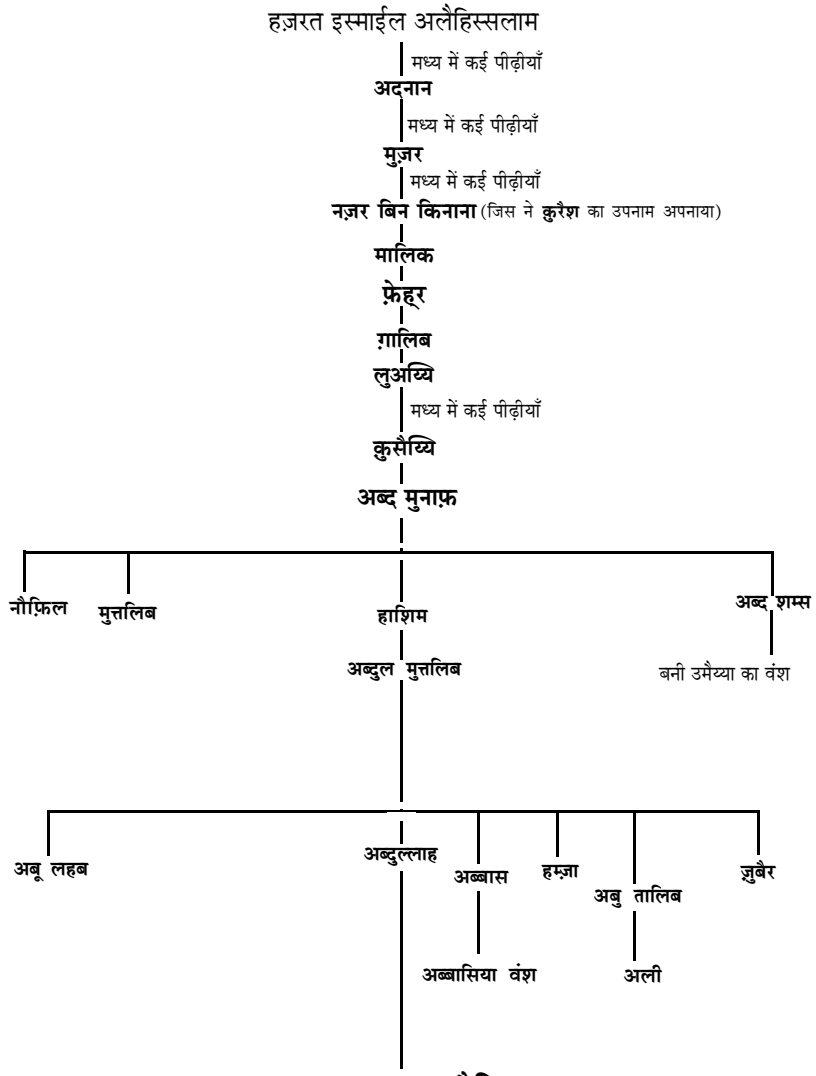

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

(विस्तार के लिए देखिए सीरत इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ १,२,११८,११९,१२० एवं अलबिदाय: वन्निहाय: भाग २ पृष्ठ १९३,२००,२५९)

सूरह अल-माऊन

१०७.अल-माऊन

नाम :- आख़री आयत में माऊन (माल का हक़) अदा न करने पर चेतावनी आयी है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अलमाऊन'' है ।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह शुरु के दौर में नाज़िल हुई होगी ।

केन्द्रीय विषय :- उस चरित्र को सामने लाना है जो जज़ा और सज़ा से इन्कार के फलस्वरुप पैदा होता है ताकि लोग उस के बुरे अन्जाम से ख़बरदार हों ।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में उस वयक्ति के चरित्र पर ग़ौर करने की दअवत दी गई है जो जज़ा और सज़ा का इन्कार करता है।

आयत २ और ३ में बताया गया है कि ऐसे लोग ही समाज के कमज़ोर और दयनीय लोगों के साथ बेरहमी और क्रूरता का बर्ताव करते हैं।

आयत ४ से ६ में उन की रस्मी नमाज़ को बेहक़ीक़त क़रार दिया गया है।

और आयत ७ में उन के कंजूसी की बुरी आदत पर पकड़ की गई है।

पृष्ठ भूमि :- पृष्ठ भूमि में क़ुरैश के वह सरदार हैं जिन्हें अपनी धार्मिकता और ख़ाना-ए-काबा के संचालक होने पर बड़ा गर्व था मगर अख़लाक़ और अमल के लिहाज़ से बड़े ही गिरावट का शिकार थे जिस की कुछ मिसालें इस सूरह में प्रस्तुत की गई हैं।

१०७. सूरह अल-माऊन

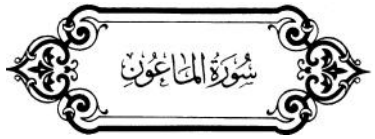

अनुवाद आयतें :७

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

1. **तुम ने उस व्यक्ति को देखा जो जज़ा और सज़ा को झुठलाता है।[1]**

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١

2. **वही है [2] जो यतीम को धक्के देता है।[3]**

فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

3. **और मिस्कीन (मोहताज) को खिलाने की तरग़ीब (प्रोत्साहन) नहीं देता।[४]**

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣

4. **तो ऐसी नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तबाही है,[5]**

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

5. **जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं।[6]**

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥

6. **जो रियाकारी (पाखण्ड) करते हैं,[7]**

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦

7. **और माल का हक़ अदा नहीं करते।[8]**

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

1. अर्थात तुम ने उस व्यक्ति के हाल पर ग़ौर किया जो कर्मों के फल का इन्कार करने वाला है। उस का क़िरदार कितना घटिया और उस के धार्मिक कर्म कितने बेहक़ीक़त हैं । जो व्यक्ति भी ऐसे लोगों के हाल पर ग़ौर करेगा उस के अन्दर यह एहसास ज़रूर उभरेगा कि स्वस्थ चरित्र और सच्ची दीनदारी के लिए आख़िरत पर ईमान लाना ज़रूरी है ।

2. अर्थात् आख़िरत (परलोक) के इन्कार करने वालों में जो नैतिक एवं व्यावहारिक ख़राबियाँ पैदा हो जाती है उन का प्रतिबिंब (अक्स) इस चरित्र (क़िरदार) में देखा जा सकता है।

3. यतीम को धक्के देने के भावार्थ में उस का माल खा जाना, उस का हक़ मारना, उस को झिड़कना, उस का अपमान और तिरस्कार करना और उस को धक्के दे कर अपने दरवाज़े से हटा देना सब शामिल है।

क़ुर्आन ने न केवल यतीमों के हुक़ूक़ अदा करने की ताक़ीद की है बल्कि उन का आदर करने की भी हिदायत की है। अत: सूरह फ़ज्र में फ़रमाया:

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ (الفجر-١٧)

''नहीं बल्कि तुम यतीमों का आदर नहीं करते''

अर्थात यतीमों (अनाथों) का अनादर उन लोगों का स्वभाव है जो ख़ुदा के सामने जवाबदेही का तसव्वुर नहीं रखते ।

4. इस की व्याख्या सूरह फ़ज्र नोट नं. २३ में गुज़र चुकी है।

ध्यान रहे कि मिस्कीन को खाना खिलाना स्वयं नेकी का काम है इस से अलग हट कर के कि वह मुस्लिम है या ग़ैर मुस्लिम और यतीम को धक्के देना हर हाल में गुनाह का काम है चाहे उस यतीम का सम्बन्ध किसी भी धर्म एवं सम्प्रदाय से हो ।

जिस समय यह सूरह नाज़िल हुई है मक्के में मुसलमानों की तादाद इतनी कम थी कि वह उंगलियों पर गिने जा सकते थे लेकिन जब उन्हें मिस्कीन को खाना खिलाने और इस की तरग़ीब (प्रोत्साहन) देने का हुक्म दिया गया तो यह इस बात का सबूत था कि इस्लाम अपने अनुयायियों में इन्सानी हम्दर्दी का ऐसा जज़्बा पैदा करना चाहता है जिस का प्रभाव क्षेत्र पूरी मानवता के लिए फैला हो और जिस के आधार पर हर हक़दार की मदद की जा सके ।

5. यहाँ नमाज़ से मुराद ख़ुदा की परस्तिश की वह शक्ल है जो मक्का के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने अपना रखी थी । क़ुर्आन ने दूसरी जगह उन की नमाज़ की स्थिति और उस की वास्तविकता इस तरह बयान की है :-

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً۔ (الانفال-٣٥)

''अल्लाह के घर के पास उन की नमाज़ सीटियाँ और तालियाँ बजाने के सिवा कुछ नहीं है।''

यह उन की रस्मी नमाज़ थी और वह भी ऐसी कि जिस का हुलिया बिगाड़ दिया गया था । जहाँ तक नमाज़ की असलियत का सम्बन्ध है हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस को अपनी असली शकल में क़ायम किया था और अपनी औलाद को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के पास इस लिए बसाया था कि वह नमाज़ क़ायम करें।

رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

''ऐ हमारे रब ! ताकि वह नमाज़ क़ायम करें'' (इब्राहीम –३७) और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम अपने घर वालों को इस की ताक़ीद करते रहे ।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ

''और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था'' (मरयम -५५) लेकिन बाद के दौर में दीन में काँट छाँट करने वालों ने नमाज़ की शकल बिगाड़ दी । यहाँ तक कि क़ुर्आन के अवतरण के समय नमाज़ नाम रह गया था सीटियाँ और तालियाँ बजाने का । इस की मिसाल आज भी मन्दिरों में देखी जा सकती है जहाँ बुत परस्त भजन गा कर और झाँझ और तालियाँ बजा कर नाचते हुए पूजा पाठ करते हैं और समझते है कि इस से ख़ुदा भी ख़ुश होता है और बुत भी ।

यहाँ मुश्रिकीन की इसी नमाज़ को इन की तबाही का कारण ठहराया गया है क्यों कि यह वह नमाज़ नहीं है। जिस का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया था । लोगों ने अगर ग़ैर सन्जीदा (उछल कूद की) हरकतों का नाम नमाज़ या इबादत रख लिया हो तो इस का हक़ीक़ी नमाज़ और इबादत से क्या वास्ता। यह तो ख़ुदा की इबादत नहीं बल्कि उस का मज़ाक़ है। कुछ मुफ़स्सिरों (क़ुर्आन के टीकाकारों) ने इस सूरह को मदनी क़रार दिया है और नमाज़ से मुनाफ़िक़ों (कपटियों) की नमाज़ मुराद ली लेकिन जिस संदर्भ (Context) में नमाज़ का ज़िक्र हुआ है उस का सम्बन्ध आख़िरत का इन्कार करने वालों से है जिन की नैतिक ख़राबियों के स्पष्ट उदाहरण पेश किये गए हैं। इस के अलावा पिछली सूरह में क़ुरैश को एक ख़ुदा की इबादत का हुक्म दिया गया है और उस के फ़ौरन बाद सूरह माऊन को रखना इस बात को ज़ाहिर करता है कि इस के पसमन्ज़र (पृष्ठ भूमि) में क़ुरैश के सरदार हैं । जो मुश्रिक भी थे और आख़िरत के मुन्किर (इन्कार करने वाले) भी । अत: इस आयत में जिस नमाज़ का ज़िक्र हुआ है वह मक्का के मुश्रिकों और ख़ास तौर से ख़ाना-ए-काबा के संचालकों की नमाज़ थी । अलबत्ता व्यापक भावार्थ (Broad Sense) में मुनाफ़िक़ीन (कपटियों) की नमाज़ भी शामिल है क्यों कि इन की नमाज़ भी मात्र नाम की नमाज़ थी । वास्तविक नमाज़ से वह भी ग़ाफ़िल ही थे और यह बात सिर्फ़ उस दौर के मुनाफ़िक़ीन पर लागू नहीं होती बल्कि हर दौर के मुनाफ़िक़ीन पर लागू होती हैं ।

6. अर्थात् यह लोग अपनी वास्तविक नमाज़ से ग़ाफ़िल हैं। वास्तविक नमाज़ यह है कि आदमी शिर्क से बचते हुए ख़ालिस अल्लाह के लिए नमाज़ अदा करे। उसी की ओर ध्यानाकर्षित करे, और उस के सामने जवाबदेही का तसव्वुर रखे एवं उस इबादत को जो प्रारुप अल्लाह तआला ने निश्चित किया है उसी प्रारूप के साथ उसे अदा करे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जो नमाज़ अपने पीछे छोड़ी थी उस की यही विशेषताऐं थी और उस में क़ियाम (Standing) रूकू (Bending) और सजदा (Prostration) जैसे अरकान (items) थे । मगर मुश्रिकीन (बहुदेववादी) इस की बाहरी और अन्दरूनी दोनों विशेषताओं को खो बैठे और इस को खेल तमाशा बना कर रख दिया । अब जब कि यह पैग़म्बर इब्राहीमी नमाज़ का पुनर्गठन करना चाहता है तो यह लोग उस पर कान धरने को आमादा नहीं हैं और अपनी इस नाम मात्र की नमाज़ ही को लिये बैठे हैं।

ध्यान रहे कि आयत में عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ''वह अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल'' फ़रमाया गया है न कि فِيْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ''वह अपनी नमाज़ में भूलते हैं'' क्यों कि नमाज़ में भूल (सहू) तो ईमान वालों से भी हो सकती है लेकिन नमाज़ से ग़ाफ़िल हो जाना उन ही लोगों का स्वभाव है जो आख़िरत की चिन्ता से आज़ाद हैं।

7. अर्थात् उन की नमाज़ दिखावे की होती है। ख़ुलूस (शुद्ध हृदयता) से बिलकुल खाली मात्र रियाकारी (पाखण्ड) की नमाज़, ताकि लोग उन को धार्मिक समझें ।

अल्लाह की इबादत (उपासना) बन्दगी का हक़ समझ कर उस की प्रसन्नता प्राप्त करने के उद्देश्य से की जानी चाहिए । लेकिन रियाकारों (पाखण्डियों) की इबादत मात्र दिखावटी होती है और इस

लिए होती है ताकि लोगों से दाद (वाहवाही) हासिल की जाये । इस लिए ऐसी इबादत करने वाले आख़िरत में न केवल यह कि किसी ईनाम के अधिकारी नहीं होंगे । बल्कि अपने इस गुनाह की वजह से कठोर दंड के भागीदार होंगे । रियाकारी के सिलसिले में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बयान भी बड़े प्रभावपूर्ण हैं, जो बाइबिल में नक़ल हुए हैं। अत: मत्ती की इन्जील में है :-

''सावधान रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम न करो -------- इस लिए जब तू दान करे तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी सभाओं और ग़लियों में करते हैं ताकि लोग उन की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना फल पा चुके । परन्तु जब तू दान करे तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है उसे तेरा बायाँ हाथ न जानने पाये । --------- और जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों के समान न हो, क्यों कि लोगों को दिखाने के लिए सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े हो कर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके ।'' (मत्ती ६:१,२,३,४,५)

और बनी इस्राईल के विद्वानों और धर्मशास्त्रियों को जिन्होंने दीन के सिलसिले में दिखावेपन को अपना रखा था और जिन के अन्दर बदतरीन क़िस्म की रियाकारी पैदा हो गई थी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने सख़्त झिंझोड़ा ।

''हे कपटी शास्त्रियों और फ़रिसियों तुम पर हाय ! कि विधवाओं के घरों को दबा बैठे हो और दिखावे के लिए नमाज़ को तूल देते हो, तुम्हें अधिक दंड मिलेगा--------हे कपटी शास्त्रियों और फ़रीसियों तुम पर हाय, तुम कटोरे और थाली को ऊपर से माँजते हो परन्तु वह भीतर अंधेर असंयम से भरे हैं----------हे कपटी शास्त्रियों और परीसियों तुम पर हाय ! तुम चूना फिरी क़ब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती है परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।'' (मत्ती २३: १४,२५,२६,२८)

(कपटी का अर्थ रियाकार के हैं)

8. अर्थात् ये लोग बड़े कन्जूस साबित हुए हैं। गरीबों और मिस्कीनों (मोहताजों) की मदद और सहायता में जो माल ख़र्च होना चाहिए उसे रोके रखते हैं । इन्हें वास्तव में न ख़ुदा से मुहब्बत है और न अपनी दुनिया बनाने ही की फ़िक्र है। वह धर्म का चोला ओढ़ कर अपने को ख़ुदा परस्त ज़ाहिर कर रहे हैं लेकिन इन ग़रीबों और मिस्कीनों के साथ उन का क्रूर रवैया इस बात का सबूत है कि वह अपने ख़ुदा परस्ती के दावे में सच्चे नहीं हैं क्यों कि सच्ची ख़ुदा परस्ती इन्सान को सदाचारी, स्नेही और दानी बनाती है।

Text (मूल) में लफ़्ज़ माऊन इस्तेमाल हुआ है जिस का शाब्दिक अर्थ ''लाभ की चीज़'' के हैं। यह रोज़ाना के इस्तेमाल में आने वाली चीज़ों पर भी लागू होता है। और माल पर भी । मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने आम तौर से मामूली और साधारण ज़रूरत की चीज़े मुराद ली हैं। जो एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी को माँगने पर देता है और जिन का न देना कन्जूसी का कारण समझा जाता है, इस में शक नहीं की इस क़िस्म की चीज़ें देने से इन्कार करना नैतिक रुप से अपमान की बात है। लेकिन यहाँ जो चेतावनी सुनाई गई है वह ज़ाहिर है किसी बहुत बड़े हक़ के अदा न करने या किसी बड़े गुनाह के कर गुज़रने ही पर है। एवं सूरह का मज़मून भी ग़रीबों और मिस्कीनों के अधिकारों से सम्बन्धित है। इस लिए माऊन से माल का हक़ मुराद लेना ही अधिक उचित मालूम होता है। इस का समर्थन ज़ुहरी के इस कथन से होता है कि माऊन क़ुरैश की ज़बान में माल को कहते हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ठ ५५६)

और कुछ हज़रात ने इस से मुराद ज़कात ली है लेकिन हज़रत इब्ने उमर का कथन इस की बेहतरीन तफ़्सीर (व्याख्या) है। उन से जब माऊन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा الماالذی لایؤدی حقه ''वह माल जिस का हक़ अदा न किया जाए।'' पूछने वाले ने कहा कि इब्ने मसऊद तो कहते हैं कि इस से मुराद व्यवहार में लाने की वह चीज़ें हैं जो लोग एक दूसरे को देते रहते हैं तो इस के जवाब में उन्होंने कहा माऊन का मतलब वही है जो मैं तुम से बयान कर रहा हूँ। (फ़त्हुलबारी भाग ८ पृष्ठ ५९४ तबरी के हवाले से)

इस लिए हम ने يَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ का अनुवाद ''माल का हक़ अदा नहीं करते'' किया है। यह बात क़ुर्आन में दूसरे तरीक़े से भी बयान हुई है। जैसे مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ (سورہ قلم-۱۲) (''माल को रोकने वाला सूरह क़लम - १२'') अर्थात् कंजूस। स्पष्ट रहे कि ''ख़ैर خیر'' का लफ़्ज़ अरबी में माल के अर्थ में भी आता है और मना का लफ़्ज़ रोकने एवं कंजूसी करने के अर्थ में भी।

१०८. अल-कौसर

नाम :- पहली ही आयत में कौसर (ख़ैर कसीर अर्थात अधिकता के साथ भलाई) के प्रदान किये जाने की ख़ुशख़बरी दी गयी है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-कौसर'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह मक्का के आख़िरी दौर में नाज़िल हुई होगी जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विरोध के तूफ़ान से गुज़र रहे थे और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बदनाम करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- यह सूरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए बड़ी ख़ुशख़बरी और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हक़ में विशेष कृपा का एलान है।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़ैर कसीर (Good in Abundance) अर्थात भलाई में अधिकता प्रदान किए जाने की ख़ुशख़बरी दी गयी है।

आयत २ में इस के शुक्र के तौर पर नमाज़ और क़ुर्बानी का आयोजन करने का आदेश दिया गया है।

आयत ३ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी गयी है कि जो लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दुश्मनी पर तुले हुए हैं यह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कुछ बिगाड़ न सकेंगे अलबत्ता अपने को बहुत बड़े ख़ैर (भलाई) से ज़रूर महरूम कर लेंगे।

१०८. सूरह अल-कौसर

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

अनुवाद आयतें : ३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. हम ने [1] तुम्हे [2] कौसर प्रदान किया।[3]

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١

2. अतः तुम अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो।[4]

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

3. बेशक तुम्हारा दुश्मन ही ख़ैर से महरुम है।[5]

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

1. यह कलाम करने (वार्ता करने) का शाहाना अन्दाज़ है जिस में एक वचन के बजाय बहु वचन सर्वनाम (Plural Pronoun) (हम ने) इस्तेमाल की गई है और अभिप्रेत इस शान का प्रदर्शन है जिस के साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कौसर का बरकतों वाला उपहार अल्लाह के दरबार से पुरस्कृत हुआ ।

2. सम्बोधन सीधे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

3. कौसर का अर्थ ख़ैर कसीर (Good in Abundance) के है (अन्निहाय: भाग ४ पृष्ठ ३७, लिसानुल अरब भाग ५ पृष्ठ १३३) और इसी मुनासिबत से यह जन्नत की उस नहर का नाम है। जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरत में प्रदान की जाएगी मुफ़स्सिर-ए-क़ुर्आन (क़ुर्आन के टीकाकार) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कौसर से ख़ैर कसीर (भलाई में अधिकता)मुराद लिया है जिस में जन्नत की नहर भी शामिल है । अत: बुख़ारी की रिवायत है कि :-

عن سعيد بن جُبير عن ابن عبّاس رضی الله عنه انه قال فی
الكوثر هُو الخيرُ الذی اعطاهُ الله اِيّاه۔ قال ابو بشر
قُلتُ لِسعيد بن جُبير فَاِنّ النَاس يَزْعَمُوْنَ اَنّهٗ نَهْرٌ فِی
الجَنّةِ۔ فَقَالَ سَعِيدٌ اَلنّهرِ الذِی فِی الْجَنّةِ مِنَ الْخَيرِ
الّذِی اَعْطَاهُ اللّٰهُ اِيّاه۔ (بخاری كتاب التفسير)

''सईद बिन जुबैर, इब्ने अब्बास (रजि.) से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया कौसर वह ख़ैर (भलाई) है जो अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया । अबू बिश्र (रावी) कहते हैं कि मैं ने सईद बिन जुबैर से कहा: लोगों का ख़्याल है कि वह जन्नत की एक नहर है। सईद ने जवाब दिया कि नहर उसी ख़ैर में से है जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को प्रदान किया है।''

इसी तरह इस के भावार्थ में वह हौज़ भी शामिल है जो क़ियामत के दिन मैदान हश्र में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म) को अता किया जायेगा, जिस का पानी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने मुख़लिस (सच्चे) अनुयायियों को पिलायेंगे । हदीस में उस हौज़ पर भी कौसर को लागू समझा गया है । सही मुस्लिम में हज़रत अनस की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कौसर की व्याख्या करते हुए फ़रमाया :-

هُوَ حوضٌ تَرِدُ عَلَيْهِ اُمّتِی يَوْمَ القيامةِ۔

''वह एक हौज़ है जिस पर क़ियामत के दिन मेरी उम्मत पहुँचेगी''।

मतलब यह कि जिस ख़ैर कसीर से अल्लाह तआला ने आप को नवाज़ा (पुरस्कृत) है उस में ये दो नेमतें ख़ास तौर से चर्चा करने के योग्य हैं क्यों कि यह भव्य और अमूल्य होने के अलावा आप की विशेष श्रेष्ठता एवं प्रमुखता (फ़ज़ाइल) में शामिल हैं और आयत का इशारा जिस को नबी की हदीस ने खोल दिया है खास तौर से अल्लाह के इन दो उपहारों की ओर है। और जिस बख़्शिश का वादा अल्लाह तआला फ़रमाए उस का मिलना चूँकि निश्चित है इस लिए उस को माज़ी के सीग़े (Past tense verb) में اَعْطَيْنَا (हम ने अता किया) बयान फ़रमाया जो इस की निश्चितता को ज़ाहिर करता है।

यह बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस समय दी गयी जब कि मक्का के मुश्रिकीन (बहुदेववादी) आप के दुश्मन हो गये थे और उन्हों ने आप को कष्ट देने में कोई कसर उठा न रखी थी । इस अवसर पर यह बशारत (ख़ुशख़बरी) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म) की तसल्ली का कारण थी । एवं इस से विरोधियों पर यह स्पष्ट करना अभिप्रेत था कि तुम जिस हस्ती को कष्ट पहुँचा रहे हो वह ख़ुदा के नज़दीक कितने बुलन्द मरतबे की हस्ती है जिस पर ख़ैर और बरकत की निरंतर बारिश हो रही है और इस ख़ैर और बरकत का ज़हूर (आविर्भाव) किस तरह हौज़ कौसर और नहरे कौसर के रुप में होने वाला है। इस के बावजूद अगर तुम उस की शान में गुस्ताख़ी करना चाहते हो तो करो, आसमान को तो तुम उस पर फूल निछावर करने से नहीं रोक सकते ।

कौसर की नहर और कौसर के हौज़ के सिलसिले में जो कई एक सही और स्पष्ट हदीसें वारिद हुई हैं उन सब को बयान करना तो विलम्ब का कारण होगा इस लिए हम कुछ हदीसें नीचे नक़ल करते हैं।

कौसर की नहर का अनुभव नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज के मौक़े पर कराया गया था । हज़रत अनस (रज़ि.) की रिवायत है कि :-

''لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم إِلَى السَّمَاءِ قَالَ أَتَيْتُ عَلَى نَهْرٍ
حَافَتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ مُجَوَّفٌ، فَقُلْتُ مَا هٰذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ
هٰذَا الْكَوْثَرُ۔'' (بخاری کتاب التفسیر)

''नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मेराज के लिए आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो वही जो कुछ अनुभव किया उस का ज़िक्र करते हुए आप ने फ़रमाया मैं एक नहर पर आया जिस के दोनों किनारों पर मुज़ौव्वफ़ (अन्दर से ख़ाली) मोतियों के क़िब्बे (Domes गुबंद) थे । मैं ने पूछा, जिब्रील ! यह क्या है? फ़रमाया यह कौसर है।'' (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

और बुख़ारी ही की दूसरी रिवायत में ये अल्फ़ाज़ हैं।

هٰذَا الْكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَ رَبُّكَ

''यह वह कौसर है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के रब ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अता किया है।'' (बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़)

और अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) से रिवायत (उल्लिखित) है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

اَلْكَوْثَرُ نَهْرٌ فِي الْجَنَّةِ حَافَتَاهُ مِنْ ذَهَبٍ وَمَجْرَاهُ عَلَى
الدُّرِّ وَالْيَاقُوتِ تُرْبَتُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَمَاؤُهُ أَحْلَى
مِنَ الْعَسَلِ وَأَبْيَضُ مِنَ الثَّلْجِ۔

''कौसर जन्नत में एक नहर है जिस के किनारे सोने के हैं और वह मोतियों और याक़ूत पर बहती हैं। इस की मिट्टी मुश्क से अधिक ख़ुश्बूदार है, और इस का पानी शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद है'' (तिर्मिज़ी अबवाबुत्तफ़्सीर)

और कौसर के हौज़ के बारे में हज़रत सहल बिन सअद की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

إِنِّي فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ مَنْ مَرَّ عَلَيَّ شَرِبَ وَمَنْ شَرِبَ
لَمْ يَظْمَأْ أَبَدًا۔ (بخاری کتاب الرقاق)

''मैं तुम से पहले हौज़ पर पहुँचूँगा । जो मेरे पास आयेगा, उस का पानी पियेगा और जो कोई इस का पानी पियेगा उसे फिर कभी प्यास महसूस न होगी ।'' (बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़)

अब्दुल्लाह बिन उम्र की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ
مِنَ الْمِسْكِ وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ مَنْ شَرِبَ مِنْهَا فَلَا
يَظْمَأُ أَبَدًا۔ (بخاری کتاب الرقاق)

''मेरे हौज़ की लम्बाई (या चौड़ाई) एक माह की दूरी के बराबर होगी । इस का पानी दूध से अधिक सफ़ेद और इस की ख़ुश्बू मुश्क से अधिक बेहतर और उस के कूज़े (पान पात्र) आसमान के तारो की तरह बेहद होंगे । जो इस का पानी पियेगा उस को फिर कभी प्यास न लगेगी ।''
(बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक)

उक़्बा बिन आमिर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ मिम्बर पर चढ़ कर फ़रमाया :-

إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ وَإِنِّي وَاللهِ
لَأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الْآنَ۔

''मैं तुम से पहले (हौज़ पर) पहुँचने वाला हूँ और तुम पर गवाह हूँगा । ख़ुदा की क़मस मैं इस वक्त अपने हौज़ को देख रहा हूँ ।'' (मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल)

अनस बिन मालिक का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

لَيَرِدَنَّ عَلَيَّ الْحَوْضَ رِجَالٌ مِمَّنْ صَاحَبَنِي حَتَّى إِذَا
رَأَيْتُهُمْ وَرُفِعُوا إِلَيَّ اخْتُلِجُوا دُونِي فَلَأَقُولَنَّ أَيْ رَبِّ
أُصَيْحَابِي أُصَيْحَابِي فَلَيُقَالَنَّ لِي إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا
أَحْدَثُوا بَعْدَكَ۔ (مسلم کتاب الفضائل)

''मेरे हौज़ पर कुछ ऐसे लोग भी आयेंगे जो मेरे साथी रहे हैं । मैं जब इन्हें देख लूँगा और वह मेरे पास लाये जाऐंगे तो इन्हें मेरे पास से हटा दिया जायेगा । मैं कहूँगा ऐ मेरे रब ये मेरे साथी हैं,ये मेरे साथी हैं । लेकिन मुझ से कहा जायेगा कि आप को नहीं मालूम कि आप के बाद इन्होंने क्या किया ।'' (मुस्लिम किताबुत फ़ज़ाइल)

इस तरह बहुतेरी हदीसें जो हौज़ के बारे में वारिद हुई हैं इस बात की पुष्टि करती है कि आप के इस हौज़ पर आप की उम्मत हाज़िर होगी । उस से तृप्त होने का अवसर उन ही लोगों को दिया जायेगा जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुख़लिस (सच्चे) अनुयायी होंगे और जिन्हों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तरीक़े (सुन्नत) में कोई परिवर्तन नहीं किया होगा ।

4. अर्थात इस अमूल्य उपहार से पुरस्कृत किये जाने पर तुम अपने रब का शुक्र अदा करो और उस की शुक्र गुज़ारी (कृतज्ञता) का तरीक़ा नमाज़ और क़ुर्बानी हैं । गोया यह इबादतें शुक्र का बेहतरीन मज़हर (द्योतक) है। और ख़ुदा से निकटता प्राप्त करने का माध्यम भी । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ से जो लगाव था उस का अन्दाज़ा इस बात से होगा कि आप रात को उठ कर देर तक नमाज़ में लीन रहते यहाँ तक कि आप के पाँव में वरम पड़ जाते । कुछ सहाबा ने इस की ओर ध्यान दिलाया तो आप ने फ़रमाया क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बन जाऊँ (बुख़ारी, मुस्लिम) इसी तरह क़ुरबानी के आदेश का पालन भी आप बड़े चाव से करते रहे। मदीने में ईदुलअज़हा (बक़रईद) के मौक़े पर क़ुर्बानी करना आप का नियम रहा और अपने अन्तिम हज्ज के मौक़े पर तो आप ने अपने हाथ से ६३ ऊँट ज़बह (क़ुर्बान) किये ।

Text (मूल) में लफ़्ज़ ''वन्हर'' وَانْحَرْ इस्तेमाल हुआ है जो असल में ऊँट की क़ुरबानी के लिए बोला जाता है और यहाँ इस से अभिप्रेत इब्राहीम की मिल्लत की ओर इशारा करना है जिस में ऊँट की क़ुर्बानी एक चिन्ह (शिआर) के तौर पर थी इस के विरुद्ध यहूद ऊँट की क़ुर्बानी को वैद्य (जायज़) नहीं समझते थे । इस शिआर (रिति अथवा चिन्ह) को ज़िन्दा करने का आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया । लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि ऊँट की ही क़ुर्बानी अनिवार्य है, इस के बग़ैर क़ुर्बानी नहीं होगी । बल्कि जैसा कि आप के क़ौल और अमल से साबित है कि क़ुर्बानी दूसरे जानवरों की भी की जा सकती है इस लिए यहाँ हुक्म का असल मन्शा क़ुर्बानी पर ज़ोरे देना है चाहे वह उन जानवरों में से किसी जानवर की हो इस्लामी शरीअत के मुताबिक (शास्त्रानुसार) जायज़ है।

हदीस में ''नहर'' का लफ़्ज़ गाय की क़ुर्बानी के लिए भी इस्तेमाल हुआ है।

عَنْ جَابِرٍ قَالَ نَحَرْنَا مَعَ رسولِ اللهِ ﷺ عامَ الحُدَيْبِيَةِ البَقَرَةَ عَن سبعةٍ والبدنة عن سبعةٍ۔ (ترمذی ابواب الحج)

''जाबिर कहते हैं कि हम ने रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हुदैबिय: के साल क़ुर्बानी की । गाय सात व्यक्तियों की तरफ़ से और ऊँट सात व्यक्तियों की तरफ़ से''।

नमाज़ और क़ुरबानी का जो हुक्म नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया गया है वह आप के माध्यम से पूरी उम्मत के लिए है। जिस तरह यह उम्मत कौसर के उपहार में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीक है कि क़ियामत के दिन कौसर के हौज़ से फ़ैज़ (लाभ) हासिल करेगी उसी तरह वह नमाज़ और क़ुर्बानी के हुक्म में भी जो आप को दिया गया है, आप की शरीक और भागीदार है। मौक़े के लिहाज़ से इस हुक्म का यह पहलू भी यहाँ स्पष्ट हो रहा है कि सूरह माऊन में मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) की जिस नमाज़ को बेहक़ीक़त क़रार दिया गया है इस के मुक़ाबले में तुम्हारी नमाज़ ख़ालिस अल्लाह के लिए होनी चाहिए जैसा कि दूसरी जगह ज़्यादा साफ़ तरीक़े से फ़रमाया गया है।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ۔ لَا شَرِیْكَ لَهٗ۔ (الانعام ۔۱۶۲)

''कहो, मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह रब्बुलआलमीन के लिए है जिस का कोई शरीक (Partner) नहीं ।'' (अल्-अन्आम -१६२)

5. यह मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) की उन गुस्ताख़ियों के जवाब में है जो आप की शान में वह करते थे । वह अपमानित करने वाले अपशब्दों के साथ आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरुद्ध प्रोपेगेन्डा करते थे कि आप का सम्बन्ध शिर्क और बुतपरस्ती के विरोध के कारण क़ौम से कट गया है। क़ुरैश को दुनिया में जो शक्ति और प्रभुत्व एवं सम्मान और वर्चस्वता प्राप्त है उस से आप बिलकुल महरुम हो गए हैं और अब आप की हैसियत एक बे यार और मददगार व्यक्ति की हो कर रह गई है। इस के जवाब में फ़रमाया गया कि आप को तो अल्लाह तआला ने ख़ैर कसीर (Good in Abundance) से पुरस्कृत किया अलबत्ता आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोधी हर तरह के ख़ैर (भलाई) से महरूम (वंचित) हैं और हमेशा के लिए उन के वास्ते महरूमी लिख दी गयी है।

यह वास्तव में एक भविष्यवाणी (पेशीयनगोई) थी जो बिलकुल सही साबित हुई। रसूल के दुश्मन इस तरह अपमानित एवं तिरस्कृत और तबाह एवं बर्बाद हुए कि उन का नाम और निशान बिलकुल मिट गया और अल्लाह के रसूल को ऐसा सम्मान एवं बुलन्दी प्राप्त हुई कि करोड़ों अरबों लोग आप पर दरूद और सलाम भेजते हैं और क़ियामत तक भेजते रहेंगे । स्पष्ट रहे कि इस पेशीयनगोई का सम्बन्ध सिर्फ़ उस दौर के रसूल के दुश्मनों के लिए नहीं था बल्कि हर दौर में पैदा होने वाले रसूल के दुश्मनों से है। जो भी आप की शान में गुस्ताख़ी करेगा या आप का विरोध करेगा उस के लिए ख़ैर (भलाइयों) से महरुमी निश्चित है और वह ज़लील (तिरस्कृत) हो कर रहेगा ।

सूरह
अल्-काफ़िरून

१०९.अल्-काफ़िरून

नाम :पहली आयत में अल्-काफ़िरुन (काफ़िरों) का लफ़्ज़ आया है। इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल्-काफ़िरून'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि यह मक्का के आख़री दौर का अवतरण है।

केन्द्रीय विषय :- ग़ैरूल्लाह अर्थात् अल्लाह के सिवा किसी की भी परस्तिश से बेज़ारी (विमुखता) और काफ़िरों के दीन से बिलकुल बेतअल्लुकी (पृथकता) का इज़्हार और एलान है।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिदायत दी गई है कि काफ़िरों को सम्बोधित कर के दो टोक अल्फ़ाज़ में एलान कर दो ।

आयत २ और ३ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी यह एलान कर दिया गया है कि परस्तिश के मामले में मेरा दृष्टिकोण क्या है और तुम्हारा क्या ।

आयत ४ और ५ में यह एलान कि परस्तिश (पूजा) के मामले में किसी तरह की उदारता दिखाने या किसी भी समझौते के फारमूले को क़ुबूल करने का सवाल पैदा नहीं होता ।

आयत ६ में काफ़िरों के दीन (धर्म) से मुक्त होने का इज़्हार है।

हदीस :- हदीस से साबित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ से पहले की दो रकअतों में एवं अपने आखरी हज्ज के मौक़े पर तवाफ़ की दो रकअतों में قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ''सूरह काफ़िरून'' और ''सूरह इख़्लास'' قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ी थी । (मुस्लिम किताबुस्सलातुल मुसाफ़िरीन अबू हुरैरा की रिवायत से, और किताबुलहज्ज जाबिर बिन अब्दुल्लाह की रिवायत से)

१०९. सूरह अल-काफ़िरून

अनुवाद आयतें : ६

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١

1. कह दो [1] ऐ काफ़िरो ![2] (इन्कार करने वालो)।

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

2. मैं उन की परस्तिश नहीं करता जिनकी परस्तिश तुम करते हो।[3]

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣

3. और न तुम उस की परस्तिश करते हो जिस की परस्तिश मैं करता हूँ।[4]

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤

4. और न मैं उन की परस्तिश करने वाला हूँ जिन की परस्तिश तुम ने की,[5]

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥

5. और न तुम उस की परस्तिश करने वाले हो जिस की परस्तिश मैं करता हूँ।[6]

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

6. तुम्हारे लिए तुम्हारा ''दीन'' और मेरे लिए मेरा ''दीन''।[7]

1. सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है।

2. सम्बोधित वह लोग हैं जिन पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा हक़ (सत्य) अच्छी तरह खुल कर सामने आ चुका था और इस के बावजूद वह कुफ़्र पर जमे रहे।

काफ़िर का शाब्दिक अर्थ इन्कार करने वाले के हैं और क़ुर्आन की परिभाषा में कुफ़्र ईमान का विलोम । और काफ़िर से मुराद वह व्यक्ति है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु एलैहि वसल्लम के लाए हुए ''दीन'' को क़ुबूल करने से इन्कार कर दे । इस दीन की मौलिक शिक्षा (बुनियादी तालीम) यह है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य, उपास्य) नहीं । इस लिए इन्सान को चाहिए कि सिर्फ़ उस की इबादत (पूजा, उपासना. बन्दगी, आज्ञापालन) करे और उस की इबादत में किसी को शरीक न करे । जो व्यक्ति ग़ैरुल्लाह अर्थात अल्लाह के सिवा किसी की इबादत करता है चाहे वह बुत परस्ती की शकल में हो या भूमि पूजा के रुप में और चाहे वह देवी देवताओं को मदद के लिए पुकारता हो या किसी फ़र्जी (मनगढ़न्त) ख़ुदाओं के भजन गाता हो, खुला हुआ शिर्क है, और जो धर्म भी इस शिर्क की आज्ञा देता है यह मुश्रिकाना (बहुदेववादी) धर्म है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस लिए पैग़म्बर बना कर भेजे गए थे कि इस शिर्क की जड़ काट दें और इन्सान को एक अल्लाह का परस्तार (उपासक) बनने का निमंत्रण दें।

यह दअवत (निमंत्रण) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दलीलों और तर्क समेत प्रस्तुत की और समझाने बुझाने का बेहतर से बेहतर तरीक़ा अपनाया । यह दअवती जद्दोजहद एक मुद्दत तक जारी रही यहाँ तक कि हक़ (सत्य) अच्छी तरह स्पष्ट हो गया और अल्लाह की हुज्जत (तर्क) उस के बन्दों पर क़ायम हो गयी अर्थात अब हठधर्मी के सिवा बचाव का कोई रास्ता नहीं रह गया। दअवत के इस मरहले (चरण) में दाखिल (प्रवेश) होने के बाद जो लोग कुफ़्र पर अड़ गए और रसूल के विरोध और दुश्मनी पर उतर आये उन से ''ऐ काफ़िरो !'' कह कर सम्बोधन किया गया जो बिल्कुल उचित था । लेकिन इस से अभिप्रेत विरोधियों को बुरा भला कहना नहीं था बल्कि उन के सत्य को झुठलाने का खुल कर प्रदर्शन करना था ताकि स्पष्ट हो जाए की ख़ुदा की हुज्जत (तर्क) उन पर क़ायम हो चुकी है और उन के कुफ़्र (झुठलाने) के बदले में अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) उन पर टूटने वाला है। यह बात यद्यपि मक्के के काफ़िरों पर उचित बैठती है और वही इस के प्रथम सम्बोधित (First Addresee) थे लेकिन उसूली तौर पर यह बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो मक्का के काफ़िरों जैसी हठधर्मी अपनाऐं । और कहने का सार यह है कि क़ियामत तक पैदा होने वाले काफ़िरों पर अल्लाह की हुज्जत बराबर क़ायम होती रहे । एवं इस के द्वारा मुसलमानों को भी यह सबक देना अभिप्रेत है कि काफ़िरों की राह अलग और ईमान वालों की राह अलग है और दोनों के बीच ऐसी बड़ी खाई है कि वह कुछ लो और कुछ दो के उसूल पर हरगिज़ मामला नहीं कर सकते ।

3. मुराद बुत हैं जिन की पूजा मक्का के मुश्रिकीन करते थे एवं वह तमाम दूसरी हस्तियाँ भी जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर परस्तिश किया करते थे ।

परस्तिश के सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का हुक्म दूसरी सूरतों में भी दिया गया है। जैसे सूरह यूनुस में फ़रमाया :-

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰكُمْ ۔ (یونس ۔ ۱۰۴)

''कहो ऐ लोगों । अगर तुम मेरे दीन के मामले में शक में हो तो सुन लो कि मैं उन की परस्तिश

नहीं करता जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर परस्तिश करते हो, बल्कि सिर्फ़ अल्लाह की परस्तिश करता हूँ जो तुम्हारी रूह (प्राण) क़ब्ज़ करता है।'' (सूरह यूनुस आयत १०४)

मक्का के मुश्रिकीन ख़ुदा को मानते थे और उस की परस्तिश से भी उन्हें इन्कार नहीं था लेकिन वह यह बात मानने के लिए तैयार नहीं थे कि बुतों को छोड़ कर एक ख़ुदा की परस्तिश की जाए। वह अगर ख़ुदा की परस्तिश करते थे तो वह शिर्क के साथ होती थी। इस लिए उन पर स्पष्ट किया गया कि न यह ख़ुदा की परस्तिश है और न ही तुम ख़ुदा के परस्तार हो। ख़ुदा की परस्तिश के साथ कोई और परस्तिश जमा नहीं हो सकती इस लिए अगर तुम्हारा गुमान (अनुमान) यह है कि तुम भी ख़ुदा के परस्तार (मुक्त, उपासक) हो तो यह तुम्हारा भुलावा है, इस का हक़ीक़त से कोई तअल्लुक़ नहीं।

5. मुश्रिकीन चाहते थे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के बुतों की परस्तिश करें ताकि समझौते की कोई सूरत पैदा हो। सूरह ज़ुमर में उन की इस माँग का जवाब बड़े सख़्त अन्दाज़ में दिया गया है। फ़रमाया :-

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجَاهِلُوْنِ ط (الزمر۔٦٤)

''कहो ऐ जाहिलो ! फिर क्या तुम मुझ से मुतालबा (Demand) करते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की परस्तिश करूँ?'' (अज ज़ूमर : ६४)

और यहाँ भी इन्हें बहुत सख़्त निराशजनक जवाब दिया गया है ताकि वह इस सिलसिले में समझौते की कोई उम्मीद न रखें।

आयत २ और आयत ४ में पुनरावृत्ति (Repetition) नहीं है बल्कि इस लिहाज़ से फ़र्क़ है कि आयत २ में हाल (वर्तमान) से सम्बन्धित आप ने अपना दृष्टिकोण साफ़ तौर पर प्रस्तुत कर दिया और आयत ५ में आइन्दा (भविष्य) के लिए अपने दृष्टिकोण और इरादों का इज़्हार है। मतलब यह है कि न मैं तुम्हारे माबूदों (उपास्यों) की परस्तिश करता हूँ और न मुझ से आगे के लिए यह आशा की जा सकती है कि इस मामले में कोई नर्मी या लचक पैदा करूँगा। मैं निश्चित रुप से और हमेशा के लिए तुम्हारे माबूदों (पूज्यों, उपास्यों) से अपनी बेज़ारी (विमुखता) का एलान करता हूँ।

6. अर्थात् तुम्हारी हठ्धर्मी के कारण तुम से यह आशा नहीं की जा सकती कि तुम अपने माबूदों को छोड़ कर मेरे माबूद की इबादत करने वाले बन जाओगे।

इस का मतलब यह नहीं कि इन काफ़िरों में से आइन्दा किसी के भी ईमान लाने की कोई संभावना बाक़ी ही नहीं रही, क्यों कि इन में ऐसे भी थे जो बाद में इस्लाम की आग़ोश में आ गये, बल्कि मतलब यह है कि चूँकि तुम्हारे अन्दर मेरे माबूद की परस्तिश के लिए कोई आमादगी (उत्सुकता) नही पायी जाती और तुम अपने बुतों ही के पुजारी बन के रहना चाहते हो इस लिए मैं तुम से मुक्त होने, तुम से पृथक (अलग) होने का ऐलान करता हूँ जब तक कि तुम अपने इस काफ़िराना (इन्कार के) और मुश्रिकाना रवैया से बाज़ न आ जाओ।

7. अर्थात जब परस्तिश के मामले में जो ख़ुदा से तअल्लुक़ (जुड़ने) की असल बुनियाद है, जब मेरे और तुम्हारे बीच कोई सहयोग नहीं है तो दोनों का दीन एक किस तरह हो सकता है एवं समझौता और उदारता का सवाल पैदा ही कहाँ होता है। अगर तुम मेरी दअवत क़ुबूल करना नहीं चाहते तो तुम अपनी बात पर जमे रहो और मैं अपने दृष्टिकोण पर जमा हूँ यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना फैसला सादिर फ़रमाये (उतारे)। यह उसी तरह की बात है जैसी सूरह यूनुस में

फ़रमायी गई है :-

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ اَنْتُمْ بَرِيْٓئُوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ۔ (یونس۔۴۱)

''और अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। मैं जो कुछ करता हूँ उस से तुम बरी हो और तुम जो कुछ करते हो उस से मैं बरी हूँ।'' (यूनुस :४१)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बड़ी बेबाक़ी के साथ अपनी क़ौम से बरी होने का एलान किया था जिस को क़ुर्आन ने ईमान वालों के लिए बेहतर नमूना क़रार दिया है।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۔ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ۔ (الممتحنہ۔۴)

''तुम्हारे लिए इब्राहीम और उस के साथियों में एक अच्छा नमूना है। जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा हम तुम से और जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो उन से बिलकुल बरी हैं हम ने तुम से कुफ़्र किया और हमारे बीच हमेशा के लिए बैर और नफ़रत हो गयी जब तक तुम एक अकेले अल्लाह पर ईमान न ले आओ।'' (अल्-मुम्तहिन :-४)

अर्थात् यह आयत काफ़िरों के रवैया से बेज़ारी (विमुखता) और उन के दीन से सम्बन्ध न होने का एलान है इस लिए इस को उदारता के भावार्थ में लेना और उस से तर्क वितर्क करते हुए मुश्रिकाना धर्म के लिए दिल में नर्म जगह बनाना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे काले को सफ़ेद समझ लेना या रात को दिन साबित करने की कोशिश करना।

आजकल धार्मिक उदारता के नाम पर वहदत-ए-अद्यान अर्थात ''सारे धर्म समान हैं उन में सत्य और असत्य का कोई फ़र्क़ नहीं'' के सिद्धान्त को बड़े मनमोहक अन्दाज़ में प्रस्तुत किया जा रहा है। इस का प्रचार करने वाले चाहते हैं कि ख़ुदा को बुतों की पंक्ति में बिठाऐं تَعَالَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ और शिर्क एवं तौहीद (बहुदेववाद एवं एकेश्वरवाद) का माजून (मिश्रण) तैयार करें। यह लोग अपना शौक़ तो पूरा कर सकते हैं लेकिन सत्य को असत्य के साथ हरगिज़ जमा नहीं कर सकते। जिस तरह दिन और रात दोनों एक ही समय में जमा नहीं हो सकते उसी तरह हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) को जमा करने की कोशिश भी व्यर्थ है। और जहाँ तक क़ुर्आन का सम्बन्ध है उस की यह सूरह ही इस सिद्धान्त को ग़लत क़रार देने के लिए काफ़ी है। इस लिए जो लोग इस्लाम और कुफ़्र का मलगूबा (कबाड़) तैयार करना चाहते हैं वह हरगिज़ यह आशा न रखे कि उन्हें क़ुर्आन का समर्थन प्राप्त हो सकेगा।

११०. अन्-नस्र

नाम :पहली आयत में नस्र (अल्लाह की मदद) के आने का ज़िक्र हुआ है जिस की मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अन्-नस्र'' है।

नाज़िल होने का समय :- मदनी है और हज़रत इब्ने अब्बास का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली यह आख़िरी सूरह है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग ४ पृष्ट ५६१ निसाई के हवाले से) सूरह के मज़मून से भी इस का समर्थन होता है एवं जैसा कि इब्ने अब्बास का बयान है इस सूरह में यह इशारा मौजूद है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुनिया से रुख़्सत होने का वक़्त क़रीब आ गया है। बुख़ारी की रिवायत है कि हज़रत उमर ने इब्ने अब्बास से कहा कि तुम اِذَاجَاءَنَصْرُاللّٰهِوَالْفَتْحُ के बारे में क्या कहते हो । उन्होंने कहा कि इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बर दी गई है कि जब अल्लाह की मदद और विजय आ गई तो आप का वक्त पूरा हुआ अत: आप अल्लाह की हम्द (वन्दना, प्रशंसा) तस्बीह (गुनगान) और इस्तिग़्फ़ार (क्षमायाचना) करें। हज़रत उमर ने फ़रमाया मैं भी यही समझता हूँ। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर) मालूम हुआ कि यह सूरह उस समय नाज़िल हुई जब कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वफ़ात का वक़्त बिलकुल क़रीब आ गया था ।

केन्द्रीय विषय :- अल्लाह की मदद और दीन के प्रभुत्व पाने पर अल्लाह के दरबार में उस की कृपा को स्वीकारना अर्थात् हम्द (प्रशंसा) तसबीह (गुनगान और इस्तिग़्फ़ार (क्षमायाचना) करना ।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में अल्लाह की मदद और उन की तरफ़ से प्रकट होने वाली फ़तेह (विजय) फ़त्हे मक्का का ज़िक्र है।

आयत २ में लोगों के सामूहिक रुप में इस्लाम की छत्र छाया में आने का ज़िक्र है।

आयत ३ में इस फ़ज़्ल (दया) के हासिल होने पर ख़ुदा की और अधिक हम्द, तस्बीह और इस्तिग़्फ़ार करने की हिदायत की गयी है।

११०. सूरह अन्-नस्र

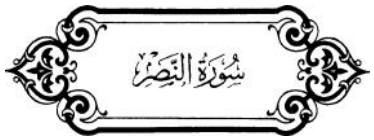

अनुवाद आयतें : ३

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **जब अल्लाह की सहायता और विजय आ गयी, [1]**

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١

2. **और तुम ने देख लिया कि लोग अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं।[2]**

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢

3. **तो तस्बीह (पाकी बयान) करो अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ।[3] और उस से मग़फ़िरत (क्षमा) माँगो।[4] निस्संदेह वह बड़ा ही तौबा क़ुबूल करने वाला है।[5]**

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

1. नस्र (मदद) से मुराद यह सहायता है जो हक़ (सत्य) को प्रभुत्व मिल जाने की सूरत में जाहिर हुआ अल्लाह तआला ने अपने रसूलों से वादा फ़रमाया है कि वह ज़रूर उन के विरोधियों के मुक़ाबले में उन की मदद फ़रमायेगा :

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ۔ (المؤمن۔۵۱)

"निस्संदेह हम अपने रसूलों की और ईमान लाने वालों की इस दुनिया में भी मदद करते हैं और उस दिन भी करेंगे जब कि गवाह खड़े होंगे ।" (अल्-मोमिन-५१)

यह मदद पूरी पूरी उस मसय प्रकट होती है जब कि हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) की कशमकश आख़री मरहले में प्रवेश कर जाती है और यही वह मदद है जिस का इन्तेज़ार रसूल के साथियों को होता है।

مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ۔ (البقرہ ۔۲۱۴)

"कब आएगी अल्लाह की मदद ? यक़ीन जानो ! अल्लाह की मदद क़रीब है।"

और इसी मदद को सूरह फ़तेह में نَصْرًا عَزِيْزًا (ज़बरदस्त मदद) से ताबीर (अलंकृत) किया गया है।

और फ़तेह (विजय) से मुराद फ़तेह मक्का (मक्का विजय) है जो एक निर्णायक विजय थी और जिस के बाद मुश्रिकीन का ज़ोर टूट गया और अरब में इस्लाम को पूर्ण विजय एवं प्रभुत्व प्राप्त हुआ।

मक्का विजय की घटना रमज़ान सन ८ हिजरी (जनवरी सन ६३० ई.) की है जब कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने दस हज़ार जाँबाज़ साथियों को ले कर मदीने से रवाना हो गए थे। मक्के में बिना किसी बड़े प्रतिरोध के दाख़िल हुए और एलान फ़रमाया कि जो व्यक्ति भी हथियार डाल देगा उस को सुरक्षा दी जायेगी । जो लोग इस्लाम दुशमनी में आगे आगे थे उन को भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आम तौर से माफ़ कर दिया ।

इस मौक़े पर कितने ही लोगों ने आप की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम स्वीकार किया । ख़ाना-ए-काबा जो एक बुतों को तोड़ने वाले रसूल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम द्वारा निर्मित था, उस में क़ुरैश ने ३६० बुत बिठाये थे । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस गन्दगी से खाना-ए-काबा को पाक किया । बुतों को लकड़ी से गिराते जाते और यह आयत पढ़ते जाते :

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا۔ (بنی اسرائیل : ۸۱)

"हक़ आ गया और बातिल (असत्य) मिट गया, और बातिल मिटने ही के लिए था । (बनी इस्राईल - ८१)

इन बुतों में सब से बड़ा बुत हुबल था । बुत परस्त युद्ध के अवसर पर उसी की जय पुकारते थे लेकिन आज वह ख़ुद ढेर हो गया था । हार का मुँह देखने वालों की वह क्या मदद करता । इस के बाद आप ने इस विजय पर शुक्राने की नमाज़ अदा की और तकबीर की आवाज़ बुलन्द करते हुए यह हक़ीक़त भरा ऐलान फ़रमाया:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ۔ (ابوداؤد کتاب الدیات)

''अल्लाह जिस के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, उस ने अपना वादा सच्चा किया अपने बन्दे की मदद की और तमाम जत्थों को अकेले पराजय दी ।'' (अबू दाऊद, किताबुद्दियात)

स्पष्ट रहे कि अरबी में اِذَا (इज़ा) आम तौर से मुस्तक़बिल (भविष्य) के लिए आता है लेकिन कभी कभी माज़ी (भूत Past) के लिए भी आता है और यहाँ अनुमानत: एवं हज़रत इब्ने अब्बास का उक्त बयान इस बात पर दलालत (तर्क) करता है कि यह माज़ी (Past भूतकाल) के अर्थ में है। इस लिए हम ने आयत का अनुवाद ''जब अल्लाह की सहायता और विजय आ गयी'' किया है। जब कि आम तौर पर इस का अनुवाद ''जब अल्लाह की सहायता और उस की विजय आये'' या ''आयेगी'' किया जाता है ।

2. मक्का विजय का असर क़ुरैश तक सीमित नहीं रहा बल्कि अरब के विभिन्न क्षेत्रों में जो क़बीले आबाद थे उन पर उस के भारी प्रभाव पड़े। इन क़बीलों के नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) वफ़्द (मंडल Delegation) की शकल में मदीना आना शुरू हुए और सन ९ हिजरी और सन १० हिजरी में कई प्रतिनिधि मंडलों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़ुबूल करने का एलान कर दिया और सामूहिक रुप से लोग इस्लाम में दाखिल होने लगे । जिस दीन के लिए क़ुरैश इक्कीस साल तक रुकावटें पैदा करते रहे यह दो साल के अन्दर अरब के कोने कोने में पहुँच गया । यहाँ तक कि उस पवित्र धरती पर कोई मुश्रिक बाक़ी न रहा । अर्थात् मक्का विजय इस महान क्रान्ति की भूमिका थी ।

3. अर्थात् दीन का प्रभुत्व और लोगों के इस्लाम क़ुबूल करने का यह आत्मविभोर दृश्य जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने देखा अल्लाह की मदद का नतीजा है। इस लिए इस फ़ज़्ल (कृपा) के हासिल हो जाने पर ऐ नबी आप को अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और चूँकि आप की नियुक्ति का उद्देश्य पूरा हो गया है इस लिए आप को ख़ुदा की हम्द और तस्बीह में अधिक मग्न हो जाना चाहिए ।

इस से यह महत्वपूर्ण सच्चाई स्पष्ट हो जाती है कि ईमान वालों का वास्तविक लक्ष्य ख़ुदा को पाना है और इस के लिए उसे अपनी आख़री साँस तक संघर्ष करना है । दीन को ग़ालिब करने (प्रभुत्वता दिलाने) की जद्दोजहद के मरहले में भी और इस के पूर्ण होने के बाद भी ।

4. अर्थात् तुम्हें ख़ुदा से यह दुआ करना चाहिए कि इस ख़िदमत को अन्जाम देने में जो कोताहियाँ हुई हों और ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में जो भूल चूक हुई हो उसे वह क्षमा करे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह हिदायत दे कर ईमान वालों की रहनुमाई इस बात की तरफ़ की गई है कि वह किसी भी ख़िदमत के अन्जाम पाने या किसी विजय एवं सफ़लता के प्राप्त हो जाने पर दुनियादार लोगों की तरह इतराने और गर्व करने के बजाये उसे अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) और उस की तौफ़ीक़ का नतीजा समझे और उस की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पाकी बयान) करें कि प्रशंसा योग्य वही है एवं इस एहसास के साथ कि मालूम नहीं कि इस ख़िदमत के अन्जाम दे देने में क्या क्या कोताहियाँ एवं त्रुटियाँ हुई होंगी, अपने रब से अत्यन्त विनम्रता के साथ क्षमायाचना करें। ऐसे अवसर पर ईमान वालों का रवैया यही होना चाहिए और इन्हें उन तौर तरीक़ों से बचना चाहिए जो उन के अन्दर एहसासे बन्दगी (दासता बोध) के बजाए एहसासे बरतरी (अंह का आभास) पैदा करने वाले हों ।

ऐसी महान विजय और ऐसा ज़बरदस्त ग़लबा (प्रभुत्व) हासिल हो जाने के बाद क़ुर्आन ने जश्न मनाने का हुक्म नहीं दिया बल्कि अल्लाह की बारगाह में शुक्र और बन्दगी का नज़राना पेश करने का हुक्म दिया जो इस बात का खुला सबूत है कि यह सर्वोच्च शिक्षा अल्लाह की वह्य है

और इस को पेश करने वाली हस्ती पैग़म्बरे ख़ुदा ही की हो सकती है।

हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिन में सौ बार इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) पढ़ा करते थे । (मुस्लिम किताबुज़्ज़िक्र) एवं बुखारी की हदीस में है कि इस सूरह के नाज़िल होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रुकू (Bending) और सजदों (Prostrations) में अधिकता से यह पढ़ा करते थे ।

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَ بِحَمْدِکَ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ۔ (بخاری کتاب التفسیر)

''पाकी तेरे ही लिए है ऐ अल्लाह हमारे रब । मैं तेरी प्रशंसा के साथ तेरी पाकी बयान करता हूँ, ख़ुदाया ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा (अर्थात मुझे क्षमा कर)''(बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

5. अल्लाह तआला की सिफ़त तौव्वाब (बड़ा ही तौबा क़ुबूल करने वाला) बयान हुई है जो मन्फ़ी (Nagative) और मुस्बत (Positive) दोनों पहलुओं को लिए हुए है। मन्फ़ी (नकारात्मक या Nagative) पहलू के लिहाज़ से इस का मतलब यह है कि अगर बन्दा उस से माफ़ी माँगे और तौबा करे तो वह उस को माफ़ कर देता है और उस की तौबा क़ुबूल कर लेता है और मुस्बत (सकारात्मक या Positive) पहलू के लिहाज़ से इस का मतलब यह है कि बन्दा जब उस की ओर पलटता और झुकता है तो वह बन्दे की तरफ़ अपनी मेहरबानियों के साथ ध्यान देता है। यहाँ इस सिफ़त का ज़िक्र इस मफ़हूम (Sense) में हैं कि तुम उम्मीद रखो कि वह न केवल तुम्हारी क्षमा की प्रार्थना स्वीकार करेगा बल्कि तुम पर अपनी कृपा दृष्टि भी करेगा और अपनी मेहरबानियों के साथ तुम्हारी ओर ध्यान देता रहेगा ।

सूरह
अल्-लहब्

१११. अल्-लहब्

नाम : आयत ३ में लहब् का लफ़्ज़ आया है जिस का अर्थ ''शोला'' के हैं । इस मुनासिबत से इस सूरह का नाम ''अल-लहब्'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून हे अन्दाज़ा होता है कि मक्का के आख़िरी दौर में नाज़िल हुई होगी । क्यों कि इस में अबू लहब् का नाम ले कर उस का बुरा अन्जाम बयान किया गया है और अम्बिया अलैहिस्सलाम किसी का बुरा अन्जाम उस पर हुज्जत (दलील) क़ायम करने के बाद ही बयान करते हैं। इस लिए यह सूरह, सूरह काफ़िरून के बाद ही नाज़िल हुई होंगी जिस में काफ़िरों से बरी रहने का एलान किया गया है।

केन्द्रीय विषय :- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बदतरीन दुश्मन के बुरे अन्जाम से लोगों को आगाह करना है ताकि क़ियामत तक पैदा होने वाले रसूल के दुश्मन और इस्लाम के विरोधी इस सूरह के आइने में अपना चेहरा देख लें ।

आयतों की तरतीब :- आयत १ से ३ में रसूल के दुश्मन अबू लहब् का भयावह अन्जाम बयान किया गया है ।

आयत ४ और ५ में उस की बीवी के इबरतनाक अन्जाम का दृश्य पेश किया गया है जो इस दुशमनी में अपने शौहर (पति) के सुर में सुर मिलाती थी ।

१११. सूरह अल्-लहब्

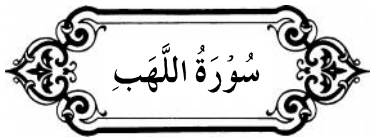

अनुवाद आयतें :५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **टूट गये अबू लहब [1] के दोनों हाथ [2] और वह तबाह हो गया।[3]**

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١

2. **उस का माल और उस की कमाई उस के कुछ काम न आयी।[4]**

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢

3. **वह बहुत जल्द शोलों से भड़कती आग में दाखिल होगा।[5]**

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣

4. **और उस की बीवी भी जो ईंधन उठाए हुए होगी।[6]**

وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤

5. **उस की गर्दन में मज़बूत रस्सी होगी।[7]**

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

1. अबू लहब् कुन्नियत (उपाधि) है। असल नाम अब्दुलउज़्ज़ा था जिस का अर्थ है उज़्ज़ा देवी का बन्दा । चूँकि यह मुश्रिकाना नाम था इस लिए क़ुर्आन ने इस का ज़िक्र इस के घृणित नाम से करने के बजाय इस की उपाधि (कुन्नियत) से किया । अबू लहब क़ुरैश के ख़ानदान, बनी हाशिम का सदस्य, अब्दुल मुत्तलिब का बेटा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चचा था ।

जिन कारणों से उस की ज़िन्दगी में उस की क़िस्मत का फैसला चुकाया गया और उस के अन्जाम से सूचित करने के लिए एक पूरी सूरह नाज़िल की गयी वह संक्षेप में नीचे लिखे जा रहे हैं।

(A) अबू लहब् खाना-ए-काबा का संचालक था और ख़ुदा के घर को बुतों का ठिकाना बनाए रखने पर अड़ा था एवं बुत परस्ती में उस की तल्लीनता उस का सब से बड़ा और संगीन जुर्म था।

(B) जो सम्मान और पद उस को प्राप्त था उस ने उस के अन्दर घमंड और अहं पैदा कर दिया था और सरकशी (उद्दंडता) और बग़ावत का रवैया अपना कर के वह फ़िरऔन की जगह पर जा बैठा था ।

(C) इस्लाम की दअवत के विरोध का आरम्भ इसी ने किया था इस लिए कुफ़्र का नेतृत्व इस का मुक़द्दर बन गया ।

(D) वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कट्टर दुश्मन था और इस दुश्मनी में उस ने तमाम अख़लाक़ी हदों को फ़ाँद डाला था यहाँ तक कि ख़ून के रिश्ते को काटने में भी वह सब से आगे निकल गया । इस की खुली मिसाल उस का वह रवैया है जो उस ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामाजिक और आर्थिक बाइकाट करने के सिलसिले में अपनाया । क़ुरैश के बाइकाट करने पर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अबीतालिब की घाटी में पनाह ली तो अबू लहब् ने काफ़िर क़ुरैश का साथ दिया और उसे अपने भतीजे पर उस वक्त भी दया नहीं आयी जब कि वह भूख के दिन गुज़ार रहा था । (इब्ने हश्शाम भाग १ पृष्ठ ३७२)

(E) वह जीवन भर इस्लाम की राह का काँटा बन रहा और तौहीद (एकेश्वरवाद) की मुख़ालफ़त में सब से ज़्यादा सक्रिय रहा । अत: जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के आम क़बीलों के सामने अपनी दअवत पेश की तो अबू लहब इस से लोगों को घृणा करने पर उकसाता रहा । रबिआ बिन इबाद का बयान है कि मैं ने ज़ुलमजाज़ के बाज़ार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि आप कह रहे हैं, लोगों ! ''ला इलाहा इल्लल्लाह''(अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) कहो कामयाबी पाओगे ।'' और आप के पीछे एक व्यक्ति कहता जाता था कि यह व्यक्ति झूठा है इस की बात न मानों । मैं ने लोगों से पूछा यह कौन है? उन्हों ने कहा यह इन का चचा अबू लहब् है । (तफ़सीर इब्ने कसीर भाग १ पृष्ठ ५१४ अहमद के हवाले से)

(F)इस को अपने ख़ुदाओं पर बड़ा नाज़ था । अत: इस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाइकाट में क़ुरैश का साथ देते हुए हिन्द बिन उतबा से कहा था ''जिस व्यक्ति ने लात और उज़्ज़ा (दो देवियों के नाम) को छोड़ दिया है। उस को छोड़ कर क्या मैं ने इन ख़ुदाओं की मदद नहीं की? हिन्द ने कहा'' हाँ और अल्लाह तुझे भला बदला दे।''(सीरत इब्ने हिशाम भग १ पृष्ट ३७२)

अबू लहब के अन्जाम की यह ख़बर वास्तव में इस बात का इज़्हार है कि अगर पैग़म्बर का चचा भी कुफ़्र करे तो वह ख़ुदा की पकड़ से बच नहीं सकता उस के इन्साफ़ का क़ानून निष्पक्ष और वंश एवं कुल के प्रभाव से उच्चतर है।

2. हाथ टूटने से मुराद शरीर के हाथों का तबाह हो जाना भी है जिन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालफ़त में वह उठाया करता था, और उस के ज़ोर का टूट जाना और उस के वैभव का समाप्त हो जाना भी । उस ने अल्लाह के कलिमे को नीचा करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर

लगाया था मगर वह अपने उद्देश्य में बुरी तरह नाकाम रहा । बद्र की जंग में उस का ज़ोर टूट गया। उस के हिमायती और सहायक बुरी तरह मारे गये और उस की शान और शौकत का ख़ात्मा हो गया इस तरह वह पेशीयनगोई पूरी हुई जो इस आयत में की गई थी । इब्ने अब्बास की रिवायत है कि जब आयत

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَکَ الْاَقْرَبِيْنَ

(अपने निकटतम सम्बन्धितयों को डराओ) (शुअरा-२१४) नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा **یاصباحاه**(सुबह के खतरे से सावधान !) लोगों ने कहा यह कौन पुकार रहा है?फिर वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास जमा हो गये ।आप ने फ़रमाया अगर मैं तुम्हें यह बताऊँ कि इस पहाड़ के पीछे से एक लश्कर तुम पर हमला करने के लिए आ रहा है तो क्या तुम मेरी बात सच मानोगे? लोगों ने कहा हम ने आप को कभी झूठ बोलते नहीं देखा ।आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तो देखो मैं तुम्हें आने वाले बड़े प्रकोप से सावधान करता हूँ । यह सुन कर अबू लहब् ने कहा تَبًّالَکَ مَاجَمَعْتَنَا اِلَّا لِهٰذَا (तबाह हो जाए तू क्या तूने हमें इसी लिए इकट्ठा किया था?) इस पर تَبَّتْ يَدَا اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ''टूट गए अबू लहब् के दोनों हाथ और और वह तबाह हुआ'' नाज़िल हुई। (बुख़ारी किताबुत्तफ़्सीर)

इस का मतलब यह नहीं है कि सूरह लहब् उसी वक्त नाज़िल हुई क्यों कि जैसा कि इस से पहले बताया जा चुका है, किसी के हक़ में अज़ाब का फ़ैसला उसी वक्त सुनाया जाता है जब कि उसे आख़िरी हद तक मोहलत दी जा चुकी हो । और इस के बाद वह अपने कुफ्र और सरकशी पर अड़ा रहे बल्कि इस का मतलब यह है कि अबू लहब् की यही वह हरकतें थी जिन के कारण आख़िर कार वह प्रकोप का भोगी क़रार पाया । और यह सूरह उस की हरकतों का ठीक ठीक जवाब है।

3. बद्र की जंग में उन के पक्ष की पराजय का उसे बहुत सदमा हुआ और इस के बाद वह खुद भी तबाह हुआ । अत: उस की मौत तबाही की सूरत में हुई और आख़िरत का दर्दनाक अज़ाब भी उस के लिए निश्चित हुआ । बद्र की जंग में वह शरीक नहीं हुआ और इस जंग को ख़त्म हुए अभी एक सप्ताह ही हुआ था कि चेचक के रोग से पीड़ित होने के कारण उस की मृत्यु हो गई और रिवायत से मालूम होता है कि उस की लाश तीन दिन तक उस के घर में पड़ी सड़ती रही मगर कोई उस को ठिकाने लगाने वाला न था क्यों कि क़ुरैश चेचक के रोग को छूत का रोग समझते थे। आख़िरकार उस के लड़कों ने उस की लाश एक दीवार की आड़ में इस तरह दफ़न कर दी कि दूर ही से उस की क़ब्र पर पत्थर फेंकते रहे । (अल्-बिदाय: वन्निहाय: भाग ३ पृष्ठ ३०९)

आज अबू लहब का नाम लेने वाला कोई न रहा अलबत्ता उस पर लानत भेजने के लिए एक पूरी उम्मत मौजूद है जो अपनी नमाज़ों में सूरह लहब् पढ़ कर इस रसूल के दुश्मन पर लानत भेजती रहती है। इस तरह क़ुर्आन की यह पेशीयनगोई (भविष्यवाणी) कि रसूल को ग़ल्बा (प्रभुत्वता) हासिल होगा और रसूल का दुश्मन तबाह होगा, शब्द शब्द पूरी हुई । क़ुर्आन की सत्यता का यह ऐसा सबूत है जो क़ियामत तक बाक़ी रहेगा ।

4. अर्थात् न उस की दौलत ख़ुदा की पकड़ से उसे बचा सकी जिस पर उसे नाज़ (गर्व) था और न वह कर्म ही उस के कुछ काम आ सके जो झूठी धार्मिकता के आधार पर उस ने अन्जाम दिये थे।

क़ुर्आन में आमाल (कर्मों) के लिए ''कसब'' (कमाई) का लफ़्ज़ अधिकता के साथ प्रयोग हुआ है। यहाँ भी यह इसी अर्थ में है।

5. यह इस का आख़िरत (परलोक) में होने वाला अन्जाम है जो क़ियामत के दिन उस के सामने आयेगा ।

अबू लहब् और نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ (भड़कती आग) में बड़ी मुनासिबत (सम्बन्ध) पैदा हो गई है। उस के दिल में द्वैष और इर्ष्या की जो आग थी वह क़ियामत के दिन भड़क उठेगी । जज़ा (बदला) वास्तव में इन्सान के कर्मों ही का फ़ल है।

अबू लहब् की बीवी का नाम उम्मे जमील था । यह अबू सुफ़ियान की बहन थी और चूँकि इस्लाम दुश्मनी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से द्वैष और ईर्ष्या में वह अपने पति की सहायक और विरोधी कार्यकर्मों में उस की शरीक (Partner) थी इस लिए उस का अन्जाम भी बयान फ़रमाया ।

वह जहन्नम में अपने पति के लिए ईंधन ढोने का काम करेगी क्यों कि उस ने दुश्मनी की आग भड़काई थी ।

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ

(ईधन उठाने वाली) का मतलब सईद बिन ज़ुबैर ने गुनाहों का बोझ उठाने वाली बयान किया है। (फ़त्हुलक़दीर लिश्शौकानी भाग ५ पृष्ट ५१२) क़ियामत के दिन मुजरिमों का जो हाल होगा वह क़ुर्आन में इस तरह बयान किया गया है।

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ

''वह अपने बोझ अपनी पीठों पर लादे हुए होंगे'' (अल्- अन्आम-३१)

7. अर्थात् जहन्नम में उस की गर्दन में मज़बूत रस्सी पड़ी हुई होगी । गोया उस का हाल उस दासी जैसा होगा जो सर पर लकड़ियाँ (ईंधन) उठाये हुए हो और जिस की गर्दन में बटी हुई रस्सी पड़ी हुई हो । क़ियामत के दिन उसे अपमान का जो मज़ा चखना होगा उस की यह तस्वीर है।

सईद बिन मुसैय्यब कहते हैं कि उस की गर्दन में जवाहरात का क़ीमती हार था और वह कहा करती थी कि लात और उज़्ज़ा (बुतो के नाम) की क़सम मैं इसे मुहम्मद की दुश्मनी में ख़र्च करूँगी, इस लिए क़ियामत के दिन उस के शरीर पर यह हार प्रकोप का कारण होगा । (फ़त्हुलक़दीर लिश्शौकानी भाग ५ पृष्ठ ५१३ आयत का मतलब यह है कि जिस हार पर उसे घमंड है और जिस को वह रसूल के ख़िलाफ़ किये जाने वाले कार्यक्रमों में ख़र्च करना चाहती है वह क़ियामत के दिन वास्तव में ''उस के गले का हार'' साबित होगा और उस का यह ऐश का सामान उस की रूसवाई का कारण होगा ।

अबू लहब की बीवी के इस अन्जाम में औरतों के लिए भी इबरत (सबक़) है और मर्दों के लिए भी । औरतों के लिए यह इबरत कि एक औरत कुफ्र और सरकशी का रवैया अपना कर कितने बुरे अन्जाम को पहुँच जाती है और मर्दों के लिए यह इबरत कि औरतें किस तरह गुनाह के कामों में मर्दों की सहायक बन कर उन को तबाही की तरफ़ धकेलती रहती हैं।

सूरह अल्-इख़्लास

११२. अल्-इख़्लास

नाम : इस सूरह का एक नाम तो पहली आयत ''क़ुल हुवल्लाहु अहद'' قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ही को क़रार दिया गया है और दूसरा नाम उस के मज़मून की मुनासिबत से ''अल्-इख़्लास'' है क्यों कि यह ख़ालिस तौहीद के बयान पर आधारित है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून एवं शैली से अन्दाज़ा होता है कि यह दअवत के आरम्भिक दौर में नाज़िल हुई होगी क्यों कि इस दौर में छोटे छोटे वाक्यों में दीन की बुनियादी बातों को पेश किया गया है और उन की विस्तृत व्याख्या बाद की सूरतों में की गई है।

आरम्भिक दौर में नाज़िल होने का एक अनुमान हज़रत बिलाल (रज़िअल्लाहु अन्हु) की यह घटना है कि जब उन्हें उमैय्या बिन ख़ल्फ़ कड़ी धूप में लिटा कर उन के सीने पर बड़ा पत्थर रख देता और कहता कि इसी हाल में तुझे मरना होगा सिवाय इस के कि तू मुहम्मद का इन्कार कर के लात और उज़्ज़ा को पूजने लगे । तो इस के जवाब में वह **احد احد**।अहद अहद कहते (अल्-बिदाय: वन्निहाय: भाग ३ पृष्ट ५८) मालूम होता है कि उस वक्त सूरह इख़्लास नाज़िल हो चुकी थी और अहद का लफ़्ज़ इसी सूरह का था जो ज़ुबान पर चढ़ गया था ।

केन्द्रीय विषय :- तौहीद है और ख़ास तौर से इस का यह पहलू कि अल्लाह तआला की ज़ात (हस्ती) का सही तसव्वुर पेश करना ताकि मुश्रिकाना तसव्वुरात की जड़ कट जाए ।

आयतों की तरतीब :- आयत १ और २ में मुस्बत (Positive) पहलू से अल्लाह तआला की सिफ़ते बयान हुई हैं और आयत ३ और ४ में मन्फ़ी (Nagative) पहलू से ताकि क़ौमों और मिल्लतों में जिन राहों से शिर्क दाख़िल हुआ है वह बन्द हो जाये ।

महत्व और महानता :- सूरह ''इख़्लास'' वास्तव में क़ुर्आन की आख़िरी सूरह है क्यों कि इस के बाद की दो सूरह इसी तौहीद के तसव्वुर से उभरी हैं और इस तौहीद के तसव्वुर एवं पूरे क़ुर्आन की हिफ़ाज़त का सामान हैं। क़ुर्आन की शुरूआत तौहीद से हुई थी और ख़ात्मा भी तौहीद पर ही हुआ है। इस से तौहीद का महत्व एवं इस सूरह की महानता अच्छी तरह मालूम हो जाती है। अल्लामा फ़राही फ़रमाते हैं।''यद्यपि यह सूरह अपने ज़ाहिरी (वाह्य) अन्दाज़ के लिहाज़ से तमाम सूरतों में ऐसी छोटी है जैसी तमाम बदन में आँख की ''पुतली'' मगर हिदायत का सारा जगत इसी से रौशन (ज्योतिर्मय) नज़र आता है। (मजमूआ तफ़ासीर फ़राही पृष्ठ ५२५)

सूरह इख़्लास की फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) सही हदीसों से साबित है । बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :-

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ اِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْاٰنِ

''क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरी जान है यह सूरह (कुलहुवल्लाहु अहद) क़ुर्आन के एक तिहाई हिस्से के बराबर है।'' (बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल क़ुर्आन)

इस की यह फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) क़ुर्आन के अर्थ के लिहाज़ से है क्यों कि क़ुर्आन में तौहीद का मज़मून इस अधिकता से बयान हुआ है कि गोया उस का एक तिहाई हिस्सा इसी पर आधारित है और चूँकि सूरह इख़लास में इस अहम और फैले हुए मज़मून को चार छोटे वाक्यों में इस तरह समेट दिया गया है। जैसे दरया को कूज़े में (साग़र को गागर में) बन्द कर दिया गया हो। इस लिए इसे एक तिहाई के बराबर क़रार दिया गया है। रही इस की तिलावत की बरकतें तो इस से वही लोग लाभन्वित हो सकते हैं जो ख़ालिस तौहीद पर ईमान रखते हो और अपने अक़ीदे में शिर्क का कोई अंश न आने दें।

११२. सूरह इख़्लास

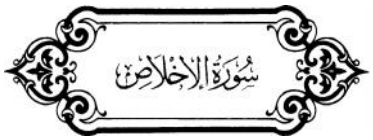

अनुवाद आयतें :४

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **कहो [1] वह [2] अल्लाह यकता है।[3]**

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾

2. **अल्लाह वह उच्चतर हस्ती है जो सब का मर्जअ (ठिकाना) और मल्जा (पनाहगाह) है।[4]**

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾

3. **न उस की कोई औलाद है [5] और न वह किसी की औलाद। [6]**

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾

4. **और न कोई उस के बराबर का है ।[7]**

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ﴿۴﴾

1. सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप के वास्ते से हर व्यक्ति से जो क़ुर्आन पर ईमान रखता हो । قُلْ क़ुल'' कहने से तात्पर्य इज़्हार और एलान है।

2. आयत में सर्वनाम ''हुव هُوَ '' (वह) अरबी व्याकरण के अनुसार ''ज़मीरे शान'' है जो किसी बात के महत्व को स्पष्ट करने और उस पर ध्यान को केन्द्रित कराने के लिए वाक्य के आरम्भ में आता है और इस से कलाम में सरलता के साथ ही सुन्दरता पैदा हो जाती है। उदाहरण के तौर पर जैसे कहते हैं هُوالزمان غدار (वह ज़माना है जो बेवफ़ाई करता है) आयत قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (कहो वह अल्लाह यकता है) में ''हुव هُوَ '' (वह) की ज़मीर (Pronoun) बयान के महत्व को ज़ाहिर कर रही है कि इसे कान लगा कर सुनो और उस पर अपने ध्यान को केन्द्रीत करो ।

3. ''अल्लाह यकता है'' अर्थात् वह अपनी ज़ात (अस्तित्व) और सिफ़ात (गुणों) में बिलकुल अकेला और बेजोड़ है । वाहिद (एक) के मुक़ाबले में अहद (यकता) का लफ़्ज़ इस बात की पुष्टि करता है कि उस की वहदत (एकता) में कसरत (अधिकता) का कोई पहलू नहीं है और उस की वहदानियत (एक मात्रता) ऐसी संपूर्ण है कि न उस का विश्लेषण किया जा सकता है और न विभाजित । उस का अस्तित्व स्वयं स्थिर और मख़्लूकों (सृष्टियों) से बिलकुल अलग है। ख़ुदाओं की कोई नस्ल नहीं बल्कि वह एक ख़ुदा है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा ।

इन्सान की प्रकृति और उस का स्वभाव ख़ुदा के इस तसव्वुर से भिज्ञ (वाक़िफ़) है। उस की अंतरात्मा की पुकार भी यही है और उस की बुद्धि भी इसी की गवाही देती है एवं कायनात का ज़र्रा (कण कण) और इस की पूरी व्यवस्था इसी पर दलालत (तर्क) करती है।

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَهٗ آيَةٌ تَدُلُّ عَلٰى اَنَّهٗ وَاحِد

''हर चीज़ में उस की एक निशानी है जो उस की वहदत पर दलालत करती है।''

उस का ''अहद'' احد (यकता) होना कायनात की सब से बड़ी, सब से अधिक उभरी हुई और सब से ज़्यादा बुनियादी हक़ीक़त है । इस हक़ीक़त को नज़र अन्दाज़ कर के जिन लोगों ने ख़ुदा के बारे में सोचा उन को ऐसी ज़बरदस्त ठोकर लगी कि फिर संभल न सके । इस सिलसिले की बुनियादी ग़लती ख़ुदा (सृष्टा) को मख़्लूक़ (सृष्टि) पर कल्पना करना है। जब कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि ख़ालिक़ (सृष्टा) और मख़्लूक़ (सृष्टि) में किसी पहलू से भी समानता एवं मेल संभव नहीं है और न हमारी सीमित एवं तुच्छ बुद्धि इस काबिल हो सकती है कि उस की ज़ात में ग़ौर और चिन्तन करने लगे इस लिए उस के यकता और बेजोड़ होने के सीधे सादे तसव्वुर को छोड़ कर जितने फ़लसफ़े भी धर्म के ठेकादारों ने ख़ुदा के अस्तित्व के बारे में ईजाद किये हैं वह सब बेहक़ीक़त और एकदम ग़लत करार पाते हैं । ज़ाहिर है जब पहली ईंट ही टेढ़ी रखी गयी तो कितनी ही बुलन्द इमारत क्यों न तामीर की जाए वह टेढ़ी ही होगी ।

रहे भौतिकवादी (Matterialist) लोग जो ख़ुदा के वजूद ही को स्वीकार नहीं करते तो उन का यह इन्कार मानव प्रकृति एवं स्वभाव के विरुद्ध एलाने-जंग है और जो व्यक्ति अपनी प्रकृति एवं अपने स्वभाव ही से जंग करने पर आमादा हो उस को कोई बात भी दलील से मनवाई नहीं जा सकती । इन्सान अपनी आँखे फोड़ देने के बाद किसी भी चीज़ के वजूद से इन्कार कर सकता है। ऐसे व्यक्ति को कोई चीज़ भी नहीं दिखाई जा सकती ।

जहाँ तक नबियों की हिदायत का सम्बन्ध है, बिना किसी अपवाद के तमाम पैग़म्बरों ने तौहीद ही की तालीम दी थी । अत: बाइबिल में परिवर्तनों के बावजूद तौहीद का तसव्वुर बुनियादी तौर से मौजूद है । मिसाल के तौर पर तौरात में हैं ।

''हे इस्राईल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।'' (व्यवस्थाविवरण ६:४)

''जो कोई यहोवा को छोड़ किसी और देवता के लिए बलि करे वह सत्यानाश किया जाए।'' (निर्गमन २२:२०)

और ज़बूर (भजन संहिता) में है।

''केवल तू ही परमेश्वर है (भजन संहिता ८६,१०)

लेकिन नबियों की इस बुनियादी तालीम से क़ौमों और मिल्लतों ने मुँह मोड़ा और गुमराही में पड़ गयी । इस मुँह मोड़ने और अपने मन माने रास्ते पर चलने की एक मिसाल तो ईसाई धर्म का त्रीश्वरवाद (तस्लीस का अक़ीदा या Trinity) है जो बाप, बेटा और रूहुलक़ुदुस (वह पवित्र रूह जो बीबी मरयम में फूँकी गई) तीन ख़ुदाओं के संग्रह का नाम है और इस की दूसरी मिसाल हमारे मुल्क के बुत परस्तों का **त्रिमूर्ति** (Trimurti) का अक़ीदा है जो तीन देवताओं ब्रहमा, विष्णु, महेश के संग्रह का नाम है। इन का धार्मिक चिन्ह **ॐ (Om)** तीन ख़ुदाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

"In later times, Om is the mystic name for the Hindu triad, and represents the union of three gods, viz. a (Vishnu), u (Siva). m (Brahma)."-(A Sanskrit -English Dictionary by Sir Monier Oxford, Page 235).

और वेदों का परिचय कराते हुए प्रोफ़ेसर सी. के. राजा इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं कि भारत में हम तौहीद (एकेश्वरवाद) के तसव्वुर से हमेशा अनभिज्ञ (Unknown) रहे हैं। वह लिखते हैं।

"The difficulty is that in India we never had a Monotheism till very recent times. If one reads the Mahabharata, it will be found that every divinity is in his turn a Supreme God head. This is exactly what is found in the Vedas too……and there never came a stage when there was only one God."

-(The Quintessence of the Rigveda page 11).

4. Text (मूल) में लफ़्ज़ ''अस्समद'' इस्तेमाल हुआ है जिस के अर्थ में बड़ी व्यापकता और बड़ा फैलाव है इस लिए किसी एक लफ़्ज़ में इस का अनुवाद कर देना मुशकिल है।

समद का शाब्दिक अर्थ है ''वह जिस का इरादा किया जाए। और यह उस सरदार के लिए बोला जाता है जिस से ऊपर कोई दूसरी हस्ती न हो और जिस की तरफ़ लोग अपनी ज़रुरतों और मामलात में पेशी करते हों । इसी तरह समद उस चट्टान को भी कहा जाता है जिस की दुश्मन के हमले के समय पनाह ली जाए एवं उस ठोस चीज़ को भी कहते हैं जिस में खोखलापन न हो।

इन शाब्दिक अर्थों को सामने रखते हुए आयत में अल्लाह तआला ते लिए ''अस्समद'' की जो सिफ़त बयान हुई है उस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला सर्वोपरि है। उस की सरदारी, सल्तनत और सर्वश्रेष्ठता संपूर्ण है, वही लक्ष्य है, वही है जिस के पास पलट कर जाना है, वही पनाहगाह है, वह बेनियाज़ (स्वच्छंद) है। उसे किसी चीज़ की हाजत नहीं जब कि सब उस के मुहताज हैं और वह सब की हाजतों को पूरा करने वाला है। वह पनाह की चट्टान है, जैसा कि ज़बूर (भजन संहिता) में कहा गया है।

''यहोवा मेरी चट्टान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ाने वाला है।'' (भजन संहिता १८:२)

''हे यहोवा मैं तेरा शरणगत हूँ।'' (भजन संहित ७१:१)

उस के समदियत के भावार्थ में यह बात भी शामिल है कि न तो कोई चीज़ उस के अन्दर

दाख़िल होती है और न कोई चीज़ उस के अन्दर से ख़ारिज होती है इस लिए उस के औलाद पैदा होने का सवाल ही पैदा नहीं होता और वह इस बात से पाक है कि इन्सान उस में समा जाए जैसा कि हमारे देश के मुश्रिकों की आस्था है।

5. यहाँ फिर इन्सान ने ठोकर खायी कि ख़ुदा को अपने जैसा समझ कर उस के लिए औलाद बना बैठा हालाँकि यह बात बौद्धिक रुप से भी ग़लत है और ग्रंथों के अनुसार भी । बौद्धिक रुप से इस लिए ग़लत है कि किसी को ख़ुदा का बेटा मानने की सूरत में यह भी मानना पड़ेगा कि वह ख़ुदा का अंश एवं अंग है। क्यों कि बेटा बाप का अंश होता है। और साथ ही यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि ख़ुदाई (ईश्वरत्व, Godhood) विश्लेषण एवं विभाजन योग्य है और इस से यह भी निश्चित होगा कि उस की कोई पत्नी हो । और किसी की पत्नी उस के अपने ही वंश अपनी ही नस्ल की हो सकती है । अत: मानना पड़ेगा कि ख़ुदा की भी जाति है। ज़ाहिर है इस से ज़्यादा घटिया और बेहूदा तसव्वुर ख़ुदा के बारे में और क्या हो सकता है। मगर इस खुली बुद्धि विरोधी कल्पना को धर्म चलाने वालों ने मात्र भावनाओं से प्रभावित हो कर और अतिक्रम (ग़ुलू, Untenable) का शिकार हो कर क़ुबूल कर लिया । और ख़ुदा के लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ी। ग्रंथो के अनुसार यह बात इस लिए ग़लत है कि ख़ुदा ने बन्दों की हिदायत के लिए जो किताबें भी नाज़िल फ़रमायी उन में तौहीद ही की तालीम दी गई थी । इन किताबों के जो अंश हमारे सामने मौजूद हैं उन में सारा ज़ोर तौहीद पर दिया गया है। रहा बाइबिल का वह हिस्सा जिस में हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा कहा गया है तो पहली बात यह है कि यह बात तौरात, ज़बूर और इन्जील की स्पष्ट और बुनियादी तालीम के ख़िलाफ़ है । तौरात बाइबिल के संग्रह में सब से पहली और प्राचीन किताब है इस लिए इस की तालीम के ख़िलाफ़ चारों इन्जीलों के बयान की हैसियत काँट छाँट एवं परिवर्तन की क़रार पाती है। दूसरी बात यह कि चारों इन्जीलों में जहाँ हज़रत मसीह के लिए बेटा का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ वही सामान्य रुप से ख़ुदा के नेक बन्दों के लिए भी ख़ुदा के बेटे के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं। जैसे

''धन्य हैं वे जो मेल करवाने वाले हैं। क्यों कि वह परमेश्वर के पुत्र कहलाऐंगे।'' (मत्ती ५:९)

ऊपर से ऐसा महसूस होता है कि यह बात अवास्तविक अर्थात कल्पित (मजाज़ी) अर्थ में कही गई है न कि वास्तविक अर्थ में लेकिन अगर तौहीद (एकेश्वरवाद) की इस तालीम को सामने रखा जाये जो तौरात, ज़बूर और इन्जील के पन्नों में फैली हुई है तो साफ़ मालूम होता है कि अब्द (बन्दा) के शब्द को इब्न (बेटा) से बदल दिया गया है। इसी तरह शब्द रब (परवरदिगार, मालिक) को अब (बाप) का शब्द कर दिया गया है। मत्ती की इन्जील में है:

''सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए ।'' (मत्ती ६:९)

यह खुली हुई काँट छाँट है जो या तो इन किताबों के सम्पादकों ने की है या इन के अनुवादकों ने, क्यों कि इन्जील ही में स्पष्ट रुप से कहा गया है:

''यीशु ने उसे उत्तर दिया, सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है; हे इस्राईल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना ।''(मरकूस १२:२९,३०)

ख़ुदा की औलाद गढ़ने में ईसाई अकेले नहीं है बल्कि दूसरी क़ौमें भी इस गुमराही में शरीक हैं। यहूदी हज़रत उज़ैर को अल्लाह का बेटा क़रार देते हैं और मक्का के मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ ठहराया था । इस से भी दो क़दम आगे भारत के बुतपरस्त हैं जो न

केवल अनगिनत ख़ुदाओं को मानते हैं बल्कि उन की औलाद को भी । जैसे The Maruts are the sons of Rudra, another great god in the Rigveda." -(The Quintessence of the Rigveda, p. 45).

इन के नज़दीक महद ब्रहमा वह गर्भाशय है जिस में भगवान बाप की हैसियत से अपना बीज डाल देता है जिस से मख़्लूक़ (सृष्टि) जन्म लेती है। अत: गीता में है:-

"Mahad-Brahma is the womb wherein I cast My primal seedling whence are born all creatures. Whatever beings are born from any womb Mahad - Brahma is their Primal Mother and I Their Primal Father who inseminate her."

(Bhagvad Geeta 14 - 3 - 4 - English Trans. by Dilip Kumar Roy p.160).

लेकिन क़ुर्आन ने ख़ुदा की मारिफ़त (पहचान, सान्निध्य) ऐसे साफ़ सुथरे, वास्तविकता पूर्ण और दिल लगते अन्दाज़ में पेश किया है कि इस की रौशनी के सामने सारा अंधकार ग़ायब हो गया ।

6. वह ख़ुदा ही क्या हुआ जिसे किसी ने जन्म दिया हो लेकिन बहुदेववादी धर्मों में ख़ुदाओं के जन्म लेने का तसव्वुर पाया जाता है। मिसाल के तौर पर ऋग्वेद में ख़ुदाओं की पैदाइश का ज़िक्र मौजूद है :-

"There is a song about the birth of the gods (X-72). The gods are spoken of generally as having been born from the heaven and the earth and in various other ways." (Quintessence of the Rigveda, page 100).

इसी बहुदेववादी (मुश्रिकाना) कल्पना को यहाँ ग़लत बताया गया है कि जिस तरह अल्लाह की कोई औलाद नहीं उसी तरह उस का कोई बाप भी नहीं है। जन्म लिए हुए ख़ुदा तो फ़र्जी (मनगढ़न्त) हो सकते हैं। हक़ीक़ी ख़ुदा तो सब का ख़ालिक़ (रचयिता) है वह मख़्लूक़ (रचना) क्यों और कैसे हो सकती है वह मात्र अल्लाह ही की हस्ती है जिस से न कोई चीज़ जन्म लेती है और न किसी ने उसे जन्म दिया है। किस क़दर ख़ुदा के शायाने-शान (प्रतिष्ठानुकूल एवं महिमानुकूल) है क़ुर्आन का यह तौहीद का तसव्वुर ।

7. अर्थात न अल्लाह की ज़ात (अस्तित्व) में उस की बराबरी और उस के जोड़ का कोई है और न उस की सिफ़ात (गुणों) में । सब मख़्लूक़ (सृष्टि) हैं और वह तन्हा ख़ालिक़ (सृष्टा), सब मुहताज़ हैं और वह अकेला ग़नी और बेनियाज़ (स्वच्छंद), सब बन्दे और ग़ुलाम हैं और वह एक पूज्य, और मालिक । उस के जैसा और उस के हम पल्ला न कभी कोई हुआ है और न होगा ।

इस खुली हुई हक़ीक़त के बावजूद मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) ने ख़ुदा का हमपल्ला ठहराया । इस मामले में भारत के मुश्रिकीन सब से आगे हैं। इन्होंने ख़ालिक़ और मख़्लूक दोनों को एक सहअस्तित्व (मख़्लूत वजूद) क़रार दिया । इन की धार्मिक ग्रंथ उपनिषद में शिर्क को एक दर्शन (Phillosophy) की हैसियत से पेश किया गया है।

" All that exists, says the Upanishad, is He, He is that All and the All is He."

(The Upanishads by M.P.Pandit -p.154).

"The Self or Soul of everyone is Brahman."

-(Upanishads by Swami Sivananda p. 16).

इन की दूसरी धार्मिक पुस्तकों में भी ख़ुदा का तसव्वुर बहुत उलझा हुआ है।

"There is no Personal Supreme God in the religion of Vedas".

(The Quintessence of the Rigveda, P.7).

"He is in all and all are in Him .....He descends as the Avatar."

(The Bhagvad Geeta -A Revelation by D. K. Roy p. 33)

"Lord, I behold in Your body all gods." (The Bhagvad Geeta, Ch. XI: 15)

जो लोग इन बहुदेववादी फलसफ़ों में उलझ कर अन्धकार में भटक रहे हैं उन की मुक्ति इस के बग़ैर संभव नहीं है कि वह पक्षपाती और धार्मिक द्वैष (तअस्सुब) को छोड़ कर क़ुर्आन की रौशनी को स्वीकार कर लें ।

सूरह
अल्-फ़लक़

११३. अल्-फ़लक़

नाम : पहली आयत में लफ़्ज़ फ़लक़ आया है जिस का अर्थ है ''सुबह''। इस मुनासीबत से इस सूरह का नाम ''अल् -फ़लक़ है । सूरह फ़लक़ और सूरह नास दोनों ''इस्तिआज़: (शरण, पनाह) की सूरतें हैं। इस लिए इन का संयुक्त नाम ''मुऔव्विज़तैन'' (पनाह वाली सूरतें) भी हैं।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि शैतानी शक्तियाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचाने के लिए उठ खड़ी हुई थीं और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोधी ईर्ष्या की आग में जल रहे थे।

केन्द्रीय विषय :- बन्दों को इस बात की तालीम देना है कि वह हर तरह की मुश्किलों, मुसीबतों और बुराइयों के मुक़ाबले में अल्लाह ही की पनाह ढूँढें क्यों कि वही अकेला शरण देने वाला और पनाह में लेने वाला है। इस सिलसिले में ऐसी प्रार्थना के शब्द सिखाये गये है जो इस्तिआज़: (पनाह माँगने) के लिए अत्यन्त उचित हैं।

आयतों की तरतीब :- आयत १ में इस बात की तालीम दी गयी है कि बन्दा पनाह (शरण) के लिए उस हस्ती की तरफ़ मुड़े जिस की रबूबिय्यत के करिश्मे वह रात दिन देख रहा है।

आयत २ से ५ में बताया गया है कि किन चीज़ों के फितनों से पनाह माँगते रहना चाहिए।

फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) :- इस सूरह में एवं इस के बाद वाली सूरह में पनाह माँगने के लिहाज़ से जो उचित और व्यापक वाक्य तथा जो प्रभावपूर्ण दुआ इरशाद हुई है उस की अहमियत और फ़ज़ीलत (महत्व एवं श्रेष्ठता) हदीस में इस तरह बयान हुई है। उक़्बा बिन आमिर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया : اُنْزِلَتْ عَلَيَّ آيَاتٌ لَمْ يُرَ مِثْلُهُنَّ قَطُّ: اَلْمُعَوِّذَتَيْنِ

''मुझ पर ऐसी आयतें नाज़िल हुई हैं जो बिलकुल बेमिसाल हैं। अर्थात् मुऔव्विज़तैन।'' (मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफ़िरीन)

बरकतें :- हदीस में आता है :

عَنْ عَائِشَةَ رضی اللہ عنہا قَالَتْ كَانَ رسول اللہ ﷺ اِذَا آوٰى اِلٰى فِرَاشِهٖ نَفَثَ فِيْ كَفَّيْهِ بِقُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَبِالْمُعَوِّذَتَيْنِ جَمِيْعًا ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهٗ وَمَا بَلَغَتْ يَدَاهُ مِنْ جَسَدِهٖ۔ (بخاری کتاب الطب)

''हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हाथों में ''क़ुल हुवल्लाहु अहद'' और मुऔव्विज़तैन पढ़ कर फूँकते फिर उन को अपने चेहरे और जिस्म पर जहाँ तक कि हाथ पहुँच जाता, फेर लेते ।'' (बुख़ारी किताबुत्तिब्ब)

तावीज़ और गन्डों से बचते हुए इन सूरतों की बरकतों से लाभ और रोगों से मुक्ति प्राप्त करने का यह सही और सुन्नत तरीक़ा है। मगर याद रहे कि सूरह का असल मक़सद तौहीद पर जमे रहना, उस के तक़ाज़ों को पूरा करना और इस बात का ख़ास तौर से ख़याल रखना है कि अक़ीदे और आस्था में शिर्क की कोई भनक भी न पाई जाए। जो लोग इस महान उद्देश्य को भुला कर अल्लाह के कलाम की सिर्फ़ ज़ाहिरी (वाह्य) बरकतों को प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं उन की मिसाल उस प्यासे व्यक्ति की सी है जो दरया के किनारे बैठ कर अपने हाथ और अपना मुँह तो धो लेता है मगर पानी पीने का कष्ट सहन नहीं करता । ज़ाहिर है उस के इस अमल से हाथ और मुँह तो धुल जाऐंगे लेकिन उस की प्यास हरगिज़ न बुझ सकेगी ।

११३. सूरह अल्-फ़लक़

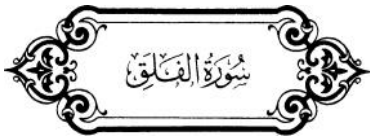

अनुवाद आयतें :५

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **कहो [1] मैं पनाह माँगता हूँ [2] सुबह के रब की।[3]**

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾

2. **जो कुछ उस ने पैदा किया है उस के शर (बुराई) से।[4]**

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾

3. **और अंधेरी रात के शर (फ़ितने) से जब कि वह छा जाये।[5]**

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

4. **और गाँठों में फूँकने वालों के शर (फ़ितने) से।[6]**

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾

5. **और ईर्ष्या करने वाले के शर (फितने) से जब कि वह ईर्ष्या करे।[7]**

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۧ﴿۵﴾

1. अर्थात् अल्लाह से यह दुआ (प्रार्थना) किया करो और उस की पनाह (शरण) इन कलिमात (वाक्यों) से माँगा करो । सम्बोधन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से है और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के माध्यम से हर उस व्यक्ति से जो क़ुर्आन पर ईमान लाया हो ।

2. पनाह के अर्थ, सुरक्षा, बचाव और शरण के हैं। और पनाह माँगने से मुराद अपनी सुरक्षा के लिए पनाह देने वाली हस्ती से दुआ करना, उस की तरफ़ पलटना, उस की ओर झुकना उस की स्नेही एवं दयालुता की छत्र छाया ढूँढना और उस के सहारे को मज़बूती के साथ थाम लेना है। अत: यहाँ ''अऊज़ु'' (मैं पनाह माँगता हूँ का मतलब यह है कि मैं ख़ुदा को एकमात्र पनाह देने वाला मान कर अपने आप को उस की सुरक्षा में दे देता हूँ, वही हर तरह के शर (बुराई, मुसीबत, फ़ितनों) से बचाने वाला है और मैं उसी से बन्दगी का सम्बन्ध बनाता हूँ।

ध्यान रहे कि किसी को सही मानों में पनाह देने वाला समझना उस को ख़ुदा क़रार देना है, इस लिए अल्लाह के सिवा किसी की पनाह माँगना जैसा कि मुश्रिकीन (बहुदेववादी) देवी देवताओं की पनाह माँगते हैं, खुला शिर्क है।

3. अर्थात् जो रात के अंधाकार का पर्दा चीर कर सुबह प्रकट करता है जैसा कि दूसरी जगह इरशाद हुआ है।

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ

''रात के अन्धकार को फाड़ कर सुबह प्रकट करने वाला।''(अल-अन्आम ९६)

यहाँ अल्लाह की रुबूबिय्यत की सिफ़त के साथ उस की क़ुदरत के इस करिश्मे का ज़िक्र इन अर्थों में है कि गोया पनाह लेने वाला अपने इस विश्वास और संतोष को व्यक्त कर रहा है,कि जो हस्ती अन्धकार को फाड़ कर सुबह को अस्तित्व में लाती है वह निराशजनक स्थिति में आशा की किरण भी पैदा करेगी और फितनों (शर) की भरमार को छाँट कर शान्ति और सुरक्षा की राह भी खोलेगी।

4. इस आयत पर ग़ौर करने से निम्न लिखित बातें पता चलती हैं :

1) सारी चीज़े अल्लाह ही की पैदा की हुई है। ख़ालिक़ (सृष्टा) तन्हा वही है और मालिक भी वही इस लिए कोई चीज़ भी कायनात के पैदा करने वाले से अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकती अत: मख़्लूक़ (सृष्टि) के शर (फ़ितनों) से बचने के लिए ख़ालिक़ की पनाह ढूँढना ही सही तरीक़ा है। इस के विरुद्ध मख़्लूक़ (सृष्टि) के शर (फितनों) से बचाने के लिए मख़्लूक़ ही की दुहाई देना, चाहे इस मक़सद के लिए किसी देवी देवता को पुकारे या किसी ''ग़ौस'' और ''वली'' को सरासर मूर्खता और एकदम ग़लत है।

2) ''जो कुछ उस ने पैदा किया उस के शर से'' का मतलब यह नहीं है कि उस की पैदा की हुई हर चीज़ में निश्चित रुप से शर (फ़ितने) का पहलू है बल्कि मतलब यह है कि उस की पैदा की हुई चीज़ों में जो चीज़ें भी अपने अन्दर शर का कोई पहलू रखती हैं उन सब के शर से ख़ुदा की पनाह माँगता हूँ ।

3) कोई चीज़ भी स्वयं अपने आप में प्रभाव पूर्ण नहीं है और न कोई शर ख़ुद किसी के साथ हो जाता है बल्कि हर चीज़ अल्लाह के हुक्म ही से प्रभाव जमाती है और जिस किसी के साथ कोई शर लग जाता है, उस के हुक्म ही से होता है। इस लिए शर से बचने के लिए उसी से प्रार्थना (दुआ) करना चाहिए । और उसी पर भरोसा करना चाहिए।

4) शर से मुराद महसूस होने वाली आफ़तें और बलाऐं भी हैं और आन्तरिक हानियाँ और गुमराहियाँ भी । पहली चीज़ की मिसाल बीमारियाँ और कष्ट हैं और दूसरी चीज़ की मिसाल गुनाह एवं कुफ़्र और शिर्क है । आयतों के संदर्भ (Context) के अनुसार शर का यह दूसरा पहलू ख़ास

तौर से मुराद है और इस का अनुमोदन (ताईद) इस बात से भी होती है कि مُعَوِّذَتَيْنِ "मुऔव्विज़तैन" को क़ुर्आन के बिलकुल अन्त में रखा गया है। यह गोया इस बात की ओर संकेत है कि क़ुर्आन के द्वारा जिस हिदायत से पुरस्कृत एवं सुसज्जित किया गया है कि उस की हिफ़ाज़त के सिलसिले में चौकन्ना रहने की ज़रूरत है ताकि फ़ितने को प्रिय रखने वाली ताक़तें प्रभावित न होने पाऐं और भटकाने में कामयाब न हों ।

5. पिछली आयत में मख़्लूक़ों (सृष्टियों) के शर से पनाह माँगने का वर्णन सामान्य रुप से हुआ है। जब कुछ विशेष चीज़ों के शर से पनाह माँगने की हिदायत विशेष रुप से की जा रही है।

रात आती है तो अंधेरा छा जाता है और उस अंधकार में उपद्रवी तत्वों और शैतानी शक्तियों को उभरने का मौक़ा मिलता है। प्रत्यक्ष और शरीरिक आफ़तों के एतिबार से बीमारियाँ रात में बढ़ती हैं और ख़तरनाक जानवर रात में निकलते हैं। मतलब यह कि रात को डर और भय का माहौल रहता है। रही आन्तरिक और नैतिक (अख़्लाक़ी) आफ़तें तो रात में अपराध अधिकता के साथ होते हैं। ढेरों षडयंत्र रात ही में किये जाते हैं और शैतान अपने लश्कर के साथ अंधेरे ही में हमलावर होता है इस लिए रात का प्रत्यक्ष अंधकार आन्तरिक अंधकार का कारण हो सकता है। अत: इस शर की तरफ़ से चौकन्ना रहने और इस से ख़ुदा की पनाह माँगने की तल्क़ीन की गई है।

ध्यान रहे कि रात से शर को जोड़ने का मतलब यह नहीं है कि रात में ख़ैर (नेकी, भलाई, शान्ति) का अवतरण नहीं होता या ख़ैर के काम अन्जाम नहीं पाते, बल्कि मतलब यह है कि रात का समय शैतानी ताक़तों के लिए शर फैलाने के तअल्लुक़ से बड़ा अनुकूल होता है।

6. "उक़द" عُقَدْ (गाँठों) से तात्पर्य वह गाँठ है जो इन्सान के शऊर (विवेक) और उस के हवास (चेतना, इन्द्रियों) पर लगा कर उसे ग़ाफ़िल और मदहोश बना देते हैं अत: सहीहैन (दो सही हदीस के उल्लेखकर्ताओं) की हदीस है कि नबी सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلىٰ قَافِيَةِ رَأْسِ اَحَدِكُمْ ثَلَاثَ عُقَدٍ اِذَا نَامَ ـ بِكُلِّ عُقْدَةٍ يَضْرِبُ عَلَيْكَ لَيْلاً طَوِيلاً ـ فَاِذَا اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ وَاِذَا تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عَنْهُ عُقْدَتَانِ ـ فَاِذَا صَلّٰى انْحَلَّتِ الْعُقَدُ فَاَصْبَحَ نَشِيطًا طَيِّبَ النَّفْسِ وَاِلَّا اَصْبَحَ خَبِيثَ النَّفْسِ كَسْلَانَ ـ (مسلم کتاب صلاۃ المسافرین)

"जब तुम में से कोई व्यक्ति सोता है तो उस के सर के पिछले हिस्से पर शैतान तीन गाँठ लगाता है और हर गाँठ के साथ यह बात भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है। फिर जब वह व्यक्ति जाग उठता है और अल्लाह को याद करता है तो एक गाँठ खुल जाती है और जब वुज़ू करता है तो दूसरी गाँठ भी खुल जाती है और जब नमाज़ पढ़ता है तो तीसरी गाँठ भी खुल जाती है। और सुबह को वह बिलकुल ताज़ादम और पाकीज़ा नफ़्स होता है। दूसरी सूरत में वह सुबह को सुस्त, कसमसाहट और अशुद्धता एवं अपवित्रता की मनोदशा में होता है।" (मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफ़िरीन)

यह शैतान द्वारा इन्सान को ग़फ़लत में डालने की एक मिसाल है जो हदीस में प्रस्तुत की गई है। इस से शैतानी विचारों का अनायास ही मन में उत्पन्न होने, उस की हरकतों और उस के हमलों का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

"नफ़्फ़ासात" نَفَّاثَاتْ का लफ़्ज़ "नफ़्स" نَفْثْ से है जिस का अर्थ है "फूँकना" हदीस में शैतानी क्रिया के उत्पन्न होने को शैतान के "नफ़्स" نَفْثْ से ताबीर किया गया है :

اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ مِنْ نَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ وَهَمْزِهٖ ـ

"मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शैतान के नफ़्ख़ उस के नफ़्स और उस के हम्ज़ से।"

इस हदीस के रावी (उल्लेखकर्ता) इब्ने मुर्: ने इन तीनों अल्फ़ाज़ की व्याख्या इस तरह की है कि शैतान के नफ़्ख से मुराद घमंड, नफ़्स से मुराद शेर (दोहा) बड़ाई, और हम्ज़ से मुराद जुनून (पागलपन) है। (अबू दाऊद, किताबुस्सलात पृष्ठ ७५०)

इस में नफ़्स को शेर जो कहा गया है वह दरअसल शैतानी विचारों एवं क्रियाओं की अनायास उत्पत्ति ही की एक शकल है उस की दूसरी शकल मंत्र मोहनी और जादू भी है।

"नफ़्फ़ासात" نَفَّاثَاتْ का लफ़्ज़ स्त्रीलिंग का बहुवचन है और अतिश्योक्ति के छंद पर है। यह नुफ़ूस (आत्माओं) की सिफ़त (विशेषण) है इस लिए अरबी व्याकरण के अनुसार स्त्रीलिंग है। अर्थात वह नुफ़ूस (आत्माऐं) जो फूँकने के आदी हैं। इस से तात्पर्य शैतानी आत्माऐं (नुफ़ूस) है जो अपनी उत्प्रेरणा द्वारा अनायास इन्सान के विवेक (शऊर) और उस की चेतना एवं इन्द्रियों को प्रभावित कर देती है। ऊपर हदीस में शैतान के गाँठ बाँधने का जो ज़िक्र हुआ है उस में भी यह बात बयान हुई है कि वह हर गाँठ के साथ यह भी अंकित कर देता है कि अभी रात लम्बी है। यह वास्तव में शैतान का इस गाँठ में नफ़्स (फूँकना) ही है।

इन हदीसों की रौशनी में आयत का मतलब यह है कि शैतान अपनी उत्प्रेरणा (Inspiration) द्वारा उस की चेतना विवेक और इन्द्रियों को प्रभावित कर के उसे ग़फ़लत, अचेतना, मदहोशी और मनौवैज्ञानिक रोगों का शिकार बनाते हैं और बुरी एवं गुमराह करने वाली बातें सुझा देते हैं। उन के इस शर (फितने) से ख़ुदा की पनाह माँगी गई है। यह शैतानी उत्प्रेरणा शायरी के रुप में भी हो सकती है और जादू के रूप में भी। लच्छेदार बातों की शकल में भी हो सकती है। और गाने की शकल में भी । इस लिए कोई कारण नहीं कि इस को किसी एक ही रुप में सीमित समझा जाए। सिफ़ली अमल (Black Magic या वशीकरण) करने वालों के यहाँ तो गन्डों में फूँक मारने का तरीक़ा पहले ही से चला आ रहा है। जादू और टोने टोटके करने वाले शैतानों की मदद से यह दुष्ट कर्म अन्जाम देते हैं और लोगों के लिए गुमराही का सामान करते हैं और आजकल हिपनाटिज़्म (Hypnotism) के द्वारा भी इन्सान की चेतना उस के विवेक और उस की इन्द्रियों को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। यह सब शैतानी दुष्कर्म की विभिन्न सूरतें हैं। इस तरह की तमाम तकलीफ़ो और मुसीबतों से बचने का सही तरीक़ा यही है कि अल्लाह की पनाह ली जाए और इस बात पर दृढ़ विश्वास रखा जाए कि उस की आज्ञा के बिना कोई चीज़ चोट और क्षति नहीं पहुँचा सकती ।

आम तौर से मुफ़स्सिरीन (टीकाकार) इस आयत के अन्तर्गत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू की रिवायत नक़ल करते हैं जिस का सारांश यह है कि मदीना में एक यहूदी ने या एक मुनाफ़िक़ जो यहूद का हलीफ़ (सहप्रतिज्ञ, मित्र) था और जिस का नाम लबीद बिन आसिम था, आप की कंघी के बालों में जादू कर के इस को एक कुँए के अन्दर पत्थर के नीचे दबा दिया था । इस जादू के प्रभाव से आप बीमार हुए और यह दशा हुई कि किसी काम के प्रति यह समझते कि कर लिया है लेकिन नहीं किया होता । कुछ रिवायतों (उल्लेखों) के अनुसार ६ माह तक आप पर इस का असर रहा । इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वह्य द्वारा सुचित किया गया और मुऔव्विज़तैन अर्थात क़ुल अऊज़ुबिरब्बिल फ़लक़ एवं क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास पढ़ने की हिदायत हुई जिस से आप अच्छे हो गए ।

यह रिवायत बुख़ारी मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में नक़ल हुई किन्तु कुछ कारणवश

यह स्वीकार योग्य नहीं :-

पहली बात यह कि यह रिवायत क़ुर्आन से टकराती है, क्यों कि क़ुर्आन ने क़ुफ़्फ़ार के इस इल्ज़ाम को ग़लत बताया है कि नबी जादू से पीड़ित हैं।

يَقُولُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ؕ

''ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जो जादू से पीड़ित है''।(बनी इस्राईल :४७)

अर्थात क़ुर्आन जिस बात को ग़लत बता रहा है यह रिवायत उसी को सही साबित कर रही है। इस का जवाब इस रिवायत पर यक़ीन करने वाले उलेमा (विद्वान) यह देते हैं कि नबी पर जादू का असर हो सकता है जिस तरह हज़रत मूसा को जादूगरों की रस्सियों और लाठियों के बारे में ख़्याल हुआ था कि वह साँप की तरह दौड़ रही हैं, (सूरह ताहा:६६) रहा कुफ़्फ़ार का इल्ज़ाम कि नबी एक जादू से पीड़ित व्यक्ति हैं तो वह इस अर्थ में था कि किसी जादूगर ने आप को पागल बना दिया है जिस को क़ुर्आन ने ग़लत बताया । एवं वह कहते हैं कि ''जादू का असर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अस्तित्व पर हुआ था उन की नुबुव्वत इस से बिल्कुल अप्रभावित रही।'' लेकिन यह जवाब मात्र एक धोखा है क्यों कि रिवायत में जादू का यह असर बयान किया गया है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) किसी काम के प्रति यह समझते कि कर लिया लेकिन नहीं किया होता । अर्थात जादू का असर मआज़ल्लाह आप के ज़ेहन पर हुआ था । और वह भी कई माह तक बाक़ी रहा एवं आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस की ख़बर उस समय हुई जब कि अल्लाह की वह्य ने आप को सूचित किया जब कि हज़रत मूसा का जादूगरों की रस्सियों और लाठियों को साँप के रूप में देखना क्षणिक था और उन को यह मालूम था कि ये रस्सियाँ और लाठियाँ हक़ीक़त में साँप नहीं हैं बल्कि साँप के रुप में दिखाई दे रही हैं। इस लिए इस के देखने से उन को धोखा नहीं हुआ । फिर यह कोई बीमारी नहीं थी जिस में हज़रत मूसा मुब्तिला हुए हों इस लिए रिवायत में बयान की गई जादू की घटनाओं को हज़रत मूसा की घटना जैसा समझना अतर्क संगत है।

दूसरी बात यह कि इस घटना को मान लेने से अम्बिया की इस्मत (नबियों की पवित्रता) पर दोष आता है क्यों कि रिवायत में जादू का असर मात्र शरीर पर नहीं बल्कि मस्तिष्क पर भी बताया गया है। स्पष्ट है यह बात नबी के श्रेष्ठतम पद के बिलकुल विपरीत है। इस लिए यह दलील व्यर्थ है कि यदि आप ज़ख्मी हो सकते थे और बीमार हो सकते थे तो आप पर जादू का असर भी हो सकता था । عصمتِ انبیاء ''नबियों की इस्मत'' अर्थात नबियों की मासूमियत उन की पवित्रता का मसला सभी के नज़दीक माननीय है और क़ुर्आन एवं सुन्नत से यही साबित होता है। अत: ऐसी रिवायत जो नबी के श्रेष्ठतम पद के विपरीत हो वह हरगिज़ विश्वस्नीय नहीं हो सकती चाहे वह बुख़ारी की रिवायत हो या मुस्लिम की ।

तीसरी बात यह कि जहाँ तक रिवायत के सिलसिले का मामला है इस में एक रावी (उल्लेखकर्ता) हश्शाम हैं जो यद्यपि विश्वासपात्र हैं किन्तु अल्लामा इब्ने हजर ने तहज़ीबुत्तहज़ीब में उन के बारे में एक बात यह भी नक़ल की है कि वह इराक़ जाने के बाद अधिकता के साथ अपने वालिद से रिवायत (उल्लेख) करने लगे थे जिस पर इराक़ वालों ने अप्रसन्नता व्यक्त की थी एवं यह कि मालिक ने इन की उन हदीसों पर जो वह इराक़ वालों के माध्यम से बयान करते थे, नकारते थे । वह तीन बार कूफ़ा आए थे। पहली बार वह इस तरह रिवायत करते :-

حَدَّثَنِیْ اَبِیْ قَالَ سَمِعْتُ عَائِشَة

''मेरे वालिद ने मूझ से बयान किया कि उन्हों ने हज़रत आइशा (रजि.) को फ़रमाते हुए सुना'' और दूसरी बार आए तो इस तरह रिवायत करने लगे :-

اخبرنی ابی عن عائشه

''मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी की हज़रत आइशा (रजि.) से रिवायत है।''और तीसरी बार आए तो इन अल्फ़ाज़ में रिवायत करने लगे। ابی عن عائشه ''मेरे वालिद ने आइशा से रिवायत की है'' (तहज़ीबुत्तहज़ीब भाग ११ पृष्ठ ५०) इस से अन्दाज़ा होता है कि हश्शाम यद्यपि विश्वस्नीय उल्लेखकर्ता (सिक: रावी) थे किन्तु उल्लेख करने में कुछ असावधानी भी उन से होने लगी थी । ऐसी सूरत में उन की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू वाली रिवायत को जो एक बहुत बड़े मसले में है, उन की असावधानी क्यों न समझा जाए?

चौथी बात यह कि रिवायत के सिलसिले (क्रम) में एक रावी सुफ़ियान बिन उयैन: हैं जो यह स्वीकार करते हैं कि मैं ने इसे इब्ने जुरैज से पहली बार सुना । इस पर मौलाना अमीन अहसन साहब की यह अलोचना बिलकुल उचित है कि :-

''गोया इस वाक़िअ: ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल (अल्लाह से जा मिलने) के सौ साल बाद शोहरत पायी । इस से पहले इस का इल्म सिर्फ़ बाज़ (कुछ) अफ़राद तक महदूद रहा । हर शख़्स समझ सकता है कि ''अलइयाज़ बिल्लाह'' अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ६ माह तक मसहूर (जादू से पीड़ित) रहे होते तो यह वाक़िअ: इतना ग़ैर मामूली (असाधारण) था कि सद्र अव्वल (पहले दौर) ही में इस का चर्चा होता और यह रिवायत एक मुतवातिर (क्रमबद्ध) रिवायत की हैसियत से हम तक पहुँचती ।'' (तदब्बुरे क़ुर्आन भाग ९ पृष्ठ ६६६)

बात लम्बी न हो जाए इस लिए हम इन चन्द कारणों के बयान को काफ़ी समझते हुए बस करते हैं अल्बत्ता यहाँ उन मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के बयानात के कुछ इक्तिबासात (उदाहरण) नक़ल करेंगे जिन्हों ने पूरे ज़ोर के साथ जादू वाली रिवायत को रद्द कर दिया है।

मशहूर मुफ़स्सिर अल्लामा अबू बक्र जस्सास अपनी तफ़्सीर ''अहकामुल क़ुर्आन'' में फ़रमाते हैं:-

''और लोगों ने जादू के अमल से भी ज़्यादा बड़ी और हौलनाक बात जायज़ क़रार दी है। अत: उन का ख़्याल है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया था और इस का असर भी आप पर हुआ था । यहाँ तक कि आप ने फ़रमाया था कि मुझे ऐसा ख़याल होता है कि मैं कोई बात कह रहा हूँ और कर रहा हूँ जब कि मैं ने न वह बात कही होती है और न की होती है। और एक यहूदी औरत ने आप पर खजूर के छिलके के अन्दर कंघी और बालों में जादू कर दिया था यहाँ तक कि आप के पास जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप को ख़बर दी कि उस औरत ने खजूर के छिलके के अन्दर जादू कर दिया है और वह कुँऐं के पत्थर के नीचे है तो आप ने उस को निकलवाया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से उस का असर समाप्त हो गया । हालाँकि अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बन्धित काफ़िरों के दावे को झुठलाते हुए फ़रमाया है।

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا

''और ज़ालिम कहते हैं कि तुम एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू कर दिया गया है।'' इस तरह की हदीसें दरहक़ीक़त मुलहिदों (नास्तिकों) की गढ़ी हुई हैं। (अहकामुल क़ुर्आन

भाग १ पृष्ठ ५५)

सैयद क़ुत्ब अपनी तफ़्सीर ''फ़ी ज़िलालिल क़ुर्आन'' में फ़रमाते हैं :-

''लेकिन यह रिवायतें अमल और तबलीग़ के मामले में वास्तव में इस्मते नबी (नबी की पवित्रता) के ख़िलाफ़ है। और इस पर विश्वास कर लेने के साथ कि आप का हर काम और हर क़ौल सुन्नत और शरीअत है यह दुरूस्त नहीं क़रार पाती । एवं ये रिवायतें क़ुर्आन के उस बयान से भी टकराती हैं जिस में रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जादू ग्रस्त होने का खंडन किया गया है और मुश्रिकीन के इस ग़लत दावे को झूट क़रार दिया गया है। इस आधार पर ये रिवायतें खयालों में जगह नहीं पा सकतीं। एवं एक्का दुक्का ख़बर को अक़ीदे के मसले में क़ुबूल नहीं किया जा सकता ।और अक़ीदे के मामले में हदीसों को क़ुबूल करने के लिए तवातुर (क्रम एवं निरंतरता) शर्त है जब कि ये रिवायतें मुतवातिर (क्रमबद्ध अथवा निरंतर) नहीं हैं। इस के अलावा इन दोनों सूरतों का अवतरण बेहतर क़ौल (वरीय कथन) के अनुसार मक्का में हुआ था।''(फ़ी ज़िलालिल क़ुर्आन भाग ६ पृष्ठ ४००८)

और मौलाना अमीन अहसन इस्लाही लिखते हैं :-

''अगरचे दावा यह किया जाता है कि इस जादू का कोई असर आप के फ़राइज़े नुबुव्वत (नुबुव्वत के कर्तव्यों) पर नहीं पड़ा लेकिन साथ ही निहायत सादा लौही (बड़े भोलेपन) से यह एतिराफ़ भी कर लिया गया है कि इस का असर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह पड़ा कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम के मुताल्लिक़ ख़्याल फ़रमाते कि कर लिया है लेकिन नहीं किया होता--------- मेरे नज़दीक इस शाने नुज़ूल को रद्द करने के लिए यह दलील काफ़ी है कि यह उस मुसल्लम: (संपूर्ण, सुरक्षित एवं स्वीकृत) अक़ीदे के बिलकुल मनाफ़ी (विपरीत) है जो क़ुर्आन ने अम्बिया अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक हमें तालीम किया है। इस्मत हज़राते अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की उन ख़ुसूसियात में से है जो किसी वक्त भी उन से मुन्फक (जुदा) नहीं हो सकती । इस इस्मत को इस अम्र (बात अथवा काम) से कोई नुक़्सान नहीं पहुँचता कि नबी के दन्दाने मुबारक शहीद हो गए या वह ज़ख़्मी हो गया या वह क़त्ल कर दिया गया । इन में से कोई चीज़ भी उस की नुबुव्वत में क़ादेह (रोड़ा, विपरीत) नहीं है कि इस को आप इस अम्र की दलील बनाऐं, कि जब नबी इन चीज़ों में मुब्तिला हो सकता है तो मसहूर (जादूग्रस्त) भी हो सकता है। यहाँ तक कि उस को करदा और नाकरदा, दीदा और नादीदा (करने और न करने, देखने और न देखने) में कोई इम्तियाज़ (फ़र्क़) ही बाक़ी नहीं रह जाता । अल्लाह तआला ने इस तरह के शैतानी तसर्रुफ़ात (उथल पुथल) से अपने नबियों को महफ़ूज़ रखा है। और उन की यह महफ़ूज़ियत ही नबी के हर क़ौल व फेल (कथनी और करनी) को सनद बनाती है। पूरा क़ुर्आन अम्बिया की इस्मत पर गवाह है और हर मुसलमान पर वाजिब है कि वह उन की इस्मत पर ईमान रखे ।'' (तदब्बुरे क़ुर्आन भाग ८ पृष्ठ ६६५-६६६)

इन मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) के उक्त बयानों से जादू की घटना और रिवायत की हक़ीकत स्पष्ट हो जाती है । लेकिन अश्चर्य है कि लोगों को जितनी दिलचस्पी एक रिवायत को सही कर दिखाने से है उतनी दिलचस्पी उन्हें इस बात से नहीं कि इस का इस्मते-अम्बिया (नबियों की पवित्रता) पर क्या असर पड़ता है। यह रिवायत परस्ती नहीं तो और क्या है?

६. हसद (ईर्ष्या) का मतलब यह है कि अगर अल्लाह तआला ने किसी व्यक्ति को अपनी किसी नेमत या फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) से नवाज़ा है तो दूसरा व्यक्ति उस पर जलने लगे और इस की इच्छा रखे कि वह उस से छिन जाए । ''और हासिद (ईर्ष्या करने वाला) जब हसद (ईर्ष्या) करे'' का मतलब यह है कि हासिद जब हासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) कार्रवाई करने लगे और ईर्ष्या के जोश में कोई क़दम

उठा बैठे ऐसे मौक़े पर उस के शर (फितने) उस की यातनाओं और उस की पीड़ा से बचने के लिए अल्लाह की पनाह माँगना चाहिए हासिद (ईर्ष्या करने वाले) का लफ़्ज़ यद्यपि सब पर लागू होता है किन्तु यह भी एक उभरी हुई हक़ीक़त है कि हसद (ईर्ष्या) की शुरूआत शैतान ही से हुई है जब कि अल्लाह तआला ने आदम को पैदा कर के ज़मीन की ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) का ताज उस के सर पर रखा था । इसी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के आधार पर शैतान इन्सान का दुश्मन बन गया है और चाहता है कि इन्सान भटक जाए ।

क़ुर्आन में यहूदियों के हसद का भी ख़ास तौर से ज़िक्र हुआ है।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِن اَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ۔ (البقرہ ۔ ۱۰۹)

''बहुत से अहले किताब यह चाहते है कि वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुम्हें कुफ़्र की तरफ़ पल्टा ले जाऐं, मात्र अपने नफ़्स की हसद के कारण'' (अल-बक़रा १०९) मक्का के काफ़िरों को भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस आधार पर हसद (ईर्ष्या) था कि मक्का और ताइफ़ के सरदारों को छोड़ कर आप को क्यों नुबुव्वत के लिए चुना गया ।

वह कहते थे :-

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْآنُ عَلٰى رَجُلٍ مِنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ۔ (الزخرف : ۳۱)

''यह क़ुर्आन दोनों शहरों के (धनवानों) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं नाज़िल किया गया?'' (अज़् ज़ुख़फ़:३१)

यह ईर्ष्या ही की आग थी जिस ने इन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुश्मन बना दिया था । और वह नहीं चाहते थे कि ईमान लाने वालों पर उन के रब की तरफ़ से कोई भलाई नाज़िल हो ।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَّبِّكُمْ۔ (البقرہ:۱۰۵)

''जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कार) किया चाहे वह अहले किताब हों या मुश्रिक, नहीं चाहते कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर कोई ख़ैर (भलाई) नाज़िल हो ।'' (अल-बक़र: १०५)

कुल मिला कर आयत का मनशा यह है कि एक मोमिन को जब कभी किसी हासिद (ईर्ष्या करने वाले) से मामला पेश आए तो वह उस के फ़ितनों से बचने के लिए ख़ुदा की पनाह माँगे । इस तरह वह अपने गुस्से को भी क़ाबू में रख सकेगा । और ख़ुदा की मदद का भी योग्य अधिकारी होगा ।

क़ुर्आन की समाप्ति पर हासिद के शर (फितनों) से पनाह माँगने की जो हिदायत दी गई है उस से एक अहम बात की तरफ़ इशारा निकलता है और वह यह है कि ईमान लाने वाले ख़ूब समझ लें इस हिदायत की किताब को पा कर उन्हें बड़ी नेमत और बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ है। इस पर उन के दुश्मनों का उन्हें ईर्ष्यालु दृष्टि (हासिदाना निगाहों) से देखना और तौहीद से, जो हिदायत की असल बुनियाद है, उन्हें फेरने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना हरगिज़ आश्चर्यजनक नहीं, अत: उन्हें चाहिए कि अपने हासिदों (ईर्ष्या करने वालों) की शरारतों और उन के षडयंत्रों की तरफ़ से चौकन्ने रहें और उन के फितनों (शर) से बचने के लिए अल्लाह का सहारा लें ।

सूरह
अन्-नास

११४.अन्-नास

नाम : इस सूरह में पाँच बार ''अन्नास''اَلنَّاسِ(इन्सान) का लफ़्ज़ आया है। इस मुनासिबत से इस का नाम اَلنَّاسِ ''अन्-नास'' है।

नाज़िल होने का समय :- मक्की है और मज़मून से अन्दाज़ा होता है कि यह उस समय नाज़िल हुई होगी जब कि क़ुर्आन के ख़िलाफ़ इन्सान और जिन्न समूह के शैतानों ने लोगों के दिलों में शंका एवं संदेह उत्पन्न करने का आन्दोलन शुरू कर दिया था ।

केन्द्रीय विषय :- सूरह फ़लक़ की तरह इस का केन्द्रीय विषय भी इस्तिआज़ा (पनाह माँगना) ही है। अलबत्ता इस में वस्वसा (भ्रम) पैदा करने एवं उस में लिप्त करने को सब से बड़ा शर (फ़ितना) क़रार दे कर उस से पनाह माँगने की शिक्षा दी गयी है।

कलाम की तरतीब :- आयत १ से ३ में पनाह देने वाले की सिफ़तें (गुण) बयान की गई हैं।

आयत ४ में जिस के शर से पनाह माँगी गयी है उस के एक ख़तरनाक एवं शातिर दुश्मन होने से सचेत किया गया है।

आयत ५ में बताया गया है कि उस के हमलों का असल निशाना इन्सान का दिल होता है।

आयत ६ में ख़बरदार किया गया है कि यह दुश्मन जिस तरह जिन्नों में से होता है उसी तरह इन्सानों में से भी होता है।

अहमिय्यत :- क्रमानुसार यह क़ुर्आन की आख़िरी सूरह है और एक पहलू से वह तौहीद की मुहाफ़िज़ (रक्षक) है तो दूसरे पहलू से पूरे क़ुर्आन की । तौहीद की रक्षक इस तरह है कि इस में तौहीद के असल दुश्मन शैतान की शातिराना चालों से होशियार रहने और उस के शर (फितनों) से बचने के लिए एक मात्र ख़ुदा का सहारा लेने और उस की पनाह माँगने की तल्कीन की गई है। रहा इस सूरह का पूरे क़ुर्आन के लिए रक्षक और पास्वान होना तो जैसा कि क़ुर्आन में फ़रमाया गया है:

لَا يَاتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ
مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ۔

''बातिल (असत्य) न इस के आगे से आ सकता है न इस के पीछे से आ सकता है। यह उस हस्ती की ओर से अवतरित हुआ है जो हिकमत और कमालात के गुणों से परिपूर्ण है। (हाम्मीम-अस्सज्दा :४२)

''मुऔव्विज़तैन'' مُعَوِّذَتَيْنِ को अन्त में रख कर शैतान के प्रविष्टि की सारी राहें बन्द कर दी हैं इस लिए अल्लाह के कलाम में शैतानी कलाम के हिल मिल जाने और बातिल (असत्य) के गड्ड मड्ड हो जाने की कोई संभावना नहीं रही । दूसरे शब्दों में यह सूरह इस बात की ज़मानत है कि यह किताब शैतान और इस प्रवृत्ति के इन्सानों की दखल अन्दाज़ियों से क़ियामत तक के लिए सुरक्षित रहेगी । इस में किसी तरह की मिलावट, या परिवर्तन संभव नहीं है। वह हमेशा के लिए अपने असली रुप में बाक़ी रहने वाली किताब है ।

११४. सूरह अन्-नास

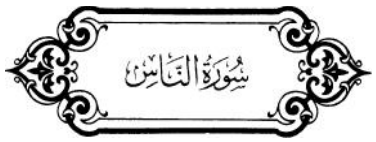

अनुवाद आयतें : ६

अल्लाह रहमान और रहीम के नाम से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1. **कहो [1] मैं पनाह माँगता हूँ इनसानों के रब की।[2]**

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾

2. **इन्सानो के बादशाह की।[3]**

مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾

3. **इन्सानों के माबूद (पूज्य, उपास्य) की,[4]**

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

4. **वस्वसा डालने वाले ख़न्नास (छिपने वाले) के शर (फ़ितने) से।[5]**

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾

5. **जो लोगों के सीनों (दिलों) में वस्वसे डालता है।[6]**

الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

6. **जो जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी।[7]**

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

1. इस के प्रथम सम्बोधित (Addressee) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और लफ़्ज़ ''क़ुल قُلْ (कहो) से सूरह की शुरुआत इस बात का सबूत है कि यह अल्लाह का कलाम है, और अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को जिन अल्फ़ाज़ में पैग़ाम पहुँचाने का आदेश दिया था ठीक ठीक उन्हीं अल्फ़ाज़ में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने लोगों तक पहुँचा दिया । इन में से कोई लफ़्ज़ भी यहाँ तक कि ''क़ुल'' قُلْ (कहो) का लफ़्ज़ भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अलग नहीं फ़रमाया । यह क़ुर्आन के शब्द शब्द अल्लाह की वह्य होने का खुला सबूत है।

2. इन्सानों का रब अर्थात तमाम लोगों का परवरदिगार और वास्तविक मालिक । आयत का मतलब यह है कि जो ख़ुदा इन्सानों का रब है वही पनाह देने वाला भी है। उस के सिवा कोई पनाह देने वाला नहीं है। इस लिए मैं पनाह के लिए उसी की ओर पलटता हूँ और उसी की तरफ़ झुकता हूँ।

ज़बूर (भजन संहिता) में भी इस से मिलता जुलता मज़मून है :-

''हे ईश्वर मेरी रक्षा कर, क्यों कि मैं तेरा ही शरणगत हूँ। मैं ने परमेश्वर से कहा, कि तू ही मेरा प्रभु है, तेरे सिवाए मेरी भलाई कहीं नहीं ।'' (भजन संहिता १६:१,२)

ध्यान रहे कि ''अऊज़ु اَعُوْذُ '' का शाब्दिक अर्थ पनाह लेने के हैं जिस से इस बात का पता चलता है कि बन्दा ख़ुदा से न सिर्फ़ पनाह माँगता है बल्कि व्यवहारिक रुप से उस ने स्वयं को उसी की हिफ़ाज़त में दे दिया है और उसी का सहारा ले लिया है, लेकिन चूँकि मुऔव्विज़तैन प्रार्थना की सूरतें हैं, और उर्दू मुहावरे में ऐसे मौक़े पर पनाह माँगना बोला जाता है। इस लिए हम ने लफ़्ज़ ''अऊज़ु'' का अनुवाद ''मैं'' पनाह माँगता हूँ'' किया है।

3. अर्थात् चूँकि ख़ुदा इन्सानों का वास्तविक बादशाह है इस लिए वह बन्दों की हिफ़ाज़त पर पूरी तरह सक्षम (क़ादिर) है इस लिए मैं उसी सर्वोच्च सत्ताधिकारी का सहारा लेता हूँ।

इस से स्पष्ट हुआ कि अल्लाह तआला की सर्वोच्च सत्ता जिस तरह धरती और आकाश पर स्थापित है उसी तरह पूरे इन्सानी समूह पर भी स्थापित है। इन्सानी समूहों में से कोई समूह ऐसा नहीं जिस पर उस की सत्ता (बादशाहत) स्थापित न हो । इस लिए किसी समूह का स्वयं को उस की बादशाहत से आज़ाद समझ लेना एक ऐसी बात है जो सच्चाई के विरुद्ध है। इस से वास्तविकता तो नहीं बदलती अलबत्ता इन्सान का आचारण ग़लत हो कर रह जाता है। अर्थात वह अपने कार्य क्षेत्र में उद्दंड (सरकश) बन कर रह जाता है।

4. अर्थात् वास्तव में तमाम इन्सानों का माबूद (पूज्य) उपास्य) अल्लाह तआला ही है और यह उस के रब और बादशाह होने का तक़ाज़ा भी है। यह और बात है कि लोगों ने इस वास्तविकता से मुँह मोड़ कर के अल्लाह के सिवा किसी और को माबूद बना लिया हो । इबादत (पूजा एवं उपासना) की मुस्तहिक तन्हा अल्लाह ही की हस्ती है और इस कायनात में माबूद अर्थात् इबादत के योग्य होना तन्हा उसी की सिफ़त है और वही है जिस की इबादत आसमानों में भी की जाती है और ज़मीन में भी, इस लिए इन्सानों का माबूद भी उस के सिवा कोई नहीं ।

अल्लाह तआला को रब (स्वामी) ''मालिक'' (बादशाह) और इलाह (माबूद) मान कर जब बन्दा उस से पनाह की प्रार्थना करता है तो वह उसे क़ुबूल फ़रमाता है। दूसरे शब्दों में पनाह की प्रार्थना की स्वीकृति (क़ुबूलियत) के लिए तौहीद लाज़मी शर्त है।

5. वस्वसा का अर्थ बुरी बात और बुरे ख़्याल के हैं जो इस तरह से किसी के दिल में डाला जाए कि उसे आभास तक न हो । और वस्वास का अर्थ है वस्वसाअन्दाज़ी करने वाला । यह शैतान की

सिफ़त है और उस की दूसरी सिफ़त ख़न्नास है जो ख़ुनूस से है और जिस के अर्थ छिपने, गायब हो जाने और पीछे हटने के हैं । एवं इस का एक अर्थ सिकुड़ने के भी हैं।

शैतान जब इन्सान को किसी गुनाह पर आमादा करना चाहता है तो वह गुनाह के काम बड़े सुन्दर रूप में प्रस्तुत करता है और अच्छे परिणाम की आशा दिलाता है। यही चीज़ वस्वसे की सूरत में इन्सान के दिल में दाखिल होती है और जब वह उस के असर से प्रभावित हो जाता है और उसे स्वीकार करता है तो यह ख़याल परिपक्व (पुख़्ता) हो कर इरादा और आचरण का रुप धारण कर लेता है। सब से पहली वस्वसाअन्दाज़ी शैतान ने आदम और हव्वा पर की थी ।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِیَ لَهُمَا مَا وُرِیَ عَنْهُمَا مِنْ
سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ
اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْتَكُوْنَا مِنَ الْخَالِدِيْنَ ـــــــ وَقَا
سَمَهُمَآ اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِیْنَ۔ (الاعراف ٢٠، ٢١)

''फिर शैतान ने उन पर वस्वसाअन्दाज़ी की ताकि उन के गुप्तांग जो उन से पोशीदा (गुप्त) रखी गई थी उन के सामने खोल दे! और कहा कि तुम्हारे रब ने तुम को इस वृक्ष से इस लिए रोका है कि तुम कहीं फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें अनन्त जीवन न प्राप्त हो जाए । उस ने क़सम खा कर कहा कि मैं तुम्हारा भला चाहने वाला (शुभचिन्तक) हूँ। (अल्-अअराफ़ २०,२१)

यह शैतान की वस्वसे में डालने की बिलकुल ख़ुली मिसाल है कि किस तरह शैतान शुभचिन्तक बन कर आता है और गुनाह की ओर कैसा फ़रेब दे कर आकर्षित करता है। आदम और हव्वा के सामने यद्यपि शैतान प्रकट हो गया था, लेकिन दुनिया में उस की वस्वसे में लिप्त करने की प्रक्रिया छिपे दुश्मन के हमले की तरह होती है इस लिए आदमी को इस की वस्वसाअन्दाज़ी का पता नहीं चलता । अलबत्ता अपने दिल में वह बुरे ख़याल एवं बुरे विचार महसूस करने लगता है। लेकिन इन विचारों को स्वीकार करना या न करना इन्सान के अपने निर्णय एवं निश्चय पर आश्रित होता है। अगर वह पूरे होश में और अपने दुश्मन की ओर से चौकन्ना हो तो शैतानी वस्वसों का कोई असर क़ुबूल नहीं करता और अगर ग़ाफ़िल (अचेत) हो तो असर क़ुबूल करता है। और इन्सान का दिल इसी सूरत में सचेत रहता है जब कि उस में ख़ुदा की याद बस गई हो । अल्लाह का ज़िक्र (चर्चा) इन्सान के बचाव का सब से बड़ा हथियार है। इस हथियार को इस्तेमाल कर के दिल में पैदा होने वाले वस्वसों से जब वह ख़ुदा की पनाह माँगता है तो वस्वसे बेअसर (प्रभावहीन) हो कर रह जाते हैं और शैतान को नाकाम लौटना पड़ता है। आयत का मंशा शैतान की उन छिपी कार्यवाईयों से है जो वह इन्सान के विरूद्ध करता है, सचेत एवं सावधान करना है ताकि इन्सान अपने दुश्मन की तरफ़ से चौकन्ना रहे और अपने बचाव (रक्षा) का सामान करे।

यह तो आयत का आम (सामान्य) मफ़हूम (अर्थ) है। रहा संदर्भ के परिवेश में खुसूसी (विशेष) पहलू, तो यहाँ खास तौर से इस बात की ओर इशरा अभिप्रेत है कि ईमान लाने वालों को क़ुर्आन के रुप में जो हिदायत प्रदान हुई है उस के लिए सब से बड़ा खतरा अगर कोई है तो वह शैतान की वस्वसाअन्दाज़ी ही है। अर्थात् वह ऐसी बातें दिल में डाल सकता है जो क़ुर्आनी मामले में संदेह पैदा करने वाली और हिदायत के मार्ग से दूर कर देने वाली हों । विशेष रुप से तौहीद का अक़ीदा जो दीन की बुनियाद और क़ुर्आन की असल रुह है। शैतान की शरारती चालें उस के विरुद्ध हो सकती

हैं । इस लिए इस दुश्मन की शातिराना चालों से होशियार रहने और अपने दीन और अक़ीदे कि हिफ़ाज़त का सामान करने की ज़रूरत है।

6. दिलों में वस्वसे डालना उर्दू मुहावरे के लिहाज़ से है वरना असल में लफ़्ज़ ''सुदूर'' इस्तेमाल हुआ है जो सद्र का बहुवचन (Plural) है और जिस का अर्थ सीना है। शैतान की वस्वसाअन्दाज़ी करने का स्थान इन्सान का अन्दरून अर्थात उस का सीना है। सीना दिल के लिए डयोढ़ी की हैसियत रखता है जहाँ से वस्वसे दिल में दाख़िल होते हैं। अल्लामा इब्ने कैय्यिम ने इस की बड़ी अच्छी व्याख्या की है।

''यह Point (बात) ग़ौर करने के क़ाबिल है कि अल्लाह तआला ने يُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاس ''जो इन्सानों के सीनों में वस्वसे डालता है''। फ़रमाया और यह नहीं फ़रमाया कि उन के दिलों में वस्वसे डालता है। क्यों कि सीना दिल का चौखट और उस का घर है जहाँ से वारदात दाखिल हो कर सीने में जमा होते हैं इस के बाद दिल में दाखिल होते हैं। अत: सीना दिल के लिए ड्योढ़ी का स्थान रखता है और तमाम संकल्प और निश्चय दिल से निकल कर सीने में आते हैं और फिर वहाँ से इन का वितरण (Distribution) उस के लश्करों पर की जाती है। (तफ़्सीर अल्मुऔव्विज़तैन इब्ने क़ैय्यिम- पृष्ठ ६६)

अर्थात् वस्वसे दिल में सीधे प्रवेश नहीं करते बल्कि सीना के माध्यम से प्रवेश करते हैं गोया शैतान के तीर सीने में घुँप जाते हैं और उन का ज़हरीला असर दिल पर उसी समय होता है जब कि दिल अचेतना के खर्राटे ले रहा हो । वरना अगर दिल अल्लाह के ज़िक्र से जागृत हो तो वह बचाव (Defence) कर लेता है। और उस के प्रभाव से सुरक्षित रहता है।

7. अर्थात् वस्वसाअन्दाज़ी करने वाला शैतान मात्र इब्लीस ही नहीं है बल्कि जिन्नों और इन्सानों में ऐसे बहुत सारे शैतान मौजूद हैं जो यह काम करते रहते हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِیْ بَعْضُهُمْ
اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا۔ (الانعام : ١١٢)

''और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नों के शैतानों को दुश्मन बना दिया जो एक दूसरे पर चिकनी चुपड़ी बातें फ़रेब देने के लिए इल्का करते (मन में डालते) हैं।''(अल्-अन्आम :११२)

जहाँ तक जिन्नों के शैतानों की वस्वसाअन्दाज़ी की बात है, उन का छिप कर हमलावर होना बिलकुल स्पष्ट है। रहे इन्सानों के शैतान तो वह भी जब वस्वसा अन्दाज़ी करते हैं तो अपने वास्तविक शैतान होने की हैसियत को छिपा कर ही करते हैं। अत: वह इन्सान के शुभचिन्तक बन कर प्रकट होते हैं क्यों कि वह जानते हैं कि उन का कोई विचार और उन का कोई सुझाव किसी के लिए उसी समय मानने योग्य हो सकता है जब कि एक उपदेशक और एक शुभचिन्तक की हैसियत से वह सामने आएं । अगर वह अपना असली रूप अर्थात उपद्रवी (शरपसन्द) की हैसियत से सामने आऐं तो कोई व्यक्ति भी उन की ओर ध्यान देने के लिए तैयार न होगा ।

यहाँ यह बात भी समझ लेना चाहिए कि शर (फ़ितना) फ़ैलाने के बारे में असल काम जिन्न शैतानों का है जिन का सरदार इब्लीस है। रहे इन्सानी समूह के शैतान तो वह इन ही के अधीन हैं।

इदारे की हिन्दी प्रकाशन

दअवतुल क़ुर्आन

तफ़सीर :

शम्स पीरज़ादा (रह.)

हिन्दी अनुवाद :

मुहम्मद नसरुल्लाह (एम.ए.)

संपूर्ण तीन खंड

जिल्द १ (पारा १ से पारा १० तक)	
सूरह फातिहा ता सूरह तौबा	३५०/-
जिल्द२ (पारा ११ से पारा२०तक)	
सूरह यूनुस ता सूरह अंकबूत	३५०/-
जिल्द ३ (पारा २१ से पार ३०तक)	
सूरह रूम ता सूरह नास	४८०/-
मौज़ूअ और ज़अीफ हदीसों का चलन	९/-
क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना जरुरी नहीं	१०/-
तलाक़ कब और कैसे ?	६/-
सुनो अपने रब (पालनहार की)	१८/-
पारा अम्म	१२०/-

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४००००३

फोन ; 23465005

इदाऱ्याची मराठी प्रकाशने

दअवतुल क़ुर्आन

(पवित्र क़ुर्आनाचे अनुवाद व भाष्य)

भाष्य :

शम्स पीरज़ादा (रह.)

मराठी अनुवाद :

मुहम्मद यूसुफ अत्तार

मुहम्मद शफी अन्सारी

संपूर्ण तीन खंडात

खंड १ (पारा १ ते १०)सूरह फातिहा ते सूरह तौबा	१२०/-
खंड २ (पारा ११ ते २०)सूरह यूनुस ते सूरह अंकबूत	१२०/-
खंड ३ (पारा २१ ते ३०)सूरह रूम ते सूरह नास	१२०/-
जवाहिरुल हदीस	६५/-
दिव्य वचने (तनवीरुल हदीस)	७०/-
काय क़ुर्आनास अर्थासह वाचणे आवश्यक नाही	४/-
ऐका आपल्या पालनकर्त्याचे	९/-

इदारा दअ्वतुल क़ुर्आन

५९-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-४००००३

फोन ; 23465005

Tafseer Da'watul Qur'an

Urdu, Complete 30 paras in 2 Vols.

by **Maulana Shams Pirzada** (Rh.A)

Vol. I	(Para 1 to 20)	750/-
Vol.II.	(Para 21 to 30)	450/-
Trjuma Quran	(Arabi And Tarjuma)	400/-

Marathi Edition translated by Muhammad Yusuf Attar and Muhammad Shafi Ansari.

Vol.I	(Para 1 to 10)	120/-
Vol.II.	(Para 11 to 20)	120/-
Vol.III.	(Para 21 to 30)	120/-

Gujrati Edition translated by Sultan Akhtar.

Vol.I	(Para 1 to 10)	350/-
Vol.II.	(Para 11 to 20)	180/-
Vol.III.	(Para 21 to 30)	300/-

Hindi Edition translated by Muhammad Nasrullah.

Vol.I	(Para 1 to 10)	350/-
Vol.II.	(Para 11 to 20)	350/-
Vol.III.	(Para 21 to 30)	480/-

English Edition translated by Abdul Karim Shaikh.

Vol.I	(Para 1 to 10)	380/-
Vol.II.	(Para 11 to 20)	285/-
Vol.III.	(Para 21 to 30)	460/-

Para Amm Urdu	70/-
Para Amm English	150/-
Para Amm Hindi	120/-
Para Amm Gujrati	65/-

Idara Da'watul Qur'an

59, Muhammad Ali Road, Mumbai-400003.
Phone : 23465005

English Publications of Idara

Tafseer Da'watul Qur'an

by :

Maulana Shams Pirzada (Rh.)

English Translation :

by Abdul Karim Shaikh

✲ **Vol.I**
Surah Al-Fatiha to Surah Tauwbah (Para 1 to 10) **380/-**
✲ **Vol.II.**
Surah Yunus to Surah Ankaboot (Para 11 to 20) **285/-**
✲ **Vol.III.**
Surah Room to Surah Annas (Para 21 to 30) **460/-**

Jawahirul Hadith	75/-
Tanveerul Hadith	60/-
Talaq When & How ?	8/-
Is it not necessary to read Quran with understanding?	10/-
The Prevalence of concocted and weak Hadith	7/-
Listen to Your Lord	12/-
Triple Talaq In the light of Quran & Sunnah	10/-
What a Corrupt Society is this !	8/-
English Parah Amm	150/-
Milli Unity Necessity, Importance And the way	35/-

Idara Da'watul Qur'an

59, Muhammad Ali Road Mumbai- 400 003
Phone: 23465005